UNIVERSAL LIBRARY

OU_180332

UNIVERSAL LIBRARY

OUP—68—11-1-68—2,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H83 W51M Accession No. H4031

Author वेस्ट, जेसमिन.

Title मैत्रीभाव. 1945.

This book should be returned on or before the date last marked below.

Copyright 1940, 1943, 1944, 1945
by Jessamyn West

Published by Sri Ram Jawaya Kapur for
Uttar Chand Kapur & Sons, Delhi

Printed by Agra University Press, Agra.

मैत्री भाव

लेखिका

जेसमिन वेस्ट

मैत्री भाव

श्रीमती वेस्ट के मूल ग्रन्थ को लेकर जो फिल्म हॉलीवुड ने बनाई थी वह संसार की सर्वोत्तम फिल्मों में गिनी जाती है। आशा है यह पुस्तक भी हिन्दी जगत में अपना स्थान प्राप्त करेगी।

—अनुवादक

अनुक्रमणिका

मस्कैटैटक के किनारे	१
उषाकाल में शिवारी	१६
बत्तख़ की चाल	२७
मैटी का प्यार	४६
फिन्नी नाले की लड़ाई	५६
गड़ा हुआ पन्ना	६५
बदला	१०८
घुड़दौड़	१२१
"हाँ, मिलेंगे नदी किनारे !"	१३४
सभाभवन	१५१
फूलदान	१६८
रोशनी	१७८
बुढ़ापे में	१६४
होमर और कमल	२०८

मस्कैटैटक के किनारे

मस्कैटैटक नदी के किनारे जहाँ कभी घने जंगलों की पंक्तियों पर पंक्तियाँ फैली हुई थीं और जंगली अंगूर और झड़बेरी अब भी फूलती थी, आयरलैंड से आए हुए एक क्वैकर, जैस बर्डवल, न सफेद लकड़ी का अपना घर बनाया था। यहाँ उसे किसी चीज़ की कमी न थी। प्रवेशद्वार के पास खूँटी से लटके हुए लकड़ी के पिंजरे में एक बुलबुल थी। सामने फाटक से जंगली गुलाब आगन्तुक का स्वागत करता और खिड़की के ऊपर लगी हुई बेलें कमरे की दरी पर बने हुए गुलाबों पर झुक झुक जातीं—इन फूलों का नाम तक भी किसी ने न सुना था और अलमारी में रखी क्वैकरों की पुस्तकों से इनका विचित्र मेल बैठता था।

जैस की पत्नी अच्छी थी। वह एक क्वैकर पादड़ी थी और शादी से पहले उसका नाम एलिज़ा कोप था। उनका घर बच्चों से भरा-पूरा था। एलिज़ा काले बालों वाली, सुन्दर, परिश्रमी व धर्मभीरु औरत थी और उसका अपना ही सोचने का ढंग था।

जैस का चलता हुआ व्यापार था। वह फूल-पौधों का काम करता था। उत्तम से उत्तम प्रकार की बेरियाँ, फिलेडलफिया के फल, सेब, अनार इत्यादि भिन्न-भिन्न प्रकार के फल-फूल, जो कुछ भी वहाँ की उपज थी, जैस वह सब बेचता।

मस्कैटैटक के किनारे और भी चीज़ें सुलभ थीं। वहाँ मछलिएँ, खुद-ब-खुद पानी से छिटक आने वाली अनेक प्रकार की मछलिएँ, मिल जाती थीं।

बसन्त आती तो तराई व सड़क के आस-पास फूल ही फूल हो जाते। गर्मियों में खेतों के चारों ओर फैले हुए घने पेड़ों से सूर्य की किरणें फूटी पड़तीं और शरद् आते ही खेतों में कुहरा ऐसे फैल जाता कि आकाश व पृथ्वी एक हो जाते। जैस को यह सब बहुत भाता और आनन्दातिरेक से उसकी आँखें भर-भर आतीं—और जी भर यह दृश्य देखकर आँखें व नाक पोंछता हुआ वह घर चला जाता।

यह सब होते हुए भी जैस, मानों अकारण ही, पूर्णतया प्रसन्न न था। कम से कम एलिज़ा का अपनी पादड़ीगिरी से सम्बन्धित सभाओं व जलसों

में भाग लेना जैस की अशान्ति का कारण न था। वह जानता था कि उसकी पत्नी अपने धार्मिक कर्त्तव्यों से बँधी हुई है और गिरजाघर में उसे प्रेम व मातृभाव का उपदेश देते देख जैस का सिर ऊँचा हो जाता।

नहीं, एलिज़ा की पादड़ीगिरी या किसी और सहज ही समझ में आने वाले कारण से जैस अशान्त न था। उसकी अशान्ति का कारण संगीत था। जैस का हृदय संगीत का भूखा था, गोकि यह कहना कठिन है कि यह चाह उसके मन में कैसे समा गई थी। ईसाइयों का क्वेकर वर्ग संगीत को अनुचित समझता और मानता कि संगीत मनुष्य को "ऊपर" उठने से रोकता है। ये लोग संगीत को अपनी सभाओं व अपने घरों से दूर रखते। वैसे कुछ क्वेकर औरतें लालटैन की चिमनी साफ करते हुए गुनगुना लेतीं और कुछ मर्द खेतों में बीज डालते समय सीटी बजा लेते। परन्तु संगीत—गायन या वादन—सुनने का अवसर जैस को कभी न मिल पाता।

कभी कहीं मौक़ा लगता तो जैस उसे न छोड़ता। वह मध्य-साप्ताहिक पूजाओं के लिए गिरजाघर पहुँच ही जाता और उस धार्मिक संगीत को सुनकर उसका मन एक ऐसे आनन्द से भर जाता जो केवल धार्मिक ही न होता। और जब प्रति वर्ष चार जुलाई को आमान्दा प्रेण्टिस गाती और राष्ट्रगान के स्वर आकाश को चूमने लगते तो आनन्द-विह्वल जैस को आस्मान से धरती पर लाना एलिज़ा का ही काम होता।

जहाँ तक संगीत का सम्बन्ध है जैस, बिना एलिज़ा या उसके अनुयायियों की बड़बड़ाहट सुने, कुछ समय तक केवल इतना भर ही पा सका। कम से कम इस बार फिलेडलफिया जाने व वाल्डो क्विग्ली से अकस्मात् भेंट होने से पहले तो जैस को इससे अधिक कुछ न मिला था। और यह बात भी है कि जब वह फिलेडलफिया जाने की सोच रहा था तो उसे गुमान तक न था कि वहाँ जाकर वह कुछ हो जायगा जो कि बाद में सचमुच ही हो गया।

जैस बहुत दिनों से एक नए फल के विषय में सुनता आ रहा था। उसने फिलेडलफिया जाकर एक बार उसे देख लेने का निश्चय किया, जिससे यदि वह इतना ही अच्छा हो तो वह भी अपने लिए ख़रीद लाए। इस काम के लिए उतनी दूर जाने की आवश्यकता तो न थी, परन्तु क्वेकर तो चाहे रूमाल ही क्यों न ख़रीदना हो फिलेडलफिया जाकर ही ख़रीदेगा! अस्तु, एलिज़ा ने उसका बिस्तर बाँध दिया और वरनोन ले जाकर रेल में बिठला आई।

दो-एक दिन बाद पत्र द्वारा एलिज़ा को जैस की कुशल मिली। उस पत्र में जैस ने वाल्डो क्विग्ली के बारे में कुछ न लिखा था परन्तु, जैसा कि बाद में पता चला, तब तक वे दोनों घुल-मिल चुके थे। पत्र बहुत ही संक्षिप्त रूप में था: स्वास्थ्य ठीक है और नगर दर्शनीय; बस इतना भर ही था। हाँ, अंत में 'पुनश्च' करके एक वाक्य और लिख दिया गया था—"मेरे रात के सोने के कुरते में तूने, प्यारी एलिज़ा, जो गोलियाँ रख दी थीं, उनके लिए तुझे बहुत-बहुत धन्यवाद।"

वे गोलियाँ पीपरमिण्ट की थीं और जैस ने एक गोली वाल्डो क्विग्ली को देकर ही परिचय का सूत्रपात किया था। जैस मैत्री-भाव ले यात्रा किया करता। वह कहा करता कि सूर्य, चन्द्रमा और तारागण तो सब जगह एक से ही होते हैं, केवल लोग ही विभिन्न होते हैं और अगर आप लोगों को ही जान-पहचान नहीं सकते तो सफर करने से अच्छा घर बैठकर गाएँ दुहना है।

गोली मुँह में डालते ही वाल्डो क्विग्ली अपना भारी-भरकम शरीर लिए जैस के सामने वाली सीट पर आ बैठा था।

"कहिए, साहब," उसने पूछा, "आप व्यापारी हैं?"

"हाँ," जैस ने कहा। सुनकर वह अपरिचित कहने लगा, "अरे, आपकी तरफ तो एक व्यक्ति राष्ट्रपति बनने को तैयार हो रहा है। बोलचाल में दक्ष और दूरदर्शी, वह आदमी अवश्य ही प्रतिष्ठावान् होगा। वह तो एक छोटा देव है देव! उसे ऊपर उठा दो और वह हमारे देश को स्वावलम्बी बना देगा। हमें ऐसा ही आदमी चाहिए।"

जैस ने नाक-भौं सिकोड़ लीं। वह पक्का रिपब्लिकन था, इतना पक्का जितना कि एक क्वेकर हो सकता था। "दोस्त," उसने कहा, "हमें छोटे देव की नहीं, बड़े देव की ज़रूरत है। हमें ऐसा आदमी नहीं चाहिए जो सारे देश को भड़का दे, जो एक प्रान्त को दूसरे प्रान्त से लड़वा दे। हमें ऐसा आदमी चाहिए जो सबके हितों की रक्षा करे, छोटे किसान और ज़मींदार के हित की बात करे, काले और गोरे सब ही का भला सोचे।"

जैस को लगा कि वाल्डो क्विग्ली "स्टीफन डग्लस ऐसा ही आदमी है" कहना ही चाहता है, परन्तु बात मुँह से निकलते-निकलते उसने बदल दी और कहा, "भाई बर्डवल, तुमने तो मेरे मन की बात कह दी; यही बात मैं भी कहना चाहता था, तुमने और भी भले ढंग से कह दी!"

जैस ने अपनी नाक सिकोड़त हुए कहा, "दोस्त, देखता हूँ तुम झगड़ालू नहीं हो।"

"भाई," वह अपरिचित बोला, "तुम ठीक ही कहते हो, मैं झगड़ालू नहीं हूँ। मैं तो माधुर्य्य की बात और माधुर्य्य का व्यापार करता हूँ।"

जैस ने यह सुनकर एक बार फिर उसके काले सूट को ग़ौर से देखा और सोचा कि यह कोई न कोई पादड़ी है।

"तुम," उसने सौजन्य से कहा, "शायद एक पादड़ी हो? वैसे तुम्हारे कपड़े ठीक पादड़ियों जैसे नहीं हैं।"

मुँह में पड़ी गोली को निगलते हुए क्विग्ली ने अपना गला साफ किया और कहा, "मैंने कभी दीक्षा तो नहीं ली, पर मैं पादड़ियों के बीच इतना रहा हूँ कि मेरा खाना-पहिनना सब उन जैसा ही हो गया है। सोचता हूँ यह ही ठीक बात है। दूसरे इससे व्यापार में भी सहायता मिलती है।"

"व्यापार?" जैस ने पूछा।

"अभी बताया तो था, बर्डवल भाई। माधुर्य्य ही मेरा व्यापार है। सा—रे—ग। ध—नि—सा। और प—ध—नि भी। माधुर्य्य! दिशाओं का संगीत। ईश्वर का अपने बच्चों से बात करने का साधन। वह शक्ति जो वन पशुओं को वश में कर लेती है, वह गीत जो नवजात् शिशु को शान्त कर देता है, और पीड़ित की पीड़ा हर लेता है। संक्षेप में, संगीत!"

"और विस्तार में भी," जैस ने तुक मिलाते हुए कहा, "तो, भाई क्विग्ली, तुम संगीतज्ञ हो?"

"संगीतज्ञ? हाँ! लेकिन मैं," उसने स्पष्टवादिता से कहा, "मैं संगीत का व्यापारी हूँ। या शायद यह कहना ज्यादा ठीक होगा कि मैं एक व्यापारी संगीतज्ञ हूँ। कुछ लोग बही-खाता रखना जानते हैं और कुछ स्वरों को पहिचान सकते हैं। परन्तु मैं दोनों ही काम कर सकता हूँ।"

उसने जैस को एक कार्ड दिया जिस पर लिखा था: प्रोफेसर वाल्डो क्विग्ली, पेसन व क्लार्क के सफरी प्रतिनिधि। संसार के सर्वोत्तम बाजे। संगीत सम्बन्धी पुस्तकें भी।

भाई क्विग्ली ने जैस के हाथ से कार्ड लेकर उस पर लिख दिया: व्यक्तिगत अभिवादन! और विनयपूर्वक कहा, "मुझे लगता है कि तुम एक क्वैकर हो। क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम्हारी जाति की संगीत के प्रति धारणा क्या है, और मैं नहीं चाहता कि तुम यह समझो कि मैं तुम्हारे

धार्मिक विश्वासों के विरुद्ध काम कर रहा हूँ, इसलिए ही मैंने यह लिख दिया है। विश्वास करो कि मेरी तुमसे कुछ कमाने की इच्छा नहीं है। हम केवल दो मित्रों की भाँति ही मिल रहे हैं। धार्मिक बातों में सावधानी ठीक रहती है, बहुत ठीक रहती है।" और सिर हिलाते हुए उसने कार्ड जैस को लौटाल दिया।

जैस ने "पेसन व क्लार्क" मन ही मन दोहराते हुए कहा, "पेसन व क्लार्क ! तो तुम पेसन व क्लार्क का बाजा बेचते हो। उनका तो अपना ही एक बाजा है ? मुझे याद आता है कि इस रशब्रांच के गिरजे की सभा में मैंने उनका बनाया हुआ एक बाजा देखा था।"

"हाँ, हाँ, है क्यों नहीं। अवश्य है। तुमने जरूर देखा होगा," वाल्डो क्विग्ली ने कहा और जेब से एक छोटी सी लाल किताब निकाल पन्ने उलटते हुए बोला, "हाँ, साहब ! तीन वर्ष हुए १६ अप्रैल को मैंने वह बाजा उन्हें बेचा था। एक और उत्सव हो जाय तो वे बाजे का पूरा मूल्य चुका देंगे।"

"तब तो तुम अच्छा बाजा बेचते हो। मैंने उसे कई बार बजते हुए सुना है।"

"अच्छा ? भाई बर्डवल, वह तो अच्छे से भी अच्छा है ! तीन वर्ष हुए मेरा गायन सुनकर रशब्रांच के गिरजे वालों ने कहा था, 'प्रोफेसर क्विग्ली, हमें धरती पर इससे स्पष्टतर ईश्वर की आवाज़ सुनने की आशा नहीं है।"

जैस ने कहा, "यह तो बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बात करना हो गया, शायद," लेकिन वह मन ही मन पेसन व क्लार्क बाजे के विषय में और भी सुनता रहना चाहता था।

"हाँ, हाँ, शायद," क्विग्ली ने कहा, "परन्तु यह मत भूलो कि वे कौन से ईसाई हैं। शोर मचाना उनको स्वाभाविक है, उनकी बात छोड़ो। लेकिन यह बाजा एकदम पटाखा है, बिल्कुल····एकदम···पटाखा !"

"पटाखा !" जैस ने दोहाराया।

"शान्तिप्रद, सुस्वर, गम्भीर पटाखा, एकदम पटाखा !"

जैस बाजों के विषय में थोड़ा कुछ जानता था, कैसे जानता था यह कहना कठिन है : शायद "विश्वकोष" पढ़कर वह कुछ जान पाया था या फिर वह रशब्रांच वाला बाजा देखकर। शायद इन दोनों

में से कोई भी कारण न रहा हो। जिसे हृदय से प्यार किया जाता है उसका ज्ञान कहीं न कहीं से हो ही जाता है, किसी विशेष अध्ययन या विश्लेषण की आवश्यकता ही नहीं होती। यदि आप किसी वस्तु से प्यार करते हैं तो उसके विषय की हर बात स्वयं आपके हृदय में बस जाती है और आपको कुछ पढ़ने-सुनने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती। शायद जैस और बाजों की भी ऐसी ही कुछ बात थी।

सो जैस ने पूछा, "पेसन व क्लार्क बाजे के कितने स्वर-भाग होते हैं ?"

"अड़तालीस, भाई बर्डवल, ट्यूबा मिटबलिरा को छोड़कर। लेकिन पेसन व क्लार्क के स्वर-भागों की संख्या तो गौण है। वे सर्वोत्तम स्वर-भाग हैं और मानवी कंठ के पूर्णतया अनुगामी !"

"और कितने कोमल ?"

"आठ। और एक वह मानवकंठी ! यक्षों के कोकिल कंठ का स्वर ! वह रो सकता है, आह भर सकता है और गा सकता है। उसमें तुम अपने खोए हुए बच्चे की पुकार तक सुन सकते हो ! क्या कभी तुम्हारा बच्चा खोया गया था, भाई बर्डवल ?"

"नहीं," जैस ने कुपित हो कहा।

"तो तुम स्वर्ग से पुकारती अपनी माँ की आवाज़ सुन सकते हो !"

"मेरी माँ जर्मन टाउन में रहती है !" जैस ने कहा।

यदि वह वार्तालाप इसी दिशा में चलता रहता तो जैस कभी भी पेसन व क्लार्क का बाजा लेकर घर न लौट पाता। परन्तु वाल्डो क्विग्ली को जो बात बिगड़ती दिखाई दी तो उसने दूसरे ढंग से बात करना आरम्भ कर दिया।

"पेसन व क्लार्क बाजा चार अलग-अलग डिज़ाइनों में मिलता है," उसने कहा, "शीशम, देवदार, अख़रोट और आबनूस का बना हुआ। उसका डिब्बा देखते ही बनता है। और बाजों में दो ब्रैकटें होती हैं, इसमें चार हैं। दो बत्तियों के लिए और दो फूलदानियों के लिए। इसमें एक शीशा भी लगा होता है। और इतने बड़े बाजे में कहीं भी बिना कढ़ाई की लकड़ी नहीं लगी है। नहीं, जनाब, इस बाजे में कहीं भी कुरूप, अनलंकृत लकड़ी नहीं लगाई गई है। परन्तु, भाई बर्डवल, तुम तो स्वयं एक संगीतज्ञ हो। भला तुम्हें लकड़ी से क्या

लेना है? तुम्हें तो स्वर चाहिएँ, स्वर! स्वर ही की खोज तो कलाकार को रहती है, और पेसन व क्लार्क में स्वर ही मिलेंगे!"

उसने गुनगुनाना आरम्भ कर दिया। पहले धीरे-धीरे और फिर ज़ोर से। बीच-बीच में गीत के शब्द भी आगए! ला····ल·····ला····ला, नदी किनारा— ला·····ल····· ला ला, कितना प्यारा!

"यह तो कोई गीत लगता है," जैस ने कहा।

"मैं इसे ठीक से गा नहीं पाता।"

लेकिन उसने गुनगुनाना छोड़, गाना आरम्भ कर दिया। उसका कंठ सुन्दर था। कुछ भारी, जैस ने सोचा, परन्तु फिर भी बुरा न था। जब स्वर ऊँचा हो उठा और उसने ज़ोर की साँस ली, तो उसे शराब पिए पाकर जैस को खेद हुआ। परन्तु गीत समाप्त होने से पहले जैस ने अपने आप को ताल देते हुए पाया। उसकी उंगलियाँ, शराब की गंध से बेख़बर, सीट पर लगे लाल चमड़े पर ताल दिए जा रही थीं।

"यह कौन सा गीत है?" जैस ने पूछा।

"बूढ़ा गायक और उसका बाजा।' इसे बाजे के साथ के लिए लिखा गया था। तुम्हारे सामने बिना बाजे के गाते मुझे बुरा लगा।"

"तुम्हारी आवाज़ तो अच्छी है," जैस ने कहा।

"न अच्छी न बुरी, न अच्छी न बुरी!"

उसने अपना मोटा हाथ जेब में डालकर एक चमड़ा-मढ़ी बोतल बाहर निकाली। बोतल का मुँह सावधानी से साफ कर, उसे जैस की ओर बढ़ाते हुए बोला, "लो, ज़रा गला तर करलो, फिर दोनों साथ गाएँगे।"

जैस ने सिर हिलाकर इंकार कर दिया।

"हाँ, मुझे पता था तुम न पिओगे, पर है बुरी बात। गला साफ करती है, साँस बढ़ाती है और जान डाल देती है।" उसने बोतल मुँह से लगा कर एक लम्बी घूंट भरी। "अब मेरे साथ गाओ, भाई बर्डवल!"

जैस ने बाद में कहा कि रेल के डिब्बे में 'बूढ़ा गायक व उसका बाजा' या दूसरा कोई भी गाना गाकर अपना तमाशा बनाने की उसकी इच्छा न थी, परन्तु गीत की लय को भुला देना कठिन था। मस्तिष्क म गीत के शब्द समाए थे, अंगुलियाँ ताल दे रही थीं और उसका समस्त

अस्तित्व तो पहिले से ही गा रहा था। अस्तु, मुँह खोल आवाज़ निकालने में कोई बुरी बात प्रतीत न होती थी। प्रायः आत्मविभोरसा होकर जैस ने गाना आरम्भ कर दिया। क्वैकर होते हुए भी जैस की आवाज़ में अमरीकी गुनगुनाहट पर्याप्त मात्रा में थी और वह आवाज़ प्रथम श्रेणी में गिने जाने योग्य थी। गीत के अभी दो बन्द ही वे दोनों गा पाए थे कि डिब्बे में बैठे आधे सहयात्री उस सहगान में भाग लेने लग गए।

मेरा बाजा फिर मुझे लादो,
मैं उसके कोमल स्वर सुना चाहता हूँ !
और वहाँ उस पार जाने से पहले
एक बार फिर वह झंकार सुना चाहता हूँ !

गीत जब समाप्त हुआ तो वाल्डो क्विग्ली ने फिर शराब का घूंट भरा। "गला तर करना ही पड़ता है," उसने कहा। "तो, बर्डवल भाई, 'फिली' पहुँचकर जब काम से निबटो तो पेसन व क्लार्क आ जाना और इस गीत को जैसे यह गाया जाना चाहिए सुनना। इसे बाजे के साथ सुनना। अहसान न मानना; एक कलाकार के सम्मुख गाकर हम अनुग्रहीत ही होंगे।"

जब जैस पेसन व क्लार्क की दुकान पहुँचा तो बाजा ख़रीदने का कोई विचार न था उसका। जिन बीजों के लिए वह आया था वह उसने ख़रीद लिए थे। अपनी माँ से भी वह मिल आया था और घर लौटने से पहले उसने सोचा कि एक बार 'बूढ़ा गायक व उसका बाजा' पेसन व क्लार्क बाजे पर सुनने में हर्ज ही क्या है। वाल्डो क्विग्ली ने आख़िर सद्व्यवहार किया था और जैस को चाहिए कि वह उसे वह गीत बाजे पर भी सुना लेने दे ! जब वह दुकान में घुसा तो यह सोचकर ही घुसा था !

जब दुकान से बाहर निकला तो वह बाजा ख़रीद चुका था। उसकी समझ में न आता था कि बाजे का करेगा क्या; वह यह भी जानता था कि एलिज़ा बाजे को कभी घर में न रखने देगी। उसे लगा कि वह जातिच्युत हो गया है, परन्तु बाज के क्रय के काग़ज़ तो उसकी जेब में थे ! आधे दाम नक़द दे दिए थे और आधे फूल-पौधों के रूप में देने होंगे। पेसन व क्लार्क के श्री क्लार्क को फूलों का भी शौक़ था !

ज्योंही उसने वाल्डो क्विग्ली को अंगुलियों द्वारा मस्कैटैटक के तरल संगीत की सी ध्वनि निकालते हुए सुना उसे लगा कि वह डूबा जा रहा है! और जब उसने स्वयं 'बूढ़ा गायक' की तान बाजे पर निकाल ली और वाल्डो क्विग्ली ने सुनकर कहा, "मैंने इससे अच्छा बाजा बजाते किसी को नहीं सुना" और जब जैस ने स्वयं अपने पैरों से हवा देते हुए बाजे के स्वरों पर अंगुलियाँ फेरीं और प्रलयंकारी स्वर गूँज उठे तो उसने अपने बैंक के हिसाब के विषय में सोचना आरम्भ कर दिया। अच्छा-बुरा चाहे कैसा भी क्यों न हो, वह बाजा लेकर ही रहेगा, जिससे कि इच्छानुसार, जब भी चाहे, उस पर अंगुलियाँ फिरा सके, उसकी मधुर आवाज़ सुन सके।

बाजा पहुँचने से कुछ दिन पहले ही जैस घर पहुँच गया था। परन्तु इस विषय में उसने एलिज़ा से कुछ भी न कहा। उसने सोचा कि इस मामले को धीरे-धीरे ही उठाना ठीक रहेगा। उन दिनों वह प्रायः संगीत की ही बातें किया करता; कहा करता कि ईश्वर अवश्य ही संगीतप्रिय होगा, अन्यथा चिड़ियाँ गाया न करतीं और चित्रों में फरिश्ते सदा बाजा लिए ही दिखाई नहीं देते।

एलिज़ा भी यह सुनकर चुप न रहती। "तू न तो फरिश्ता है और न ही चिड़िया, जैस बर्डवल; और यदि ईश्वर तुझे गाते हुए देखना चाहता तो अवश्य ही तेरे पर उगा देता!"

उस दिन सुबह से बरफ पड़ रही थी; समतल में तो एक-दो फुट पड़ भी चुकी थी, परन्तु हवा मे और भी अधिक उड़ी आ रही थी। जैस वरनोन जाकर स्वयं ही बाजा ले आया था।

दृष्टि पड़ते ही एलिजा समझ गई कि बाजा आ गया और जैस का उसे लाल दरी में लपेट कर लाना व्यर्थ हो गया। जैस की चिड़ियों और फरिश्तों की बातों से एलिज़ा को ऐसा ही कुछ भय था। परन्तु उसने इतने बड़े बाजे की बात न सोची थी; उसने सोचा था कि जैस बाँसुरी या ऐसा ही कोई छोटा-सा बाजा ले आएगा। परन्तु इससे पहले कि एनोक घोड़े खोले और जैस कपड़ा हटाए, एलिज़ा समझ गई कि वह क्या था।

"घर में यह क्या उठा ले आया है, जैस बर्डवल?" जानते हुए भी उसने पूछा। वह चाहती थी कि जैस अपने मुँह से ही कहे।

"पेसन व क्लार्क का बाजा है," जैस ने तो अपनी ओर से सावधानी बरतते हुए ही कहा ।

परन्तु लाभ कुछ भी न हुआ। "अरे, यह तो पियानो है, पियानो," एलिज़ा ने कहा, "जैस, जैस, तुझे क्या हो गया है ? पियानो घर में ला रहा है ? जानता नहीं मैं पादड़ी हूँ और घर में बच्चे भी हैं ? पड़ोसी क्या कहेंगे ? ग्रोव सभा वाले क्या सोचेंगे ?"

यदि वह इसी लहजे में बात करती रहती तो सम्भव था जैस पियानो से मुँह मोड़ लेता, परन्तु वह और भी आगे बढ़ गई ।

"जैस बर्डवल," वह बोली, "यदि तू पियानो घर में ले गया तो मैं बाहर ही रहूँगी ! तू अच्छी तरह सोच ले। या तेरी पत्नी ही रहेगी या वह बाजा; दोनों तुझे नहीं मिल सकते !"

जैस तरल हृदय व्यक्ति था, और यदि एलिज़ा अपनी काली आँखों से आँसू टपकाकर, विनयपूर्वक बात करती तो उस पियानो की खैर न थी; परन्तु धमकियों, आदेशों की बात तो और ही थी ।

उसने घोड़ों को लिए गोठ जाते हुए नौकर को पुकारते हुए कहा, "एनोक, आकर बाजे को उठवा तो ज़रा ।"

जैस के कार्य-स्वातंत्र्य को ठेस लगते ही उसकी तरल-हृदयता लोप हो गई और उसका कोमल हृदय पाषाणवत् हो गया। एलिज़ा ने उसे कठोर हो जाते देखा, परन्तु अधिकारों के लिए लड़ना उसके रक्त का भी अंश था। वह बरफ में ही पालथी मारकर बैठ गई और बैठे-बैठे ही बोली, "जैस बर्डवल, जब तक बाजे को लौटाल नहीं देगा, मैं यहाँ ही बैठी रहूँगी !"

जैस ने कहा, "एनोक, बाजे को यहाँ ही खोलकर घर में उठा ले जाएँगे। बाहर की पेटी का बोझ व्यर्थ ही कौन उठाए !"

सो, वे दोनों काम में लग गए और पेटी खोलकर पियानो बाहर निकाल लिया। एनोक बरफ में बैठी हुई एलिज़ा की ओर भी देखता जा रहा था। उसे यों बैठा देख एनोक को बुरा भी लगा और उसने सोचा कि बैठने के लिए उसे अपना कोट तो कम से कम बिछा ही देना चाहिए ।

"चलो, अब देर करने से क्या लाभ, एनोक ?" जैस ने एलिज़ा की ओर ध्यान न देते हुए कहा, "इसे घर तक उठा ले जाएँ ।"

जब वे बोझ से हाँफते हुए घर की ओर बढ़ने लगे तो एनोक ने कहा, "क्या यूँ बैठे-बैठे ठंड न लग जाएगी ?"

"जब सारे कपड़े भीग जाएँगे तो अपने आप उठ जाएगी!" जैसे ने कहा।

कपड़े भीगने तक की बात तो ग़लत निकली, क्योंकि जब एलिज़ा घर में घुसी तो बिल्कुल ही भीग चुकी थी। वह बाहर बैठे-बैठे सोचती रही थी। वह जानती थी कि जब अड़ जाए तो भगवान भी जैस को डिगा नहीं सकता। और उसके हृदय में अपने व जैस के लिए इतना आदर था कि अलग हो जाने का प्रश्न ही नहीं उठ सकता था। उसने सोचा कि पारस्परिक मतभेद से कभी भी कोई लाभ नहीं हो सकता। समझौता किया ही जा सकता है। जब वह अन्दर पहुँची तो जैस पियानो को झाड़-पोंछ चुका था। एलिज़ा, अपने भीगे कपड़ों को सुखाने के लिए, अंगीठी के पास जाकर खड़ी हो गई।

"जैस," उसने पूछा, "क्या पियानो को रखने की ठान ही ली है? बच्चों और मेरे काम को देखते हुए भी पियानो रखेगा?"

"हाँ, एलिज़ा," जैस ने कहा, "पियानो रहेगा।"

"अच्छा, तब तो यह निश्चित समझो," वह बोली और क्योंकि वह समझदार, पवित्रात्मा थी, उसने कहा, "इसे दुछत्ती पर रखना होगा!"

"यही मैंने भी सोचा था," जैस बोला, "और मैं तैयार हूँ।"

ऐसा ही हुआ भी। पियानो दुछत्ती पर रख दिया गया, जहाँ, पूरी तो नहीं, उसकी स्वर-लहरी नीचे तक सुनाई दिया करती। पर दुछत्ती में रखने से उसकी शान जाती रही। और फिर जैस घर में जब कोई अतिथि होता तो कभी भी उसे न बजाता। फिर भी गिरजे की भूल-चूक कमेटी के सदस्य एक दिन उसके घर आ ही पहुँचे। वह स्वयं तो उस दिन भी सावधान था, परन्तु उसकी पुत्री मैटी ने असावधानी बरती। और असावधानी भी क्या, उसे दुर्भाग्य ही कहना चाहिए।

जैस आरम्भ से ही जान गया था कि मैटी की संगीत में रुचि थी। उसने अपने आप एक हाथ से ही "बूढ़ा गायक" बजाना सीख लिया था, और जब जैस को पता लगा तो उसने उसे और भी सिखा दिया था जिससे कि जब वह गाए तो मैटी बाजे पर साथ दे सके। एलिज़ा को यह बहुत ही बुरा लगा, और जिस बात का उसे डर था वही हो गई: बच्चे अपने पिता की संगीत-प्रियता से प्रभावित हो गए। फिर भी जब पियानो की गम्भीर स्वर-लहरी दुछत्ती से उसके कानों तक पहुँचती वह सुने बिना न रह पाती।

जैस की सावधानी और एलिज़ा के द्विगुणित कट्टरपन और गम्भीरतर उपदेशों के होते हुए भी बात फैल ही गई थी। यह तो किसी ने नहीं कहा कि बर्डवल के घर में पियानो है, क्योंकि ठीक से किसी को पता भी न था और नाही कोई ठोक-पीट कर कुछ कह ही सकता था। इतना भर था कि जैस बर्डवल अब लोगों को पहले से कुछ बदला हुआ दिखाई पड़ता। शायद कभी किसी ने पियानो बजते सुन ही लिया हो, या फिर एलिज़ा के चेहरे पर अब जो अपराध की छाया पड़ी रहती थी वही इसका कारण रहा होगा।

कारण कुछ भी क्यों न रहा हो, भूल-चूक कमेटी के सदस्य एक दिन शाम को आ ही पहुँचे। सात बजने वाले थे। भोजन करने के पश्चात् बरतन इत्यादि भी माँज दिए गए थे। मेज़ पर सुबह के चबैने का सामान सजा दिया गया था। जैस और एलिज़ा बैठक में बैठे हुए थे। दिन की गर्मी व श्रम से थके, कुर्सी पर लेटे हुए से वे दोनों बाग़ में बच्चों की उछलकूद सुन रहे थे।

कमेटी वाले अमोज़पीज़ की गाड़ी में बैठ पिछले दरवाज़े से आए और गाड़ी अस्तबल के पास खड़ी कर दी। जैस को तो उनके आने का पता तब चला जब कि पाँवों से रोंदे गए पौधों की गन्ध उसे आई। अमोज़ पीज़ कर्तव्य पथ पर चलते हुए पाँव तले रौंदी जाने वाली चीज़ों का ध्यान न रखता था।

एलिज़ा को आगन्तुकों का आभास पहले मिल गया था। वह पश्चिमी खिड़की से झाँककर देखने लगी कि कौन आया है और देखकर एकदम समझ गई कि क्यों आए हैं ये लोग। "भूल-चूक कमेटी के सदस्य हैं," उसने काँपती आवाज़ में कहा, परन्तु जब अमोज पीज़ ने दरवाज़ा खटखटाया तो वह कुर्सी पर आराम से हाथ लटकाए लेटी हुई थी।

जैस ने दरवाज़ा खोला, "शुभ संध्या, अमोज़! शुभ संध्या, इजरा! शुभ संध्या, हूपर दोस्त!"

कमेटीवाले जैस और एलिज़ा के अभिवादनों का उत्तर दे, अपने बढ़िया कपड़े सम्भालते हुए कुर्सियों पर बैठ गए, मानों कपड़ों से अपने आगमन में जो गम्भीर कर्तव्य छिपा था उसे दिखला रहे हों। परन्तु इससे पहले कि वे संयत हो सकें और इधर-उधर के खेती व मौसम सम्बन्धी प्रश्न पूछ सकें जैस ने पियानो की धोंकनी खुलने की आवाज़ सुनी। आवाज क्या थी मानों उसके हृदय की पीड़ा बोल उठी थी। उसे लगा

कि छदाम की हंडिया के पीछे उसने अपना जन्मसिद्ध अधिकार खो दिया। जैस मन, क्रम, वचन से क्वैकर था और पिछले दो-सौ वर्षों से उसके पूर्वज क्वैकर ही थे। अपने विश्वासों के लिए उन्होंने कष्ट भी सहे थे और आज, जैस ने सोचा, मैं अपना वह विश्वास, वह अधिकार एक पियानो पर लुटा बैठा हूँ।

जैस समझ गया कि मैटी पियानो पर बैठी है। वह उसके स्वभाव से परिचित था। अपने पिता की भाँति मैटी भी एकदम ही बजाना आरम्भ नहीं कर देती। वह पहले पियानो को इधर-उधर छुएगी, धीरे-धीरे हवा देगी और फिर प्यार से अपनी उंगलियाँ बाजे पर फिराएगी। तब कहीं जाकर लय पर आएगी। जैस ने एलिजा की ओर देखा और उसकी ऐंठी हुई उंगलियों से जान गया कि उसने भी सुन लिया है। जैस ने सोचा कि वह ईसू से भी बड़ा पापी है, क्योंकि उसने तो केवल अपना ही अधिकार बेचा था और जैस ने अपना और अपनी पत्नी का भी !

जैस जानता था कि एलिजा को धार्मिक उपदेशों से प्यार था और वह लोगों तक ईश्वर का संदेश पहुँचाना चाहती थी। और अब एक इस बाजे के कारण वह पादड़ीगिरी से हटा दी जाएगी। इससे पहले कि वह कुछ कह सके, वह मन ही मन प्रार्थना करने लगा : ईश्वर, अपने बंदे को इस पाप के फंदे से छुड़ा !

मैटी पहला स्वर निकालने को तैयार ही हुई होगी कि जैस खड़ा होकर बोला, "दोस्तो, आओ हम प्रार्थना करें।" प्रार्थना करना किसी भी क्वैकर समुदाय के लिए आश्चर्य की बात नहीं हो सकती थी, क्योंकि वे छोटी-से-छोटी बात पर भी प्रार्थना करने को तैयार हो जाते। जैस की बात पर सबने अपना सिर झुका लिया, आँखें बंद कर लीं, और कुछ तो स्वयं भी झुक गए।

केवल जैस न झुका। वह अपना मुँह छत की ओर उठाए, भगवान और अपने पाप दोनों को ही देखता हुआ, खड़ा रहा। जब मैटी ने बूढ़ा गायक बजाना आरम्भ किया और कुछ स्वर नीचे बैठक तक भी पहुँचने लगे तो जैस ने चिल्ला-चिल्लाकर प्रार्थना करना आरम्भ कर दिया। वह एक ऐसे आदमी की आवाज़ में प्रार्थना कर रहा था कि जिसके पाप साक्षात् उसके सम्मुख आ खड़े हुए हों। वह भगवान को याद दिला रहा था कि दूसरे कितने पापियों को उसने क्षमा और दया का वरदान दिया था।

उसने बाइबिल के परिच्छेदों में वर्णित प्रत्येक पापी की बात कही। उसने आदम से लेकर सुलेमान तक की चर्चा की और अपने हृदय की घृणा को संगीत में बदल दिया। बाइबिल छोड़ उसने उन सब लोगों के लिए प्रार्थना की जो एक से पापी थे; वह टॉमस जिसने संदेह किया था, वह जूडास जिसने धोखा दिया था, वह मैरी जिसने पश्चात्ताप किया था, सब उसकी प्रार्थना के अंग बन गए।

अपना सिर ऊपर उठाए वह प्रार्थना करता रहा और उसके मुँह से वे बाइबिली नाम निकलते चले गए। कमरे में अँधेरा हो गया और जैस के सिर के लाल बाल अमोज़ पीज़ के बालों की तरह मटमैले से दिखाई देने लगे, परन्तु उसकी प्रार्थना चलती रही और अब अँधेरे कमरे में केवल एक पछताते हुए व्यक्ति की क्षमा याचना की गन्ध-मात्र रह गई।

जैस बगुला भगत न था। यदि प्रार्थना लम्बी हो गई थी, उसकी आवाज़ यदि बाजे के स्वरों के साथ-साथ घटती-बढ़ती जा रही थी तो इसमें उसका कोई हाथ न था। ईश्वर की यही इच्छा थी। और यदि उसकी प्रार्थना मैटी के वाद्यवादन के बाद ही समाप्त हुई तो इसमें भी जस ने कुछ न किया था, कार्य-कारण यहाँ भी ईश्वर ही था।

अंत में जब उसकी प्रार्थना समाप्त हुई और विक्षिप्त से हो गए आगन्तुकों ने मुँह पर हाथ उठाकर चौंधियाई आँखों से इधर-उधर देखना आरम्भ कर दिया तो जैस अपनी कुर्सी पर ओठ मलता हुआ गिर पड़ा। एलिज़ा ने मोमबत्ती जलाई और लैम्प लाने चली गई।

अमोज़ पीज़ ने मोमबत्ती जैस के मुँह के पास लाते हुए कहा, "दोस्त, आज तू ईश्वरीय मंत्र बन गया था। तूने स्वर्गीय सिंहासन पाकर हमें भी ऊँचा उठा दिया। तेरी प्रार्थना ने हमें स्वर्ग के द्वार के इतने पास ले पहुँचाया कि कई बार मुझे लगा कि फरिश्ते बोल रहे हैं और दैवीय वाद्ययन्त्र तेरा साथ दे रहे हैं।"

इतना कहकर उसने मोमबत्ती रखदी, और अपना टोप पहनकर कहा, "ईश्वर महान् है।" दूसरे दोनों सदस्यों ने इस पर "आमीन" कहा और गम्भीरता से अमोज़ पीज़ के पीछे-पीछे दरवाज़े से बाहर चले गए।

जब एलिज़ा लैम्प लेकर वापिस आई तो जैस मोमबत्ती के प्रकाश में अकेला बैठा हुआ था। बाग़ से फिर रौंदे हुए पौधों की गन्ध आ

रही थी, और बच्चे आँख-मिचौनी खेलना छोड़ बोतलों में रखने को जुगनू पकड़ने में लगे हुए थे। जैस आँखें बन्द किए, ईश्वरीय बोझ उठाए हुए मनुष्य की भाँति, गठड़ी बना लेटा-सा हुआ था। परन्तु इस से पहले कि एलिज़ा "आमीन" कह सके, दुछत्ती से फिर "बूढ़ा गायक" के स्वर सुनाई पड़े और जैस का पाँव ताल ठोंकने लगा :

ला·····ला·····नदी किनारा !
ला·····ला····· कितना प्यारा !

उषाकाल में शिकारी

एलिज़ा कहा करती कि सुबह जब तक माँस पकने की गन्ध उसकी नाक तक न पहुँचे लेब कभी अपने बिस्तर से नीचे पाँव न रखेगा। वह प्यार से कहती, "जब तक उसे पता न चल जाय कि चबैना मेज़ पर पहुँच चुका है, लेब दिखलाई नहीं देगा।" लेब था स्वभावतः जल्दबाज़; और अपने इस आरामतलब बेटे से एलिज़ा को विशेष लगाव था।

परन्तु सितम्बर की उस सुबह के अँधेरे में लोहे की वह देगची अभी भी अँगीठी के पीछे लगी लटकी हुई, धुंधली-सी दिखलाई दे रही थी। घर में माँस की गन्ध का नाम तक न था और ना ही रोज़ की तरह रसोई की चिमनी से धुआँ निकलता हुआ ही दिखलाई दे रहा था। बुलबुल अभी तक अपने लकड़ी के पिंजड़े में सोई पड़ी थी, मानों कुछ ही क्षणों में सूर्योदय होनेवाला न हो, बल्कि अभी सूर्यास्त हुआ हो।

वह पूर्णतया जगा न था और शिकायत-भरे स्वर में बड़ाबड़ा रहा था--परन्तु बिस्तर अवश्य छोड़ चुका था। देखने में समायु, परन्तु उससे तीन वर्ष बड़ा भाई, जौशुआ, सामने खड़ा क्रुद्ध स्वर में बोल रहा था। परन्तु उससे भूल हो जाने पर जौशुआ ऐसे ही बात किया करता था, अस्तु लेब नींद में झूमता हुआ पलंग के किनारे बैठा चुपचाप सुन रहा था। वह जौशुआ की बात सुनना नहीं चाहता था, नहीं चाहता था कि गरम बिस्तर छोड़कर तेज़ लोहे की तरह चुभनेवाली सितम्बर की ठंडी हवा में निकल पड़े।

जौश ने पतलून की गैलिस ठीक करते हुए कहा, "लेब, तुझे देखकर मुझे उबकाई आती है, मन क्रोध से भर जाता है। तूने ही बात चलाई थी और अब सदा की भाँति तू ही आनाकानी कर रहा है—और मैं तैयार भी हो चुका हूँ। अब बहुत देर हो जाएगी; और बूढ़ा एल्फ एपलगेट हमारे पहुँचने से पहले ही घर से चला जाएगा और अपने काम में लग जाएगा।"

जौश जो बात उसके मन में थी वही कह रहा था। वह चाहता था कि लेब को पकड़कर पीट दे, परन्तु वह जानता था कि हाथ लगाते ही लेब चिल्लाने लगेगा और सारे घर को जगा देगा। माँ आ जाएगी

और फिर बूढ़े एल्फ की व्यंगमय स्तुति करने का प्रश्न ही नहीं रह जाएगा।

"मैं नीचे जा कर हाथ मुँह धोता हूँ और अकेले ही चला जाऊँगा!" जौश ने कहा।

यह सुनकर लेब समझ गया कि अब बिना उठे काम नहीं चलेगा। जौश कहीं सचमुच ही उसे छोड़कर न चला जाए। उसने फुर्ती से कपड़े बदले और अगली सीढ़ियों से नीचे उतर गया। जौश पीछे से गया था क्योंकि उसे हाथ मुँह धोना था, परन्तु लेब की समझ में हाथ मुँह धोने की कोई ज़रूरत न थी। जौश और बूढ़े एल्फ को छोड़, उसे कौन देखेगा? और बूढ़ा एल्फ भी अपनी नई पत्नी के शौक में उसे न देखेगा!

अपना हाथ जंगले पर रखे वह धीरे-धीरे सीढ़ियाँ उतरता चला गया। बैठक को सवेरे, अँधेरे में देखना उसे अच्छा लगता था, जबकि मेज़ कुर्सियाँ अभी ठीक से रखी गई नहीं होती थीं। उस समय कुर्सियाँ एक दूसरे की ओर मुँह किए न जाने क्या बातें करती रहती थीं और घड़ी और अँगीठी के कोयलों की टिक-टिक में भी एक न समझ में आनेवाला वार्तालाप निहित होता था।

अभी भी केवल वस्तुओं का आकार मात्र दिखाई पड़ रहा था—अँगीठी के पास पा के जूते, कुर्सी की पीठ पर माँ का शाल, सीढ़ियों के खम्भों पर लटकी हुई मैटी की बुनाई। उसे लगा कि यह सब उस जहाज़ की तरह है कि जिसके नाविक अपना सब सामान छोड़कर प्लेग के भाजन हो गए हों और वह उस काण्ड को देखने वाला पहला व्यक्ति हो।

जौश ने दरवाज़े से झाँक कर फुफकारते हुए कहा, "धूप निकला ही चाहती है," और लेब जहाज़ और प्लेग की बात भूल कर भागा।

जौश हाथ मुँह धो चुका था और उसके सिर के मुलायम काले बालों की माँग एक लम्बी पगडण्डी सी लग रही थी। उसके एक हाथ में घोड़े की लगाम थी और दूसरे में कंकड़ों से भरी एक बाल्टी। "तू अपनी चीज़ें आप उठाले!" उसने लेब से कहा।

"अच्छा," लेब ने कहा, "क्या मैं लगाम भी पकड़ लूँ?"

जौश ने उसे घूर कर देखा, पर लेब को अभी ताने देना न आता

था। वह तो बुलबुल से, जिसे वे 'अबोनी' नाम से पुकारते थे, बातें कर रहा था। कहीं भी जाने से पहले लेब बुलबुल से जरूर बातें करता।

सुबह का झुटपुटा और उनके उद्देश्य की गोपनीयता ने उन्हें फुस-फुसाने को विवश कर दिया। "मेरे विचार में तूने जरूर स्वप्न देखा होगा," जौश ने कहा, "कि बूढ़ा एल्फ विवाह करके एक औरत से बातें कर रहा है।"

वे पश्चिमी खेतों से लपककर बढ़े जा रहे थे। कुछ आगे जाकर वे एपलगेट के घर की सीधी पगडण्डी पर हो लगे। नंगे पैरों कटी फसल के खेतों पर चलने से कष्ट हो रहा था, पर इस कष्ट के वे आदी हो चुके थे। नदी के मोड़ से आगे, पेड़ों के झुरमुट से दूर, सलेटी आस्मान पीला होने लगा था। एक कौवा जंगल से खेतों की ओर अपनी दिनचर्या आरम्भ करने के लिए तिरछा उड़ता हुआ निकल गया। लेब की बाल्टी की कंकड़ियाँ उसकी चाल के साथ खड़खड़ा रही थीं।

"नहीं, जौश," उसने गम्भीर मुँह बनाए, मानों अब रो ही पड़ेगा, कहा, "नहीं, जौश, सच कह रहा हूँ। मैंने स्वप्न नहीं देखा, मैंने अपने कानों से सुना था। मैंने तुझे बताया तो था कि जिस दिन बापू मुझे मछली मारने ले गया था उसी दिन की बात है। मैं थककर एल्फ के घर के पास बैठ गया था—और तभी मैंने उसे बातें करते हुए सुना था।"

"उसने क्या कहा था?" जौश ने पूछा। वैसे वह जानता था—लेब ने उसे कई बार बतलाया था—लेकिन फिर भी बूढ़े एल्फ एपलगेट के मुँह से उन शब्दों को निकलने की सोचकर उसे रोमांच हो जाता और वह उन्हें फिर फिर सुनना चाहता। "उसने क्या कहा था?"

"पहले तो मैं केवल उसकी आवाज़ ही सुन सका था—वह क्या कह रहा था यह मेरी समझ में ही न आया था। ऐसा लगता था कि मानों वह किसी बच्चे से बात कर रहा हो। तब उसने कहा था, 'उठने का समय हो गया, मौली। उठो और अपने सुन्दर काले बालों को बाँध लो, प्यारी मौली। रात समाप्त हो चुकी, अब दिन और काम का समय हो आया।' जहाँ तक मुझे याद आता है उसने ऐसा ही कुछ कहा था," लेब ने कहा।

जौश सिर हिलाते हुए बोला, "प्यारी मौली, प्यारी मौली! क्या

तुमने ऐसा कुछ भी सुना जिससे लगे कि वह प्यार कर रहा था ?" यह पूछकर लज्जा से जौश का मुँह लाल हो उठा ।

लेब ने कहा, "तू समझता है कि मेरा सिर फिर गया है जो मैं ठूँठ पर बैठे-बैठे बूढ़े एल्फ को प्यार करते हुए सुनूँ ! वह कौन सुनना चाहेगा ?"

जौश ने यह न बताया कि वह होता तो क्या करता; वह बोला, "यदि उसकी पत्नी है तो हमारे घरवालों को क्यों पता न चला ? वह उसे छिपा क्यों रहा है ?"

"क्योंकि इस बुढ़ापे में शादी करके उसे लज्जा आती है ! उसे डर है कि कहीं लोग उसकी हँसी न उड़ाएँ ।"

अचानक लेब बोलते-बोलते रुक गया । "मुझे खेत में जाना पड़ेगा जौश !" उसने कहा ।

"जब भी हम कोई काम शुरू करते हैं तो तुझे खेत में जाना होता है !" जौश ने कटुतापूर्ण स्वरों में कहा, "तू खेत में ही चला जा ।"

"नहीं" लेब ने कहा, "मैं लौट आऊँगा । तू चल, मैं तुझे पकड़ लूँगा," और पीछे लौटकर वह दौड़ता हुआ अनाज के खेतों में घुस गया । उसकी बाल्टी के कंकड़ खड़खड़ा उठे ।

मैं उसे छोड़कर चला जाऊँ, जौश ने सोचा । मैं दौड़कर वहाँ पहुँच जाऊँ और लेब के आने तक सारा खेल ही ख़त्म हो जाए । लेकिन जब उसने लेब को बेतहाशा, शिकारी कुत्ते की तरह भागते हुए देखा तो समझ लिया कि अकेले जाने से कोई लाभ न होगा । वह चाहे कितना ही तेज क्यों न दौड़े, लेब फिर भी आसानी से उसे पकड़ लेगा, वह आराम से साँस लेता, बातें करता आ धमकेगा । जौश इसे अन्याय मानता था । लेब सप्ताह में एक बार नहाता, कभी अपने सिर के बाल न बनाता और कपड़े भी कभी ठीक से न पहनता । संक्षेप में वह बहुत ही गन्दा लड़का था और फिर भी सब उसे ही प्यार करते थे ।

जौश तेज़ी से पलटकर लपकता बढ़ गया । जंगला कूद कर पगडंडी पर दुल्की हो लिया । पगडण्डी के किनारे-किनारे हरियाली फूल रही थी । पीला आकाश लाली पकड़ने लगा था । हवा तेज़ होने लगी थी और सूखी पत्तियाँ इधर-उधर उड़ चली थीं । विचारमग्न जौश भागे चला गया । उसे सफाई बहुत पसन्द थी; इधर-उधर पड़ी चीज़ों को करीने से रख देना, कुर्सियों को पंक्तिबद्ध कर देना और खिड़कियों के

परदे गिरा देना उसके स्वभाव का अंग था। बात भी ठीक है, उसने निश्चयात्मक ढंग से सोचा, साफ-शुद्ध जीवन ही ईश्वरीय है; और वह पगडण्डी पर दौड़ता चला गया। वह साफ सुथरा भी रहता और पवित्र भी; अस्तु, उसकी समझ में न आता कि क्यों कोई लेब को प्यार करे और उसके अपराधों को क्षमा करे। कम से कम उसकी माँ को—जो कि स्वयं एक पादड़ी है—तो यह बात समझनी-माननी चाहिए। सम्भव है स्वयं ईश्वर भी यह बात नहीं मानता, लेब को पीछे से ताबड़-तोड़ भागते हुए आते देखकर जौश ने सोचा।

"मुझे देर तो नहीं हुई, क्यों?" लेब ने प्रसन्नता से पूछा। जौश ने गम्भीरता से उसे देखकर कहा, "तू खेत को छूकर ही चला आया है!"

लेब ने कोई जवाब न दिया। वह सोच रहा था कि बूढ़ा एल्फ और उसकी पत्नी अपनी खिड़की के बाहर इन्हें सारंगी और कंकड़ियाँ बजाते देखकर कितने आश्चर्यान्वित हो उठेंगे।

"अगर तू लौट की पत्नी होता" जौश ने बेतुकी बात की, "तो तू नमक होता; और नमक भी गन्दा क्योंकि तू कभी नहीं नहाता!"

"मैं किसी की पत्नी कैसे हो सकता हूँ?" लेब ने पूछा।

"भगवान चमत्कार दिखलाने को ऐसा भी कर सकता है!" जौश ने कहा!

परन्तु चमत्कारों से लेब को क्या लेना था। "जौश," उसने पूछा, "क्या बूढ़े एल्फ के पास हमें देने को गुड़ होगा?"

"नहीं," लेब की मूर्खता पर घृणा से मुँह बिचकाकर जौश ने कहा, "वह समझता है कि उसकी शादी की बात किसी को भी मालूम नहीं; तो वह गुड़ क्यों रखेगा?"

अब वे पहुँच ही गए थे। जौश ने रूमाल निकालकर बाल्टी में रख दिया जिससे कि कंकड़ों की खड़खड़ाहट उनके आगमन का भेद न खोल दे। पगडण्डी की बाईं ओर वाली गली में धरती के उभार पर बूढ़े एल्फ का घर था। मछली पकड़ने के लिए जाने के अतिरिक्त, एल्फ की बुढ़िया अंग्रेज़ माँ की मृत्यु के पश्चात् गली अब अधिक चालू न रहा करती।

गली में घुसते ही जौश और लेब फिर फुसफुसाकर बातें करने

लगे। "हमें देर नहीं हुई," लेब ने कहा, "चिमनी से धुआँ तक नहीं निकल रहा है। वे लोग अभी तक सो रहे हैं।"

"देर नहीं हुई तो इसका श्रेय तुझे नहीं मिलेगा।" जौश ने कहा। "जहाँ से मैंने आवाज़ें सुनी थीं वह खिड़की तुझे दिखादूँ।"

वे पंजों के बल चलते हुए घर का चक्कर काटने लगे। वह घर कभी सफेद था परन्तु अब बुढ़ापे में बदरंग हो गया था। वे सूखी हुई फूलों की क्यारियाँ रौंदते हुए, सूखे पत्तों के ढेरों को लाँघते हुए, चल रहे थे।

"वह रही," लेब ने एक खिड़की की ओर इशारा करते हुए कहा। वे मकान की दीवार से सट कर चलते-चलते खिड़की के नीचे पहुँच कर खड़े हो गए।

लेब का चेहरा आनन्द से चमक रहा था। उसने सम्भालकर जौश का रूमाल बाल्टी में से निकालते हुए पूछा, "तू तैयार है?" और बाल्टी उड़ेलने को तैयार कर ली।

"श···श श," चुटकी लेते हुए जौश ने कहा, "श-श! पहले उनकी बातें तो सुनलें।" वे वहाँ कान लगाए सुनते खड़े रहे, अपने हृदय की ही धुक्-धुक् सुनते हुए। एक चिड़िया की चूँ-चूँ के अतिरिक्त उन्हें और कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा था।

तब उन्होंने बूढ़े एल्फ को कुछ कहते हुए सुना। उनकी समझ में तो कुछ नहीं आया पर आवाज़ वैसी ही थी जैसी कि लेब ने सुनी थी—मानों वह किसी बच्चे से बात कर रहा हो। फिर उसकी आवाज़ ऊँची हो गई और जो भी वह कह रहा था उन्हें सुनाई पड़ने लगा।

"प्यारी मौली, अब मुझे उठकर तुम्हारे लिए आग जलानी चाहिए। अपने लम्बे काले बालों को सँवारते हुए तुम्हारा यह कहना कि आग तुम जलाओगी, तुम्हारी सरलता का द्योतक है। परन्तु यह कहकर तुम मुझे बिगाड़ रही हो!"

कुछ देर के लिए वह चुप हो गया। "अब वे प्यार कर रहे हैं," जौश ने कहा। जौश की इस सूझ पर लेब उसे सादर देखने लगा।

बूढ़े एल्फ ने फिर कहना आरम्भ किया, "मैं सदा ही कहता हूँ, मौली, कि बाल सँवारती हुई औरत से अधिक सुन्दर कोई भी दृश्य नहीं हो सकता, विशेषतया जबकि उसके बाल इतने काले हों जितने कि तुम्हारे, उसकी बाहें इतनी सफेद हों जितनी कि तुम्हारी! मौली, बस

देखते ही बनता है," आनन्द से आह भरते हुए उसने कहा, "बस देखते ही बनता है!" लेब अब बेचैन हो उठा था। वह शिवारी[1] शुरू करना चाहता था, पर जौश ने फिर चुटकी लेकर उसे रोक दिया।

"तुम्हारी जैसी सुन्दर व नेक औरत के योग्य कोई भी व्यक्ति नहीं हो सकता, मौली, और फिर तुम तो ट्वीक्स्बरी से आई हो और अतीत की बातें मेरे साथ दोहरा सकती हो....." लगा कि वह अब रो पड़ेगा! "भगवान, जीवन का प्याला भर चुका है।"

वह फिर प्रसन्न हो उठा। "चबैने के लिए बाजरे के पराठे, राब और बढ़िया चाय कि जिसे पीकर चूहा भी घोड़े की तरह चलने लगे। ठीक, मेरी मौली, यही चबैना बनना चाहिए।"

"पर मौली तो बोलती ही नहीं," लेब को शिकायत थी।

"शायद वह गूँगी है," जौश बोला, "सम्भव है इसी कारण वह उसे छिपा कर रखता है।"

उन्होंने पुआल की दरी की सर-सर सुनी और बूढ़े के नंगे पाँव फर्श पर पड़े। "मैं नीचे जा रहा हूँ, मौली," उसने कहा।

"अब," जौश ने कहा, "अब," और उसने सारंगी के तार खींच कर बजाना आरम्भ कर दिया। सारंगी में से ऐसी आवाज़ निकली कि जैसे दरवाज़े में पूँछ फँसी बिल्ली की आर्त्तपुकार हो। लेब ने भी ज़ोर-ज़ोर से बाल्टी हिलाना आरम्भ कर दिया और आसपास का सारा वातावरण उस शोर से गूँज उठा। यही तो उन दोनों की योजना थी और यही वे अब कर रहे थे। बूढ़ा एल्फ शीघ्र ही अपनी पत्नी को लेकर खिड़की पर आ जाएगा और एक छोटा-सा भाषण देगा। शायद उन्हें कुछ गुड़ भी दे दे।

लेकिन बूढ़ा एल्फ अपनी पत्नी को नहीं लाया। वह सिर को ढके, रात के ही कपड़े पहने, अकेला ही खिड़की खोलकर इधर-उधर देखने लगा, मानों उसे कुछ पता ही न हो कि आँखों को क्या देखना पड़ेगा! खिड़की के नीचे इन लड़कों को खड़ा देख क्रोध से भी अधिक आश्चर्य

---

१. नव-दम्पति को सुहागरात से अगली सुबह, मुँह अँधेरे ही बाजे इत्यादि बजाकर पड़ोसियों का अभिवादन करने का एक अमरीकी रिवाज। नव-दम्पति शयनकक्ष से बाहर आ आगन्तुकों का स्वागत करते हैं और जल-पान इत्यादि से उनका सत्कार करते हैं। यही रिवाज "शिवारी" है।

से ही उसने कहा, "इस गुलगपाड़े का क्या मतलब ? इतनी सुबह ? मेरी खिड़की के नीचे ? तुम दोनों पागल तो नहीं हो गए हो ?"

लेब ने ही बात की ! शिवारी एक सभ्य रिवाज है; शादी हो जाय और शिवारी न हो इससे बड़ा निरादर तो हो ही नहीं सकता । अस्तु, लेब अपने किए पर लज्जा नहीं, गौरव का अनुभव कर रहा था। "हम तो तेरे और तेरी नई पत्नी के उपलक्ष्य में शिवारी कर रहे थे," उसने कहा, "तेरे और मौली के उपलक्ष्य में," बूढ़े एल्फ को घूरते देख उसने समझाते हुए कहा ।

"क्या मतलब ?" बूढ़े एल्फ ने भौंचक्का-सा होकर पूछा और पहली बार लेब को लगा कि सम्भव है उन्होंने ठीक नहीं किया ।

जौश ने कहा, "यह तो तेरे और मौली के लिए शिवारी है। हमें तरा भेद मिल गया और हम सबसे पहले आए हैं।"

"मेरा भेद," बूढ़े ने कहा और ऐसे देखने लगा कि मानों कुरते के अन्दर उसके कन्धे सिकुड़ने लगे हों ।

"हमने तुझे उससे बातें करते सुना और जान लिया कि तेरी शादी हो गई है ।" लेब बोला ।

"बातें करते हुए," बूढ़े ने मानों पहली बार जागकर उसकी बात दोहराई, "तूने मुझे उससे बातें करते हुए सुना ?" वह बहुत देर तक उनकी ओर एकटक देखता हुआ मौन खड़ा रहा, फिर बोला, "पीछे से घूमकर अन्दर आजाओ, लड़को, दरवाजा खुला है। मैं अभी आया।"

जौश और लेब के दरवाज़ा खोलकर अन्दर जाने से पहले ही बूढ़ा नीचे पहुँच चुका था । "आओ, बैठो," उसने कहा, पर दोनों लड़कों को खड़ा रहना ही रुचिकर प्रतीत हुआ । बूढ़े ने सिर से टोपी उतारकर कुरते के ऊपर एक पतलून चढ़ा ली थी, पर पाँव उसके नंगे थे । लेब उसके पाँव के अँगूठे के काले बालों के गुच्छे पर से अपनी आँखें हटाए रखने का प्रयत्न करता रहा । बूढ़ा एल्फ अपने ओठ मलता रहा । उसकी दुःखी आँखों में अब भी घबराहट का पुट था ।

"लड़को," उसने कहा, "मेरी शादी नहीं हुई है।" उसने हाथ बढ़ाकर टोकरी में से भुट्टे निकाल अँगीठी पर रखी तेल की कढ़ाई में चढ़ा दिए ।

लेब सोच न सका कि क्या कहे ! जौश ने सोचा कि कोई भी आदमी नौकरानी से इस प्रकार बातें नहीं किया करता । उसने कहा, "हमने तुझे बातें करते सुना था, प्यारी मौली से बातें करते सुना था ।"

कुछ कहने से पहले बूढ़े एल्फ ने आग दहका दी। तब एक नंगे पाँव पर दूसरा नंगा पाँव रखकर वह कुर्सी पर बैठ गया।

"लड़को, तुम्हारी आयु कितनी है?"

"तेरह वर्ष," जौश ने कहा।

"दस वर्ष," लेब ने उत्तर दिया।

"तुम छः-सात भाई-बहन हो, ना?"

"छः," जौश बोला, "बहन साराह मर गई थी।"

"छः," बूढ़े ने दोहराया, "तब तो तुम्हें कभी घर में अकेलापन महसूस न होता होगा।" वह कुर्सी पर पाँव से पाँव मलते हुए झूलने लगा। "जब तक माँ थी, मुझे कभी भी अकेला न लगता था। तुम्हें मेरी माँ की याद है?" दोनों ने सिर हिलाकर "हाँ" कहा। बूढ़े की माँ एक सूखी हुई औरत थी और जब भी वे मछली पकड़ने जाते हुए उसके घर के पास से गुज़रते तो उनसे बातें करने बाहर आ जाया करती थी।

"जब तक वह जीवित थी," बूढ़े एल्फ ने कहा, "मैं अकेलेपन का अर्थ तक न जानता था। माँ बहुत बातें किया करती थी। कोई बात ऐसी न थी जिसमें उसे रुचि न हो। सुबह मेरे जागने से पहले ही उठकर वह पूछती कि मेरे विचार में उस दिन मौसम कैसा रहेगा! वह नदी और खेतों के विषय में बातें करते न थकती थी। चाहे कोई भी बात क्यों न हो, वह बोले ही चली जाती थी। हाँ, मैं सुनते-सुनते थक जाया करता था। हाँ, थक जाया करता था!" उसने उन स्तम्भित लड़कों से कहा, "और जब वह मर गई तो मुझे लगा कि मैं अकेले में न रह सकूँगा। सुबह इस सूने घर में उठना बुरा लगता, एक दम सूना घर," और वह उनकी ओर झुक गया जिससे कि वे देखलें उसे कितना कष्ट सहना पड़ा था।

देखकर जौश और लेब दो क़दम पीछे हट गए।

"तब मैंने मौली से बातें करना आरम्भ कर दिया," बूढ़े ने उन्हें बताया।

जौश ने सूखे कंठ से पूछा, "मौली कौन है? तुम्हारी रखैल?"

"नहीं, वह रखैल नहीं है। वह कोई भी नहीं है। उसका कोई अस्तित्व ही नहीं है। मैंने ही उसे बनाया है। मैं अपनी आवाज़ सुनने के लिए उससे बातें कर लेता हूँ। मैं समझ लेता हूँ कि वह मेरी पत्नी है। इसमें कोई बुरी बात तो है नहीं, कम से कम मैंने तो यही समझा था। दूसरे, मुझे ख्याल न था कि कोई मेरी बातें सुन भी लेगा।"

अँगीठी धक-धक करके जल रही थी और रसोई गरमाने लगी थी, परन्तु जौश को अब भी ठंड लग रही थी—मानों उसके शरीर का समस्त रक्त हृदय में आकर जम गया हो और लोहे की एक भारी बाल्टी किसी ने उस पर रख दी हो। वह बूढ़े एल्फ की ओर यों देख रहा था कि वह भी उसके स्वप्न का एक अंग हो।

परन्तु लेब मुस्करा रहा था। बात उसकी समझ में आ गई थी।

"तेरा कोई और भी है ?" उसने पूछा।

इस बार बूढ़ा चकराया। "हैं ?" उसने पूछा।

"मौली के अतिरिक्त किसी और से भी तू बातें करता है ?" लेब ने समझाकर पूछा।

"नहीं, केवल एक मौली। मैं बहु-विवाह में विश्वास नहीं करता।" बूढ़े ने कहा।

लेब बहु-विवाह की बात समझता था। "तेरे बच्चे तो हो सकते हैं ?" उसने कहा।

"नहीं," बढ़े एल्फ ने कहा, "इस उम्र में बच्चे मुझे परेशान कर देंगे।"

जौश का दिल भारी होता चला जा रहा था। "तेरा दिमाग़ ख़राब हो गया है," उसने कहा, "तेरा भेजा कमज़ोर हो गया है!" वह यही मानने को विवश था, क्योंकि बच्चे से बड़े होने का अर्थ उसके विचार में था जो जी में आए वही करना, कभी चिन्ता न करना, और बात में अपनी पसन्द रखना जिससे कि अंत में मनुष्य प्रसन्न रह सके। यदि यही न हो सके तो जीने का तात्पर्य ही क्या, बड़े होने का लाभ ही क्या ? अगर बूढ़े एल्फ की भाँति डरपोक और अकेला ही हो जाना हो—नहीं, यह बूढ़ा पागल है, एकदम खटमल की तरह पागल!

बूढ़ा एल्फ ओठ मलते हुए सिर हिलाए जा रहा था। "हाँ, यही बात और लोग भी कहेंगे, इसमें कुछ शक नहीं। अगर उन्हें इस बात की हवा तक भी मिल गई तो लोग कहेंगे, 'बूढ़ा एल्फ पागल हो गया है।' वैसे यदि तुम दोनों अपना मुँह बन्द रख सको तो कोई कुछ न कहेगा। मैं तुमसे कह तो नहीं रहा हूँ पर तुम अपना मुँह बंद ही रखना, क्योंकि तुम्हारे माँ-बाप तुम्हारा इस प्रकार आकर दूसरों की बातें सुनना पसन्द न करेंगे। और तुम तो जानते ही हो मैं तुमसे अधिक पागल नहीं हूँ!"

लेब बूढ़े एल्फ के पास ही खड़ा था। पागल? लेब ने आज तक इससे अधिक समझदार आदमी न देखा था। "मैं किसी से भी नहीं कहूँगा, मिस्टर एपलगेट," उसने कहा, "और आप भी मेरी माँ से कुछ न कहना।" और उन दोनों ने हाथ मिलाए।

बूढ़े एल्फ ने जौश की ओर देखा, वह रसोई के दरवाज़े से सटा खड़ा था। "और तू, जौशुआ?"

"तू ज़रूर पागल है," जौश ने कहा, "पर घबरा मत, मैं किसी से नहीं कहूँगा।" इतना कह कर वह दरवाज़े के बाहर चला गया।

लेब ने उसे कोने से निकलकर भागते हुए देखा। "अब मुझे भी जाना चाहिए," उसने कहा, "सब नाश्ता कर चुके होंगे।" पर उसे जाते हुए बुरा लग रहा था। सूर्य की किरणें खिड़की से अन्दर घुसी आ रही थीं, चाय की कतली सूँ-सूँ कर उठी थी और लकड़ी के सन्दूक में से एक बिल्ली बाहर निकल आई थी। दूर किसी चीज़ को देखता हुआ बूढ़ा एल्फ कुर्सी पर झूले ही जा रहा था।

"अच्छा, विदा", लेब ने कहा।

बूढ़ा एल्फ खड़ा हो गया और कुछ वे दोनों एक दूसरे को देखते रहे।

"फिर कभी आना," मुस्कराकर बढ़े एल्फ न कहा।

"धन्यवाद," लेब बोला, "मैं आऊँगा", और वह जौश के पीछे भाग चला। उसकी बाल्टी खड़खड़ा उठी।

बत्तख़ की चाल

पश्चिमी खिड़की के पास, लम्बे मेज़ पर जहाँ उसके बाग़ीचे के औज़ार इत्यादि रखे थे, जैस बैठा हुआ था। जैस पेड़-पौधों का व्यापार किया करता था और बसन्त ऋतु उसके पौधों की ही नहीं, बल्कि धरती के प्रस्फुटन की द्योतक थी, यदि एक सप्ताह और मौसम साफ रहा तो वह काम में लगेगा। रबड़ के जूते पहने हिमाच्छादित धरती से फूटने वाले नए जीवन को छुएगा और उसी धरती को फिर से फूलते देखेगा। कुछ ही दिनों में कई प्रकार के फूलों की नई फसल तैयार हो जाएगी।

बसन्त भी अनेकरंगी ऋतु होती है, उसने सोचा और प्रति वर्ष परिवर्तित रूप में आती है। कोई दो वर्ष एक से नहीं होते। कभी इतनी बरसात और दलदल लिए आती है कि घोड़ा व सवार दोनों ही डूब जाएँ; कभी ठंड और इतनी बरफ लिए कि चारों ओर मकड़ी का जाल सा ही तन जाए, और कभी सुदूर प्रदेश में पकने वाली फसलों की उष्ण सुगन्ध लिए। परन्तु इस बार केवल बरफ ही पिघल रही है जिसकी कि कोई गन्ध ही नहीं होती। विभिन्न रूपों वाली बसन्त का आगमन सदा ही शुभागमन होता है।

"और हम हर बसन्त में एक जैसे ही रहते हैं।"

"जैस, तूने क्या मुझसे कुछ कहा ?"

"तेरी समझ में आनेवाली बात नहीं है, एलिज़ा !"

बसन्त में जैस का मन मानवता के प्रति अशान्ति से भर उठता—पुरुषों से भी अधिक नारियों के प्रति ! उसे लगता कि बसन्त मानवमात्र पर एक प्रकार आवरण डाल देती है : ऋतु इतनी समर्थ और मानव पिछले वर्ष जैसा ही; वही पुरानी खुदाई, वही पुरानी खेतियाँ, और वही पुरानी कार्यशैली !

पीछे खाने का मेज़ सजा हुआ था। चम्मच, प्याले, तश्तरियाँ इत्यादि सब करीने से रखे थे और अस्ताचलगामी सूर्य की किरणें उन चमचमाते बरतनों पर पड़ रही थीं।

"बसन्त आ पहुँची," उसने कहा, "और हमारे घर में कोई एक पंक्ति कविता की भी नहीं लिख रहा है !"

एलिज़ा सुनकर चुप ही रही। वह सूखी नाशपातियों का मुरब्बा चूल्हे से उतार रही थी। मुरब्बा उतार कर उसने सफाई से मेज़ पर रख दिया और उबलरोटियाँ चूल्हे में लगा दीं।

उसके कपोल आग की गरमी से लाल हो उठे थे और वह जो बात कहने जा रही थी उसके कारण उसकी आँखें उमड़ी पड़ती थीं।

"जैस बर्डवल, रात को खाना खाते समय शायद एक अच्छी कविता सुन कर तुझे आनन्द आएगा।"

जैस ने एक निश्वास लिया। रसोई भी, बाग़ीचे की तरह, नाशपातियों की सुगन्ध से भर गई थी। उसने कहा, "तू जानती है, एलिज़ा, मैं तुझे परिवर्तित रूप में देखना नहीं चाहता। तू....."

"तू," एलिज़ा बीच ही में बोल पड़ी, "भी तो मर्द ही है; चाहता है चित भी तेरी रहे और पट भी।"

भगवान के वरदान रूपी इन बसन्त के दिनों में यह बेतुकी बहस सुनकर जैस को आश्चर्य हुआ।

"एलिज़ा," जैस के शब्दों में बल था, "मेरा मतलब तुझसे नहीं था। परन्तु मैं सदा ही सोचता हूँ कि लड़कों में से भी तो कोई बसन्त में कविता नहीं बनाता !"

"जौश तो कविता लिखता है," एलिज़ा ने कहा।

"तूने कभी पढ़ी भी उसकी कविताएँ, एलिज़ा ?"

एलिजा ने सिर हिलाकर सकारात्मक उत्तर दिया।

जैस ने सोचा अब इस आख़िरी उम्र में एलिजा को कविता और कविता का भेद बताने से फ़ायदा !

एलिज़ा ने अपने पति को ग़ौर से देखते हुए कहा, "जैस बर्डवल, तेरा मन अनर्गल बातों से भरा है। तेरे ख़ून को कुछ पतला करना पड़ेगा ! मैं तुझे चाय का एक बढ़िया प्याला बना देती हूँ।"

जैस ने बरफ के बड़े-बड़े तोदे पिघलाने वाले सूर्य की ओर से अपनी आँखें हटा कर एलिज़ा को देखना आरम्भ किया। वह हंडिया में फलिएँ डाल रही थी।

"यही बात है, एलिज़ा," वह बोला, "यही तो सोचने की बात है।"

एलिज़ा ने उसे किसी भी प्रकार का प्रोत्साहन न दिया, परन्तु वह बोले ही चला गया।

"ऋतुओं के साथ-साथ धरती भी बदलती रहती है। बसन्त कभी एक जैसा नहीं होता। एक केवल हम हैं जो लोहे की तरह बदल नहीं पाते और ज़रा-सी भी ताज़गी नहीं जटा पाते।"

"जैस, तुझे बसन्ती बुख़ार हो आया है!"

"बसन्त आते ही प्रति वर्ष जिस प्रकार तू बत्तखों के लिए बेताब हो उठती है, उससे तो मैं समय और तापमान तक बतला सकता हूँ! 'जैस, कुछ बत्तखें तो ले ही लेनी चाहिएँ, नहीं।' इस बार बसन्त भी विलम्बित-सी आ रही है," जैस ने कहा, "तूने बत्तखों की कोई बात ही नहीं कही और अभी तक चारों ओर बरफ पड़ी हुई है!"

"जैस, तू सदा ही बत्तखों के विरुद्ध क्यों रहा है?" एलिज़ा ने मेज़ के नीचे से कुर्सी निकाल बैठते हुए कहा।

"नहीं, मैं बत्तखों के विरुद्ध नहीं हूँ। बल्कि बत्तखें ही जो खेती के विरुद्ध हैं। आधे एकड़ खेत को तेरे खदेड़ते-खदेड़ते ही साफ कर देंगी। और दो मिनट में दो साल की मेहनत बिगाड़ देंगी। नहीं, एलिज़ा, तेरी बत्तखें ही मेरे विरुद्ध हैं!"

"अगर जंगले मज़बूत हों....."

"एलिज़ा, हमारे जंगले मज़बूत हैं, परन्तु जंगलों से डर जाने वाली बत्तखें आज तक पैदा ही नहीं हुईं! बत्तखें तो किसी भी जंगले को पार कर खेत में घुस जाएँगी। कहीं घुसने को छेद न मिले तो कुंडा ही खोल लेंगी!"

"जैस, तुझे बत्तखें पसन्द नहीं हैं!" एलिज़ा ने कहा।

"यह तो मैं नहीं कहूँगा कि मुझे बत्तखें पसन्द नहीं; परन्तु उनसे अधिक नीच और गन्दा जानवर दूसरा कोई न होगा, कम से कम मैंने तो आजतक नहीं देखा। एक बात मैं कभी भी न समझ सका कि तुझे ही उन कमीनी आँखोंवाले जानवरों में क्या दिखलाई देता है!"

"बत्तखों की चाल," एलिज़ा ने असाधारणतया स्वप्निल ढंग से कहा, "मनोहारी होती है! बत्तखें हंसों की तरह सुन्दर होती हैं और जाड़ों में वे अपनी गरदनें निकाल कर इधर से गुज़रनेवाली मादा बत्तखों को पुकारती हैं। मेरे पिता को बत्तख पालने में कभी कठिनाई नहीं हुई। वे

कहा करते थे कि सुबह खाने के लिए बत्तख के अण्डे से अच्छा और कुछ नहीं होता।"

जैस जानता था कि बसन्त की बात के साथ-साथ एलिज़ा के बाप और बत्तखों के अण्डों की बात उसे चुपचाप सुन लेनी चाहिए, फिर भी वह कहे बिना न रह सका, "बत्तख का अण्डा आवश्यकता से अधिक फूला हुआ होता है, एलिज़ा," परन्तु फिर इतना कहकर वह ज़ोर से बोलने लगा, "मौसम रास्ते पर आता जा रहा है और मुझे लगता है कि तू कहा चाहती है, 'जैस, बत्तख के अण्डे जमा कर लेने चाहिएँ'।"

एलिज़ा ने उठकर चूल्हे पर की फलियाँ निकालते हुए कहा, "मौसम जितना तू समझता है उससे अधिक शीघ्रता से बदल रहा है, जैस, मैं एक बार अण्डे सेने को रख भी चुकी हूँ!"

जैस ने अपनी पत्नी की ओर देखा। वह समझ न सका कि बसन्त आते ही मनुष्यों में भी परिवर्तन देखने की इच्छा उसने क्यों की! और एलिज़ा ने बिना कुछ कहे ही काम करना क्यों आरम्भ कर दिया? उस समय का वह विवाद उसे अच्छा न लगा।

"तूने अण्डे कब रखे?" अंत में उसने पूछ ही लिया।

"कल," एलिज़ा ने उत्तर दिया।

"कहाँ मिले?"

"ओवरबीयों के घर से," एलिज़ा बोली। दक्षिण की ओर रहने वाले ओवरबी उन लोगों के पड़ोसी थे।

"तो उन लोगों के पास काफी अण्डे होंगे, जो उन्होंने तुझे कुछ दे दिए।" जैस ने कहा!

"तू जानता तो है कि ओवरबी कभी भी कुछ 'देते' नहीं। मैंने मोल लिए हैं, अपने पैसों से!" एलिज़ा ने कहा।

"कितने?"

"आठ," एलिज़ा बोली।

जैस फिर खिड़की की ओर घूम गया। संत्रस्त आकाश, शोकातुर काली व सफेद पृथ्वी से विदा ले, सूर्य अस्त हो चुका था। "पाँच एकड़ अनाज गया," उसने हिसाब लगाते हुए कहा।

"तूने कहा था कि तू मुझ में कुछ परिवर्तन देखना चाहता है। 'नल की टूँटी की भाँति स्थायी,' तूने कहा था!"

"हाँ, मैंने कहा था," जैस अनमना-सा बोल पड़ा, "म बातें बहुत करता हूँ।"

"एनोक और लड़के लौट आए," उसकी बात का उत्तर न देते हुए एलिज़ा ने कहा, "अपनी कुर्सी इधर सरका ले।"

दूसरे दिन सुबह नाश्ता करके एनोक और जैस साथ ही साथ घर से निकले। छतों से भाप निकल रही थी और धूप उस दिन और दिनों की अपेक्षा अधिक तेज़ थी। नदी की दक्षिणी शाखा, पिछली बरफ से डबडबाई, शोर मचाती बहे जा रही थी। एक मुर्ग़ा ज़ोर से चिल्लाकर अपनी आवाज़ तहसील भर के मुर्गों को सुनाने का प्रयत्न कर रहा था।

"एनोक," जैस ने अपने नौकर से कहा, "तू बत्तखों के विषय में क्या सोचता है?"

एनोक की हर विषय में कोई न कोई राय थी। बत्तखों की बात तो एक घरेलू विषय था, जिस पर वह अधिक कुछ न कह सकता था, और ना ही, उसके विचार में, मि० इमरसन ने ही इस विषय में कभी कुछ कहा था। "जाड़ों में, नवम्बर, दिसम्बर के लगभग मेज़ पर रखी भुनी बत्तख़ से स्वादिष्ट और कुछ नहीं होता," वह बोला।

"मेज़ पर रखी बत्तख़ की नहीं, मैं चलती-फिरती बत्तख़ की बात कर रहा था! अनाज की बालियाँ खाती हुई बत्तख़ की बात, एनोक, इधर-उधर घूमती, टें-टें करती बत्तख़ की बात, जो किसी को चुप-चाप सोचने तक नहीं देती और साँप की तरह घूर-घूरकर देखती रहती है।"

एनोक कुछ क्षणों तक अपने मालिक की ओर देखता रहा। "मि० बर्डवल, मेरे विचार में यदि कोई दुःखदायी चिड़िया है तो वह बत्तख़ है! कष्टदायी और अ-निर्भरयोग्य!"

"मुझे ख़ुशी है कि बत्तखों के विषय में हम दोनों समान ढंग से सोचते हैं। नहीं तो मैं यह छोटा-सा काम कर देने को तुझसे न कहता," अपनी जेब से एक लम्बी सूई निकालते हुए जैस ने कहा।

एनोक ने घबराकर सूई को देखा। "मैंने कभी सूई से काम नहीं किया, मि० बर्डवल!"

"अरे, यह काम तो तू कर ही सकेगा," जैस ने प्रसन्न होकर कहा, "बात यह है, एनोक, कि एलिज़ा ने बत्तख़ के आठ अण्डे सेने को रख दिए हैं। यदि

भाग्य ने साथ दिया तो अगले वर्ष यह संख्या २४ हो जाएगी और बढ़ती ही चली जाएगी ! जैसे तेरे विचार हैं, एनोक, उन्हें देखते हुए मैं तुझे यह धन्धा रोक देने का एक अवसर दिया चाहता हूँ। प्रत्येक अण्डे में सूई से एक छोटा-सा छेद करदे और यह सारी योजना ही रद्द हो जाएगी, एलिज़ा को पता तक न चलेगा !"

"मुझे हाथों से सफाई का काम करने की आदत नहीं है; कहीं उठाते-उठाते कोई अण्डा टूट ही न जाए !" एनोक ने कहा ।

"एनोक," जैस ने पूछा, "कहीं बत्तखों के प्रति ममता तो नहीं उमड़ने लगी तेरे हृदय में ?"

"बत्तखों की बात नहीं," साफ बात कही एनोक ने, "तुम्हारी पत्नी का डर है ! मैं उसका कृपापात्र रहा हूँ और अगर अब अंडे फोड़ दूँ तो वह निराश हो जाएगी । तुम स्वयं ही यह काम क्यों नही करते, मि० बर्डवल ?"

"कारण वही है," जैस ने कहा, "और भी कई कारण हैं ! और अगर कभी एलिज़ा ने पूछ ही लिया कि अण्डे छेड़े तो नहीं थे तो मैं 'नहीं' कहने की स्थिति में रहना चाहता हूँ ।" जैस ने सूई एनोक की ओर बढ़ा दी, पर उसने हाथ न बढ़ाया ।

"ऐसा करने की कोई ज़रूरत ही नहीं," एनोक ने कहा, "पहले तो ये अण्डे सेये ही नहीं जा सकेंगे, और फिर ओवरबी परिवार लोमड़ी की तरह धोखेबाज़ है, उन्होंने अवश्य ही ख़राब अण्डे बेचे होंगे !"

" तुझे इस बात का शुरू से पता था ?" जैस ने पूछा ।

"हाँ !"

"यह रही सूई," जैस ने कहा ।

"तो यह काम भी और दूसरी दिनचर्याओं की भाँति तुम्हारी आज्ञा समझकर ही करना होगा ?" एनोक ने पूछा ।

"हाँ," जैस बोला, "यही समझ ले !"

एनोक ने सूई ले ली, मानो घबरा रहा हो ऐसे उस पकड़ लिया और मुर्ग़ीख़ाने की ओर चला गया ।

बत्तख़ के अण्डे तीस दिन में तैयार हो जाते हैं । और तीस दिन, बसन्त ऋतु में खेती सम्बन्धी काम करते हुए, बीतते देर नहीं लगती । एलिज़ा ने सेने के लिए एक अच्छी मुर्ग़ी चुन ली थी और वह प्रायः अण्डों

की ही बातें सोचा करती और जैस और एनोक एलिज़ा और अण्डों पर अपनी-अपनी आँखें लगाए रहते ।

जिस दिन अण्डे फूटकर बत्तखों का जन्म होना था, जैस सुबह नाश्ता करते-करते बोल पड़ा, "यदि मैं तेरी जगह होता, एलिज़ा, तो उन अण्डों पर आशा लगाए न बैठा रहता । कुछ दिन हुए एनोक भी कह रहा था कि यदि वे अण्डे तैयार न हों तो उसे आश्चर्य न होगा । उसके विचार में वे अण्डे खराब थे ।"

एनोक तश्तरी में अपनी काफी डालने में व्यस्त था और फिर उसे ठंडा करने में लग गया; परन्तु एलिज़ा तब तक रुकी रही ! "क्या तूने यह बात कही थी, एनोक ?" एलिज़ा ने पूछा ।

एनोक ने जैस की ओर देखकर कहा, "हाँ, मुझे याद आता है कि कही थी ।"

"पर ऐसा कहने का कारण, एनोक ?"

"कारण," जैस बोला, क्योंकि एनोक फिर अपनी काफी को लेकर व्यस्त हो उठा था, "ओवरबी परिवार ! एनोक उन लोगों पर भरोसा करना नहीं चाहता । एनोक, तूने उन्हें लोमड़ी की तरह धोखेबाज़ कहा था, ना ?"

परन्तु एनोक उसी क्षण काम के बहाने बाहर चला गया । जैस बोला, "यदि खाने को कुछ बाँध दे, एलिज़ा, तो फिर दोपहर में मैं घर आकर तुझे कष्ट न दूँगा । दूर जा रहा हूँ, आने जाने का समय ही बच जाएगा !"

एलिज़ा को यह सुनकर आश्चर्य हुआ, क्योंकि जैस इससे भी दुगनी दूर से गरम भोजन के चाव में घर आ जाया करता था, परन्तु उसने कुछ बचे हुए सेब और रोटियाँ व अचार इत्यादि एक थैले में रख कर दे दिया ।

"यह तो बुरी बात है कि दिन का खाना न खा सकोगे," उसने पति से कहा, पर जैस, "काम का बोझ है, काम का बोझ," कहता हुआ जल्दी से चला गया ।

जैस उस दिन संध्या हुए कुछ देर से लौटा और घर में घुसने से पहले बाड़े में जाकर कई एक काम निकालकर करता रहा । रसोई में घुसते ही उसे लगा कि कहीं भी कुछ गड़बड़ नहीं है—लैम्प चमक रहे हैं, मेज़ सजे हुए हैं, अँगीठी धधक रही है और अँगीठी के पास रखे एक डिब्बे के ऊपर एलिज़ा झुकी हुई थी । जैस देखने और सुनने के लिए रुक गया; डिब्बे के अन्दर से कोमल व आनन्दप्रद, चिड़िया जैसी, पीं-पीं की आवाज़ आ रही थी । न चाहते हुए भी वह एलिज़ा

के पास जा पहुँचा। बार-बार अपनी चोंच एलिज़ा की ओर उठाकर दला-हुआ अण्डा खाते हुए एक सुनहरी, सलेटी रंग के बत्तख़ के बच्चे को पीं-पीं करते उसने देखा।

एलिज़ा ने प्रसन्न मुद्रा से पति को देखकर कहा, "एनोक ठीक ही कहता था, वे अण्डे ख़राब थे। केवल एक ही ठीक निकला। मैं इसे सामन्था कहा करूँगी, यह नाम मुझे बहुत पसन्द है!"

"सामन्था," जैस ने नाम या चिड़िया के प्रति किसी भी प्रकार का उत्साह दिखलाए बिना कहा, "तुम्हें पता है कि यह मादा है?"

"नहीं," एलिज़ा ने कहा, "पर नर हो तो भी सामन्था का 'साम' आसानी से किया जा सकता है।"

तभी रसोई के लिए लकड़ी का एक भार उठाए एनोक आ गया। "एनोक," जैस ने पूछा, "तूने सामन्था या साम को देखा है?"

एनोक मुँह ही मुँह में कुछ कह गया जिसका अर्थ जैस ने सकारात्मक लगा लिया।

"मैं तो समझा था, एनोक, कि तेरी राय में वे सारे अण्डे ख़राब थे।"

"क्या कहें, मि० बर्डवल, इंसान से ग़लती हो सकती है, गिनने में भूल भी हो सकती है।"

"परन्तु आठ तक गिनने में तो किसी से भी ग़लती नहीं होनी चाहिए," जैस ने कहा।

एलिज़ा उनकी बातें नहीं सुन रही थी। वह पीं-पीं करते उस बत्तख़ के बच्च को पुचकार रही थी। "तुझे पता है," उसने जैस से पूछा, "कि यह पहली बार ही मैं कुछ पाल रही हूँ!"

"क्यों, तेरे पास एबोनी तो है," जैस ने कहा।

"मैं पिंजरेवाले जानवर की बात नहीं कह रही," एलिज़ा बोली, "मैं ऐसे की बात कर रही थी जो साथ-साथ चल फिर सके। ख़राब हो गए उन अण्डों का अब मुझे कोई दुःख नहीं। आठ होते तो एक-आध खाने को काटना ही पड़ता; पर अकेली सामन्था को तो मैं पालतू मानकर ही रखूँगी!"

वह पालतू हो कर ही रही: सामन्था को जो और खाते वही खाने को मिलता, सिवाय उन चीज़ों के जिन्हें एलिज़ा समझती कि वह पचा न सकेगी—ऐसी वस्तुएँ मनुष्यों को दी जातीं, सामन्था को नहीं! केक,

बिस्कुट, मुरब्बे, भुट्टे, सामन्था को जो न मिल सके ऐसा कुछ भी न था। और शीघ्र ही बड़े-बड़े पाँव वाला वह बच्चा फूलकर कुप्पा हो गया!

"दुखदायी कितनी है!" जब भी उसके विषय में सोचता, जैस कहता। बत्तखों के स्वभाव की जिन-जिन बातों से उसे घृणा थी वे सब तो सामन्था में थी हीं, परन्तु उनके अतिरिक्त उसमें अपनी भी कुछ ऐसी बातें थीं जिनसे जैस को कष्ट पहुँचता। उसे दहलीज़ में खिलाया जाता था, इस लिए वह हमेशा ही पाँव-तले आने को रहती। कितना ही चिल्लाए जाओ पर वह स्वेच्छा बिना अपने स्थान से कभी न हटेगी। यदि अधिक क्रुद्ध होकर उससे बात करो तो अपने परों से मारने लगेगी या पिंडलियों का माँस ही काट खाएगी, जिससे कि बहुत दिनों तक पीड़ा ही न जा सकेगी। बच्चों के हाथ से छीनकर जो भी मिले खाजाएगी; और जैस की अपने हाथों से लगाई गई क्यारियाँ तो उसने चाट-चाटकर बिल्कुल नंगी ही करदीं! और कभी-कभी तो बिना किसी बात के ही, जब जैस सामन्था को देखकर मौन बैठा उसके और एलिज़ा के विचित्र प्यार की गुत्थी सुलझाने का प्रयत्न करता, वह कुछ इस प्रकार से फुफकारती कि वह घृणा से अपने आप में सिकुड़ कर रह जाता।

परन्तु एलिज़ा को तो वह बत्तख़ बहुत ही प्यारी थी। वह सहलाने के लिए अपनी गरदन एलिज़ा की ओर बढ़ा देती और मस्त चाल से उसके साथ-साथ चला करती।

"एक देवी थी," एनोक कहता, "जो सदा अपने साथ एक बड़ी चिड़िया रखती थी।" जैस सोचता कि एनोक जूनो और उसके मोर की बात कर रहा है; परन्तु इस बात से प्रभावित होकर वह यह मानने को तैयार नहीं था कि बत्तख़ किसी देवी—या एलिज़ा—की उपयुक्त संगिनी हो सकती है। और जब नवम्बर एक संध्या को एलिज़ा ने उसे बतलाया कि सामन्था खो गई है तो जैस को कोई दुःख न हुआ। "आजाएगी," जैस ने कहा, "वैसी दुःखदायी चिड़िया जल्दी नहीं मर सकती!"

एलिज़ा ने कुछ न कहा, परन्तु अगले दिन प्रमाणित कर दिया कि जैस ठीक कह रहा था। "सामन्था ओवरबियों के घर है," उसने जैस को बताया।

"अच्छा, क्या उसे ले आई?"

"नहीं," एलिज़ा ने कुपित हो कहा, "उन्होंने लाने ही न दिया।

कहते हैं कि हमारी चालीस बत्तखें थीं और चालीस ही अब हैं, और उन का ख्याल है कि सामन्था वहाँ नहीं है। उन्होंने मुझे इतना चिढ़ा दिया, जैस, कि मैंने कह ही दिया कि उन्होंने सात ख़राब अण्डे तो मुझे बेचे ही थे और अब आठवाँ भी उड़ाना चाहते हैं।"

यह सुनकर जैस को कुछ बुरा लगा, पर उसने पूछा, "तू कैसे पक्की तरह कह सकती है कि सामन्था वहाँ है? क्या पता उसे कोई बदमाश उठा ले गया हो।"

एलिज़ा ने उसकी बात ही उड़ा दी। "तू भूलता है कि मैंने उसे जन्म से अपने हाथों से ही पाला है। चालीस की तो बात ही क्या, मैं तो चार-सौ बत्तखों में भी सामन्था को पहचान लूं।"

"अगर वही एक रास्ता रह गया है," जैस ने कहा, "तो तूने उसे ख़रीद ही क्यों न लिया?"

एलिज़ा दुखित हो बोली, "अपने अण्डों के विषय में मेरी बात सुनकर ओवरबी दम्पति अब मुझसे कोई सम्बन्ध ही नहीं रखना चाहते!"

सामन्था के खो जाने का एलिज़ा को इतना दुःख हुआ कि पहले एनोक और फिर जैस ओवरबियों के घर गया, पर वहाँ कोई बत्तख के आने की बात ही नहीं माना—उनकी चालीस बत्तखें थीं और अब गिनकर चालीस ही दिखलाई देती थीं। बल-प्रयोग के अतिरिक्त सामन्था को घर लाने का कोई रास्ता ही न सूझता था।

एलिज़ा ने जब सुना कि ओवरबी दम्पति बड़े दिन की दावतों के लिए बत्तखें बेचेंगे तो वह शोकातुर हो उठी। "जैस," उसने कहा, "मैं पर-विहीन, मृतक, मेज़ पर काटने को तैयार रखी हुई सामन्था की कल्पना भी नहीं कर सकती। बचपन में उसका गाना कितना सुन्दर लगता था; और वह मेरे साथ घूमा करती थी। और जहाँ तक मुझे पता है चाय पीनेवाली वही एक बत्तख है!"

जैस मानता था कि बत्तख को जो भी मिले खा लेगी, परन्तु एलिज़ा से यह बात कहने का समय वह नहीं था। "एलिज़ा," उसने कहा, "मेरे और एनोक के वहाँ जाने के पश्चात्, बूढ़े ओवरबी से लड़ने या रात को उसके घर घुसकर चोरी करने के अतिरिक्त मेरी समझ में तो सामन्था को तुझे ला देने की और कोई तरकीब नहीं रह गई है।"

"हम दावा कर सकते हैं," एलिज़ा ने कहा।

"तेरा मतलब है मुक़दमा लड़ें?" जैस ने स्तम्भित होकर पूछा।

क्वैकर कभी अदालतों में नहीं जाते, वे मानते हैं कि आपसी समझौते से ही सब झगड़े निबटाए जाने चाहिएँ ।

"हाँ," एलिज़ा बोली, "सामन्था के लिए मैं यह भी कर सकती हूँ । यह मेरा कर्तव्य है । माना अदालत में जाकर हम विपत्तिग्रस्त हो जाएँगे, परन्तु आग में भुनना सामन्था के लिए और भी बड़ी विपत्ति होगी ।"

यह बात भला जैस कैसे न मानता, परन्तु उसने कहा, "मुझे सोचना पड़ेगा । आज तक मैं कभी अदालत में नहीं घुसा और एक बत्तख़ को लेकर यह काम शुरू करना कुछ अच्छा नहीं लगता ।"

दूसरे दिन एलिज़ा ने चुपचाप नाश्ता तो बढ़िया बना दिया, परन्तु अपने आप परिवार के साथ खाने नहीं बैठी ।

"क्या तबियत ख़राब है, एलिज़ा ?" जैस ने पूछा ।

"सामन्था की सोचते-सोचते मैं खा ही नहीं सकती," उसने उत्तर दिया ।

लेब और मैटी की आँखों में आँसू थे । छोटा जैस दुःखी होकर रो रहा था । एनोक बहुत शोकाकुल दिखाई दे रहा था । इतने दुःख के बीच नाश्ता करते हुए जैस को लज्जा आ रही थी । एलिज़ा अँगीठी के पास खड़ी थी जहाँ कुछ सप्ताह बत्तख़ का वह डिब्बा रखा रहा था । वह बार-बार नीचे देखती, मानों बत्तख़ का वह चोंच उठाना उसे याद आ रहा हो ।

जैस से यह सब सहा न गया । "एलिज़ा," उसने कहा, "यदि तू यही चाहती है तो मैं वरनोन जाकर वकील को फीस दे आऊँगा । तुझे ही अदालत में जाना पड़ेगा और गवाही देनी होगी—इस पर भी मुझे संदेह है कि तेरी बत्तख़ तुझे मिल सकेगी । क्या अब भी तेरी यही इच्छा है ?"

एलिज़ा मेज़ के पास आ गई और जैस के कन्धों पर हाथ रखकर बोली, "हाँ, जस, मैं तुझसे यही चाहती हूँ ।"

जैस वरनोन गया, वकील को फीस दी, अदालत से ओवरबियों के नाम आज्ञापत्र जारी करवा दिया जिससे वह बत्तख़ जिसे एलिज़ा सामन्था कहती बेची या मारी न जा सके, और शंका-भरे मन से मुक़दमे की तारीख़ की बाट देखने लगा । तारीख़ आधे दिसम्बर में पड़ी ।

हल्की-हल्की बरफ पड़ रही थी जब एलिज़ा, जैस और एनोक बग्घी पर सवार घर से निकले । तेज़ धूप, ठंडी हवा, चमचमाती बरफ और बड़े

दिनों के उत्साह ने, मुक़दमे के होते हुए भी, उस यात्रा को सुखद बना दिया। एलिज़ा तो मानों उत्सवी मुद्रा में थी। मुक़दमे को न भूल सकनेवाले जैस को उसे देख आश्चर्य हुआ। वह पूछे जाने पर यह तो नहीं बता पाता कि एलिज़ा में क्या विशेषता थी—कपड़े तो उसने साधारण ही पहन रखे थे—परन्तु उसकी भावभंगिमा से प्रसन्नता टपकी पड़ती थी।

उसे लगा कि एलिज़ा को चेतावनी देना आवश्यक है।

"एलिज़ा," वह बोला, "तू जानती है कि वहाँ तेरी धार्मिक सभा नहीं बैठेगी? जब तू बताएगी कि तू सामन्था को कितना प्यार करती है, वह कैसे गाती और चाय पीती थी तो दूसरे पक्ष वाले भी मौन सुनते ही न रहेंगे। बूढ़ा ओवरबी भी अपनी बात कहे बिना न रहेगा और उसने तुझे हराने को वकील भी किया हुआ है।"

एलिज़ा उसकी बात से प्रभावित न हुई। "हमने वकील को किस लिए फीस दी है, जस?" उसने पूछा।

जैस ने दूसरी बात की। "एलिज़ा," उसने बताया, "मेरे विचार से हज़ार में से एक बार भी सामन्था के वापिस मिलने की सम्भावना नहीं है!"

"यह न्याय की अदालत है ना?" एलिज़ा ने पूछा।

"हाँ।"

"तब तुझे चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं, जैस बर्डवल। मुझे सामन्था मिल जाएगी।"

जैस को चिन्ता सामन्था के वापिस न मिलने की नहीं थी —यह बात तो वह भली प्रकार सह लेता! उसे तो कष्ट उस सारे झगड़े से था·····कुछ एक मामलों में, जीवन व मृत्यु के प्रश्नों पर तो अदालत में जाना अनिवार्य हो भी सकता था और ऐसे प्रश्नों की वह कल्पना कर भी सकता था; परन्तु सामन्था नामक एक बत्तख़ को लेकर मुक़दमा खड़ा कर देना तो ऐसी बात न थी। बेचारी एलिज़ा! उसे क़ानून का रत्ती भर ज्ञान भी न था·····और अब मुख्य न्यायाधीश टेनी की भाँति ख़ुशी-ख़ुशी अदालत जा रही थी! जैस ने आह भरते हुए अपना सिर हिला दिया। सामन्था का न मिलना उसके लिए कोई विपत्ति न थी; वह तो एलिज़ा के कारण·····किस प्रकार वह ख़ाली हाथ घर लौटेगी यह सोच कर ही संत्रस्त हो उठा था।

तेज़ चमकदार धूप की छाया अदालत में ऐसे चेहरों पर पड़ रही थी जो

जैस को निठुर प्रतीत हुए। अदालतों में स्वभावतः चक्कर काटने वाले लोग तो वहाँ थे ही; कुछ निठल्ले किसान भी समय व्यतीत करने वहाँ चले आए थे। इसके अतिरिक्त एक क्वेकर स्त्री, और वह भी एक पादड़ी, का एक बत्तख को लेकर ओवरबी जैसे पुराने पापी के विरुद्ध मुक़दमा कुछ और भी लोगों को खींच लाया था। वे सब एलिज़ा को घूर कर देखते, ओवरबी को नमस्कार-प्रति-नमस्कार करते और फिर अपनी आँखें अदालत के निर्णयाधीन, पिंजरे में बन्द सामन्था पर लगा देते।

जैस को दोनों वकील एक से ही लगे, बराबर के। चुलबुलापन दोनों में ही न था·····दोनों ही अपना काम और क़ानून की सेवा करते-करते बूढ़े हो चुके थे। इलाक़ा मैजिस्ट्रेट दूसरे ही ढंग का था। वह बहुत ही अल्पायु था और विवाहोन्मुख दूल्हे की तरह सजधज कर आया था। मिस्सीसिनीवा के उत्तर में कहीं पढ़-पढ़ाकर आया हुआ वह एक शहरी छोकड़ा था। और जैस को लगा कि इस छोटे से क़स्बे में काम करना उसे पसन्द न था और इस ज़रा से मुक़दमे से वह ऊबा हुआ था। उसे क्या पता कि मुर्ग़ी और बत्तख में क्या अन्तर होता है। कहीं अपना अमूल्य समय बचाने के लिए पैसा उछालकर ही निर्णय न देदे!

जैस को लगा कि एलिज़ा की यह धारणा नहीं है। वह भी उस तरुण जज को ध्यान से देख रही थी। उसके चेहरे पर जो भाव था उससे जैस समझ गया कि वह जज के व्यक्तित्व से प्रभावित ही हुई है। एलिज़ा पतले-दुबले, साफ़-सुथरे, विदेश में पड़े इस तरुण को यथासमय, बढ़िया भोजन मिलता है या नहीं यही सोच रही होगी!

तरुण जज ने मेज़ खटखटाकर कार्यारम्भ किया। थूकना और पाँवों की सरसराहट कुछ कम हो गई तो उसने रोबदार आवाज़ में कहा, "बर्डवल बनाम ओवरबी। अभियोग : चोरी। सामन्था नामक बत्तख को भगाकर बलपूर्वक रोकना!" सामन्था नाम उच्चारण करते समय उसका कुछ दम घुटा, परन्तु वह कह ही गया।

"बर्डवल पक्ष तैयार," एलिज़ा के वकील एबल सेम्प ने कहा!

"ओवरबी पक्ष तैयार," प्रतिवादी के वकील ने कहा।

पहली गवाही एलिज़ा की हुई। जैस कभी-कभी भूल जाता था कि एलिज़ा कितनी सुन्दर है। परन्तु उसे देखकर दर्शकों के चेहरों पर आनेवाले भावों ने उसकी स्मृति को दोहरा दिया।

"वादी शपथ ग्रहण करे," जज ने कहा।

जज को सम्बोधित कर एलिज़ा ने मधुर कंठ से कहा, "मैं कभी शपथ नहीं लेती ।"

जज ने समझाया कि नास्तिकता यहाँ नहीं चलेगी । "मैं समझती हूँ," एलिज़ा ने कहा, "पर हम क्वैकर कभी शपथ नहीं ग्रहण करते । हम केवल बयान देते हैं ।"

"श्रीमती बर्डवल को ब्यान देने की आज्ञा दी जाती है," जज ने कहा । एलिज़ा ने बयान दिया ।

वकील सेम्प ने एलिज़ा से सामन्था के जन्म और स्वभाव के विषय में प्रश्न पूछने आरम्भ किए ।

"जज," एलिज़ा ने कहा ।

"जज को श्रीमान् कह कर सम्बोधित करो," एलिज़ा के वकील सेम्प ने कहा ।

"हम क्वैकर," एलिज़ा ने मृदु कंठ से जज से ही बात की, "इस प्रकार की पदवियों का प्रयोग नहीं करते । तेरा नाम क्या है ? मुझे लगता है कि हमारे प्रान्त में तेरा बड़ा नाम होगा । मैं तेरा नाम जानना चाहती हूँ ।"

जज कुछ निश्चय न कर सका कि अदालती या क़ानूनी लहजे में बात करे या एलिज़ा की भाँति समान सामाजिक स्तर पर ही उतर आए ।

"पोमराय," कह कर वह एलिज़ा के प्रति कुछ झुक-सा गया ।

एलिज़ा भी मनोहारी ढंग से झुकते हुए बोली, "तुझसे भेंट कर सचमुच प्रसन्नता हुई, पोमराय बन्धु ।"

सामन्था की जो कहानी एलिज़ा ने जज को सुनाई वह बहुत ही स्पष्ट और संक्षिप्त थी; परन्तु संक्षेप में होते हुए भी बात कहने के ढंग ने हृदय-तल को छू लिया ।

"श्रीमती बर्डवल," सेम्प ने पूछा, "आप बत्तखों और उनके स्वभाव से कब से परिचित हैं ?"

"बचपन से ही," एलिज़ा ने कहा, "मेरे पिता बत्तखों के बड़े प्रेमी थे !"

"और प्रतिवादी की बत्तखों जैसी इस सामन्था को तुम पहचान सकती हो ?"

"हाँ," एलिज़ा ने स-विश्वास कहा ।

मि० सेम्प को बात वहीं छोड़ते देख जैस को आश्चर्य हुआ ।

"गवाह से बात करलो," सेम्प ने प्रतिवादी के वकील से कहा, परन्तु एलिज़ा से जिरह करने की अभी उसे कोई जल्दी न थी । उसने अपने मुवक्किल को ही कटहरे में ला खड़ा किया ।

मिल्ट ओवरबी जिसके झगड़ालू स्वभाव में उस समय शराब की पुट भी मिली हुई थी, शोर मचाता हुआ गवाही देता रहा । एक बार तो बत्तखों सम्बन्धी किसी प्रश्न को लेकर वह जज से ही उलझ पड़ा । "तुम आए कहाँ से हो ?" उसने धृष्टता से पूछा, "हमारे यहाँ ऐसे बुद्धू जज जिन्हें बन्दर और बत्तख की पहचान भी न हो भेजने का क्या मतलब ?"

यह सुनकर अदालत में जो हुल्लड़ मचा उसे आदेश व अपना मेज़ खड़काकर उस तरुण जज ने शान्त किया । दोनों ही ओर की कई गवाहियाँ हो गईं । इतना तो प्रमाणित हो ही गया कि ओवरबियों ने सम्भव है एक-आध बत्तख खाली हो और ममतावश उसे गिनती में मिलाना भूल गए हों, परन्तु अकाट्य रूप से कोई भी सामन्था को पहचान न सका ।

ओवरबी का वकील एलिज़ा से बात करते कतरा-सा रहा था, पर उसे कटहर में बुलाना ही पड़ा । उसने कहा कि वह बत्तखों से पूर्णतया परिचित है और उसकी गवाही साफ और पक्की रही ।

"श्रीमती बर्डवल," उसने पूछा, "तुम यह निश्चय से कैसे कह सकती हो कि तुम्हारी बत्तख मेरे मुवक्किल की बत्तखों के साथ ही थी ?"

एलिज़ा ने स-विश्वास जज की ओर देखकर कहा, "पोमराय बन्धु, मैंने सामन्था को बचपन से पाला है ।"

जैस ने निश्वास भर कर कहा, "आ गई वही बात—कैसे सामन्था गाती थी और चाय पीती थी !"

एलिज़ा कहे जा रही थी, "और एक बात तो ऐसी है जो सामन्था को दूसरी बत्तखों से साफ अलग दिखला देती है ।"

"हाँ, श्रीमती बर्डवल," एलिज़ा को कटहरे में देख अपनी अदालत को भुलाकर जज ने कहा ।

"आरम्भ से ही," एलिज़ा ने कहा, "सामन्था की अपनी ही एक चाल थी जो ओवरबियों की बत्तखों या दूसरी किसी बत्तख में मैंने आज तक नहीं देखी। और उसकी चाल से ही मैंने वहाँ जाकर उसे पहचान लिया था। तू भी उसे पहचान लेता, पोमराय बन्धु!"

"हाँ, श्रीमती बर्डवल," जज ने दिलचस्पी लेते हुए कहा।

"सामन्था शुरू से ही नप-क़दमी थी। 'नपक़दमी' तो तू समझता है ना?"

"हाँ, हाँ," जज पोमराय ने कहा, "नपक़दमी!" उसने आनन्द से दोहराते हुए कहा, क्योंकि एलिज़ा ने ऐसी सरल विशेषता बतलाई थी कि अब बत्तख को आसानी से पहचाना जा सकता था!

अदालत में हलचल बढ़ती जा रही थी—जज पोमराय ने गरदन उठाई। वह बत्तखों के इतिहास, नसल और स्वभाव के विषय में और अधिक कुछ न सुनना चाहता था। वह चाहता था कि मुक़दमे किसी प्रायः भुलादी जानेवाली बारीकी के आधार पर ही निर्णीत हों। जज पोमराय ने फिर मेज़ खटखटाई, और कहा, "अदालत वादी के पक्ष में निर्णय देती है। मुक़दमा ख़ारिज किया जाता है।" फैसला सुनकर अदालत में छा गई ख़ामोशी अभी शेष थी कि जज पोमराय प्रसन्न हो, लम्बे क़दमों पिछले दरवाज़े से बाहर चला गया।

जैस ने भी चलने में जल्दी ही की! कोई पोमराय बन्धु को चालों के विषय में, विशेषतया बत्तखों के विषय में, और अधिक जानकारी करादे तब तक रुके रहने में कोई लाभ ही नहीं था! दोपहर हर मौसम में शान्त ही रहा करती। जाड़ों में तो ज़मीन पर पड़ी हुई बरफ और बिना पत्तों की सरसराहट के यह ख़ामोशी और भी बढ़ जाती। घोड़ों की पदचाप और चमड़े और बरफ की चूँ-चूँ के अतिरिक्त उस शान्ति को किसी ने भंग नहीं किया। जैस और एलिज़ा अगली सीट पर बैठे, मौन चले जा रहे थे। पीछे बैठा हुआ एनोक ध्यानमग्न-सा लग रहा था। एनोक के पाँव के पास रखी पेटी में बैठी सामन्था तक भी मौन थी।

मेपल ग्रोव नर्सरी के पास पहुँचकर ही जैस बोला। "एलिज़ा," उसने कहा, "मुझे बतलाएगी—तूने कभी बत्तखों को दुल्की चलते देखा है?"

विचारसागर से निकल एनोक भी कान लगाकर सुनने लगा। वह स्वयं भी यही बात सोच रहा था।

"नहीं, कभी नहीं," एलिज़ा ने कहा, "तुझे मालूम तो है, जैस बर्डवल, कि बिना अगले और पिछले पाँव के कोई जानवर दुल्की नहीं चल सकता !"

"एलिज़ा, यहाँ तक तो हम दोनों एक ही बात मानते हैं। अब शायद तू मुझे यह भी बतलादे कि तूने कोई ऐसी भी बत्तख़ देखी हो जो कि नपक़दमी न हो ?"

एलिज़ा लगा कि सचमुच ही स्तम्भित हो गई। "क्यों, जस," उसने कहा, "साधारण बत्तख़ तो केवल चलती है और सामन्था नपे क़दमों इठलाती है !"

कुछ क्षण तो जैस मौन ही रहा। फिर बोला, "दोनों में अन्तर क्या समझती है तू ?"

"अन्तर इठलाने का है, जैस बर्डवल," एलिज़ा ने कहा, "जैसा कि उस घोड़े में होता है जिसे भगवान नपक़दमा बना दे—यह तो भगवान के हाथ की बात है, जैसे चाहे जानवर को चलवादे। सामन्था जन्म से नपक़दमी है !"

इस विषय में इससे अधिक बात होने की सम्भावना न थी। सो, जैस भी एनोक की तरह ध्यान-मग्न हो गया। बाड़े में पहुँचकर, अन्दर जाने से पहले, एलिज़ा पुराने मुक़दमेबाज की तरह बोली, "अदालत जाने से भूख ख़ूब लगती है! कुछ जल्दी तो है पर तुम अवश्य ही पसन्द करोगे—और सामन्था को भुलाकर वह जस और एनोक को ऐसे देखते रही कि मानों मर्दों की सुविधा मात्र ही उसका ध्येय हो—"मैं कुछ खाने को बना लेती हूँ। गरम चाय और मीठे बिस्कुट! कुछ पकौड़ी पका लूँगी, अचार भी निकाल लूँगी! यदि तुम पसन्द करो तो," उसने फिर कहा।

जैस इस धोखे में नहीं आया; परन्तु वह पसन्द करेगा, एनोक भी और यही उन दोनों ने कहा भी। उन्होंने जल्दी-जल्दी सामन्था को पेटी खोलकर बाहर निकाला जिससे कि अपनी नव-शिक्षित आँखों से देख सकें कि किस बात ने उसे नपक़दमी बना दिया था।

जैस ने उसे बरफ पर छोड़ दिया और एनोक ने अपनी टोपी से थपथापा दिया। सामन्था पिछले दरवाज़े की ओर भागी।

"गन्ने की क़सम," जैस बोला, "एलिज़ा ठीक कह रही है। यह

नपक़दमी है ।" निस्सन्देह सामन्था परी की तरह इठलाकर चलती सचमुच ही डगमगाती-सी चलती और अपने दो पाँवों से जो भी कर पाती करती ।

एनोक सोत्साह चिल्लाया, "चार पैर होते तो इसे मेले की दौड़ में खड़ा किया जा सकता था ।" सामन्था के पीछे-पीछे वे भी घर की ओर बढ़ने लगे । एनोक, जिसे हो जाने के पश्चात् हर बात सोचने का मसाला देती, पूछ बैठा, "मुक़दमों के बारे में अब आपकी क्या राय है, श्री बर्डवल ?"

"मैं अब भी मुक़दमों के विरुद्ध हूँ," जैस ने कहा, "वैसे इस मुक़दमे ने मुझे तीन बातें सिखाईं जो मैं कभी भी न जान सकता था। दो बातें औरतों के बारे में हैं ।"

एनोक ज्ञानोपार्जन में विश्वास करता था और उसे लगा कि इस समय जो भी जानकारी उसे होगी उसका मूल्य केवल मार्मिक ही न होगा । "औरतों की वे दो बातें क्या हैं, श्री बर्डवल ?" उसने पूछा ।

"पहली बात तो यह है, एनोक । निर्भरयोग्यता ही औरत का सबसे बड़ा गुण है । रात दिन नल की टूँटी की तरह अचल ! जब कभी ऐसी औरत मिले, एनोक, तो उसे बदलने का प्रयत्न न करना ।"

"नहीं, श्रीमान, कभी नहीं करूँगा," एनोक बोला ।

"दूसरी बात यह है कि जब मामला औरत और क़ानून का हो तो औरत के लिए चिन्तित हो उठने की आवश्यकता नहीं !"

"नहीं, श्रीमान्," एनोक ने फिर कहा ।

जब वे पिछले दरवाज़े की सीढ़ियों तक पहुँच गए, तो एनोक ने पूछा, "श्री बर्डवल, आपने कहा था तीन बातें । तीसरी बात किस विषय में है ?"

"नौकरों के बारे में !" जैस ने कहा ।

एनोक भौंचक्का-सा हो गया, परन्तु उसन खुद ही तो पूछा था, अस्तु, कहना ही पड़ा, "हाँ, तो श्री बर्डवल ?"

"किसी को नौकर रखने से पहले यह जान लो कि उसे आठ तक गिनती आती भी है या नहीं ! इस प्रकार काफी कष्ट से बचा जा सकता है, एनोक ।"

"मुझे क्या पता था कि आठवीं सामन्था ही होगी ?" उसने पूछा ।

सामन्था खाने की बाट जोहती चौखट पर ही खड़ी थी । एनोक पतली सी पतलून पहने था । बड़े जूते भी न थे । सामन्था ने मौक़ा देखकर गरदन बढ़ाई और ज़ोर से उसकी पिंडली में काट लिया ।

"तूने कुछ कहा था, एनोक ?" जैस ने पूछा ।

एनोक ने जो भी कहा था वह तो नहीं कहा, और बोला, "नपक़दमी हो या न हो, पर यह बत्तख़ सामन्था ज़रूर है ।" और वे दोनों उस बरफ को छोड़ रसोई की गरमाई में चले गए जहाँ मीठे बिस्कुट और पकौड़ों की गन्ध चारों ओर फैली हुई थी ।

मैटी का प्यार

मई का महीना बीत रहा था। हरी पत्तियों को हटाकर अँगुलियाँ पेड़ों में लगे फल छू लेतीं। गेहूँ की बालियाँ उठती चली जा रही थीं। चैरी, दिसम्बर की मोमबत्तियों की भाँति चमकदार, पेड़ों से लटक रही थी। मधुमक्खियाँ दो बार छत्तों पर बैठ चुकी थीं। दक्षिण की इस पवन के साथ, मैटी ने सोचा, बरफ की तरह बहता टिड्डीदल भी आ रहा है।

मधानी को छोड़ मैटी पिछले दरवाज़े पर खड़ी-खड़ी गरदन उठा एक मिनट आकाश की ओर देखती रही। परन्तु हवा और कलियों का गिरना भी बन्द हो चुका था और वह फिर अपनी मधानी के पास चली आई।

वह दूध मथते-मथते गिनती भी जा रही थी। मक्खन निकालने में कम से कम और अधिक से अधिक कितनी बार मथना पड़ता है वह इसका हिसाब लगाती जा रही थी। अब की बार तो कम से कम बार मथना न होगा। "अठास्सी·····नवास्सी·····" छोटा जैस बरसाती पानी के ढोल में कीड़े बनाने के लिए घोड़े के बाल डाल रहा था। एनोक ने ओट में से अपनी गरदन बाहर निकाली, मैटी को देखा, और फिर अन्दर चला गया।

"मैटी," उसकी माँ ने पुकारा, "अब दूध मथना खत्म कर और बेंटों के घर बिस्कुट देने चली जा, घोड़ा लेकर।"

मैटी को बिस्कुट पकने की सुगन्ध आ रही थी : सूखे अंगूर, अखरोट और मीठे आटे की गन्ध।

"लेवोनी बेंट डिक की टोपी की तरह अजीब औरत है," "उसकी माँ ने बेलन की खड़खड़ से अधिक ज़ोर से बोलते हुए कहा। "मिश्रित रक्त है उसका और नई आई है। स्वागत में कुछ न कुछ चाहिए ही।"

सुनते-सुनते मैटी की मधानी की चाल कम हो गई थी। "वह मक्खन का डला यहाँ उठा ला," उसकी माँ ने कहा, "तुझे जल्दी जाना चाहिए, नहीं तो रास्ते में ही अंधेरा हो जाएगा।" उसका मुँह अंगीठी की गरमी से लाल हो रहा था और वह मैटी के लिए एक ताजा लेकर दरवाज़े तक आगई। "दिन कितनी जल्दी समाप्त हो रहा है," उसने कहा।

माँ की आवाज़ में आकुलता का पुट पाकर मैटी ने उसकी ओर देखा और स्वयं भी कुछ अनिश्चित व शोकार्त-सी हो गई ।

"कल का दिन भी ऐसा ही होगा," उसकी माँ ने कहा, "ऐसा ही या इससे भी अच्छा; आकाश की उस रक्ताभा का यही निश्चित अर्थ है ।"

मक्खन धीरे-धीरे निकल रहा था, और मैटी के हिसाब से अधिक से अधिक बार मथने के लिए केवल पाँच बार मथना और रह गया था । "तू जैसी है वैसी ही चला ना, मैटी ।"

"यही कपड़े पहने ?" मैटी ने पूछा ।

"कौन देखेगा ?" उत्तर में प्रश्न किया उसकी माँ ने, "बेंटों और उल्लुओं के अतिरिक्त और कोई तो तुझे मिलेगा नहीं !"

जिन उल्लुओं और काले बालोंवाले, साँवरे रंग के लड़कों को उसने मछली पकड़ने के लिए, कंधों पर बंसी उठाए नदी की ओर जाते देखा था, मैटी उनका नाम लेना नहीं चाहती थी ।

"यदि तू बाल सँवारने, कपड़े बदलने में लगेगी तो यहाँ ही रात हो जाएगी !"

अस्तु, मैटी जैसी ही बैठी थी, घोड़े पर सवार होकर चलदी । नंगे पैरों, समुद्र और नाव की छाप वाला फ्रौक पहने, वह बेंटों के घर की ओर चलदी । फ्रौक पुराना हो चुका था, चारों ओर फैले समुद्र की ही भाँति छापे की वे नावें भी फीकी पड़ चुकी थीं ।

मैटी बिस्कुट उस डिब्बे में लिए जा रही थी जिसे उसकी माँ तिपाई का रूप देना चाहती थी । अभी तक तो उस पर केवल सफेद रंग ही किया गया था, और चारों ओर जंज़ीरें और बिल्ली की पूँछें बना दी गई थीं । भूरी बिल्ली की पूँछों पर इतना गाढ़ा रंग किया गया था कि मैटी जब उन्हें छती तो वे सजीव-सी उभर आतीं ।

बूढ़ी पौली की चाल स्वप्निल थी । धीरे·····धीरे वह चल रही थी···· मानों पहुँचने के लिए अनन्त समय हो । आज तो थोड़ी दूर ही जाना था, थोड़ा पगडण्डी पर और फिर कुछ दूर जंगल के पार । मैटी एक बिस्कुट निकालकर खाने लगी । उसने पेड़ की एक शाखा पकड़कर खींची और फिर खींचकर छोड़ दी कि उसे फिर से यथापूर्व होते देख सके·····और बेंटों के विषय में जो भी उसने सुना था वह याद करने लगी !

"उससे अधिक सुखदायी दृश्य मैंने अपने जीवन में कभी नहीं देखा

था," मैटी का बाप एक दिन उनके घर गया था और वहाँ उसने जड बेंट को खाद की गाड़ी में लगी गद्देदार कुर्सी में बैठे किताब पढ़ते देखा था, मानों वह अपने कमरे में बैठा पढ़ रहा हो! "बहुत ही सुखदायक था वह दृश्य," उसके बाप ने कहा था, "तू मेरी बात याद रखना, मैटी, मनुष्य की आत्मा असीम है!"

जड बेंट पढ़ता भी और खेती भी करता। उसके लड़के एक को छोड़कर, मछली पकड़ते और खेती करते। "गार्डिनर अपने बाप की तरह पढ़नेवाला है," मैटी के बाप ने कहा था, "और अध्यापक बनने के लिए पढ़ रहा है। वह खाद की गाड़ी को भूलकर किताबों में ही लगा रहना चाहता है।"

परन्तु जिस दिन मैटी उनके घर गई वह दिन उसकी मंज़िल से भी अधिक महत्त्वपूर्ण था। जंगल में धूप भी थी और छाँह भी, और नई हरी पत्तियों पर पड़े मक्खन की तरह सूर्य अस्त हो रहा था।

जंगल के दूसरे छोर पर, बूढ़े राइट के घर के पास, मैटी कुछ क्षणों को रुक गई। वर्षों से खाली, क्रमशः गिरता हुआ, एक छोटा-सा सफेद घर था वह। ऐसा घर जिसे भुला दिया गया हो, परन्तु श्रीमती राइट के क्रमानुसार फूल अब भी उस मकान में उग आते। जिन्हें कभी मनुष्य के हाथों ने लगाया था, उन फूलों के अब अलक्षित उग आने का दृश्य, मैटी को लगा, दुःखद भी है और सुन्दर भी। फाटक के पास अब भी वे ही फूल उग रहे थे; और सफेद पत्थरों की गोलाकार सीढ़ियों के साथ भी फूल उसी प्रकार एक साँचे में ढले हुए से लग रहे थे। मैटी के देखते ही देखते जल-कपोतों का एक जोड़ा बन की ओर से उड़ता हुआ आया और आकर खुले मैदान की धूप में चक्कर लगाने लगा, मानों घर लौट आया हो।

मटी ने एक हाथ उनकी ओर बढ़ाकर कहा, "तुम तो जंगली नहीं मालूम पड़ते!"

वह बूढ़ी पौली पर से उतर गई और डिब्बा उठाए-उठाए फूल चुनने लगी। इन फूलों और मकानों का मनुष्यों से परिचय इतना पुराना है कि अब ये अकेले प्रसन्न नहीं रह सकते। ये अपनों से बहुत दूर बढ़ आए हैं और वनों और चिड़ियों की भाषा भूल गए हैं। ये फिर घर-गृहस्थी का वार्तालाप सुना चाहते हैं। रात को सोने से पहले किसी औरत का बाहर आ तारों को देखकर यह कहना सुना चाहते हैं, "सुबह से पहले वर्षा होगी, वह

मुर्ग़ा बोल रहा है और चन्द्रमा के चारों ओर एक घेरा है। यह पक्की निशानी है।" या फिर सुबह कपड़े पहनते हुए किसी मर्द का आकाश की ओर देखकर यह कहना, "वर्षा हुआ चाहती है। घास घर में उठा लाना पड़ेगा।"

चुन-चुनकर डिब्बे में फूल भरते हुए मैटी ज़ोर-ज़ोर से बोल रही थी जिससे कि वह घर और फूल सुन लें।

"गरमियाँ यदि सूखी गईं तो मैं तुम्हारे लिए पानी ले आया करूँगी। तुम्हें प्यासा छोड़कर तो मैं रात को सो न सकूँगी। अगर कूँआ सूख गया तो मैं नदी की शाखा से बालटियाँ भर लाऊँगी; और कभी रात को आकर घर में मोमबत्ती जला जाऊँगी जिससे तुम्हें पहले का सा ही लगे। मैं घर में गाना गाऊँगी और तुम्हें लगेगा कि श्रीमती राइट ही फिर से अपना बाजा बजा रही है।"

"अभी गाओ ना, गाती क्यों नहीं ?"

वह फूलों पर झुकी हुई थी, परन्तु डरी नहीं—क्योंकि वह आवाज़ इतनी शान्त थी। वैसे थी किसी नौजवान की आवाज़ और मुड़कर देखने से पहले उसने अपने हाथों से फूल गिराकर अपने पैरों में डाल दिए।

"किसी भी मनुष्य को मेरा गाना पसन्द नहीं आएगा·····यह पुराना मकान, जिसकी रुचि-अरुचि का प्रश्न ही नहीं उठता, शायद सुन भी ले!" मैटी ने कहा।

"मैं भी तो पसन्द की बात नहीं कह रहा।"

"नहीं, मैं लेवोनी बेंट को कुछ बिस्कुट देने जा रही हूँ। फूल चुनने को ज़रा रुक गई थी।"

"अच्छा, मैं गार्ड बेंट हूँ," लड़के ने कहा, "और मैं तुम्हारे साथ-साथ घर तक चलूँगा। तुम्हारा नाम क्या है ?"

"मर्था ट्रूथ बर्डवल। प्रायः मुझे मैटी कहकर पुकारा जाता है।"

"मर्था ट्रूथ बर्डवल! यह नाम तो किसी गीत की तरह सुन्दर है। अगर यह लेखक तुमसे परिचित होता," और गार्ड ने अपने हाथ की किताब ऊपर उठाई, "तो 'मर्था ट्रूथ' शीर्षक से एक कविता लिख देता!"

मैटी ने पुस्तक का नाम पढ़ लिया। "यह तो प्रायः जीन और मरी नामों पर कविता करता है," उसने कहा। शायद अब यह बेंट लड़का उसे अनपढ़ न समझेगा, चाहे नंगे पैरों अपने आप से बातें करते उसने मैटी को देख लिया था।

"तू ये बिस्कुट अपनी माँ को दे देना। मैंने यहाँ ही इतनी देर करदी है कि घर पहुँचने तक अँधेरा हो जाएगा।"

"नहीं, मैं लौटकर तुम्हें सड़क तक पहुँचा दूँगा। अगर मैं खाली डिब्बा लिए तुम्हें लौटा दूँगा तो माँ नाराज़ हो जाएगी। लड़के दोपहर से ही नदी पर गए हैं, काफी मछलियाँ पकड़ लाएँगे। क्या सवार होते तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ ?"

यदि बूढ़ी पौली विधिवत् कसी हुई होती और उसके कपड़े भी ठीक होते तो मैंटी घोड़ी पर बिठलाया जाना पसन्द करती; परन्तु वह फिर कभी होगा। बिना साज़ की घोड़ी पर वह नंगे पाँव अनाज की बोरी की तरह रखे जाने को तैयार न थी। वह चुपचाप, फूलों से पाँव ढके खड़ी रही; उसने कुछ भी न कहा।

"मैं अपनी दूसरी किताबें भी ले आऊँ," लड़के ने कहा।

वह चला गया तो मैंटी घोड़ी को चबूतरे के पास ले गई और एक पाँव नीचे दबाए सवार हो गई।

बूढ़ी पौली धीरे-धीरे बेंटों के घर की ओर जाने वाली सड़क पर चल पड़ी; गोधूलि का समय था। गार्ड साथ-साथ पैदल चल रहा था। उसकी शान्त, नपी हुई सी चाल की बात तो नहीं, परन्तु मैंटी ने यह अवश्य सोचा कि उसके मिश्रित रक्त का कोई भी चिह्न दिखलाई नहीं दे रहा था। न तो उसके बाल ही सीधे थे, और ना ही उसकी आँखें एकदम काली थीं, बल्कि सलेटी पत्थर के घिसे हुए रंग जैसी थीं। उसकी आकृति सुखद थी और मैंटी उसका मुँह देखते थक नहीं रही थी। मई की उस गोधूलि बेला में उसकी आँखें गार्ड की मुखाकृति में निहित कोमलता व साहस खोज रही थीं।

"मैं तो समझी थी कि तू वरनोन में पढ़ाई कर रहा होगा।"

"पढ़ रहा था, परन्तु अब छोड़ दिया। अब तो अध्यापन की परीक्षाओं की तैयारी कर रहा हूँ। यदि उत्तीर्ण हो गया तो रशब्रान्च की पाठशाला में ही मुझे नौकरी मिल जाएगी। इसलिए ही तो मैं राइट के घर आता हूँ ताकि शान्ति से पढ़ सकूँ। यदि अँधेरा भी हो जाए तो जुगनुओं के प्रकाश में घर पहुँचा जा सकता है," वह चुप हो गया, इतना अधिक अपने विषय में कहकर मानों वह लज्जित हो उठा हो।

"जुगनू ? पटबीजने को क्या जुगनू कहता है ?"

"और जगह लोग जुगनू ही कहते हैं।"

बेंटों के घर पहुँचते-पहुँचते सूर्यास्त हो गया। बाड़े में एक किनारे खड़ी लेबोनी बेंट मछली साफ कर रही थी। जड बेंट पिछली सीढ़ियों पर बैठा क्रमशः घटते हुए प्रकाश में अपनी पुस्तक पढ़ रहा था। दो काले बालोंवाले बच्चे ज़मीन पर लोट-लोटकर कुश्ती लड़ रहे थे, तीसरा लड़का सींग बजाकर कोई एक धुन निकालने का प्रयत्न कर रहा था। बटों के बाड़े में घास या फूल तो नहीं थे परन्तु माँज कर हथेली की तरह साफ किया हुआ प्रतीत होता था।

गार्ड ने पुकारकर कहा, "माँ, यह मर्था ट्रूथ बर्डवल तुम्हारे, लिए कुछ बिस्कुट लेकर आई है।"

श्रीमती बेंट ने मछली साफ करना तो बन्द न किया, परन्तु सस्नेह उधर देखती हुई बोली "नीचे उतर, मर्था ट्रूथ, नीचे उतर। बहुत दिन हुए, जब हम तुम लोगों से भी छोटे थे, तेरे माँ-बाप से मैं परिचित थी।"

जड बेंट ने अँगुली डालकर किताब बंद की और उठकर मैटी के पास चला आया। रेशमी लाल मूँछें और लाल बालोंवाला वह एक नाटा-सा, मोटा आदमी था। "ओह, यह तो बसन्त ही आ गई हमारे घर, सफेद घोड़ी पर सवार और हाथों में फूल लिए," उसने कहा।

मैटी घबराहट में कुछ बोल ही न सकी, पर गार्ड हँस पड़ा। "फूलों के नीचे बिस्कुट भी हैं, पा!"

मैटी ने डिब्बा और वे सफेद फूल उसे दे दिए।

"देखने में बसन्त-सी सुन्दर और उपहार में लाई है ग्रीष्म!" जड बेंट ने कहा। अपने भीगे हुए मुँह को झाड़ते हुए कुत्ते की तरह अपनी मूँछें हिलाता हुआ वह दो टुकड़े कर एक बिस्कुट खा गया।

चाकू या हुक्के की तरह किताब हाथ में लिए घूमनेवाले उस विचित्र आदमी से बात करते मैटी डर रही थी, और वह उससे बात भी ऐसे कर रहा था कि वह कोई चित्र हो या वहाँ हो ही नहीं!

श्रीमती बेंट ने सफाई से एक ही हाथ में तड़पती हुई एक मछली का सिर धड़ से अलग कर दिया। लड़के ने सींग पर एक परिचित धुन शुरू की, परन्तु उसे पूरा न कर सका। "उसे कबूतरी की तरह लाओ....."

वह बार-बार बजाए जा रहा था। मैटी के कान पूरा गाना सुनने को आकुल हो उठे। वह चाहती थी कि गाना अधूरा ही न रहने दिया जाए। वह चाहती थी कि गाना अन्तिम पदों तक बजाया जाए। वह मन ही मन पूरी धुन गुनगुनाए

जा रही थी।" उसे कबूतरी की तरह लाओ, हंसिनी की तरह सुलाओ, जब मैं उसके पास हूँ धीरे बोलो, मेरे एक मात्र प्रेमी हो जाओ·····," पर सींग के स्वर साथ नहीं दे रहे थे। "उसे कबूतरी की तरह लाओ," एक बार फिर बजाकर वह चुप हो गया।

इधर पहलवान कराहते हुए कुश्ती लड़े जा रहे थे। उन्होंने अपने नीचे की ज़मीन मानों हल से उखाड़ डाली हो। एक मछली उछलकर नीचे गिरी और संत्रस्त हो घास पर ही तैरने लगी।

"मुझे अब लौटना होगा," मैटी ने अचानक कहा, "क्या डिब्बा मिल सकेगा? माँ उसकी तिपाई बनाना चाहती है।"

श्रीमती बेंट ने गार्ड को डिब्बा खाली कर लाने को अन्दर भेजा और फिर चारों ओर पत्ते लगाकर उसे मछलियों से भर दिया।

"तुम्हारे नाश्ते के लिए मछलियाँ हैं," उसने कहा, "अपनी माँ से कहना कि वह बाँटकर खाना जानती है। आशा नहीं कि मैं उसका साथ दे सकूँ।"

मैटी फिर बूढ़ी पौली पर सवार हो गई और गार्ड साथ-साथ चलने लगा। ज्योंही वे बाड़े से निकले कि जड बेंट ने पुकारकर कहा, "परसीफोन और प्लूटो! अनार के बीज मत खाना; मर्ठाट्रूथ।"

"क्या कहा उसने?" मैटी ने पूछा। उसे लगा कि श्री० बेंट किसी दूसरी ही भाषा में बात कह गए थे!

"परसीफोन नामक एक लड़की थी," गार्ड ने बताया, "बसन्त की देवी थी वह। प्लूटो नामक देवता अपने साथ धरती के नीचे रखने के लिए उसे चुरा लाया था। और जब तक वह लौटकर नहीं आई, धरती पर शरद् ही छाई रही!"

घने पेड़-पत्तों में जुगनुओं का चमकना देख मैटी बोली, "इस समय तो वह धरती पर लौट आई है।"

"हाँ, फिर लौट आई है," गार्ड ने कहा।

जंगल के छोर पर जहाँ से घर की बत्तियाँ सड़क पर फैलती दिखलाई पड़ती थीं वे अलग हो गए। मैटी जब अपना मछलियों भरा डिब्बा लिए रसोईघर में घुसी तो सब खाना खा चुके थे और बरतन भी आधे से अधिक साफ कर दिए गए थे।

"बैठ जा, बच्ची," उसकी माँ ने कहा, "और खाना खाले। देर क्यों लगा दी?"

"बेंट परिवार बातूनी है !" मैटी ने कहा, "पहुँचते ही उन्हें बातें करते छोड़ आना कुछ अच्छा नहीं लगता ।"

"तेरे आजाने से उनकी बातें रुकेंगी नहीं, डर मत ! खाले ! खाना बे-स्वाद हो जाएगा ।"

"मैं नहीं खा सकती," मैटी ने कहा, "खाने की इच्छा ही नहीं है ।" वह कपड़ा उठाकर बरतन पोंछने लग गई ।

"कहीं जंगल पार करते समय भ्रम में तो नहीं पड़ गई," उसकी माँ ने कहा । उसकी समझ में भय का कारण केवल भ्रम ही हो सकता था ।

"नहीं, गार्डिनर बेंट मेरे साथ था ।"

"वह स्कूल में पढ़ने वाला लड़का ?"

"हाँ," मैटी ने कहा, "वह विद्वान है । फूल, जुगनू, कविता, देवता, देवियाँ, उसे सब एक से ही हैं ।" उसने सोल्लास कहा, "वह किसी भी विषय पर बात कर सकता है । ओह, वह तो तथ्यों से भरा है ! वह परीक्षा की तैयारी कर रहा है और इतना पढ़ा है उसने कि छिपाए नहीं छिपता !"

मैटी तश्तरियों को पोंछकर ऐसे फेंक रही थी कि मानों वे हल्की, सूखी पत्तियाँ हों, न टूट सकनेवाली ! वह हाथों से काम तो कर रही थी, परन्तु अपनी माँ के हाथों जैसा कौशल उसके हाथों में न था । उसके हाथ तो मौन रहते । माँ के हाथों से निकलनेवाली टुन-टुन-टन की ध्वनि वह न निकाल पाती । वह तो माँ के विवाह की अँगूठी स निकलती थी । सोने का शीशे से वह टकराना मानों कहता था कि मैं पूर्ण महिला हूँ और इन तश्तरियों की मालकिन !

दूर, पीछे घने जंगल थे जिनमें से सूर्यास्त के पश्चात् लकड़ी के घर व छायाकृतियाँ दिखाई पड़तीं । यहाँ, रसोई में, धधकती हुई अँगीठी का प्रकाश रगड़कर साफ किए हुए फर्श और यथास्थान रखी हुई तश्तरियों पर पड़ रहा था, और माँ की अँगूठी प्रणय का गीत गाए जा रही थी ।

मैटी गुनगुनाने लगी ।

"कौनसी, धुन है," उसकी माँ ने पूछा, "लगता है मैंने पहले भी सुनी हुई है ।"

"उसे कबूतरी की तरह लाओ," मैटी ने मस्कराते हुए कहा ।

"खेल पार्टी की धुन," अपने हाथ साबुन के पानी से निकाल, सुदूर अतीत में देखते हुए उसकी माँ ने कहा, "गेहूँ की बालियाँ !" कभी मेरा मन भी इस धुन पर नाच उठने को करता था।

पाँव उठाकर नाचना·····मैटी ने अपनी माँ की ओर देखा·····यह क्वैकर पादड़ी, लम्बे गाउन के नीचे जिसके पाँव की अब एक झलक तक भी नहीं दिखती; कभी नाच उठने को·····अँगूठी का गीत फिर बज उठा, पर मैटी तो काम छोड़कर देख रही थी। बहुत दिन हुए मन चाहता था, परन्तु कभी-कभी गोभी के फूल में मुँह छुपा लेती जब वह या फिर सड़क पर अपने पति की गाड़ी की आवाज़ सुन दरवाज़े की ओर जब दौड़ पड़ती, तो अब भी मैटी की माँ में ऐसा कुछ दीख पड़ता जिसमें कभी पहले की उस काले बालोंवाली लड़की की छवि आती थी।

"वह बेंट लड़का किस पर पड़ा है, मैटी ?"

"मेरी समझ में अपनी माँ पर, परन्तु वह उससे अधिक सुन्दर है। उसका मुख स्मरणीय है," मैटी के स्वरों में विश्वास था, "गौरवमय, विद्वान मुख ! सलेटी पत्थर सी उसकी आँखें हैं। वह डोलता हुआ नहीं चलता। उसकी चाल देखकर आनन्द आता है।"

मैटी की माँ ने मँजी हुई एक कढ़ाई सुखाने के लिए अँगीठी पर रखदी। "दिल की अच्छाई देखकर," उसने कहा, "औरत को ऐसा ही चेहरा चुनना चाहिए जिसे देखकर उसका मन प्रसन्न रहे। मर्द मर्द सब एक से; और कुछ तो बहुत ही भद्दे दीखते हैं। परन्तु जिसे देखकर खुशी हो, वह मुख तो कभी बदलेगा नहीं। वही एक निर्भरयोग्य बात है। तेरा बाप सदा से ही सुन्दर रहा है !"

"अरे, मैटी, तू रो क्यों रही है ?" फिर से काम में लगते हुए एलिज़ा ने पूछा।

मैटी पहले तो कुछ नहीं बोली। फिर बरस पड़ी। "मुझे भगाना चाहती है ! मुझे मेरे अपने ही घर से निकालना चाहती है ! मर्दों के विषय में इस प्रकार की बातें करके·····जैसे मैं किसी से विवाह ही करूँगी ! मुझे निकालने को व्यग्र हो उठी है !" उसने अपना मुँह गीले कपड़े में छुपा लिया, "मेरी ही माँ !" वह सुबकने लगी।

"क्या बात हुई ? मैटी क्यों रो रही है ?" मटी की माँ ने बैठक के दरवाज़े पर सुपुष्ट काष्ठ-खंड की भाँति खड़े अपने पति की ओर घूम कर देखा।

"हाँ, जैस," उसने कहा, "लगता है कि आज अचानक मैटी को पता चल गया कि घर छोड़कर जाना कैसा लगेगा !"

"घर छोड़ना ?" जैस ने पूछा, "विवाह के पश्चात् ? तेरे विचार में वह क्या रोने की बात है, एलिज़ा ?"

एलिज़ा ने उस मुखाकृति की ओर देखा कि जिससे उसे सदा ही प्रसन्नता मिली थी । वह बोली, "तुझे पता तो है, जैस, मैं यह नहीं मानती ।"

जैस मुस्कराया । "मुझे तो याद पड़ता है," उसने कहा, "कि उन पहले दिनों में तूने कुछ आँसू....." पर एलिज़ा ने उसे चुप कर दिया । "चच....चच," वह बोली, उसकी अँगूठी अन्तिम केतली पर एक मधुर धुन बजा रही थी, "चच.....चच, जैस बर्डवल !"

"अब तो तू प्रसन्न है ?" मुस्कराकर जैस ने पूछा ।

एलिज़ा कुछ न कहकर एक मधुर धुन गुनगुनाने लगी !

"लगता है कि मैं यह धुन जानता हूँ," जैस बोला, "बहुत दिन हुए ।"

"नहीं भी हुए हों," खाली करने को बाल्टी उसे देकर एलिज़ा बोली ।

उसी धुन को गुनगुनाने का प्रयत्न करता हुआ, जैस बाल्टी लेकर बाहर चला गया । "ना...न...ना...ना...ना," लौटकर वह बोला, "नाम तो याद नहीं आता, पर यह धुन मेरे मस्तिष्क में घूम रही है, मैं इसे जानता हूँ ।"

"डर मत, जैस बर्डवल, तू इसे अवश्य जानता है," एलिज़ा ने कहा । उसने खाली बाल्टी उससे लेली, और उसकी अँगूठी एक बार फिर बज उठी ।

फिन्नी नाले की लड़ाई

केवल एक मॉर्गन के नाम को छोड़कर, ग्रीष्म की वह सुबह जुलाई के किसी और प्रभात से भिन्न न थी। चारों ओर फैले हुए भय व अफवाहों से अप्रभावित ऊपर का मघविहीन, गोलाकार आकाश सर्वथा शान्त था। अकाट्य प्रमाणों का भी उस पर कोई प्रभाव न पड़ा था। वे प्रमाण आँखों देखे थे; झाड़ियों में घोड़े सहित छिपे एक लड़के ने मॉर्गन के सवारों को धूल उड़ाते निकल जाते देखा था; नदी की शाखा में तैरती हुई एक लड़की ने, जिसे वे न देख पाए थे, भी उन्हें देखा था; और लूटमार और आग लगाने के अनेकों वृत्तान्त इलाक़े भर में फैल रहे थे।

मॉर्गन के नाम ने उस दिन को बदल दिया था; परन्तु फिर भी वातावरण में या उस दिन में असंदिग्ध आँखें कोई भी अन्तर न देख पातीं। ग्रीष्म के रसोई-घर के द्वार में, हाथ में नाश्ते की घंटी लिए, खड़ी एलिजा ने दूर दूर-तक के मैदानों को बारीकी से देख डाला, परन्तु उसे कहीं भी तो कुछ परिवर्तन न दिखाई दिया। नदी की दक्षिणी शाखा के किनारे जल्दी दूह दी गई गाएँ छाया में खड़ी थीं, गरमी की लपटें खेतों में अनाज की बालियों पर मँडराती दिखाई दीं; और पवन चक्की तीन-चार बार ज़ोर से चलकर मानों सदा के लिए ही बन्द हो गई।

एलिज़ा ने हाथ उठाकर घंटी बजानी चाही; परन्तु फिर हाथ छोड़ दिए। प्रभात के उस मौन को भंग करते वह झिझकी। उसकी यह अकारण धारणा हो गई थी कि केवल घंटी बजाकर शान्ति भंग करने की ही देर है—घंटी बजाते ही जंगल से या नदी पार कर स्वयं जॉन मॉर्गन सम्मुख आ खड़ा होगा।

जैस ने अपनी पत्नी की ओर देखा। "क्या मुझ से घंटी बजवाना चाहती है?" उसने पूछा।

"नहीं," एलिज़ा बोली, "मैं ही बजाऊँगी। लड़कों को तो नाश्ता करने को बुलाना ही पड़ता है।" पर उसने न तो हाथ ही हिलाया और ना ही घंटी ही बजाई। "कितनी शान्ति है" उसने कहा, "मुझे ऐसा लगता है कि इसे भंग नहीं करना चाहिए। लगता है कि घंटी बजाते ही अनर्थ हो जाएगा·····मानों सुनते ही घोड़े पर सवार जॉन मॉर्गन आ

धमकेगा और आकर कहेगा, "क्या तेरे पास घोड़े हैं·····चाँदी है····कम्बल हैं ?"

"मैंने तो सुना है कि वह कुछ पूछता नहीं," जैस बोला, "छीन लेता है !"

"आता है और छीन लेता है," एलिज़ा ने इस तथ्य को ग्रहण करते हुए कहा, "होगा, यह तो होतव्यता है ! बाढ़ या आग भी तो वही करती है। यदि भगवान चाहे तो एक बार बिजली गिरना ही काफी है ! बात करते मैं नहीं डरती; पर लड़के न जाने क्या करदें !"

"लड़के ?" जैस ने पूछा ।

"जौशुआ," उसकी पत्नी बोली ।

जैस सिर हिलाकर रह गया ।

"यदि केवल नाम सुनकर ही·····" एलिज़ा ने कहना आरम्भ किया, "यदि केवल नाम सुनाई पड़ने में इतनी शक्ति·····"

"हाँ," फिर सिर हिलाते हुए जैस ने कहा ।

दक्षिणी तहसीलों में मॉर्गन का नाम जुलाई से पहले भी सुनाई पड़ रहा था, परन्तु जुलाई में तो और सभी चीज़ों से बड़ा हो कर सुनाई पड़ने लगा। गहरी झीलों में फेंकी जाने वाली बोतलों का रव, खेतों में बढ़ती हुई बालियों की सर-सर और कारखानों की मशीनों का शोर मॉर्गन के नाम के समक्ष दब कर रह गया। दूध मथते-मथते औरतें एकाएक रुक कर शून्य में कुछ सुनने लग जातीं, बच्चों ने जंगल की ओर जाना छोड़ दिया, और पुरुष मौन, घोड़ों के पीछे, खेतों में काम किया करते—बातें करना भूलकर, जिससे कि बातचीत में मॉर्गन के भेदियों की पगचाप न दब जाए ।

परन्तु नौजवान बहुत ही उत्सुकता से सुना करते और सुनते-सुनते उनकी नसें तन जातीं, किसी भय या त्रास के कारण उतना नहीं जितना कि यह सोचकर कि उस परिस्थिति में उन्हें क्या करना होगा। जंगल की ओर से आनेवाली घोड़ों के टापों की यह आवाज़ यदि मॉर्गन के सवारों के घोड़ों की हों ? अगर वे लुटेरे आकर कहें, "अपने घोड़े खोल दे, लड़के ! आटा-चबैना सब ले आ, और तेरा बाप जहाँ चाँदी रखता है वह जगह हमें दिखा दे," तो नौजवान सोचा करते कि क्या वे घोड़े खोल देंगे····· शहज़ादा या डॉली उन्हें दे देंगे और सब माल उनके फैले हुए हाथों

पर रख देंगे ? क्या ऐसा करेंगे ? इस प्रश्न का उत्तर नौजवानों को ज्ञात न था और जान पाने का कोई रास्ता भी वे नहीं जानते थे ।

बचपन से ही उन्होंने विरोध की कल्पना की थी । परन्तु जिन शत्रुओं का उन्होंने विरोध किया था वे काल्पनिक थे—अदृश्य लुटेरा या पुराने समुद्री डाकू जो सहज ही में भाग जाते और जिनकी गोलियों का उनके कृतनिश्चयी हृदयों पर कोई प्रभाव न पड़ता था ! मॉर्गन के साथी तो काल्पनिक नहीं हैं, वे भाग नहीं जाते और उनकी गोलियाँ कठिन से कठिन हृदय को भी भेद देतीं । गोधूलि बेला में नदी की सड़क पर, जहाँ किनारे कन्धों से भी ऊँचे थे और घने पेड़ों के बीच जंगली अंगूरों के गुच्छे परदों की भाँति लटके हुए थे, नौजवान पीछे मुड़कर कभी न देखते, और न क़दम ही बढ़ाते । परन्तु कान लगाए सुनते रहते और कुछ न सुन पाकर भी संतुष्ट न होते । वह मौन भी भयावह था ।

एलिज़ा ने एक बार फिर घंटी उठाई । "तू चाहता है कि मैं इसे बजाऊँ ?" उसने पूछा ।

"हाँ, बजा," जैस ने कहा, "ख़ाली पेट में जॉन मॉर्गन से मिलना नहीं चाहता !"

नाश्ता लगभग समाप्त हो चुका था जब जौशुआ आया । उसने आश्चर्यचकित होकर बचे-खुचे बिस्कुट के टुकड़ों, प्रायः खाली माँस के बरतनों और तश्तरी में रखे एक अंडे को देखा । आज की सुबह भी लोग मेज़ पर बैठ आराम से बिस्कुटों में माँस लगाकर, मज़े में चबाते हुए नाश्ता कर सकते हैं यह देख कर वह स्तम्भित हो गया । उसे लगा कि पड़ोसियों की मृत्यु को देखकर इस प्रकार खाना निर्मम व दानवी काम है !

यही बात तो न थी कि वे उनके पड़ोसी थे । ना ही यह था कि उनकी मृत्यु उनके अपने लिए हुई, क्योंकि वे तो उन विश्वासों के लिए लड़कर मरे जिन्हें कि जौशुआ और उसका परिवार भी मानता था । नहीं, जौशुआ तो मृत्यु के सर्वग्राही प्रश्न को ही समझ न पाया था । ना ही अपने माता-पिता की मृत्यु को यों विनयपूर्वक स्वीकार कर लेना, उसके प्रति भावहीनता व निरपेक्षता दिखलाना ही वह समझ पाया था । वे "आमीन" और भगवान की इच्छा कहकर चुप हो जाते । यदि उसे विश्वास होता कि वे सचमुच ही दुःखित हैं, तो वह मान लेता कि आमीन और ईश्वरेच्छा कहते भी कष्ट हुआ होगा । बूढ़े—और वे सब जो उसके अपने

अट्ठारह वर्षों को पार कर चुके होते हैं—अपने परिवार में हुई मृत्यु से संत्रस्त हो उठते। जौशुआ यह भी मानने को प्रस्तुत था।

परन्तु जौश तो मृत्यु की अपार्थिवता से दुःखी था, अनजाने स्त्री-पुरुषों पर उसके प्रहार से संत्रस्त था। कभी समाचार पत्र में उसने पढ़ा कि किसी दूसरी तहसील में एक बुढ़िया डूब कर मर गई तो उसने खाना नहीं खाया। किसी को उसी के ही घोड़ों से बाँधकर घसीटा गया और उसकी मृत्यु हो गई तो जौश भूखा रहा। एक बार जाड़ों में उसने—जहाँ तक हो सका—आकाश की ओर देखा तक नहीं और ना ही उन सितारों से दृष्टि विनिमय किया जिन्हें देखकर उसे प्रसन्नता होती थी क्योंकि उसने अपनी माँ की एक बात सुन ली थी। किसी एक अतिथि को उसकी माँ ने बतलाया था कि लिडिया नाम की एक जवान लड़की ने उससे कहा था, "मुझे पता है कि मैं ज़रूर मरूँगी, परन्तु मैं अपनी खिड़की से शुक्रतारा देखकर मरना चाहती हूँ!" और वह लड़की (जिसे जौश ने कभी देखा तक नहीं था) शुक्रतारे के अपनी खिड़की से दिखने से बहुत पहले, अगस्त में ही मर गई। उस बार सारे जाड़ों जौश ने साँध्याकाश की ओर आँख उठाकर नहीं देखा, बार-बार यही कहता रहा, "जो उसे न मिल सकी, मैं वह वस्तु नहीं लूँगा। वह नहीं देख सकती तो मैं भी नहीं देखूँगा!"

परन्तु जौश अपने ये विचार अपने तक ही रखता, क्यों कि जब भी वे फूट पड़ते, जैसा कि कभी-कभी हो जाता, तो अपने मातापिता की बातें सुनकर उसे क्रोध हो आता।

नदी के ऊपर जमी बरफ टूट जाने से जब एक लड़का डूब कर मर गया तो जौश का दुःख देखकर उसकी माँ ने एक बार कहा था, "तुझे खुश होना चाहिए, बेटा, तुझे खुश होना चाहिए। क्विन्सी संसार की यातनाओं से बचा हुआ, स्वर्ग में है।"

जौशुआ उस लड़के से परिचित था, उसने कहा, "क्विन्सी ने कभी इस दुनिया को दुःखदायी न समझा।"

"स्वर्ग उसे यहाँ से अधिक रुचिकर ही होगा," उसकी माँ ने फिर कहा था।

"उसे ठगा गया," जौश को क्रोध हो आया था, "उसे ठगा गया है।"

"भगवान् के प्रति तू शंका नहीं करेगा, जौश !" उसकी माँ ने कहा था।

साधारणतया, मृत्यु के विषय में वह अपनी माँ की राय से अपने पिता की बात अधिक सहिष्णुता से सुन लिया करता था। उसके बाप का मत उतना निश्चित न था। जौशुआ जानता था कि कई ऐसी मतोत्तेजक सम्भावनाएँ उसके पिता के सम्मुख आजाती थीं जिन पर उसकी माँ का कभी ध्यान तक न गया था। परन्तु उसके बाप में एक इस प्रकार की शान्ति, एक ऐसी सहिष्णु, झुक जाने की प्रवृत्ति थी कि जिसे देख जौश के दाँत अपने आप ही किटकिटाने लगते थे। बूढ़े लोगों को, जौश सोचता, समय और संयोग कुछ इस प्रकार छेद देते हैं कि नदी के गर्भ में पड़े चिकने पत्थरों की तरह फिसलना उनका स्वभाव बन जाता है! एक दूसरे से टकराते, बहते हुए पत्थर, साबुन की तरह चिकने, फिसलनेवाले, जिनमें अंश-मात्र भी तटस्थता, विरोध अथवा प्रहार की भावना न रह गई हो।

"मृत्यु से भी बुरी कई चीज़ें तुझे मिलेंगी, जौश," उसके बाप ने एक दिन कहा था—जौश की किसी बात के उत्तर में नहीं, बल्कि उसके मन की बात भाँप कर।

जौशुआ ने तनिक कटुता से ही अपने बाप को जवाब दिया था, "मृत्यु तो एक अभिशाप है, ना? भगवान की अवज्ञा पर दिया गया अभिशाप?"

"हाँ," जैस ने कहा था, "तू यह भी····"

परन्तु जौश विशेषणों या शर्तों की बात सुनने को रुका नहीं, उसने पूछा था, "भगवान के अभिशाप से बुरा और क्या हो सकता है? यदि भगवान् ही किसी को श्राप देदे, तो उससे बुरा तो उसे खोजकर भी कुछ और न मिलेगा, मिलेगा?"

जौशुआ को यह तर्क अकाट्य लगा था, परन्तु उसके बाप ने अपनी पुरानी चालाकी से उसे काट दिया था। "भगवान का अभिशाप तो सहा भी जा सकता है। कुछ ऐसे भी अभिशाप हैं जिन्हें मनुष्य ने ही बनाया है और जो और भी गहरी मार करते हैं!"

अपने भाई लेबन से जौशुआ ये सब बातें नहीं करता; परन्तु लेब ने एक बार, बिना विशेष उत्सुकता दिखलाए, अपने विक्षिप्त-से ढंग से पूछा था, "तुझे मृत्यु से भय लगता है, जौश?"

जौश समझ ही न पाया था कि क्या उत्तर दे। वह मरने के विरुद्ध था····पर क्या मृत्यु से डरता भी था ? यह वह न जानता था। वर्षों हुए वह एक बार रात को कुछ विचित्र, न समझनेवाली आवाज़ों से डर कर जाग गया था। वह इतना अधिक डर गया था कि उसकी हृदय की धड़कनों से बिस्तर के कपड़े तक हिलने लगे थे ! तब यह सोचकर वह शान्त हो सका था : अधिक से अधिक मुझे क्या हो सकता है ? इतना ही तो ना कि डाकू धीरे-धीरे मेरे पास आएगा और एक हाथ में मेरी गरदन उड़ा देगा और मैं मारा जाऊँगा ! इस बात से उसे सदा ही शान्ति मिलती और यह इतनी तुच्छ सी बात लगती कि वह सुनना और डरना भूल कर सो जाता ।

वह तो काल्पनिक मृत्यु थी और काल्पनिक ख़तरा; जो आवाज़ें उसने सुनी थीं वे शायद किसी चूहे की दौड़ या कड़ाके की ठंड में चटकती कीलों की आवाज़ थी । यदि वह मृत्यु वास्तविक होती···वह आवाज़ वास्तविक विपत्ति की द्योतक ? यदि वह चलाने से पहले बन्दूक़ की खट् होती, घोड़ा दबाने से पहले किसी व्यक्ति की निस्तब्ध श्वाँस होती ?

"मुझे पता नहीं, लेब," उसने कहा था । परन्तु दूसरे नवयुवकों की भाँति वह भी सोचा करता ।

जिस कुर्सी पर उसका भाई, छोटा जैस, बैठा हुआ था उसकी गोलाकार पीठ को कसकर पकड़ जौश उस समय खड़ा हो गया । वह जान रहा था कि परिवारवाले उसे ही देख रहे हैं, और उसने अपनी भावनाओं को दबाने का भरसक प्रयत्न किया । लेब की शान्त, वैमनस्य-भरी दृष्टि का ध्यान उसे विशेष रूप से था । वह समझता था कि दूसरों को हीन समझनेवाला लेब मन ही मन उसकी शारीरिक दुर्बलताओं की गणना कर रहा है । (लेब की माँसपेशियाँ सुदृढ़ थीं और उसका शरीर कसरती) उसे लगा कि लेब सोच रहा है कि जौश बाँस-सा लम्बा है; उसके काले बाल भद्दे हैं; उसके गालों की हड्डियाँ बाहर निकली हुई हैं और उसका तिरछा मुँह आवेश में काँपने लग जाता है !

"कहाँ रह गया था, बेटा ?" जैस ने पूछा ।

"मैं ह्विटियों के घर गया था," जौश ने उत्तर दिया ।

"बैठ, बैठ, जौश," उसकी माँ ने उठते हुए कहा, "मैं तेरे लिए अंडे पका लाती हूँ ।"

"मैं एक अंडा भी न खा सकूँगा," जौश बोला ।

"ह्विटियों के घर क्या सुनाई पड़ रहा है ?" उसके बाप ने पूछा ।

"मॉर्गन इस ओर आ रहा है—वह वीअना से रेल की पटड़ी के साथ-साथ आ रहा है । वह वरनोन जा रहा है । आज या कल वहाँ पहुँच जाएगा ।"

"वरनोन !" उसकी माँ ने कहा । उसने अपने हाथ के दो अंडे टोकरी में रख दिए । जौश चाहे मेपल ग्रोव नर्सरी ही कह देता । या साऊथ फोर्टी बागीचे कह देता ।

"ह्विटियों को इतनी बातों का पता कैसे चल गया ?" उसके बाप ने पूछा । "चार दिन हुए तो उसने ओहियो नदी पार की । और वहाँ मॉर्गन जंगलों में रास्ता भूल पड़ा···आँखों से ओझल रहने की अपने साथियों को शिक्षा दी । और अब लोग नाश्ते की मेज़ों पर बैठे-बैठे, यह बताएँगे कि जॉन मॉर्गन ठीक कौन सी जगह है । बताएँगे कि आज सुबह उसने हजामत बनाई या नहीं···· और कल वह इस समय तक कहाँ होगा !"

अपने पिता की भावहीन निश्चिन्तता के सम्मुख कई बार जौश को लगता कि वह पाषाणवत् हो कर रह जाएगा; और इतना कुछ जानकर, समझ कर भी इन अनन्त, शान्त प्रश्नों से वह अंत में घबरा कर रह जाएगा !

"नाश्ते की मेजों पर लोग····" वह कुपित हो कहने लगा, और फिर रुक गया । "जब मॉर्गन ने नदी पार की तो बेन ह्विटी हैरीसन तहसील में था । वह तीन दिन से उसके आगे-आगे भागा चला आ रहा है ।"

"तूने बेन ह्विटी से बात की ?" उसके बाप ने पूछा ।

"हाँ !"

"उसने क्या कहा ?"

वार्तालाप का ढंग इस प्रकार बदल कर, यूँ जानने की इच्छा प्रकट कर अपने युक्तिसंगत क्रोध का कारण हटाने का प्रयास देख जौश को फिर क्रोध हो आया । "मॉर्गन ने आज अभी तक हजामत बनाई या नहीं इस विषय में तो उसने कुछ नहीं कहा ।"

"बेटा, नीचे बैठकर हमें बता," उसके बाप ने कहा, "छोटे जैस, उठजा, अपनी कुर्सी भाई को देदे ।"

छोटा जैस मेज़ का चक्कर काटकर एलिज़ा की कुर्सी के पास चला गया और अपनी माँ के कंधे से लटककर जौश की बात सुनने को तैयार हो गया । बिना चाहे ही, अपने लिए खाली की गई कुर्सी पर जौश बैठ गया—

और अनजाने में सामने तश्तरी में पड़े बिस्कुट के एक टुकड़े को उठा जल्दी-जल्दी चबाने लगा। उसकी माँ ने मक्खन और अचार उसे देने का उपक्रम किया, परन्तु जैस ने सिर हिलाकर उसे मना कर दिया। "हाँ, तो जौश ?" उसने कहा।

जौश जल्दी-जल्दी बोलने लगा, उसकी आवाज़ मुँह में पड़े सूखे बिस्कुट से दब-सी गई थी। "ब्लोचर के इस पार मॉर्गन के बारह सवारों को ह्विटी ने कल रात देखा। वे वरनोन से बीस मील से अधिक दूर नहीं थे। वरनोन पर आक्रमण करेंगे।"

"वरनोन पर आक्रमण," उसकी माँ ने कहा, "इसके मानी ?" किसी पुस्तक के पन्ने पर लिखा मिल जाए तो भी एलिज़ा इस शब्द का अर्थ न समझ पाती ऐसी बात तो न थी, परन्तु "वरनोन पर आक्रमण!" उस क़स्बे पर आक्रमण जहाँ वह अंडे ले जाकर बेचती थी, जहाँ गिरजाघर था, जहाँ तहसीली पेंठ लगती थी, जहाँ सफेद-पुती ईंटों के मकान थे, जहाँ शान्त धूल-भरी सड़कें थीं, जहाँ बिना रँगे जंगलों पर सफेद फूलों वाली झाड़ियाँ झूलती थीं—इसका क्या अर्थ ? "वरनोन पर आक्रमण," उसने एक बार फिर कहा, मानों किसी भी प्रकार ये शब्द ही, सतरंगी शीशे की तरह, वरनोन का एक सजीव चित्र और खँडहर सम्मुख लाकर दिखला दें!

जौश उस शब्द का अर्थ जानता था। उसे बेन ह्विटी ने बताया था। "आक्रमण का अर्थ है," उसने कहा, "आग लगाना, मारना और लूटना।"

"क्या मॉर्गन के साथी लोगों को मार भी रहे हैं ?" एलिज़ा ने पूछा।

एक क्षण को अपनी माँ की दुनिया जौश की आँखों के आगे घूम गई : स्नेहमय, मैत्रीभाव की वह दुनिया जिसमें युद्ध का अर्थ केवल खून करना ही लगाया जाता; जहाँ स्वेच्छा से मनुष्य का बध करना उतना ही कल्पनातीत माना जाता जितना कि परिवार में भाई का भाई से विरोध हो जाना; परन्तु यह चित्र केवल क्षण भर ही जौश के सम्मुख रहा, फिर मिट गया। उसे फिर क्रोध हो आया।

"क्या तुझे पता नहीं कि युद्ध हो रहा है ?" उसने सावेश पूछा, "क्या तू नहीं जानती कि युद्ध क्या होता है ?"

"तेरी माँ जानती है कि युद्ध हो रहा है, जौश," उसके बाप ने कहा, "परन्तु उसे यह पता नहीं कि लड़ाई होती क्या है। वरनोन में युद्ध होने का क्या अर्थ

होगा यह वह क्या जाने ! उसे मनुष्यों के बध से अधिक उनकी सेवा करने का ही ज्ञान है ।"

"जॉन मॉर्गन को तो उनके बध करने की ही लगन है," जौश ने कहा, "उसने एक लड़के की टाँग में गोली मार दी, क्योंकि वह पर्याप्त वेग से भाग न पाया था। उसने एक बूढ़े की पीठ में गोली मारी। हैरीसन तहसील में कितने मरे मुझे नहीं मालूम। बेन ह्विटी कहता था कि रास्ते भर उसे मॉर्गन की लगाई आग के धुएँ की गन्ध आती रही। वह कहता था कि हैरीसन तहसील की तो एक भी चक्की न बची होगी। वह कहता था कि देश भर में घोड़े ही नहीं हैं—और जो कुछ हाथ लगा वे लोग उठा ले गए ।"

एलिज़ा मेज पर झुक गई। "यह पृथ्वी और इसकी सम्पूर्णता भगवान की है। मॉर्गन के साथी कौन हैं ? क्या कंगालों की एक भाग्यहीन टोली मात्र नहीं ? क्या वे ऐसा कुछ लेने का प्रयत्न कर रहे हैं जो उन्होंने आजतक देखा ही नहीं ? हमारे पास आवश्यकता से अधिक खाने को है। आज से पहले भी किसी के साथ बाँट लेने को कहा जा सकता था ! यदि जॉन मॉर्गन के साथी यहाँ आए," एलिज़ा ने कहा—और जौश ने माँ की आँखें दरवाज़े की ओर उठते देखीं, मानों वहाँ कोई धूलिधूसरित, तिरछी टोपीवाला सिपाही खड़ा हो," तो मैं जो भी बढ़िया-से-बढ़िया माल मेरे पास होगा उसे दे दूँगी। कोई भी मनुष्य मेरा शत्रु नहीं है !"

जौश उठकर खड़ा हो गया। हाथ के बिस्कुट को मसलते हुए वह बोला, "कुछ लोग मेरे दुश्मन हैं। जो भी निरपराध मनुष्यों का बध करता है, उन्हें दास बनाता है, मेरा शत्रु है। वे लोग मेरे जानी दुश्मन हैं !"

जौश को लगा कि उसकी बहिन मैटी का लम्बी अँगुलियोंवाला हाथ—जो कि सुबह की उस गरमी में भी ठंडा था—उसे छू रहा है और उसकी बँधी हुई मुट्ठी को टटोलकर खींच रहा है, और वह, इस दबाव के सम्मुख झुककर, बैठ गया। "मैं अपने मित्रों के साथ ही हिस्सा-बाँटा कर सकता हूँ," उसने कहा, "अगर तू अपना सब कुछ चोरों को ही दे देगी, तो तेरे मित्र भूखे रहेंगे—बाँटने को इतना है ही कहाँ ! इसमें कौनसी भलाई है ?" उसने पूछा ।

किसी ने उसके प्रश्न का उत्तर न दिया, परन्तु जैस शान्त स्वरों में बोला, "इस प्रकार की बातें सदा ही युद्ध के दिनों में फैली हैं !"

"बातें तो झूठ होती हैं!" जौश ने एक चाक़ू उठा लिया और उमड़ आई भावनाओं को शान्त करने के लिए उसे कसकर पकड़ लिया।

"बेन ह्विटी झूठ नहीं बोलता·····कुछ उसने अपनी आँखों से देखा···· कुछ उसे लोगों ने बताया। उसने जगह-जगह आग लगी देखी····· उसने उन लोगों से बात की जिनके घोड़े चुरा लिए गए थे। उसने चिड़िया का पिंजड़ा लिए, चिड़िया घोड़े की ज़ीन से बाँधे, एक सवार को देखा। लोग कहते थे कि वही चिड़िया लिए वह मॉकपोर्ट से आ रहा था।"

उसकी माँ ने जौश के वक्तव्य में बाधा डाल दी। वह खड़ी हो गई और दो पग रसोई की खिड़की की ओर बढ़ी जहाँ कि वह बुलबुल एबोनी, अपने पिंजड़े में लटकी हुई थी! और बस वे दो पग ही भर कर, वहीं पाषाणवत् खड़ी हो गई, मानों अपनी गतिवधि का उसे तब ही ज्ञान हुआ हो। "अब भी समय है," जौश ने मन ही मन कहा, "मौन रह और अपनी माँ का विरोध न कर।" परन्तु वह मौन न रह सका। उसने चाक़ू की धार पर हाथ रखकर दबाया, परन्तु उससे भी इतनी पीड़ा न हुई कि उसका ध्यान बँट जाए।

"मैं तो समझा कि तू कह रही थी," जौश ने अपनी माँ से कहा, उसके ओठ स्वयं अपने प्रति घृणा लिए काँप रहे थे, "कि यही हिस्सा बाँट लेने का सुअवसर है! तुझे भी एबोनी बाँट लेने का अवसर मिल रहा है। तूने तो यह बुलबुल बहुत दिन पाल ली और मॉर्गन के किसी साथी ने इसे एक दिन भी अपने पास न रखा।"

एलिज़ा मेज़ व अपने परिवार की ओर घूमकर खड़ी हो गई। जौश ने अपनी माँ का साफ, भूरा सिर देखा और देखा उसकी काली आँखें एक क्षण को मेज़ के उस छोर पर जा लगीं जहाँ उसका बाप बैठा था, और तब वह दृढ़ता से जौश की ओर देखने लगी। "मैं सोच रही थी कि इसके साथ दुर्व्यवहार किया जाएगा," वह बोली, "इस चिड़िया के प्रति मेरे मन में बहुत ममता है।"

"दुर्व्यवहार!" माँ की बात पर ध्यान न देते हुए जौश चिल्लाया, "मनुष्य गोलियों से मारे जा रहे हैं और तुझे एक चिड़िया के प्रति दुर्व्यवहार की चिन्ता है! तू उसे तो बचाएगी, परन्तु मनुष्यों की सहायता के लिए एक अँगुली तक न हिलाएगी। कोई भी मनुष्य तेरा शत्रु नहीं···· यदि वह तेरी चिड़िया को हाथ न लगाए! प्रत्येक मनुष्य का शत्रु मेरा

शत्रु है! किसी भी समय जितना एक चिड़िया की रक्षा के लिए करूँगा उतना ही मनुष्य के लिए भी करूँगा!"

जैस और लेब दोनों ने ही एक साथ ही बोलने का उपक्रम किया परन्तु एलिज़ा ने—मानों वह किसी सभा में हो—हाथ उठाकर उन्हें रोक दिया। "मुझसे भूल हो गई, जौशुआ," वह बोली, "जो भी उसे प्यार करेगा, मैं एबोनी को उसे ही दे दूँगी!"

"उसे प्यार करेगा?" जौश फिर चिल्लाया, "तूने पहली बार ही ठीक बात कहदी! तेरे विचार में जो चिड़िया बेन ह्विटी ने देखी थी वह अब भी जीवित है? उसकी गरदन कभी की मरोड़ दी गई। यदि बड़ी चिड़िया थी तो अब तक उसे उबाल कर खा भी गए होंगे। एबोनी तो कुछ ही देर में सींख पर चढ़ाकर भून दी जाएगी!"

जौशुआ ने मेज़ के ऊपर झुककर, अपनी माँ की ओर देख चाक़ू हिलाते हुए, एबोनी को ही युद्ध और शान्ति का, जीवन और मृत्यु का निर्णायक तथ्य बना दिया; बात तो वह एलिज़ा से कर रहा था परन्तु सुना सारे परिवार को, लेब को रहा था·····सुनले और काट सके तो काट दे। "तुझ पर ज़िम्मेदारियां हैं। चिड़िया पकड़कर पाल भर देना तेरा काम नहीं! और फिर उसे खिलापिलाकर मोटा कर देना; और फिर जिसके जी में आए उसे पकड़कर ले जाए और पकाकर खा ले। इस मूल्य पर भलाई करने का तुझे कोई अधिकार नहीं। और यह मूल्य तू नहीं चुकाने पाएगी। एबोनी को चुकाना पड़ेगा। जिसके पाँव में गोली लगी थी वह लड़का चुकाएगा, वह बूढ़ा चुकाएगा! हैरीसन तहसील की फौज, वरनोन की सेना चुकाएगी। इससे अच्छा है कि मैं मर जाऊँ," जौश ने कहा।

नाश्ते की उस मेज़ के चारों ओर एक लम्बी चुप्पी छा गई। एलिज़ा फिर से बैठ गई। छोटा जैस, घबराया-सा, एक-एक कर सबका मुँह ताकने लगा। जब बड़े भावावेश में बह जाते, तो वह कुण्ठित हो जाता। उसे लगता कि आवेश उनके मुख पर शोभा नहीं देता। आवेश में उनके मुख से झलकनेवाले वे सत्ता व ज्ञान नष्ट हो जाते जिन्हें कि प्रायः वह उनके मुख पर देखा करता था। और उनके बिना वे रह ही क्या जाते? और वह स्वयं ही क्या रह जाता? खोया हुआ, बिना किसी सहारे। एक भाव से दूसरे भाव के बीच भटकता हुआ रह जाता।

मैटी ने पिंजड़े में बठी, इठलाकर सूर्यमुखी के बीज खाती एबोनी

की ओर देखा। उस चिड़िया में उसने अपनी माँ की चिड़िया भी देखी जो कि भगवान की बनाई सब चिड़ियों में उसकी माँ की थी और अब किसी एक व्यक्ति की न थी, बल्कि सभी की थी; और उसने जौशुआ की चिड़िया भी देखी जो कि साधनहीन थी और यदि वे उसके लिए न लड़ें तो मुर्ग़ी की तरह पकड़ी जाकर किसी के पेट में जा पड़ेगी! और क्योंकि वह एबोनी पर केंद्रित इन दो दृष्टिकोणों के बीच भटक रही थी उसे कष्ट भी हो रहा था। जब वह अपनी माँ की भाँति शान्तिप्रिय व विशालहृदयी होकर सोचती तो उसे लगता कि वह कायर है और जब वह जौशुआ की भाँति लड़ने मरने को तत्पर हो जाती तो सोचती कि पतित हो रही है, धर्म और बाइबिल उसका बहिष्कार कर रहे हैं।

एक केवल लेब ही अपने स्थान पर बिना किसी प्रकार का शोक व उत्तेजना दिखलाए बैठा रहा। उसे लगा कि उसके लिए केवल एक ही रास्ता है। इसके अतिरिक्त बात उसकी माँ, उसके बाप और भाई के बीच थी। उसने सोचा कि मनुष्य मात्र से प्रेम करने की बात तो वह अपनी माँ के शब्दों से भी अधिक सुन्दर शब्दों में व्यक्त कर सकता था। और उस वार्तालाप के बीच से वह उस चिड़िया को भी निकाल फेंकता जिसके पर, जिसका मौन व जिसका स्वभाव मुख्य बात को ही दबाए जा रहा था।

उस लम्बी चुप्पी में·····जब कि कोई बोल नहीं रहा था, कई साफ सुनाई पड़नेवाली आवाज़ों से वह कमरा भर गया। छोटे जैस को छोड़ कर, सबने ही उन आवाज़ों को सुना और समझने का प्रयत्न किया, मानों वे कोई शकुन हों और उन्हें समझकर कोई नया भेद ही खुल जाए। हवा के वेग के साथ-साथ पवन-चक्की की चाल का बढ़ना और गीतमय हो जाना; किसी स्वच्छंद चिड़िया का सुबह का मधुर गीत—उस चिड़िया का जो कि आक्रमण और आक्रमणकारियों से बेख़बर उड़ती-गाती खिड़की तक आई और फिर पर फड़फड़ाती उड़कर आँखों से ओझल होगई।

जैस ने बैठे ही बैठे अपने ज्येष्ठ पुत्र की ओर देखा। अपना प्रेम, स्नेह और परिहास-भरा मुख उठाकर वह ऐसे उसे देखने लगा मानों युद्ध की वार्ता में हँसी का भी पुट हो—कि जौश को लगा कि अपने पिता की वह दृष्टि वह सह न सकेगा और अपना मुँह हाथों में छुपा

कर पिता की बात के उत्तर में "हाँ, पा।" या "ना, पा!" कह उठेगा! परन्तु ज्यों-ज्यों वह स्नेह, परिहास-भरी दृष्टि उस पर पड़ती रही, जौश को लगा कि निश्चय उसे करना ही होगा और वह दाँत भींचे, काँपते ओंठ लिए अपने पिता की बात सुनने के लिए सीधा हो कर बैठ गया।

"तुझे पता है, जौश," उसके पिता ने कहा, "मृत्यु तो इस प्रश्न का अर्धांश मात्र है। मुझे आशा है कि हम में से हर एक"—और जैस ने छोटे जैस और मैटी की ओर भी इशारा किया—"हर एक अपने विश्वासों के लिए प्राण देने को तैयार है। यदि हमसे प्राण देने को कहा जाय और हमारी मृत्यु से कुछ बन सके, तो! मैं बिना किसी बात के जान गँवाने के पक्ष में नहीं हूँ, समझा?" जैस ने अपनी नाक-भौं सिकोड़ते हुए कहा। "मृत्यु तो भयावह अंत है और तेरे सिवाय कोई भी उससे घबराता नहीं! कभी-कभी कई प्रश्नों का उत्तर मनुष्य केवल जीवन देकर ही दे पाता है। वैसी स्थिति में मैं मृत्यु के पक्ष में हूँ! परन्तु, जौश, अभी तक तो ऐसा प्रश्न तुझसे पूछा ही नहीं गया है। यदि सम्भव हो और सड़क पर जाकर जॉन मॉर्गन तुझे मिल जाए तो उसके हाथों तू अपनी जान गँवा सकता है, परन्तु उससे कोई भी निर्णय न हो सकेगा। जॉन मॉर्गन तो बढ़ता ही आएगा और इच्छा होगी तो एत्रोनी को उठा ले जाएगा—वैसे मैं उसे इससे अधिक बुद्धिमान समझता हूँ—और सड़क पर तेरा मृतक शरीर पड़ा होगा! और तुझे लोग ऐसे ही भूल चुके होंगे कि मानों तूने गले में पत्थर बाँध नदी में कूदकर आत्महत्या कर ली हो! नहीं, जौश, मरने से कुछ न होगा। इस समय तो तुझसे मारने को कहा जाएगा, बध करने को!"

मारना! यह शब्द मानों वातावरण में छा गया। एक मक्खी भिन-भिनाती हुई मेज़ का चक्कर काटने लगी, और फिर भी वह शब्द सुनाई दे रहा था·····मक्खी की बेसुरी भिनभिनाहट के ऊपर! मारना! उस क्वैकर परिवार में वह शब्द और भी भयावह और नंगा प्रतीत हुआ जैसा कि सेनाओं और युद्धों की अनुपस्थिति में पौराणिक युग में वह शब्द सुनाई पड़ता था। मारना! मनुष्य का बध करना! अपने भाई का ख़ून करना! जौश उस शब्द पर विचार करने लगा। उसके हाथों ने चाक़ू को फिर कसकर पकड़ लिया।

"मुझे पता है," उसने कहा, "मैं लड़ने को तैयार हूँ।" परन्तु ऐसे तो नहीं चलेगा। जब तक वह उस शब्द का उच्चारण करते डरेगा, लड़ने-

मरने की बात उसके मुँह पर बहाना बनकर ही रह जाएगी ! "यदि मारना ही पड़ेगा, तो इन लोगों को मैं मार भी दूँगा !"

"नहीं, जौश !" एलिज़ा ने कहा ।

पिता से बात न करनी पड़ेगी और अब वह मृत्यु के विषय में सोच सकेगा, जानकर जौश को प्रसन्नता हुई । वह माँ की ओर घूम गया । "हाँ," उसने कहा, "मैं ऐसा ही करूँगा । मैं आठ बजे बेन ह्विटी से मिलने जा रहा हूँ । तब तक वह दो घंटे आराम कर चुका होगा । गवर्नर ने एक घोषणा की है । प्रत्येक पुरुष को भरती हो कर अपने शहर के लिए लड़ना होगा । हम सीधे वरनोन जाकर भरती होंगे । मॉर्गन वहाँ पहुँचने ही वाला होगा, मुझे आज से एक सप्ताह पहले चले जाना चाहिए था ।"

"जौशुआ, जौशुआ !" उसकी माँ चिल्लाई । "तुझे पता है कि क्या छोड़कर जा रहा है ? अपना धर्म । अपना भगवान ! तेरे परदादा विलियम पैन के साथ शान्ति-मार्ग की स्थापना करने यहाँ आए थे । और वे सफल हुए !" एलिज़ा उत्तेजित हो उठी थी । "उन्होंने बर्बर आदिवासियों के बीच काम किया । खून के प्यासे आदिवासियों के बीच; परन्तु वे शान्त ही रहे !"

जौश का मन कुछ स्थिर हुआ । माँ ने बर्बर आदिवासियों से भी अधिक रक्त की प्यास का जो चित्र जौश को लेकर बनाया था वह इतना असम्भाव्य था कि उसमें उसकी थोड़ी बहुत बर्बरता या रक्त-पिपासा जो भी थी—जो जिसके होने का उसे डर था—छिप गई थी । "आदिवासियों को जॉन मॉर्गन, से नहीं निबटना पड़ा था," जौश ने कहा ।

जैस बोला । पहले चिड़िया, अब विलियम पैन और आदिवासी ! मानव मस्तिष्क सोचकर बढ़ता तो अवश्य, यदि बढ़ना कहा जा सके इसे, परन्तु बात से बात और विषय से विषय और अंतिम तथ्य तक यों चुने जाते कि उन्हें सहा जा सके ! "जौश," उसने कहा, "तलवार उठानेवाले उसी तलवार से नष्ट हो जाएँगे !"

फिर वही मरने की बात ! परन्तु शब्द इस बार अधिक सुन्दर था । "मैं नष्ट हो जाने को तैयार हूँ !" जौश ने कहा ।

परन्तु जैस वहाँ ही रुकना नहीं चाहता था । उसने बाइबिल की शरण ली । "तू कभी हत्या नहीं करेगा !"

आखिर वही बात हुई ! "परन्तु ईसा ने यह भी तो कहा था, 'जिसका

जो हो वह उसी को दे !'" जौश हताश हो कर बोला, "मैं यहाँ रहता हूँ—जैनिंग तहसील में। वरनोन मेरा शहर है। गवर्नर कहता है अपने शहर के लिए लड़ो। मेरा शरीर मेरे देश का है !"

"तेरी आत्मा भगवान की है, बेटा !"

"यदि जो मेरा कर्तव्य है मैं उसे न करूँ," जौश ने कहा, "तो भगवान मेरी आत्मा से विमुख हो जाएगा।" अध-रोया-सा वह खड़ा हो गया। युद्ध में जानेवालों को आँसुओं से प्रयोजन? जौश ने सोचा, फिर बोला, "सम्भव है आज भी तू भगवान को लिए बैठा रह सके; मैं नहीं बैठ सकता ! मैं मरना नहीं चाहता·····मुझे यह भी नहीं मालूम कि किसी को मार भी सकूँगा या नहीं ! परन्तु जब आस-पास के सभी लोग प्रयत्नशील हैं, तो मुझे भी कम-से कम प्रयत्न तो कर देखना होगा। मैं उनसे पृथक् नहीं हो सकता !"

वह सीढ़ियों की ओर दौड़ गया ! "मैं जा रहा हूँ," उसने कहा, "आठ बजे बेन ह्विटी से मिलूँगा।"

और सीढ़ियाँ चढ़ते-चढ़ते उसने अपने बाप को कहते हुए सुना, "नहीं, एलिज़ा, नहीं।"

अपने कमरे में पहुँचकर जौश बोला, "युद्ध-यात्रा के लिए सामान बाँधना है," परन्तु बात कुछ निरर्थक-सी ही लगी। वह स्वयं ही अपनी बात में विश्वास न कर सका। परन्तु उसके कंठ से उठकर रोम-रोम में फैल जाने वाली पीड़ा से लगा कि वह प्रस्थान साधारण न था। बाँधने को ऐसा कुछ था भी नहीं। बेन ह्विटी ने कहा था, फालतू जुर्राबें। रूमाल—घाव लगने पर काम देने के लिए। मज़बूत जूते—वह पहने हुए था। एक भारी कोट—न जाने कब तक युद्ध में रहना पड़े। क्या पता सारे प्रान्त का चक्कर काट कर मॉर्गन का पीछा कर उसे भगाना पड़े। बन्दूक—वह अपनी बन्दूक सदा तेल लगा कर, सफाई करके रखता था। गोलियाँ—पता नहीं पर्याप्त संख्या में उसके पास हों भी या नहीं। उसे क्या पता कितनी चाहिएँ·····उसे क्या पता कि वह चाक़ू····हाँ, चाक़ू चला भी लेगा या नहीं। प्याला और टीन की तश्तरी—वह नीचे से ले लेगा। दो कम्बल जिनमें यह सब लपेटा जा सके। और बूढ़ी स्नोर्टी पर ज़ीन कसना·····बूढ़ी स्नोर्टी सफल पीछा कर सकेगी, परन्तु तभी जब मॉर्गन बहुत ही धीरे चले !

सब बँध गया ! युद्ध की तैयारी कुछ ही क्षणों में हो जाती है, उसने सोचा। और अब केवल प्रस्थान करना ही शेष था। चाहे दूसरे प्रकार का ही हो वह, जौश उस काम को भी कुछ ही क्षणों में कर लेगा। जौश को अपने आप पर आश्चर्य हो आया। चाहे कमरे में सुननेवाला कोई न हो, परन्तु यह तो मज़ाक़ ही हो गया। दस मिनट हुए वह रो रहा था, उसके मुख से मृत्यु, कर्तव्य और बाइबिल की बातें निकल रही थीं; और अब उसकी आँखों में आँसू न थे ! छाती में एक दर्द था, परन्तु उसका जैसे इन सारी बातों से कोई सम्बन्ध ही न हो, और यदि हो भी तो ऐसा कि उसे भुलाकर वह कह सके कि वह ऐसे हुआ और यह ऐसे ! बात अजीब थी, परन्तु यह दर्द ही तो पहले हुआ था और स्वयं जौश के बीच एक दीवार बनकर खड़ा हो गया था। मानों इस गहन, गम्भीर पीड़ा के कारण ढूँढ़ने की कोई आवश्यकता ही न रह गई हो।

उसने इधर-उधर से कमरे को देखना आरम्भ किया। कमरा लेब और उसका—दोनों का—था ! मेज़ की दराज़ें बन्द थीं, कपड़े खूँटियों पर टँगे थे, और पलंग की चादरें, माँ के कथनानुसार, हवा लगने के लिए पीछे हटा दी गई थीं। उसे लगा कि वह कोई प्रार्थना करे····· भगवान, इस कमरे की रक्षा करना या ऐसी ही कोई प्रार्थना। फिर उसने सोचा कि सम्भव है उसे प्रार्थना नहीं करनी चाहिए। नीचे जो कुछ भी उसने कहा था उसके बावजूद भी उसे विश्वास न था कि भगवान इस निश्चय में उसका साथ देगा; और जो बात उसकी इच्छा के विरुद्ध की जा रही है, उसमें भगवान को डालने में कोई लाभ नहीं ! भगवान अवश्य ही विरोध करेगा ! और जब अपना पुलिंदा उठाकर वह चलने लगा तो मैटी आ गई। मैटी के अतिरिक्त कोई और होता तो वह भेंट करते झिझकता नहीं।

जौश की धारणा थी कि मैटी सुबह से शाम तक अभिनय करती है : कभी सुन्दर, सुकोमल बालिका कि जिसे गाँव में रहना दूभर हो, और कभी उद्दण्ड, ऊधम मचाती, कलरव-क्रीड़ा में डूबी गँवार लड़की जो सारे गाँव भर को सिर पर उठाले ! कभी उसके साथ हाथ बँटाने को आ बैठती और सारा काम अपने आप ही कर देती और कभी सुबह से दो पहर तक मौन, पेड़ पर चढ़ी बैठी रहती और साँस भी ले रही है या नहीं यह भी पता न चलता !

"ओह, जौशुआ," मैटी ने कहा।

जौश अपना पुलिंदा उठाए ही रहा। मैटी रोकर आ रही थी और जौश समझ न पाया कि उसकी बहन मैटी या अभिनेत्री मैटी उससे भेंट करने आई है! शायद दोनों ही कुछ-कुछ, परन्तु जब उसने उसके गले में अपनी बाहें डाल दीं, तो वह जान गया कि कौनसी अधिक स्नेह से मिल रही थी!

"ओह, जौशुआ," मैटी ने फिर कहा।

"मुझे जाना है, मैटी, देर हो गई है!"

मैटी ने अपनी बाँहें हटा लीं। "जौश," उसने कहा, "तू इसे अपने साथ लेजा।" मैटी के हाथ में बाइबिल का गुटका था, जिसे उसने सस्नेह जौश के कुरते की जेब में डाल दिया। "यहाँ," वह बोली, "तेरे हृदय से चिमटी, यह तेरी रक्षा करेगी।" फिर अपने स्वाभाविक स्वर में उसने कहा, "मैंने कहीं पढ़ा था कि दो सिपाहियों की छाती में गोली मार दी जाती, यदि उनकी जेबों में बाइबिल न होती।" झुके हुए सिर और बँधे हुए हाथों की मुद्रा में उसकी बहन छिप गई और अभिनेत्री सम्मुख आ गई।

देखकर जौश देर तक हँसता रहा। अपनी हँसी पर उसे आश्चर्य भी हो आया।

"इसमें आश्चर्य की क्या बात है?" मैटी ने पूछा, "क्या तू नास्तिक बनने जा रहा है?"

"नहीं," जौश बोला, "नास्तिक क्यों बनूँगा? मैं इसे रख लेता हूँ और शायद इसे पढ़ूँगा भी।" उस छोटी सी पुस्तक को उसने पतलून की जेब में रख लिया।

"क्या इसके ऊपर बैठेगा?" मैटी ने पूछा।

"वही तो पक्की बुनियाद है," जौश ने कहा और पुलिंदा कंधे पर उठाए द्वार तक आ गया।

"अरे, जौश बर्डवल!" मैटी ने कहा। वह तो यहाँ अश्रुमिश्रित, पवित्र विदा देने आई थी और यह जौश नास्तिकों की तरह हँसने लग पड़ा! द्वार लाँघकर जौश मुड़ा और अपनी बहन को समझाते हुए बोला, "अरी, पतलून की जेबों के ऊपर थोड़े ही बैठते है, जेबों के बीच बैठते हैं!"

"विदा, जौश!" मैटी ने निर्बल स्वर में कहा।

जौश ने सोचा कि नीचे मेज़ के चारों ओर बैठे दूसरे लोगों से तो वह पहले ही विदा ले चुका है। अस्तु, चुपचाप सामने के दरवाज़े

से निकल अस्तबल की ओर चल पड़ा। किसी ने भी उसे न देखा। परन्तु जब बूढ़ी स्नोर्टी को कसकर अस्तबल से चला तो लीक के अंत में माँ और छोटे जैस को खड़े पाया। उन्हें देख उसे प्रसन्नता ही हुई।

एलिज़ा का मुख बहुत ही गम्भीर था, परन्तु वह रो नहीं रही थी। एक गठड़ी जौश को पकड़ाते हुए वह बोली, "चबैना है, जौश! तुझे खाना तो खाना ही पड़ेगा। समझ में नहीं आता कि क्या ठीक होगा। माँस और बिस्कुट ही रख लाई हूँ।"

खाने का नाम सुनते ही जौश को प्याले और तश्तरी की याद आई।

"जा, छोटे जैस, दौड़कर ले आ!" एलिज़ा ने कहा, "जल्दी आना, जौश को विलम्ब नहीं होना चाहिए।"

जौश ने स्नोर्टी की लगाम छोड़ दी और माँ के कंधों में हाथ डाल कर उससे चिमट गया।

"विदा, जौशुआ," उसकी माँ ने कहा, और बिना सकुशल लौट आने को कहे, बोली, "मुझे आशा है तुझे किसी का बध न करना पड़ेगा।" जौशुआ ने अपनी आँखें बन्द करलीं। "यदि तुझे मरना पड़ जाए तो वह तेरी अपनी बात और भगवान की इच्छा पर निर्भर है—पर मेरे बेटे," एलिज़ा ने कहा, "तू किसी को मारेगा नही!"

जौश ने अपनी आँखें खोली और मुस्कराया, ठीक यही बात तो कहनी चाहिए थी·····वह स्वयं वे ही शब्द अपनी माँ को चुन देता! उसने माँ के कंधे थपथपाए। सिद्धान्तों पर जमे रहना और किसी व्यक्ति विशेष से मोह न करना—चाहे वह उसका अपना बेटा ही क्यों न हो। जौश ने झुककर उसे चूम लिया। यदि वह उसकी कुशल की बात सोचकर रो पड़ती, तो उससे सहा न जाता।

"विदा," जौश बोला, "तू चिन्ता न कर। किसी को मारने या स्वयं मरने से पहले तो मेरा सारा अस्तित्व ही कंपायमान हो चुका होगा।" अपनी माँ को एक बार फिर चूमकर वह घोड़ी पर सवार हो गया। एलिज़ा इंगित से स्नेह व विदा झलकाती स्थिर पगों घर की ओर चली गई।

छोटा जैस कुछ दूर जौश के साथ-साथ भागता रहा। घर लौटने से पहले उसने ज़ोर से रक़ाब पकड़कर अपने भाई से कहा, "तू मेरे नाम से भी एक को मार देना, जौश!" जौश ने नीचे झुककर छोटे

जैस के तने-हुए मुख में झाँककर पाया कि कोई भी मनुष्य अपने पाँव पर खड़ा होना नहीं चाहता !

जौश को बेन ह्विटी से मिल फोर्ड के चौराहे पर मिलना था, परन्तु अब भी उस धूल-भरी सड़क पर वह अकेला घुड़सवार यों अकड़कर चल रहा था मानों सेना में भरती हो चुका हो ! एक सिपाही की भाँति ही वह दूर क्षितिज में आग या उड़ती हुई धूल के चिह्न खोज रहा था। उसकी आँखें इक्के-दुक्के सवारों को ढूँढ रही थीं। यदि कल मॉर्गन के सवार बीस मील दूर थे तो कौन जाने आज इस इलाक़े में ही पहुँच गए हों।

जॉन मॉर्गन को खोजकर बध करने को शपथबद्ध सिपाहियों की मनोवृत्ति लिए बढ़नेवाले जौश की दृष्टि अब भी किसी किसान ही की दृष्टि की भाँति खेतों पर पड़ रही थी। एक खेत में अकारण बिना कटी फसल देखकर वह सोच में पड़ गया; एक बागीचे में सेब की फसल कैसी हो रही है यह अनुमान लगाते उसने अपने आप को पाया। यह विचारधारा भंग हो, इसलिए वह रुककर अपनी बन्दूक भरने लगा। वह सोचने लगा कि एकाएक जंगल में से या किसी मोड़ से निकल कर सामने आजाने वाले अपरिचित व्यक्ति का बिना अभिवादन किए, उससे बिना दो बात किए, गोली चलाकर सिर उड़ादेना कैसा लगेगा ! इस विचारमात्र से ही उसे पसीना आगया। मेरे भगवान, उसने सोचा या प्रार्थना की—पता नही क्या किया, वह अपरिचित कोई लड़का या बूढ़ा न हो। हे भगवान ! वह कोई कठोर, दास-प्रथा का अनुगामी, लफंगा हो ! यह सोचकर जौश को ध्यान आया कि वह आनेवाला स्वयं भी तो बन्दूकधारी, पक्का निशानेबाज़ हो सकता है ! और वह काठी पर जमकर बैठ गया और अधिक सतर्क हो आहट लेने लगा।

सुबह नाश्ते के बाद जो दर्द उठा था वह अब नहीं रहा। उसके स्थान में एक विचित्र-सा शून्य, एक विचित्र-सी सूजन, एक प्यास पेट में लग रही थी। मानों उसके पेट में कोई खोखली चीज भरी हो जो कि प्रतिक्षण वृहदाकार होती जा रही हो।

बेन ह्विटी क्रुद्ध, धैर्य खोकर, मिलफोर्ड के चौराहे पर उसकी बाट देख रहा था। "तुम एक घंटा देर से आए हो," वह चिल्लाया।

"जानता हूँ," जौश ने कहा, "अब समय पूरा कर लेंगे;" परन्तु वे कुछ ही दूर गए होंगे कि बेन ह्विटी ने पीछे देखकर कहा, "लेब

रोम ब्यूटी पर सवार आ रहा है। क्या वह भी भरती होगा ?"

"नहीं," जौश ने कहा, "उसके विचार हमसे विपरीत दिशा में बहते हैं।"

"अच्छा, तब तुम कुछ भूल आए हो," बेन ह्विटी ने कहा, "तुम्हारी माँ ने भेजा होगा।" वह आगे बढ़ लिया और जौश लेब से मिलने को लौट पड़ा।

लेब घोड़ा दौड़ाए आ रहा था, रोम ब्यूटी की बस एक यही चाल थी! पास आकर उतर गया और बोला, "नीचे उतर! बाप ने कहा है कि तू रोम ले जाएगा।"

जौश स्नोर्टी पर बैठा रहा, अडिग, अविश्वास लिए।

"नीचे उतर ना," लेब ने कहा, "अगर तुझे मॉर्गन से लड़ना है तो लड़; यों ठूँठ की तरह बैठा मत रह!"

"लेकिन बाप मेरे जाने के विरुद्ध है," जौश ने कहा।

"उसका विरोध तो तुझे रोक नहीं पाया। अब जा! वह कहता है कि जहाँ तक उसकी जानकारी है रोम क्वैकर नहीं है; और तेरी और रोम की विचारधारा भी प्रायः समान है! अब जा!"

जौश स्नोर्टी पर से उतर गया और अपना पुलिंदा रोम की काठी से बाँधकर, राह की धूल में अपने भाई के पास खड़ा होगया। वह लेब से लम्बा था, परन्तु लेब के कन्धे और गठन उससे कहीं अधिक पुष्ठ थी।

"बाप से कहना," उसने कहा, परन्तु लेब बीच ही में बोल पड़ा, "बाप ने कहा है कि मनुष्य भय के कारण ही मारता है·····रोम की सवारी से तुझे कुछ मदद ही मिलेगी। उसने रोम इसलिए नहीं भेजा कि उसके विचार किसी भी विषय में बदल गए हैं।"

"लेब," जौश ने पूछा, "तूने जाने की नहीं सोची ?"

"नहीं!"

"मुझे जाना पड़ेगा," जौश बोला, "नहीं तो मैं सदा यही सोचूंगा कि·····"

"अब जा," बात समाप्त कर सके, इससे पहले ही लेब ने कहा।

उस बड़े, लाल घोड़े पर सवार हो जौश बेन ह्विटी के पीछे चला, परन्तु वहाँ तक पहुँचने से पहले ही उसने अपना अधूरा वाक्य पूरा कर लिया, "कि मैं डर गया था!"

"अब तो तुम बढ़िया घोड़े पर सवार हो," बेन ह्विटी उसे पास पहुँचते देख कहा, "बस इसका मुख निर्दिष्ट दिशा में मोड़ भर देने से जहाँ चाहो पहुँच सकोगे !"

"डर मत," जौश कहने लगा·····पर फिर चुप लगा गया। "तुझे पता नहीं," उसने अपने आप से कहा।

वे दोनों साथ ही साथ वरनोन पहुँचे, लाल व चितकबरे दो घोड़े, दो जवान लड़के : बेन ह्विटी जन्मतः साहसी, और जौश अपने कर्तव्य के पथ में। वे शहर में घुसे और मानों स्वप्न से जागकर जो स्वप्न में देखा था उसे ही आँखों के सामने बिखरा पड़ा पानेवाले मनुष्य की तरह उन्होंने अपने स्वप्न की पृष्ठभूमि देखी—भयभीत, निष्कृति की खोज में संलग्न ! रास्ते में घाटियों को पार करते हुए, खेतों से गुज़रते हुए उन्हें कुछ बातों पर विश्वास हुआ था, कुछ पर नहीं। यों बन्दूक लटकाए यहाँ चले आना तो विश्वास की बात थी, परन्तु अब तो सब बातें ही माननी पड़ गईं। उनका विश्वास ठीक ही था। मॉर्गन एक सत्य था; वह था और हत्याएँ कर रहा था, लूट रहा था; वह किसी भी समय यहाँ आ पहुँचेगा ! दसों मुख उन्हें यही बात बताने को मौजूद थे।

जुलाई के सूर्य के ताप से शहर भभक रहा था; और भय, उत्तेजना, चिन्ता और निश्चय के ताप से भी। पहले तो अगस्त के मेले में या चार जुलाई के उत्सव जैसा ही जौश को लगा ! और उस सर्वग्राही, सर्वतोमुखी व्यस्तता में उत्सव का एक अंश था भी। लगता था कि पचास वर्षों से मस्कैटैटक का उतार-चढ़ाव देखकर, फसलों का कटना-पकना देखकर और ग्रीष्म की बरसातों की तरलता को शरद् के हिमपात की सघनता बन जाते देखकर वरनोन अब थक गया हो और कोई दूसरा तीव्रतर रंगोंवाला दृश्य देखना चाहता हो !

भाग-दौड़, पुकारें, सड़क पर घोड़ों की संख्या, गाड़ियाँ और हँसी भी—ऊपर से तो यही दिखता था। और जौश ने जब यह सब कुछ एक ही दृष्टि में देखा, सब कुछ एक साथ ही सुना, तो उसे भी केवल इतना ही दिखाई पड़ा। सारी आवाज़ें उत्सव की सी लगीं; और ये सारे दृश्य उत्सव की पराकाष्ठा, जब नृत्य में पग ऊपर ही ऊपर उठते चले जाते हैं। भीड़ बढ़ जाती है और मुस्कानें मुखों की सीमा में समा नहीं पातीं !

जब एक-एक कर इन्हीं चीज़ों को जौश ने देखा तो उत्सव की कोई बात भी न दिखाई दी। गाड़ियाँ, औरतों, बच्चों और माल-असबाब से भरी, गाँवों की कल्पित सुरक्षा की ओर जा रही थीं।

"इसमें क्या बुद्धिमानी है?" बेन ह्विटी ने कहा, "इस तरह तो दो सवार ही आराम से सारे परिवार को लूट ले सकते हैं, न उन्हें कहीं कुछ ढूँढ़ना पड़ेगा और ना ही खोदने का कष्ट उठाना पड़ेगा!"

परन्तु, बेन ह्विटी ने फिर सोचा, भिन्न-भिन्न प्रकार की गाड़ियाँ, सबकी सब औरतों, बच्चों और बहुमूल्य वस्तुओं से लदी, गाँवों और पहाड़ों की ओर जा रही थीं। पुरुष गहरे गढ़ों में से फावड़े भर-भरकर मिट्टी निकाल रहे थे और गहने, रुपए और जो कुछ भी लुटेरों से छिपाना चाहते उसे दबाने की तैयारी कर रहे थे। लड़के खिड़कियों और दरवाज़ों पर तख्ते ठोंक रहे थे, कीलों पर कीलें जड़े जा रहे थे। एक आदमी अपनी दूकान को घर का रूप देने में संलग्न था, घर को दूकान का रूप वह पहले ही दे चुका था। अपने घर की छत पर बैठा एक बूढ़ा दूरबीन से दक्षिण की ओर देख रहा था। सुनकर, अब जौश को लगा कि आवाज़ों में उत्सव की कोई बात ही नहीं थी। वे उठतीं, गिरतीं और बन्द हो जातीं। एक आदमी ने चिल्लाकर बोलना आरम्भ किया और अचानक कानाफूसी करने लगा।

"चलो, यहाँ से निकलें," बेन ह्विटी ने कहा, "रक्षा दल का पता चलाएँ।"

सड़क के किनारे आराम से बैठे एक लंगड़े आदमी के सामने वे खड़े हो गए।

"मॉर्गन कहाँ है?" बेन ह्विटी ने पूछा।

"ठीक नहीं कह सकता। बरसाती मेंढकों की तरह बातें फैली हुई हैं! कहते हैं कि रात वह लैक्सिंगटन में था।"

"हम यहाँ भरती होने आए हैं," बेन ने कहा।

"एक सप्ताह देर से," ठंडे हुक्के की नली चूसता हुआ वह लंगड़ा बोला।

"हम जानते हैं," बेन ने कहा, "परन्तु जितनी जल्दी हो सका हम आ गए। हमारे पास बढ़िया घोड़े हैं और हम खूब लड़ेंगे। सेनापति कहाँ है?"

"बैठा-बैठा भरती नहीं कर रहा!"

बेन ह्विटी ने घोड़े को एड़ लगाई। "लौट आओ," वह लंगड़ा चिल्लाया। फिर गम्भीर होकर कहने लगा, "तुम्हें देखकर मुझे क्रोध हो आ रहा है। गाँव का हर छोकड़ा यहाँ भागा चला आ रहा है; छुहारे की तरह सूखा हुआ बदन पर मॉर्गन के मुख पर थूकने को तैयार! यह तुम्हारे बस की बात नहीं। मॉर्गन चट्टान की तरह मज़बूत है और बन्दूक की तरह निर्भय!"

"तुम किसकी ओर हो?" बेन ने पूछा।

"अपनी तरफ! मैं भी मॉर्गन के हन्टर लगते देखना चाहता हूँ पर तुम....."

"भगवान के लिए ज़्यादा ज़ुबान न चलाओ," जौश बोला, "रक्षादल कहाँ हैं?"

"ओफ्फोह," लंगड़ा बोला, "क्वैकर भी आया है! तू क्या करेगा, बेटे? सिपाहियों के लिए प्रार्थना?"

"चलो," बेन ने कहा और दोनों आगे बढ़ गए!

"ऐसे आदमियों से क्या पता चलेगा?" जौश बोला!

"सभी ऐसे नहीं हैं!" बेन ने कहा।

एक फाटक के पास खड़े बूढ़े ने उन्हें हाथ उठाकर बुलाया।

"लड़ाई में भाग लेना चाहते हो?" उसने पूछा।

"इसलिए ही तो आए हैं। रक्षादल कहाँ हैं?"

"सब जगह," बूढ़े ने अपनी दाढ़ी हिलाते हुए कहा, "थोड़ी-थोड़ी संख्या में, पर अधिकतर दक्षिण की ओर फैले हुए हैं। मॉर्गन घेरा डाल सकता है—पर पता चला है कि वह दक्षिण में ही पूर्ण बल प्रयोग कर रहा है। वीअना से रेल की पटड़ी के साथ-साथ आ रहा है। दक्षिण में हर नाले, सड़क और पुल पर सैनिक टुकड़ियाँ हैं।"

"तुम्हारी समझ में हम सबसे अधिक कार्य कहाँ कर सकते हैं?"

"शाखाओं के पास वाले पुल पर। मैं दो दिन से यही बात सोच रहा हूँ। जॉन मॉर्गन जैसा आदमी सीधे रास्ते ही आएगा, पुल पार करेगा और वहाँ से शहर पर धावा बोल देगा। अगर तुम सचमुच ही करारी चोट करना चाहते हो तो वहीं जाओ।"

"हम वहीं जाएँगे," बेन ने कहा।

पुल के पास जहाँ मस्कैटैटक कई शाखाओं में बट जाती है, उसके

किनारे बहुत ऊँचे हैं। यहाँ ही रक्षादल के सेनापति ने जितने भी सिपाही वरनोन की दूसरी सीमाओं से हटाए जा सकते थे एकत्रित किए हुए थे। पुल की टुकड़ी यदि दब जाती तो कर्नल विलियम्स ने नदी के पश्चिमी किनारे उसकी समझ में जो श्रेष्ठ सिपाही थे तैनात किए हुए थे, जो कि अवसर पाते ही आतताइयों पर टूट पड़ते। उनके पुल तक पहुँचने से पहले ही कर्नल बल-प्रदर्शन से नहीं, तो बल-प्रयोग से डाकुओं को रोक देना चाहता था। यदि यह युक्ति सफल न होती तो शहर की ओर बढ़नेवालों को पश्चिमी किनारे की टुकड़ी चुन-चुनकर समाप्त कर सकती थी।

यह योजना बनाई गई थी। नदी की टुकड़ियों का कप्तान जितने आदमी भी मिल जाते उनका उपयोग कर सकता था। और जब बेन और जौश अपने बढ़िया घोड़ों पर सवार वहाँ पहुँचे तो उसने तत्क्षण उन्हें पुल के आगे की टुकड़ी में मिल जाने को भेज दिया।

"वे इधर ही आ रहे हैं," कप्तान ने उन्हें बतलाया "उनमें से कुछ तो," उसने हाथ उठा दिखलाते हुए कहा, "उस पहाड़ी की चोटी पर बैठे हुए हैं। उनको तो हम बेवकूफ बना चुके। हमारे सिपाही पहाड़ी की सड़क पर कई बार मॉर्गन की आँखों के सामने—यदि मॉर्गन वहाँ है—इधर से उधर गए। उन्हें तो बहुत बड़ी सेना ही दिखाई पड़ी होगी। पर कुछ और भी हैं उसके साथी और वे अब यहाँ पहुँचा ही चाहते हैं। यदि हमने उन्हें न रोका तो कोई भी उन्हें न रोक सकेगा। और यहाँ से आगे यदि वे बढ़ गए, तो मॉकपोर्ट और सलेम और लैक्सिंगटन की पुनरावृत्ति हो जाएगी। अपनी बन्दूकें तैयार रखना। घोड़ों से उतर जाओ और उन्हें आराम करने दो। पर रहना घोड़ों के पास और उन्हें शान्त रखना। तुम्हारे आने से मैं प्रसन्न हूँ। मुझे तुम्हारी ज़रूरत है।"

जुलाई के सूर्य का ताप एक बोझ सदृश्य प्रतीत हो रहा था। जौश को लगा कि कन्धों पर जलती हुई लकड़ी रखदी गई हो! उसके पास एक ओर बेन और दूसरी ओर विशालकाय गम एन्सन खड़ा था, परन्तु फिर जौश मानों एकाकी और बिना किसी ओट के—एक अचूक निशाना बना खड़ा था!

बहुत देर तक वह अथक, टकटकी बाँधे सामनेवाली सड़क को देखता रहा था। देखने को अधिक कुछ तो था नहीं—धूल-भरी सड़क,

ग्रीष्म के अपने आप उपजने वाले फूल-पौधे, ऊँची बालियों से लदा हुआ एक छोटा-सा खेत, और आगे झाड़ियों के एक झुण्ड के पास से मुड़ती हुई, आँख से ओझल हो जाती सड़क ! धरती व नदी और नदी के किनारे लगे पौधों के ऊपर लहराती-सी आग की सी लपटें और ऊपर तपता हुआ सूर्य। जौश पत्ते-पत्ते को इस प्रकार देख रहा था कि मानों चौकसी का सारा भार उसके ऊपर ही हो। कुछ दूर सड़क के पास पत्तों का एकाएक हवा चलने से हिल उठना देख उसने बन्दूक सम्भाली और फिर लज्जित हो कर नीचे रख दी। पसीना उसकी छाती पर से बहता हुआ पेटी के पास जाकर रुकता और कपड़ों में सूख जाता।

"कुछ लीचियाँ खा लें," गम ने कहा, "सारी दोपहर यों ताकते रहना तो न हो सकेगा।" उसने एक बड़ा सा थैला निकाला। लीचिएँ ठंडी और पकी हुई थीं, और जौश ने एक मुट्ठी भर ली।

"सुबह नान्सी जब इन्हें निकालकर लाई थी," गम बोला, "तो उसका मन रखने को ही मैंने वह थैला ले लिया था। लीचियाँ लेकर मॉर्गन से लड़ने जाना कुछ ठीक न लगता था।" वह खाता और थूकता जा रहा था। "अब सोचता हूँ सबसे काम की चीज़ यही लेकर आया हूँ !"

"मॉर्गन को आ तो जाने दे, गम," कोई चिल्लाया, "लीची की गुठलियाँ उस लेटेरे को न रोक सकेंगी, कुछ और भी चाहिएगा !"

"गुठलियों के अतिरिक्त और कुछ भी मैं लाया हूँ," गम ने उत्तर दिया और आसपास के सब लोग हँस पड़े।

जौश ज़ीन में सरककर देखने लगा। वह हँसी सुनकर स्तम्भित हो गया था। मरने मारने को तैयार इन सिपाहियों को हँसते देखकर उसे आश्चर्य हुआ। जो हँस रहे थे उनके चेहरों को उसने ग़ौर से देखा : बूढ़े, अधेड़ किसान और स्वयं उससे भी अल्पायु लड़के ! पसीने में तर, तम्बाकू चबाते हुए, कुछ तो घोड़ों पर बैठे-बैठे ऊँघ भी रहे थे। अधिकतर लोग घोड़ों पर से उतर चुके थे। कुछ वर्दी पहने, कुछ नहीं। घोड़ों पर, टट्टुओं पर और भी अनेक प्रकार के जानवरों पर सवार ! भिन्न-भिन्न प्रकार की बन्दूकें। एक ने तो संगीन तक लगा रखी थी। संगीनें देखकर जौश घोड़े पर खड़े हो कर देखने लगा। क्या आक्रमणकारी भी संगीनें लिए थे ? कुछ देर से उसने इस बात पर ध्यान न दिया था, परन्तु उसे फिर पसीना आ रहा था।

"और लीचियाँ खाओ," गम ने कहा।

जौश ने फिर मुट्ठी भर ली। "धन्यवाद," उसने कहा, "मेरा गला सूख गया था। भूख भी लग रही थी। मुझे याद ही नहीं कि मैंने पिछली बार भोजन कब किया था!"

"तो लीचियाँ ज़रा कम खाओ। खाली पेट ठीक नहीं रहतीं।"

"मुझे तो ठीक ही लग रही हैं," सड़क पर दृष्टि जमाए, खाते और थूकते हुए जौश बोला।

"घबराओ मत," गम ने कहा, "तुम तो उसके आने से पहले ही गिर पड़ोगे। सामने हमारे भेदिए हैं। कोई भी बात हो तो वे हमें सावधान कर देंगे।"

जौश को लगा कि यों बिना कमर सीधी किए देखते रहकर उसने मूर्खता की। ानों भेदिया, सिपाही, कप्तान सब कुछ वही हो! दूसरे लोग अपने पुलिंदों पर बन्दूकें लटकाकर आराम कर रहे थे। कुछ मज़े में तम्बाकू पी रहे थे; उसके पीछे खड़ा एक आदमी शराब-सी न लगने वाली किसी चीज़ के घूँट भरे जा रहा था।

"मॉर्गन कभी इस रास्ते से न आएगा," एक दाढ़ीवाला किसान कह रहा था। "वह खोटे पैसे से भी अधिक खोटा है! यदि पिछला दरवाज़ा खुला मिल जाए, तो वह सामने से आकर कभी भी न लड़ेगा।"

"पिछला दरवाज़ा इतना खुला हुआ तो नहीं है जितना कि तेरा ख़याल है।"

"खुला हो या बन्द—इससे मॉर्गन को क्या? पाँच हज़ार आदमी जब साथ हों तो स्वागत की बन्दनवारों की बाट न देखकर जहाँ से भी जी में आए घुसा जा सकता है!"

"पाँच हज़ार!" कोई चिल्लाया, "तो हम यहाँ क्या कर रह हैं? यहाँ से इण्डिएनापोलिस भाग क्यों नहीं जाते?"

"इण्डिएनापोलिस? तू वहाँ कभी मत जाना। मॉर्गन तेरे विरुद्ध डिग्री लिए बैठा है!"

"पाँच हज़ार या दस हज़ार," एक शान्त स्वर आया, "मैं तो यहाँ से हिलूँगा नहीं। इससे पहले कि मॉर्गन पुल पार कर मेरी दूकान लूट सके, मैं और कुछ नहीं तो अपने दिल की बात ही उसे बता दूँगा!"

"मैं भी, पर मैं बात गोलियों से करूँगा! मेरा परिवार हैरीसन तहसील में रहता है।"

"क्या तुमने बूढ़े यार्डल की बात सुनी ?"

"हाँ, उसकी पीठ में गोली लगी थी।"

"उसने कुछ किया थोड़े ही था—वह क्या हो रहा है यह देखने के लिए अपने द्वार तक गया था।"

"तुमने वरसेल के लोगों की बात भी सुनी ? तोप में बारूद भरकर आक्रमणकारियों पर दागने को तैयार बैठे थे।"

"फिर क्या हुआ ?"

"तोपची भाग गया और इससे पहले कि कोई दूसरा मिले तोप लूट ली गई !"

"ऐसे लोगों को तो फौजी न्यायालय के सम्मुख खड़ा कर देना चाहिए !"

"तीसरा पहर समाप्त होने से पहले, ग्रोगन, सम्भव है इस विषय में तुम अपनी राय बदल दो !"

तीसरा पहर ढलता जा रहा था। मनष्यों और घोड़ों के पसीने की गन्ध नदी व काई की दुर्गन्ध से मिल गई थी। जौश ने रोम की ज़ीन ढीली कर कम्बल को थोड़ा उठा दिया, जिससे कि उसकी पीठ में हवा लग सके। काठी में बैठे-बैठे उसका मन बहुत हल्का व निर्मोही हो उठा था। गम ने लीचियों के विषय में ठीक ही कहा था; उसके पेट में गड़बड़ होने लग गई थी। वह कुछ अस्वस्थ, परन्तु प्रसन्न था। वह यहाँ पहुँच गया था, वह सकुशल था और जहाँ आना उसका कर्तव्य था वहीं वह आ गया था। कुछ मुड़कर रेत के एक टीले को छूती हुई, आगे बढ़कर गहरी हो जाती मस्कैटैटक को वह देख रहा था। तीन या चार बजे का समय रहा होगा। सूर्य पानी और रेत में घुसकर चमकता और फिर लहरों के प्रभाव से हिल हिल उठता। उसने छोटी-छोटी मछलियों की रूपहली चमक देखी, बन्दूक की गोली जैसी चमक ! एक पन-मक्खी बार-बार अपना सूई की नोक-सा मुँह बहते पानी में से निकालती और फिर अन्दर कर लेती। जुलाई का महीना·····ग्रीष्म का तीसरा पहर·····ठंडा पानी·····गरम सूर्य.·····इधर उधर भागती·····रूपहली मछलियाँ !

जौश चौंका और उसका हाथ बन्दूक के कन्धे पर जा पड़ा। एक घुड़सवार सड़क पर घोड़ा दौड़ाए लिए आ रहा था।

"हमारा ही भेदिया है," बेन ह्विटी ने कहा ।

बर्दी पहने हुए उस छोटे से लड़के ने कप्तान के सम्मुख आकर अपने काले घोड़े की लगाम खींची । उसने जो कहा जौश न सुन पाया, परन्तु एक क्षण पश्चात् ही कप्तान ने उन्हें बता दिया । उसके स्वरों में ऐसा कुछ था जिससे सब जान गए कि समय आ पहुँचा !

"लड़को," कप्तान ने कहा, "लुटेरे आ रहे हैं । लगभग दो मील दूर होंगे । जितने हम समझते थे संख्या में उससे कम ही हैं । मेरी समझ में वे हमला करेंगे। बस दो बातें याद रखना : एक तो स्थिर रहना और दूसरे जब तक मैं न कहूँ गोली न चलाना ।" वह रक़ाबों पर खड़ा हो गया । "जब तक मैं न कहूँ गोली मत चलाना ! यदि निशाना लगा सकने से पहले ही गोली चलाओगे तो सब समाप्त हो जाएगा । आततायी तुम्हारे सिर पर से घोड़े दौड़ाते निकल जाएँगे ! रुके रहना । तुम्हारी बन्दूकों की मार भी उतनी ही है जितनी उनकी बन्दूकों की ! परन्तु तुम उनसे अच्छे निशानेबाज़ हो । वे कई सप्ताह से घोड़ों पर सवार हैं, और थक चुके हैं । निशाना ज़रा नीचा लगाना जिससे सवार के नहीं तो घोड़े के तो लग ही जाए; परन्तु चूकना मत !

भेदिया तेज़ी से आगे बढ़ गया और जौश ने उसके काले घोड़े की टाप पुल के तख्तों पर पड़ती सुनी और फिर पुल पार पश्चिमी किनारे की सड़क पर पहुँचकर बन्द हो गई, जहाँ की छिपी हुई टुकड़ी भी उसकी बात सुनने को व्यग्र हो उठी थी । कप्तान घूम-घूमकर अपनी टुकड़ी के साथ आक्रमण की बाट देखने लगा ।

जौश ने अपनी बन्दूक उठाली । न जाने कैसा एक उद्वेग उसके हृदय में उठने लगा । उसने सोचा कि यह तो घने जंगल में घोड़ा दौड़ाते हुए शाखाओं की मार से जो हृदय में दर्द होता है वैसा ही कुछ दर्द है । कुछ ऐसा ही दर्द उसके कानों में हुआ, उसे लगा कि वह शरीर को क्षत-विक्षत कर देने वाली तूफानी लहरों में फँस गया है और तब उस पीड़ा के साथ ही साथ जौश की समझ में आगया कि यह तो उसके अपने हृदय की धड़कनें हैं; उसका अपना ही हृदय है !

गम ने कहा, "लगाम बाँध लो, भाई, और फिर निशाना साध लो । गोली चलाते हुए घोड़ों ने सिर हिला दिया तो निशाना चूक जाएगा ।"

गम की बात जौश की समझ में आ गई । लगाम छोड़ वह रोम की

गरदन सहलाने लगा, "अच्छी घोड़ी," उसने कहा, "मेरी अच्छी रोम ! तुझे कुछ भी न होगा !" जौश जानता था कि वह अपने ही आप को प्रोत्साहन दे रहा है। रोम को प्रोत्साहन नहीं चाहिए—वह तो पंचायत घर की भाँति अटल खड़ी थी ! कभी-कभी अपना सिर ऊपर नीचे अवश्य हिला लेती।

वे सब इंतज़ार में थे। बेन ह्विटी हास्योत्पादक ढंग से बड़बड़ा रहा था, मानों स्वप्न देख रहा हो। वैसे वे सब शान्त ही थे। सब कान लगाए सुन रहे थे। धरती में से न जाने क्या निकलकर उन सब को एक सूत्र में बाँधे हुआ था। जौश ने एक्य के उस भाव को अपने अन्दर पाया। यदि कोई चाहे तो इस बंधन से निकलकर भाग सकता था; परन्तु जब तक एक ही ओर देखते, एक ही भावना लिए, वे वहाँ खड़े थे, तब तक उसका प्रभाव भी उन पर था। और फौलाद की भाँति उसका सहारा भी लिया जा सकता था ! जौश को उस सहारे का आभास मिला·····उसके हृदय की वह पीड़ा बढ़ती ही गई और वह इस भावना के सम्मुख नतमस्तक हो गया और इस भावना ने उसे सम्भाल लिया।

पहली आहटें सुनाई पड़ने तक यह भावना उसे सम्भाले रही। फिर उसने बड़ी झाड़ी से आगे सड़क पर एक विद्रोही को चिल्लाते सुना, फिर दूसरे को ! जौश न जानता था कि मनुष्य ऐसी भी आवाज़ निकाल सकता है। वह चीख़ ऐसी थी जिसे कोई पशु तो निकाल भी सकता—परन्तु वह तो मानवकंठ था, "बिदा," या "कल वर्षा होगी," कह सकने वाला मानव कंठ·····यही बात तो उसे और भी बुरी लगी। वह एक पागल की सी चीख़ थी·····वह कंठ मानों ख़ून पी सकता हो ! एक्य का वह सूत्र टूट गया और जौश फिर अकेला रह गया।

दूर कहीं से आनेवाली घोड़ों की टापों की आवाज़ उसने सुनी और कानों के पास ठाठें मारनेवाली उन लहरों ने अब बातें करना आरम्भ किया : रोम तेज घोड़ी है, रोम बहुत तेज़ घोड़ी है ! दौड़ जा, भाग जा, ज्योंही वे मोड़ से आगे बढ़ें, निकल भाग !

चारों ओर देखकर उसने भागने का एक रास्ता भी मन ही मन स्थिर कर लिया। "चूसने को लीची की एक गुठली ही होती," गम एन्सन ने कहा, "मेरा गला सूख गया है !"

इन शब्दों ने जौश के कान के पास की दूसरी ध्वनियों को शान्त

कर दिया। टापें पास आती गईं! बुरा से बुरा क्या हो जाएगा? जौश ने अपने आप से पूछा। पेट में गोली लग जाएगी! मारा जाऊँगा! और कुछ नहीं·····बस, तो ठीक है। वह फिर इंतज़ार करने लगा।

"रुके रहो, रुके रहो," एकाएक कप्तान कहने लगा, "आदेश मिलेगा! रुके रहो! रुके रहो!"

मोड़ से निकलकर एक आदमी सफेद झंडा उठाए आगे बढ़ आया। उसके पीछे बीस या तीस घुड़सवार और भी थे।

"चालाकी है, चालाकी है," रक्षा दल वाले चिल्लाए, "देखना, कप्तान, यह धोखा है!"

"गोली मत चलाओ," कर्नल ने पीछे से आकर कहा। "सफेद झंडे के ऊपर गोली मत चलाओ। पर उन्हें देखते रहो, निशाना बनाए रहो!"

दो क़दम और आगे बढ़कर उसने पूछा, "क्या तुम शस्त्र डाल रहे हो?"

सफेद झंडेवाले आदमी ने कहा, "नहीं, हम बात करना चाहते हैं।"

"आ जाओ," कर्नल ने कहा," तुम, सफेद झंडेवाले, तुम!" वह चिल्लाया, "बाक़ी पीछे खड़े रहो।"

"हमारे बीच में आकर हमें घेरने की कोशिश कर रहे हैं!" गम बोला।

झंडेवाले ने रक्षादल के कर्नल के पास आकर फौजी सलामी दी!

"इन लोगों पर बन्दूकें ताने रहो," कर्नल ने अपने आदमियों से कहा, फिर अपनी बन्दूक नीची कर ली। जौश उनकी बातें तो न सुन सका पर उसने देखा कि लुटेरा जल्दी-जल्दी बोल रहा है।

"अपना भाई भी हो सकता है," गम ने कहा।

बात ठीक थी। चौड़े कंधे और भूरे मुँहवाला वह विद्रोही एक नौजवान था। उसके बाल सूखे हुए थे और घोड़े पर सवार वह सज रहा था। जौश उसे निशाना बनाए था। उसकी बन्दूक एक बार हिली, परन्तु वह फिर उसे यथास्थान ले आया।

रक्षा दल वाले उतावले हो उठे। "उससे कहो कि अपना रास्ता चुन ले। शस्त्र डालकर बात करे या मुँह बन्द रख कर लड़े!"

"कह क्या रहा है वह? उपदेश दे रहा है?"

"जेफ डेविस के लिए चुनाव कार्य!"

"उसे चुप करो, कर्नल, चुप करो।"

"हम उसे दूसरे रुख से बात करवाएँगे !"

"क्या तूने ही बूढ़े यार्डल को मारा था ?"

कर्नल मुड़कर अपने साथियों के पास आगया। "अपनी बन्दूकें साधे रहो," उसने कहा। "वह कहता है कि हम घेरे में ले लिए गए हैं। वह कहता है कि हमारा पीछे जाने का रास्ता बन्द है—कि उनके पाँच हज़ार आदमी वरनोन का घेरा डाले पड़े हैं। कहता है कि उनका विरोध करना आत्महत्या करना होगा। वह कहता है कि वे प्रत्येक नाले और पुल को पार कर सकते हैं। वह कहता है कि रक्तपात बचाने के लिए हम शस्त्र डाल दें ! वह कहता है कि यदि हम शस्त्र डाल दें तो किसी को कुछ भी हानि न पहुँचेगी। केवल घोड़े और भोजन सामग्री ली जाएगी ! तुम लोग क्या कहते हो ?"

वह दूकानदार जो मॉर्गन को अपने दिल की बात सुनाना चाहता था, अपनी रक़ाबों पर खड़ा हो गया। कुछ अपने दिल की बात उसने कही, "वह झूठ बोल रहा है। लड़ने की सामर्थ्य जब नहीं रह जाती तभी लोग बातें बनाने लगते हैं !"

"यदि उनके पास पाँच हज़ार आदमी होते तो अब तक वरनोन पहुँच चुके होते ! यदि उनका अपना रक्त न गिरे, तो विद्रोही रक्तपात से कब चूकते हैं !"

"घोड़े और भोजन सामग्री, हैं ? हमें विद्रोहियों का यह काम किसने सौंपा है ?"

बेन ह्विटी ने अंतिम उत्तर दिया। वह चीख़ ! वह चीख़ विद्रोहियों की सी तो न थी; और ना ही उसमें अर्धरात्रि का वह कम्प था जो ठंडे लोहे की तरह हड्डियों में समा जाए, परन्तु उसमें अपना ही एक बल था, अपना ही एक स्वर था जो चारों ओर फैल गया। लगा कि वे सब उसी चीख़ की बाट देख रहे थे—लगा कि यही एक उत्तर था जो कि विद्रोहियों को दिया जा सकता था ! उस चीख़ ने लम्बी इंतज़ार का भय, अनिश्चितता और अविश्वास सब दूर कर दिया। शांत नदी की लहरों के ऊपर से उठता हुआ चीख़ का वह स्वर, अनेक कंठों के योग से, बढ़ा और बढ़कर दूर-दूर तक के खेतों पर छा गया। जोश की बन्दूक उसके अपने कंठ की पुकार से काँप उठी।

कर्नल ने गम्भीरता पूर्वक अपने साथियों की ओर देखकर अपने कंधे हिला दिए, मानों आक्रमणकारियों से कह रहा हो : इन अग्निभक्षकों

के सम्मुख मैं कह ही क्या सकता हूँ ? और फिर आतताइयों के उस सरदार के पास चला गया। पहली से छोटी, फिर एक वार्ता हुई और उसके पश्चात् जिस राह आई थी उसी राह सफेद झंडेवाली वह आततताइयों की टुकड़ी लौट गई।

"बाल-बच्चे शहर से बाहर निकालने के लिए हमें दो घंटे का समय दिया है उन्होंने। उसके पश्चात्, वे आक्रमण करेंगे," कर्नल ने कहा।

शाम के आठ बज चुके थे और तब भी वे इंतज़ार कर रहे थे। वे पंक्ति बद्ध, तैयार खड़े थे। नव-चन्द्र अस्त हो चुका था और धुँधले तारोंवाली वह रात बहुत ही गरम, बहुत ही अँधेरी हो उठी थी। कुछ समय पश्चात् अपने साथ एक सिपाही लिए, कप्तान जौश की टुकड़ी के पास आ पहुँचा।

"यहाँ से गिनना शुरू करो," उसने कहा, "तुममें से बीस आदमी फिन्नी के नाले भेज रहा हूँ। यदि रास्ता जानते हों तो विद्रोही वहाँ से भी घुस आ सकते हैं। एक टुकड़ी वहाँ है—परन्तु कम आदमी रखना न रखना एक-सा ही है।" वह अपने साथ के सिपाही से बोला, "टुकड़ी के कुछ आदमियों को सो लेने देना, परन्तु सख्त पहरा लगा देना।"

जौश ने उस रात उन बीस आदमियों के साथ चुपचाप, धीरे-धीरे पुल पार किया; और फिर वहाँ से नदी किनारे एक टीले पर चढ़ गए वे लोग, जिससे कि नीचे नाला पार करनेवालों पर आसानी से गोली बरसा सकें। वह अपरिचितों के साथ जा रहा था। गम और बेन ह्विटी इस बार साथ नहीं आ सके थे, और उसने सोचा, जैसा कि वह सारे दिन ही सोचता रहा था, कि लो अब शुरू हुआ!

इस अंधेरे में नाले की वह टुकड़ी बहुत बड़ी दिखाई दे रही थी। घोड़ों से उतरकर सब लोग धीरे-धीरे बातें कर रहे थे। घोड़े अपने मालिकों के पास बँधे हुए थे।

"नाला यहाँ से बीस फुट आगे मुड़ता है," उन्हें बतलाया गया, "इसलिए अपनी आँखें खुली रखो। तुम लोग दो घंटे सो सकते हो, फिर हममें से कुछ और लोग सो लेंगे। घोड़ों से उतरकर कुछ आराम करो—परन्तु इतनी गहरी नींद में न सोना, कि नाला पार करते हुए विद्रोहियों का पता ही न चले!"

जौश घोड़े से उतरकर अंधेरे में टटोलता सा, किनारे-किनारे कुछ आगे चला गया। नाले का पानी तक दिखलाई नहीं दे रहा था, परन्तु कभी-कभी पानी में तारों की चमक दिखाई देती या कगारों के किसी पत्थर के गिरने का शब्द सुनाई पड़ता। इसी से उसने पानी होने का अनुमान भर लगा लिया और उसे सूँघ भी लिया। सूखा माँस और बिस्कुट खाकर एक बिस्कुट उसने रोम को भी दिया। और फिर अपनी टुकड़ी से कुछ हटकर, कम्बल बिछा किनारे के पास ही लेट गया। अपरिचित आदमियों और घोड़ों की गन्ध लेती हुई रोम उसके पीछे खड़ी इधर-उधर मुँह मारती घास ढूँढ़ रही थी।

युद्ध में फँस जाना भी, जौश ने सोचा, एक कठिनाई है! वह मरना मारना जिसके लिए सुबह नाश्ते की मेज़ पर उसने स्वयं को तत्पर बतलाया था, और जो उसके मतानुसार बाहर सड़क पर आते ही उसके समक्ष आ जाना चाहिए था, सदा ही उससे कुछ दूर रह जाता! उसने अपने आप को दोनों या दोनों में से किसी एक के लिए सब प्रकार से तैयार कर लिया था और अब नई प्राचीरें खड़ी करने या नए शस्त्रा-युध एकत्रित को रह ही नहीं गए थे। अब और प्रत्याशा म डूबे रहना उसके लिए सम्भव न था। मृत्यु से शरीर और बध से आत्मा का—नाटकीय ढंग से दिया गया!—बलिदान ही युद्ध न था, जैसा कि उसने सुबह सोचा था! जौश ने सोचा युद्ध तो न समाप्त होने वाली इंतज़ार से बना हुआ प्रतीत होता है।

यह युद्ध है, उसने कहा था, और वह निकला चौराहे पर उसकी बाट देखता हुआ बेन ह्विटी! यह युद्ध है और वह चार जुलाई और युद्ध के दिन भी समान दिखनेवाला वरनोन था! यह तो है ही, उसने कहा था, और वह केवल एक बड़ी झाड़ी को हिलानेवाली हवा थी! यह, यह: और वह सफेद झंडा लिए एक विद्रोही था। और इस अँधेरी रात में नाले की रक्षा करते हुए भी वह युद्ध कहीं दिखलाई नहीं पड़ रहा था। वह माँस और बिस्कुट खाकर मज़े में अपने कम्बलों में लिपटा लेटा हुआ था। रोम आराम से जुगाली कर रही थी और आकाश में सप्तऋषि सदा की भाँति ही चमक रहे थे। यदि हाथ के नीचे बन्दूक न होती तो पता ही न चल सकता था कि यह रात ग्रीष्म की किसी और रात से भिन्न है और सोने से पहले वह बाहर ठंडी हवा में आकर लेट नहीं गया है। और यदि इस समय लालटैन हाथ में लेकर, स्वयं जॉन मॉर्गन भी उससे आकर कहे, "यही है, लड़के," तो भी सम्भव है

वह विश्वास न कर पाए। सम्भव है जॉन मॉर्गन भी उसी की तरह भटक रहा है और उसे भी इस विषय में कुछ नहीं मालूम! युद्ध की तैयारी में चाहे कुछ समय न लगे, परन्तु युद्ध तो अनन्त है·····जुलाई से प्रलयकाल तक फैला हुआ·····सिर उसका मेपलग्रोव में और टाँगें स्वर्ग में!

जौश ने आँखें बन्द करलीं; परन्तु उसकी पलकों के नीचे न केवल दिन में जो कुछ भी देखा था वही छा गया: चेहरे, मुद्राएँ, ढंग कि जिन्हें वह पहचान पाया था, बल्कि और भी बहुत कुछ जो दिन में हुआ था और जिसे वह अपने भीड़-भरे मस्तिष्क में उस समय बैठाल न सका था! आँखें बन्द किए उसने इस अँधेरे में वह सब फिर एक बार देखा। सफेद झंडा उठाए लिए आनेवाले विद्रोही कि पतलून में वह अर्ध-वृत्ताकार खोंच, और खोंच के नीचे वह लम्बा अध-भरा घाव जिसके कारण कि उसकी टाँग सूजी हुई थी। बेन ह्विटी की चीख़ जब उसकी ओर बढ़ने लगी तो उसका हाथ, जौश ने अब देखा, अपनी बन्दूक की ओर बढ़ने लगा था। सोने का प्रयत्न करते-करते उसने एक पेड़ के ठूँठ से एक मकड़ी का नियन्त्रित कूदना देखा। "तुम यहाँ क्या कर रहे हो, गम?" किसी के प्रश्न के उत्तर में उसने गम एन्सन को कहते सुना, "मैं किसान हूँ और बिना सूअरों को खदेड़े मैं खेती नहीं कर सकता!" उसने दूसरी आवाज़ सुनी—दूकानदार की, उसने समझा, "मैं शान्ति-प्रिय व्यक्ति हूँ, पर पड़ोसी ही जब मारे जा रहे हों तो शान्ति कहाँ रहती है! और यदि मेरे हाथ ख़ून से, अच्छे या बुरे ख़ून से, रँगे जाने हैं, तो भगवान की सौगन्ध! वे बुरे ख़ून से ही रँगे जाएँगे!"

आख़िरकार वह सो गया·····और देखता और सुनता रहा·····एक विद्रोही एबोनी को ले जाना चाह रहा था·····वह रसोईघर में घोड़ा लिए घुस आया था और मेज़ उलट दी थी उसने, बरतन तोड़ दिए थे और एबोनी को पकड़ने का प्रयत्न कर रहा था! एबोनी कह रही थी, "जागो, जाग उठो!"

जौश जाग गया। उसके चारों ओर विस्फोटक रव छाया हुआ था। लोग चिल्ला रहे थे, गालियाँ बक रहे थे और चिल्ला-चिल्लाकर एक दूसरे को आदेश दे रहे थे। घोड़े हिनहिना रहे थे और नीचे नाले के पानी में आदमियों और घोड़ों की छपछप सुनाई पड़ रही थी। कुछ गोलियाँ भी चल रही थीं। कोई बार-बार चिल्लाकर कह रहा था, "सवार हो जाओ, सवार हो जाओ, सवार हो जाओ!"

जौश सावधानी से पग धरता हुआ उठा, हाथों से टटोलकर रोम को ढूँढा, उसे पुकारा और हाथ बढ़ाकर, उन आवाज़ों से सतर्क हो, अपने घोड़े से चिमट जाने को आगे झुक गया : तब एकाएक वे आवाज़ें दूर चली गईं, उसके मस्तिष्क में समाने लगीं, और हड्डियों को तोड़ती उसके मुख और नासिका से बाहर निकल आईं ! कुछ देर और उसे वह रव सुनाई दिया और फिर निस्तब्धता छा गई !

सुबह हुई तब कहीं उसे पता चला कि बात क्या हुई थी। वह कगारे से नीचे गिर पड़ा था और पेड़ों की शाखाओं व पत्थरों से टकराता नीचे आकर, नदी के किनारे पड़ा हुआ था। पानी अब उससे हाथ भर दूर था। उसने पुकारने का प्रयत्न किया परन्तु बोलते ही उसके मस्तिष्क में कहीं एक भयानक विस्फोट हो पड़ा था और उसे डर लगा कि कहीं उसका टूटा हुआ सिर आवाज़ निकालते ही टुकड़े-टुकड़े न हो जाए !

वह आधा संज्ञाशून्य, पूर्णतया अस्वस्थ था; और बीच-बीच में सोचता भी जाता था : यह रहा वह। मैं उस तक पहुँच ही गया आखिर ! यही युद्ध है ! यह ऊँचे से गिरकर सिर तुड़ा लेना और संज्ञाशून्य होकर बीमार हो जाना है !

सूर्योदय के कुछ समय पश्चात् ही लेब ने उसे ढूंढ लिया था। जौश निराश हो चुका था कि लेब ने नीचे से पुकारा।

"जौश, तू जीवित है, तू ठीक है !"

"नहीं," क्षोभ-भरा जौश बोला, "मैं ठीक नहीं हूँ।"

"ओह, जौश," उसके पास आकर झुकते हुए लेब ने फिर कहा, "तू ठीक है !"

"बस, यह कहना बंद कर," जौश बोला, "इस बात से मैं फिर और भी अस्वस्थ हो उठूंगा। मैं ठीक नहीं हूँ। मेरा सिर फटा चाहता है।"

लेब ने उसका घाव देखा। "हाँ, लगता तो कुछ ऐसा ही है," उसने कहा, "परन्तु यदि अभी तक तू मरा नहीं तो अब भी नहीं मरेगा !"

जौश कराहन लगा।

"तूने पुकारा क्यों नहीं—किसी को बुला लेता ?" लेब ने पूछा।

"पहले तो मुझे कुछ पता ही नहीं चला," जौश ने कहा, "और फिर अगर मुँह खोलने का प्रयत्न करता तो मेरा सिर ही धड़ से अलग होने

लगता ! फिर मैं बात कर सकने योग्य तो हो गया, परन्तु बोलते ही क़ै होने लगती। अब भी होती है," कहते-कहते उसने उबकाई ली। "बस, तू यहाँ से चला जा," अंत में उसने लेब से कहा, "और मुझे अकेला छोड़ दे। मुझे कुछ आराम मिलने लगा था।" कुछ देर मौन लेटा रहा, और फिर पीड़ाकुल, एक कुहनी के बल कुछ उठकर पूछने लगा, "क्या मॉर्गन मारा गया ?"

"वह इस रास्ते आया ही नहीं !"

"इस रास्ते आया ही नहीं !" जौश बोला, "मैंने उन्हें आते सुना था। उन्होंने रात नाला पार किया था।"

"वह मॉर्गन नहीं था," लेब ने कहा, "कुछ किसान थे, सामान लिए जा रहे थे। उसके मारे इस रास्ते आए थे जिससे विद्रोहियों के हाथ न पड़ें।"

"मैं तो समझा था मॉर्गन है," जौश ने कहा, "बेवकूफ बन गया।"

"तू अकेला ही नहीं बना," लेब बोला, "और लोग भी तेरे साथी थे !"

"अब मॉर्गन कहाँ है ?"

"कहते हैं ड्यूपों में; वह वरनोन छोड़ गया।"

जौश फिर लेट गया। "हमने उन्हें डरा दिया," उसने सगर्व कहा, "हमने ही मॉर्गन को वरनोन न आने दिया।"

लेब इस बात पर कुछ न कह पाया। कुछ देर बाद उसने पूछा, "अगर कुछ आदमियों को बुला लाऊँ तो तू चल सकेगा ?"

"तूने मुझे ढूँढ़ कैसे लिया ?" जौश ने पूछा।

"रोम अकेली ही घर पहुँच गई थी।"

"मैं तो यहाँ ही पड़ा रहूँगा," जौश के स्वरों में कटुता थी, "लड़ने आया था और पहाड़ से गिर पड़ा !"

"अरे, इस बात से तू मत घबरा," लेब ने कहा, "और भी बहुत से लोग गिर पड़े थे।"

रात के काण्ड पर बहसते रक्षादल के कुछ आदमी अभी भी वहाँ थे। उनकी सहायता से जौश की इच्छा व हठ के विरुद्ध लेब उसे ऊपर उठा ले आया और रोम की पीठ पर बैठा दिया। जौश को सहारा देने के लिए आप पीछे बैठा। इस प्रकार जौश उस यात्रा के योग्य हो पाया !

"क्या अब भी मेरे घाव से खून बह रहा है ?" जौश ने पूछा। उसके कंधे से सामने की ओर खून की एक पतली सी धारा बह रही थी।

"नहीं, मेरा रक्त है !" लेब ने कहा।

"तेरा ?" जौश ने पूछा। पिछले चौबीस घंटों की घटनाओं के विषय में उसका ज्ञान अभी तक अनिश्चित ही था। "तू तो युद्ध में नहीं था, था क्या ?"

"हाँ, था कुछ कुछ," लेब ने स्वीकार किया।

"रक्षादल में ?" जौश ने पूछा।

"नहीं," लेब ने कहा, "यूँही कुछ निजी ढंग से !"

"क्यों ?"

"अरे, जब मैं तुझे ढूंढ रहा था तो एक आदमी गाना गाने लगा !"

"पर गाने को लेकर तो मैं किसी से भी नहीं लड़ूंगा !"

लेब कुछ न बोला।

"मुझे तो लड़ाई से घृणा है," जौश ने कहा, "तुझे नही है क्या, लेब ?"

"इतनी नहीं," लेब ने उत्तर दिया।

"मुझे घृणा है," जौश बोला, "और इसीलिए तो मुझे लड़ना पड़ा !"

"और मैं लड़ नहीं सकता," लेब ने कहा, "क्योंकि मुझे लड़ना पसन्द है।"

जौश परिवार के सब लोगों के पास ही रहना चाहता था, इस लिए बैठक का सोफा उठाकर गरमियों के रसोईघर में रख दिया था, और सिर पर एक गीला तौलिया लपेटे वह लेटा हुआ था। उसे लगा कि मानों उसका भेजा काटकर फेंक दिया गया है और उस का मस्तिष्क इतना अनावृत्त हो गया है कि उठती गिरती आवाज़ें उस पर चोट की तरह पड़तीं। उसने तौलिया खिसकाकर आँखों पर से हटा दिया। लेब एक कुर्सी पर बैठा हुआ था। उसका टूटा हुआ हाथ गरम पानी की एक बाल्टी में डाल दिया गया था, नाक पर एक गीली पट्टी पड़ी थी और उसने सिर पीछे को लटका रखा था। वे दोनों ही किसी ऐसे डाक्टर की राह देख रहे थे जो व्यस्त न हो और समय निकालकर आ सके ! उनकी माँ दबे पाँव चलती, जिससे जौश की पीड़ा न बढ़ जाए, नाश्ता भी बना रही थी। और उनकी पट्टियाँ भी बदलती जा रही

थी। उनका बाप जहाँ पहले दिन बैठा था वहाँ ही बैठा हुआ था। उसके मुख पर भावों का आवागमन हो रहा था।

"तो," जैस बोला, "पहले दिन की सुबह मेरे जीवन में ऐसी कभी न आई थी और आशा करता हूँ कि फिर कभी न आए! वैसे सबने वही किया जो उन्हें करना चाहिए था। जौश की यही बात है। लेब के बारे में मैं यह नहीं कह सकता!"

नाक और मुँह पर जो पट्टी थी उसे लेब ने हटा दिया। "मैं तो एक प्रकार से घटना-चक्र में फँस गया," लेब ने कहा।

जैस ने अपने ज्येष्ठ पुत्र की ओर देखा। उनकी आँखें मिलीं और जैस सिर हिलाकर बोला, "तो, कोई कारण नहीं कि हम खाना न खाएँ, क्यों, एलिज़ा? गरम कॉफी का एक प्याला, कुछ बिस्कुट और माँस खाएँ?"

जौश कराहा।

"मैं चबा नहीं सकूँगा," लेब ने कहा।

जैस का मन सुधरता जा रहा था। "रक्षादल या विपक्षियों की ओर से मैं तो लड़ा नहीं," उसने कहा, "मुझे भूख लगी है। अगर तुम लड़के बुरा न मानों और तुम्हारी माँ कुछ दे दे, तो मैं तो खाऊँगा। जहाँ तक मुझे याद है कल हमने कुछ खाया ही नहीं। एलिज़ा," उसने पूछा, "बैठकर कुछ खाएगी ना?"

"तू खाले, जैस," एलिज़ा ने कहा, "मैं अभी लड़कों को लेकर व्यस्त हूँ।"

"मैटी?"

"नहीं," मैटी हिचकती-सी बोली,·····"यह रक्त और टूटी हुई हड्डियाँ····"

"छोटे जैस?"

"मेरे लिए रुकने की ज़रूरत नहीं," छोटे जैस ने कहा।

"अच्छा, तो," जैस सोल्लास बोला, "हम खाएँगे! पर खाने से पहले प्रार्थना करलें। यह पहले दिन की सुबह है और प्रार्थना करने के कई कारण हैं हमारे पास।"

जौश अपने बाप की बातें सुन रहा था·····यही उसकी प्रसन्नता का एक अंग था। जब उसने होश में आकर पहली बार अपने आप को नदी किनारे पड़ा पाया तो सोचा था कि लौटकर घर न जाएगा। घर लौटकर यह स्वीकार करना कि बन्दूक़ या तलवार से नहीं, बल्कि

पहाड़ से गिरकर घायल हुआ है उसे बहुत ही बुरा प्रतीत हुआ था। परन्तु अब लौटकर वह जैसे कोई बात ही न लगती थी! कल और कल की उसकी मरने-मारने की वे बातें इस समय वर्षों दूर लग रही थीं·····पिछले चौबीस घंटों ने उसे एक अनुभवी व्यक्ति का रूप दे दिया था और उसका मस्तिष्क अब पहचान गया था कि क्या महत्व-पूर्ण है और क्या नहीं!

अगली बार·····वह बड़ी बातें न करेगा·····मरने या मारने के विषय में। परन्तु यह भी तो अब बेकार की बात लगती थी। बात तो केवल इतनी थी·····वह वहाँ डटकर खड़ा रहा·····वह डरा, पर पुल पर खड़ा रहा। उसने भागने की बात सोची थी·····पर वह भागा नहीं था·····प्रथम पंक्ति में खड़ा ही रहा था, उसे यह तो पता न था कि मॉर्गन आकर उसके ऊपर टूट नहीं पड़ेगा·····वह कगारे के किनारे खड़ा रहा था और गिरने से पहले अपनी बन्दूक और घोड़ी को खोज रहा था।

और फिर उसने सीखा भी तो बहुत कुछ था·····कि बातें बनाना ठीक नहीं···· कि अँधेरे में बीस फुट ऊँचे कगारे पर जल्दी नहीं मचानी चाहिए····कि मृत्यु, जब मनुष्य उसे पकड़ने बढ़ता है, पीछे हटती जाती है····कि जब मनुष्य उसे पीठ दिखाकर भागता है·····तब वह पीछा करती है!

जौश सोच रहा था कि उसका बाप अभी तक प्रार्थना कर रहा है, उसके बोलने का ढंग तो ऐसा ही था। परन्तु शब्द अब दूसरे थे। जौश ने सावधानी से अपनी आँखों पर से तौलिया हटाया। जैस रसोई में एकत्रित अपने परिवार को देख रहा था। "सब यहाँ हैं," उसने कहा, "और सब यथा-सम्भव सकुशल हैं।" पर शायद वह प्रार्थना ही कर रहा था, क्योंकि उसने कहा, "आमीन, आमीन!" कुछ भी हो जौश दोनों ही तरह खुश था।

गड़ा हुआ पन्ना

मैटी चबूतरे पर बैठी सोच रही थी कि वह गुनगुना रही है। पास से गुज़रते हुए लेब ने उसे बड़बड़ाना कहा था। रात के खाने से सम्बन्धित उस काम के लिए जिसे मैटी ने करना चाहिए था जाते हुए उसकी माँ ने देखा कि बेचारी बेटी अपने आप से बातें कर रही है। "बहाना बना रही है," गाड़ी लिए भूसे का अन्तिम भार लाने खेत को जाते हुए जौश की राय थी। अण्डों की खोज में व्यस्त, इधर-उधर भागते हुए, छोटे जैस ने ही उस पर कोई ध्यान न दिया। उसने उसे देखा ही नहीं। वह मानों उसके कल्पित मान-चित्र की कि जो उस समय अफ्रीकी था एक अंग बनी हुई थी और जो भी खड़का वह कर रही थी वह वन पशुओं द्वारा किया जा रहा था। शेर या गेंडे द्वारा, जसा भी उस समय के शिकार का निर्दिष्ट रहा हो !

बिचबिचा-सा समय था : तीसरा पहर समाप्त हो चुका था, रात अभी आने को थी, ना ग्रीष्म, ना ही पतझड़। पत्ते छः मास बिता चुके थे, परन्तु फिर भी वे, मटियाले व झुर्रीदार, पेड़ों से लटके हुए थे। प्रस्फुटन का समय बीत चुका था। मज़बूत और देखने में शेब की तरह गोल एक गुलाब ने उस दिन सुबह ही अपनी पंखड़ियाँ मैटी के चरणों में बिखेर दी थीं ऐसे कि मानों शरद् ने उसके हृदय में विस्फोट कर दिया हो। दिन तेज़ी से शुरू होते। सुबह इतनी ठंड होती कि अँगुलियाँ सुन्न हो जातीं, परन्तु दोपहर होते-होते जून की गरमी हो जाती और कोट पहनना एक बोझ; और इस समय, मैटी ने सोचा, सीले हुए पटाखे की तरह शीतोष्ण !

"ग्लैडीज़," मैटी ने कोमल स्वर में झिझकते हुए कहा। बाग़ीचे की सड़क पर से कोई पीली-सी चीज़ उड़ती हुई दिखाई दी, मैटी समझी कि तितली होगी, परन्तु नहीं वह तो पीपल के पेड़ का एक पत्ता था। पत्ता गिरते देख उसने सोचा, अच्छा हुआ, ग्रीष्म का अंत हो रहा है।

"ग्लैडीज़," वह फिर बड़बड़ाई, एक ऐसे स्वर में जिसे वह टूटा हुआ मानती थी, क्योंकि वह भी ऐसे ही स्वर में बोला था, उसकी आवाज़ मैटी के नाम के मधुर अक्षरों पर टूटी-सी जा रही थी, "'ग्लैडीज़, मेरे साथ ऐसा न करो !'"

"नहीं," मंद, अवांछित वायु के विरुद्ध अपना मुँह उठाते हुए मटी ने कहा, "मैं ऐसा नहीं करूँगी !"

पशुशाला के पीछे से आती उसने अपने पिता की आवाज़ सुनी, बिल्कुल पुष्ट, मज़बूत और साफ आवाज़ । "पिगी, पिगी", वह पुकार रहा था, "इधर, पिगी, सुई, सुई," वह चिल्लाया और मैटी जानती थी कि बध के लिए मोटे होते हुए अपने पशुओं को देख उसे मज़ा आ रहा था ।

अपने पालतू सूअरों को जो दोस्तों की तरह पुकारे और उनकी कनपटियों को तब तक सहलाता रहे जब तक कि उनकी गुलाबी आँखें बन्द न हो जाएँ, और जिसके मन में केवल उनको काटने का ही विचार हो, ऐसे व्यक्ति से वह क्या आशा करे ! कितनी भयंकर बात है ! मैटी ने तत्क्षण कभी माँस न खाने का प्रण किया । दोबारा सोचकर उसने अपने प्रण में संशोधन किया, वह कभी सूअर का माँस न खाएगी !

"ऐ, पिगी, पिगी," उसके पिता ने पुकारा ।

"और वह मुझे अपना नाम बदलकर ग्लैडीज़ नहीं रखने देता !" सूअरों का बधिक और नाम को लेकर बखेड़ा करे ! मैटी ने अपनी मुट्ठी कसकर बाँध ली कि उसके नाखून उसके हाथ में चुभ जाएँ और वह याद रख सके कि उसका बाप न्यायशील व्यक्ति नहीं है । "तेरा अपना बाप," उसने अपने आप से कहा । मैटी सरल हृदया थी, और मानती थी कि वह लोगों को आसानी से क्षमा कर देती है । वह क्षमाशील बनी रहना चाहती थी, क्योंकि ऐसा न करना ईसाई धर्म के विरुद्ध होता । परन्तु वह किसी को भी शीघ्र ही क्षमा करना न चाहती थी और ना ही भूलना चाहती थी कि उसे कितना कुछ क्षमा करना पड़ा है !

"बैटी," उसने बुझी हुई आवाज़ में कहा । "कैटी ! मोटी !" थोड़ा रुककर उसने कहा और फिर जैसे सचमुच ही उसे कष्ट हो रहा हो, "रैटी !" सिवाय उन लोगों के जो उसके नाम से परिचित हो चुके थे, "मैटी" सब को ऐसा ही सुनाई पड़ता होगा ! "टैटी !" उसने घृणा पूर्वक कहा ।

अंडे घर छोड़ आकर, छोटा जैस चबूतरे के पास खड़ा हो गया । वह अफ्रीका से लौट आया था और अब कोई साथी ढूंढ रहा था । "तू अपने आप से क्यों बातें कर रही है ?" उसने पूछा ।

"कहाँ कर रही हूँ !" मैटी ने कहा ।

"तो फिर किससे बातें कर रही है ?" छोटे जैस ने अपने चारों ओर किसी कमज़ोर नज़र बूढ़े की तरह देखते हुए पूछा !

"ऐसा करते हुए तू बेवकूफ मालूम पड़ता है," मैटी ने चमककर कहा। "शून्य में घूरकर देखना ! कोई देखेगा तो सोचेगा कि तू पागल है !"

"तब तो वह यह भी सोचेगा कि यह सारा परिवार ही पागल है !" छोटे जैस ने तपाक से जवाब दिया, "तू जो अपने आप से बातें कर रही है !"

"मैं तो जो भी सुनले उससे बातें कर रही थी ! कोई मेरी बात सुनना ही न चाहे, तो इसमें मेरा क्या दोष ?"

"और लोग काम में लगे हैं !" छोटे जस ने कहा।

"तू क्या कर रहा है ?" मैटी ने पूछा, "तू तो मुझे ऐसा कुछ व्यस्त नहीं दिखाई पड़ता। फावड़ा उठाए घूमने से कामकाजी नहीं हो जाता कोई।"

"मैं खुदाई करने जा रहा हूँ !"

"गढ़ा खोदेगा ?" मैटी ने कहा, "तब तो बड़ा काम करेगा। बरसात का पानी जमा होगा। घोड़ों की टाँगें टूटेंगी। सब चौपट हो जाएगा।"

छोटा जैस घबरानेवाला न था। "गढ़ा खोदने को किसने कहा है ? मैं तो खँडहर में से कुछ न कुछ खोद निकालूँगा।"

ग्रीष्म के आरम्भ में लकड़ी-घर जल जाने के बाद से जो गाड़ीघर से आगे वाली कोठड़ी अभी तक गिरी पड़ी थी उसे ही छोटा जैस खँडहर कहा करता था।

"मैंने कल रात को एक स्वप्न देखा था," छोटे जैस ने उसे बताया और बिना कुछ और कहे, कंधे पर फावड़ा लटकाए जल्दी से चला गया, किसी ऐसे आदमी की तरह जिसे काम को देर हो गई हो और जिसके पास एक बात तक करने का समय न हो !

मैटी को स्वप्नों पर विश्वास था, कम से कम अपने स्वप्नों पर; लेकिन छोटा जैस भी इस विषय में कुछ कह-कर सकता हो यह उसे अमान्य था। वह स्वप्न में भला क्या पाएगा ? रुपया, उसे लगा, या गड़ा हुआ कोई नक़्शा, या कोई अस्थि-पंजर; या फिर किसी समुद्री डाकू का दूरपार का कोई स्वप्न देखेगा ! वह स्वप्न में क्या पाएगी ? अँगूठी, हृदयाकार एक हार जिस पर कि "तुम्हारा" खुदा हुआ हो और हो सूखे बालों का एक गुच्छा रखा हुआ ! भला, छोटा-जैस क्या पाएगा ? शायद एक बटन, जंग लगा हुआ एक चम्मच या टूटे हुए प्याले का कुण्डा।

उसे याद आया कि लकड़ी-घर पुराने कुर्सी-मेज़ों, पुराने स्मृतिचिह्नों से भरे सन्दूकों और इसी प्रकार की काम में न आनेवाली वस्तुओं का भंडार था। लेकिन 'बड़े सफ़ेदघर' के निर्माण से पहले वह 'छोटा सफ़ेद-घर' था जिसे कि उसके दादा लोगों ने बनवाया था, जब कि घने जंगलों को काटकर उसके लिए जगह निकालनी पड़ी थी। लकड़ी के दो कमरे, एक ऊपर और एक नीचे, बस इतना ही भर था; परन्तु मैटी ने अपनी दादी को सगर्व कहते सुना था : जंगल में वह एक भव्य भवन था, सफेद पुता हुआ, लकड़ी के खम्भोंवाले फर्श पर एक खुला कमरा, ऊपर तख्तों की एक छत और एक सूखी कोठड़ी नीचे। जैसे-जैसे दादी बतलाती जाती, मैटी अपने मानस में उस मकान को उभर आते देखती : घने, अँधेरे जंगल में वह छोटा-सा घर, दरवाज़े पर लाल कनेर की एक बेल और घुमावदार जंगले के साथ सूर्य्यमुखी के पेड़—ऐसा लगता, दादी कहती, कि नवागन्तुक बेल को सूँघते और सफेद पुते तख्तों को सहलाते जिससे कि विश्वास हो जाए उन्हें कि वे फिर से ज्वराक्रान्त नहीं हो गए हैं और यह मकान और इसके फूल सत्य हैं, स्वप्न नहीं !

छोटे जैस के फावड़े की चोटें, कभी इधर कभी उधर, पहले इक्के-दुक्के पड़ रही थीं जिससे मैटी समझी थी कि उससे स्वप्न में कहा गया था कि खोदो, पर आहिस्ता खोदो ! परन्तु अब चोटें बढ़ती जा रही थीं। लगता था कि वह अस्थिपंजर का अँगूठा या खज़ाने की मुद्रा पा गया है ! मैटी चबूतरे से उतरी और बिना जल्दी किए भी इस तेज़ी से चली कि उस मन्द हवा में भी ताज़गी का आभास मिलने लगा। खँडहर के पास पहुँचकर वह रुक गई। उसने छोटे जैस को कोठड़ी की सलेटी, मृतक-सी ज़मीन को कुरेदते हुए देखा। इधर उधर खुरचकर अब वह एक ही जगह पर लगा हुआ था; फावड़ा चला नहीं रहा था, बल्कि उससे टटोल-सा रहा था।

"छोटे जैस," मैटी ने पूछा, "तुझे कुछ मिल गया क्या ?"

छोटे जैस का मुख पसीने से चमचमा रहा था और सावधानी व शीघ्रता से किए गए श्रम का प्रभाव उस पर पड़ा प्रतीत हो रहा था। "हाँ, बरसाती के लिए एक गढ़ा," उसने कहा, परन्तु मैटी भी उस विचित्र आवाज़ को सुन रही थी जो फावड़े की चोट लगकर ज़मीन से निकल रही थी। उसे सुनते ही वह कूदकर कोठड़ी के अन्दर पहुँच गई।

"मुझे देदे," उसने फावड़ा पकड़ते हुए कहा, "मुझमें तुझसे अधिक बल है !"

"अपना बल अपने पास रख," छोटे जैस ने कहा, "अब बल की आवश्यकता नहीं !"

मैटी घुटनों के बल बैठ गई; और चाहे उस सूखी, कठोर मिट्टी को छूने भर से उसके दाँत तक कँपकँपा उठे, उसने खुदी पड़ी मिट्टी मुट्ठी भर-भर कर फेंकनी आरम्भ कर दी। "यहाँ कुछ है तो अवश्य," उसने कहा, "शायद एक पत्थर हो, पर अब और मिट्टी मत उड़ा !" कुरेदती, टटोलती हुई वह किसी चीज़ तक पहुँचती जा रही थी। "क्या तूने सचमुच यहाँ ही खोदने का स्वप्न देखा था, छोटे जैस ?" उसने पूछा।

"नहीं," सदा ही की भाँति आत्मविश्वास-पूर्ण लहजे में छोटे जैस ने उत्तर दिया, "स्वप्न तो नदी की शाखा के पास खोदने का देखा था, परन्तु यह स्थान अधिक उपयुक्त लगा।"

"यह," मैटी ने मिट्टी एक ओर हटाते हुए कहा, "यह रहा ! कुछ न कुछ तो है ही यह !"

दोनों ने मिट्टी हटाते हुए, दोनों ने उठाते हुए, उसे बाहर निकाला और दोनों ही उसे इस प्रकार पकड़े रहे कि मानों वह बहुत भारी हो; परन्तु था वह पुराना, पर अभी तक पुष्ट, मटमैले रंग का एक पुस्तकाकार छोटा-सा डिब्बा ! दोनों ही प्रसन्न हो गए, क्योंकि उस समय वे साथ थे, जिससे कि जब पूछा जाए तो कहा जा सके, "जैसे मैं बता रहा हूँ, वैसे ही तो हुआ था। जब मैंने इसे बाहर निकाला तो मैटी (या छोटा जैस) देख रही थी !

अपने कार्य-कौशल से चमत्कृत हो, अपनी गोल आँखों से साश्चर्य देख रहा था छोटा जैस। "इसे यहाँ रखा गया था," उसने कहा, "यह खोया नहीं गया था, इसे जानबूझकर दबाया गया था ! पता नहीं क्यों ? पा," वह चिल्लाया, "पा, जल्दी आ।"

"पा," मैटी भी चिल्लाई एक ऐसी आवाज़ में जो अब केवल उसे ही नहीं, बल्कि सारे शहर को पुकार रही थी, "पा, जल्दी, जल्दी !"

जैस ने सूअरों को चारा देते-देते एक भरी बाल्टी हाथ से गिरा दी और भागा। पहले उसने सोचा था कि कौड़िया साँप है, परन्तु आवाज़ें कहाँ से आ रही हैं यह जानकर वह बोला, "पुरानी कोठड़ी में जा गिरे हो। कमर और टाँगें टूट गईं। इसे न भरवाने का दण्ड मुझे मिला है।"

कोठड़ी के पास पहुँचकर वह रुक गया। "क्या तुझे चोट लगी है ?"

उसने पहले एक और फिर दूसरे से पूछा। और फिर यह सोचकर कि इस प्रकार का शोर कोई गम्भीर खाया हुआ व्यक्ति नहीं कर सकता, वह बोला, "मैटी, अपनी चिल्लाहट बन्द कर। तू तो मुर्दों को भी उठा देगी ! पड़ोसी जाग जाएँगे।"

मैटी चुप हो गई और छोटे जैस ने वह डिब्बा दिखलाते हुए कहा, "हमने इसे खोद निकाला है, पा ! मैंने खुदाई करने का स्वप्न देखा और यह निकल आया।"

"तूने यह कोठड़ी में से निकाला है ?" जैस ने पूछा।

"यहाँ से," छोटे जैस ने खुदी हुई मिट्टी उठाते हुए कहा।

जैस कूदकर कोठड़ी के अन्दर आ गया। सन्दूक लेकर उसे चारों ओर से घुमाकर देखते हुए बोला, "बहुत पुराना है। ऐसे सन्दूक पुराने लोग नक्शे व दूसरे क़ागज़ात रखने के काम में लाते थे। ऐसे सन्दूकों में बहुमूल्य समझी जाने वाली वस्तुएँ रखी जाती थीं।"

इसे खोलो, इसे खोलो, मैटी अपने आप से कह रही थी, परन्तु उसका बाप सन्दूक को उलट-पुलटकर सहला रहा था कि मानों वह सजीव हो।

"अपनी माँ को बुला ला," उसने छोटे जैस से कहा, "लड़कों को बुलाओ। यह केवल संयोग नहीं है। इसे तो इसलिए ही दबाया गया था कि बाद में हमें मिल जाए। इसे जान-बूझकर दबाया गया था।"

"चिल्ला मत," छोटे जैस को चिल्लाते हुए घर की ओर भागते देख उसने आदेशपूर्ण स्वरों में कहा, "डराकर अपनी माँ का आनन्द ही न छीन लेना !"

"तेरे ख्याल में यह क्या है, पा ?" मैटी ने पूछा, "पैसा ?"

"पैसा नहीं," जैस ने कहा, "उन दिनों थोड़ा बहुत जो भी होता उसकी लोगों को ज़रूरत पड़ती थी !"

"चिट्ठियाँ ?" मैटी ने सुझाया, "प्रेम पत्र ?" बिना सोचे ही मैटी ने कह दिया, परन्तु उसके बाप ने कुछ ध्यान न दिया।

"हाँ, क्यों नहीं ?" उसने कहा, "चिट्ठियाँ हो सकती हैं। परन्तु एक दो ही, यह डिब्बा तो बहुत ही हल्का है।" उसने डिब्बे को खड़का कर कहा, "खाली-सा लगता है !"

"ओह, पा," मैटी बोली," भला खाली डिब्बा कौन दबाएगा ?"

"कोई भी आदमी दबा सकता है" जैस ने कहा, "उन दिनों के आदमी ऐसा कर सकते थे। समय इतना कठिन था कि मनुष्य विचित्र बातें कर दिया करते थे!"

"कठिन," मैटी ने दोहराया।

"तू यह तो नहीं समझती कि यह सब अपने आप पैदा हो गया?" जैस ने खेत, मकान इत्यादि की ओर संकेत करते हुए कहा। "मकान क्या जंगली पेड़ पौधों की तरह अपने आप फूट पड़ते हैं? पेड़ बिना काटे ही मर जाते हैं और पवन-चक्कियाँ उगकर चलना आरम्भ कर देती हैं? नहीं!" जैस ने डिब्बे को किसी चमत्कारी वस्तु की तरह हाथों में घुमाते हुए कहा, "अनन्त काम से जो मनुष्य विक्षिप्त हो गया हो ऐसे किसी व्यक्ति द्वारा दबाया गया यह डिब्बा खाली भी हो सकता है!" मैटी देखती रही, जैस ने डिब्बे के छोटे से कुण्डे को पकड़कर हिलाया और कहा, "मैं उस समय से इतना दूर नहीं हूँ कि यह भी न जानूँ कि उन दिनों मनुष्य हाथों के साथ ही साथ दिल से भी हल चलाया करता था! यह फूलों के गमले और खुदरंग दूब की दरियाँ हमेशा ही नहीं थीं, मैटी, और तू इस बात को भूलना मत।" उसने फिर कुण्डे को सरकाया।

मैटी ने यह देखकर इस बार ज़ोर से कहा, "खोल, ना।" परन्तु उसके बाप ने जवाब दिया, "अपनी माँ और भाइयों को आ जाने दे!"

एलिज़ा गम्भीर, लेब और जौश जेबों में हाथ इसलिए डाले हुए थे कि कहीं वे लपककर अपने बाप की सहायता ही न करने लगें—जब वे सब यों उसे घेरकर वहाँ खड़े हो गए जहाँ कि कभी घने जंगल के बीच वह पहला मकान था, तो जैस ने कुण्डा सरकाकर उस डिब्बे का ढक्कन खोल दिया।

मैटी ने अपने बाप के चेहरे से उस चीज़ को पहचानने का प्रयत्न किया जिसे वह एक-टक हो कर देख रहा था, परन्तु शान्तिमय आनन्द के अतिरिक्त वह कुछ भी न देख सकी। जैस ने डिब्बे में से मोमजामे में लिपटा हुआ काग़ज़ का एक पलीता निकाला। और वह डिब्बा एलिज़ा को पकड़ाकर लिपटा हुआ कपड़ा खोल दिया।

"एक पन्ना," उसने उन्हें बताया, "एक गड़ा हुआ पृष्ठ! बाइबिल का एक पृष्ठ," और उसने उसे अपने हाथों में ले सावधानी से खोल दिया।

बाइबिल का एक पृष्ठ, मैटी ने सोचा·····भला कौन उसे दबाना चाहेगा? बाइबिल तो सबके पास होती है, घर में प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक एक प्रति और आनेवाले अपरिचितों के लिए फालतू प्रतिएँ! मैटी ने प्रार्थना की कि उसके आँसू न निकल आएँ। हार, बालों का एक गुच्छा, खुदा हुआ, हृदयाकार और अब कुछ भी नहीं, केवल एक गड़ा हुआ पृष्ठ! अब्राहम का बेटा आइज़ैक, आइज़ैक का बेटा जेकब और जेकब का बेटा जोज़फ! यह किस प्रकार का खज़ाना है? परन्तु उसका बाप आनन्दित हो कर कह रहा था, "पचास वर्ष यह हमारे पाँव तले दबा रहा! आधी शताब्दि!"

उसने पृष्ठ को नीचे कर लिया जिससे कि सब वह धुँधली-सी लिखावट देख सकें! "'१२ अगस्त को जॉर्डन बर्डवल ने दबाया, आयु ७४ वर्ष।' अच्छा, अच्छा तेरे पड़दादा जर्ड। अपना नाम और आयु लिखकर दबा दिया जिससे कि कभी पितृधन की तरह हमें मिल जाए!"

सांध्याकाश में जहाँ पक्षीदल भोजन की खोज में व्यस्त हो उठे थे, मैटी ने वहाँ ही देखते हुए पूछा, "यह कैसा पितृधन है—बीज की तरह धरती में बोया हुआ पुरानी बाइबिल का फटा हुआ एक पृष्ठ।"

"लड़को, यह कूड़े का ढेर सब जला दो। एक धूनी बनाओ!" जैस ने कहा, "अपनी माँ के लिए बैठने को कुर्सी लाओ। कुछ उत्सव हो, हम देखें कि हमें क्या मिला है।"

कोठड़ी के एक कोने में वह कूड़े का ढेर जला दिया गया। लड़कों ने आग के चारों ओर सबके बैठने को स्थान भी बना दिया; केवल एक मैटी ही अलग खड़ी रही, सबके साथ नहीं बैठी, और अपने पिता की उत्सुक दृष्टि को उस पृष्ठ पर पड़ते देखती रही!

"बूढ़ा जॉर्डन बर्डवल," उसके स्वर मानों किसी चमत्कार का वर्णन कर रहे हों, "तेरा पड़दादा जर्ड! दक्षिणी कैरोलिना में जब क्वैकर मित्रों ने देखा कि वे बंजर भूमि में आ पड़े हैं तो वे पश्चिम की ओर चल दिए, सब के सब! सबने अपनी ज़मीनें बेच दीं और गाड़ियों की एक लम्बी पंक्ति चल पड़ी। तेरा पड़दादा जर्ड चलते समय बीमार हो गया। उसकी पत्नी का देहान्त हो चुका था और उसकी पुत्री अविवाहित थी। गाड़ियाँ दो दिन रुकी रहीं और उसका स्वास्थ्य बिगड़ता ही गया; अस्तु, देर लगती देख वे विवश उसे छोड़कर आगे बढ़ गए।

"अकेले ?" छोटे जैस ने पूछा, "बिना घर-बार के ?"

"नहीं, नहीं," जैस ने कहा, "उसकी पुत्री उसकी सेवा-टहल कर रही थी और वह पड़ोसियों के घर आराम से रह रहा था। देख-रेख तो ठीक हो रही थी, परन्तु पीछे छूट जाने का उसे बहुत दुःख था।"

"क्या उसकी मृत्यु हो गई ?"

"मृत्यु," जैस ने डाँटते हुए कहा, "यदि मृत्यु हो जाती तो यह पृष्ठ वह कैसे गाड़ता ?"

"नहीं," जैस ने कहा, "वह मरा नहीं। बसन्त तक वह पूर्णतया स्वस्थ हो कर पहले-सा ही हृष्ट-पुष्ट हो गया। उसे पश्चिम जाने की धुन थी; और वह और उसकी सोलह वर्ष की पुत्री एक दिन चल ही दिए।"

मैटी आग के पास चली आई और जिस सन्दूक पर उसकी माँ बैठी थी, उस ही पर झुककर खड़ी हो गई। "लोगों ने कहा कि वे कभी भी पहुँच न पाएँगे। एक बूढ़ा, और एक लड़की! निर्बल-से दिखने वाले बैलों की एक जोड़ी, एक घटिया गाड़ी और ऐसा ही एक घोड़ा। दक्षिणी कैरोलिना से जब वे चले तो लोगों ने उनसे ऐसे विदा ली कि मानों वे सीधे क़ब्रिस्तान ही जा रहे हों! लोगों ने विदा के समय आँसू बहाए—यह समझकर कि अब भेंट स्वर्ग में ही होगी!"

"क्या रास्ते में आदिवासी थे ?" छोटे जैस ने पूछा।

"नहीं," जैस ने कहा, "परन्तु और सभी प्रकार के विघ्न थे। दलदलें, बीमारी, टूटी गाड़ियाँ, सड़ा हुआ भोजन, टूटे हुए पुल, अज्ञात चौराहे, अनन्त वर्षा! और जंगल उन दिनों इतने घने थे कि लगता कि यात्रा किसी गुफा में कर रहे हैं।"

मैटी ने वह सब देखा, उसके पिता के शब्द मानों चित्र बनाते जा रहे हों, एक के पश्चात् एक जैसे एक कमरे के बाद दूसरा! कोठड़ी में कूड़े की वह आग उसके लिए उससे आयु में एक वर्ष बड़ी उस लड़की की वह आग बन गई जो उस अनन्त वन में जले जा रही थी। उसने वे सारे ही विघ्न जो उस लड़की की राह में आए होंगे उस कोठड़ी के अँधेरे कोनों में छिपे देखे। वह आग के और पास सरक आई और पीछे मुड़कर देखने लगी, परन्तु वहाँ तो गोधूलि के कम होते हुए प्रकाश में, नीलाकाश की पृष्ठभूमि पर सुपरिचित रेखाएँ ही दिखाई दीं: मकान

व खिड़किएँ, गोठ व पशुशाला जो कि, मैटी को याद आई, अपने आप ही धरती से उग न आईं थीं !

"सारे दिन वर्षा होती," जैस ने कहा, "और वे तर हो जात, वह बूढ़ा और उसकी लड़की, और रात को लकड़ियाँ इतनी भीगी होतीं कि जलाए न जलतीं !"

मैटी को लगा कि उसके कपड़े भीगकर उसके शरीर से चिमट गए और आग बुझ गई है, केवल धुआँ निकल रहा है !

"तेरा पड़दादा जर्ड सदा से ही भागदौड़ किया करता था, अपनी बढ़ती आयु का कभी ध्यान ही न करता था। एक हिरन का पीछा करते-करते उसने गिरकर अपनी टाँग तुड़वाली और शेष यात्रा उसने गाड़ी में लेटे-लेटे ही की !"

"तो वे खाते क्या थे ?" लेब ने पूछा। "भोजन सामग्री सड़ गई थी और पड़दादा जर्ड बिस्तर पर पड़े थे ?"

"वह लड़की," जैस ने कहा "तेरी बूआ मैटी, वह पक्की निशानेबाज़ निकली। सदा शिकार मार लाती, परन्तु अपनी टाँग न तुड़वाती !"

मैटी सुनती रही, और पास आ गई और माँ के साथ ही सन्दूक के कोने में बैठ गई। एक हाथ से आग सेकती हुई वह सबकी ओर देखने लगी : उसका बाप हाथ में वह पृष्ठ लिए खड़ा था और सब मुँह उठाए उसकी बातें सुन रहे थे। छोटा जैस अपने बालों में अँगुलियाँ डाले, चमकती आँखों से देख रहा था। जैस गम्भीर था और लेब मुस्करा रहा था। उसकी माँ जैस की ओर ऐसे देख रही थी कि मानों इतनी अच्छी बातें उसने पहले कभी सुनी ही न हों !

ऊपर कालिमाग्रस्त होते हुए आकाश में तीन पक्षी तेज़ी से उड़कर, मौन अपने घोंसलों की ओर जा रहे थे····तेरी बूआ मैटी·····उस लड़की का नाम भी मैटी ही था·····

"पर," उसके बाप ने कहा, "वे पहुँच ही गए। जब सब निराश हो चुके थे, अपने घोड़े, बैलों सहित वे पहुँच गए·····वे और एक दूसरी गाड़ी जो रास्ते में उन्हें मिली थी !" उसने सलवटें निकालकर पृष्ठ को सीधा किया, "और जब यहाँ पहुँचकर वे मकान बनाने लगे, वह मकान जो इस स्थान पर खड़ा था, तो उन्होंने स्मृति चिह्न छोड़ने की बात सोची होगी। मेरे ख्याल से यही हुआ होगा·····वे भगवान के

प्रति कृतज्ञता दिखलाना चाहते होंगे·····उन्हें यहाँ इस मकान तक ले आने के लिए·····"

"उसने क्या दबाया, जैस," एलिज़ा ने पूछा, "कौन सा पृष्ठ उसने चुना ?"

"इससे अच्छा चुनाव न कर सकता था," जैस ने प्रसन्न हो कर कहा, "मैंने सुना था कि वह बड़ी बातें बनानेवाला बूढ़ा था, परन्तु था बुद्धिमान। खेत से भी सुन्दर परम्परा हमारे लिए छोड़ गया !" पृष्ठ को पढ़ते-पढ़ते वह बोला, "खोद कर हीरा निकालने से कहीं अच्छा मुझे यह पृष्ठ लगता है !"

"इसे पढ़ तो, जैस," एलिज़ा ने कहा, "हम तो तेरी तरह इसे देख नहीं रहे। हमें पढ़कर सुना !"

लड़कों की जलाई आग मंद पड़ चुकी थी; परन्तु पढ़ने के लिए अब भी पर्याप्त प्रकाश था उस कोठड़ी में। जैस पंक्तियों पर आँखें गड़ाता हुआ बोला, "वह हमारे लिए यह छोड़ गया है। यह चुना था उसने हमारे लिए : 'एक आगे उठे हुए हाथ से, चमत्कारों से, इंगितों से, भगवान हमें मिश्र से लाया। और यहाँ लाकर उसने यह धरती हमें दी जहाँ कि शहद और दूध की नदिएँ बहती हैं !' हाँ, हाँ," जैस ने कहा, "तब भी, उस सुनसान जंगल में भी वह बूढ़ा जान गया कि यहाँ क्या होगा। और यह स्मृतिचिह्न छोड़ गया जिससे पता चले कि हमें क्या दिया गया है और हमारे लिए कितना कुछ किया गया है !"

"पढ़ते जा, जैस," एलिज़ा बोली, "लगता है कि मृतात्माएँ हमसे बातें कर रही हैं।"

"'अपने पवित्र निवास स्थान से देख, स्वर्ग से देख,'" जैस पढ़ने लगा, "'और अपने अनुयायियों को आशीर्वाद दे, इज़रेल को आशीर्वाद दे और उस धरती को आशीर्वाद दे जो तूने हमें दी है·····जो शहद और दूध से भरपूर है !' और भी है," जैस ने कहा "और भी है," परन्तु आगे पढ़ना न चाहता हुआ, वह आग में देखने लगा।

आग प्रायः बुझ चुकी थी। और शीत उस कोठड़ी में बढ़ता जा रहा था, जैसा कि प्रायः नीचे स्थानों में बढ़ जाता है। गोंद के पेड़ का एक पत्ता, पवन के नूतन वेग से टूटकर, उड़ता हुआ आया और आग में गिरकर भभक उठा। पतझड़ आ पहुँचा, मैटी ने सोचा। आ ही गया ! पा जब पढ़ रहा था तब ही पतझड़ आया। तब, बाइबिल या पड़दादा

जर्ड की बात भूल, उसने पूछा, "वह लड़की·····उसका क्या हुआ ? क्या उसने अपने पिता की सेवा की ?·····क्वारी ही रह गई ?"

जैस अपनी नाक साफ करता हुआ बोला, "हवा बढ़ गई है, धुआँ आँखों में उड़ा आ रहा है।" वह पृष्ठ और पलीता उसने जौश को दे दिया। "सम्भालकर पकड़ना," उसने कहा, "यह बहुमूल्य है। इससे अधिक मूल्यवान वस्तु कभी तेरे हाथ न आएगी!" तब उसने मैटी की ओर देखकर कहा, "कितने बातूनी बच्चे हैं मेरे! पता नहीं कहाँ की सोचते हैं। 'क्या वह मर गया ?' छोटा जैस कहता है। 'क्या वह क्वारी ही रह गई ?' तू पूछती है! ऐसा नहीं हुआ, ऐसा नहीं हुआ!" उसने कहा। "सेट जैन्किन्स के साथ उसका विवाह हुआ। दूसरी गाड़ी उसी की थी। और शादी भी उसने विजातीय से की! सेट क्वैकर नहीं था, पर बाद में उसने सत्य को पहचाना और क्वैकर मत को मानन लगा। १७वें जन्मदिवस को, यहीं, इसी मकान में उसका विवाह हुआ था। और दूसरे दिन वे दोनों पश्चिम चले गए·····"

इस मकान में ही·····सुदीर्घ यात्रा के पश्चात्·····वह लड़की बैल हाँकती पहुँची·····वर्षा में भीगी हुई·····शिकार मारती·····नाले लाँघती·····

"वह भूरी थी," जैस ने कहा, "कुछ मोटी भी थी, पर देखने में सुन्दर थी···मैंने यही सुना है!"

उसे वह गाड़ीवाला, वह बाँका, मिला था। "मैटी", उसने कहा था, "मैटी", उसने कहा था! फिर उसने क्या कहा था, उस बाँके ने, उस सह-यात्री ने ?

"मैंने सुना है कि सेट जैन्किन्स बाँस को किनारों से पकड़कर, बिना हाँफे पच्चीस बार उस पर से कूदा करता था!" जैस ने बतलाया।

शादी के बाद क्या वे, मैटी और सेट, द्वार में खड़े हुए थे। क्या वे फूल तब उग आए थे ? क्या, जैसा कि दादी कहा करती थी, सड़क के दोनों ओर इसी प्रकार ये क्यारियाँ लगी हुई थीं ? क्या वे दोनों एक अन्तिम बार उन पर टहले थे, ऊपर तारों को निहारते ? सेट और मैटी·····।

"तरुण हृदय", जैस ने कहा, "प्रेम में डूबे, दूसरे ही दिन वे पश्चिम चले गए!"

मैटी माँ के पास से उठकर, दौड़कर आग का चक्कर काटती

हुई अपने बाप के पास पहुँची, और उसका हाथ अपने हाथों में लेकर, बोली, "ओह, पा, मैं तुझे क्षमा करती हूँ! अपने हृदय से क्षमा करती हूँ!" और फिर दौड़कर सीढ़ियाँ चढ़ती, घर की ओर जाकर आँखों से ओझल हो गई।

जैस स्तम्भित हो उसे देखता रहा। फिर एलिज़ा से कहने लगा, "इसे क्या हुआ है? मुझे किस बात के लिए क्षमा कर रही है? तेरी लड़की पागल तो नहीं होगई?"

एलिज़ा भी खड़ी हो गई। जैस के सम्मुख जा कर मुस्कराती हुई बोली, "यह उसका बर्डवल रक्त ही है, इसमें मुझे संशय नहीं। उसका दुस्साहसी बर्डवल रक्त!" वह भी मैटी के पीछे-पीछे सवेग चलदी, परन्तु पति को भी आते देख फिर धीमे चलने लगी।

तीनों लड़के, अकेले बैठे, बड़ी देर तक बुझते कोयलों को देखते रहे। फिर छोटा जैस फावड़ा उठाकर, कोठड़ी के दूसरे कोने में खोदने लगा। "क्या पता यहाँ बहुत-सी चीज़ें दबी पड़ी हों," उसने कहा।

जौश ने ठोकर से अँगारों को हिलाया। "पचास वर्ष हुए वे पश्चिम गए थे", उसने कहा, "और हम आज भी यहाँ हैं। उनकी बनाई कोठड़ी में बैठे हैं!"

लेब ने कुछ लकड़ियाँ आग में डाल दीं। वे आग पकड़ गईं और ज्वालाएँ उठकर अँधेरे फर्श को छूती उसके पास तक पहुँचने का प्रयत्न करने लगीं। "'अपने पवित्र निवासस्थान से देख, स्वर्ग से देख और अपने अनुयायियों को आशीर्वाद दे।'" उसने फिर पृष्ठ को मोमजामे में लपेट दिया। "मैं इसे सदा ही अपने पास रखूँगा," उसने जौश से कहा—छोटे जैस से कहा—या जो भी सुनले उससे कहा।

बदला

अक्टूबर की एक सुबह थी, और मेज़ पर रखे लैम्प का प्रकाश अक्टूबर के ही नाश्ते पर पड़ रहा था। जैस ने विदा के इस नाश्ते को देखा; देखा कि लाल मेज़पोश धुल-धुलकर गुलाबी हो गया था, और नाश्ता भी—अचार, मक्खन, माँस और बिस्कुट इत्यादि—लैम्प के प्रकाश में गुलाबी सा ही दिख रहा था।

रसोईघर में लकड़ी के धुएँ की सुवास फैली हुई थी। रसोई में अँधेरा था, परन्तु अँगीठी की आग का प्रकाश लहरों की भाँति मँजे हुए तख्तों के फर्श पर छाया हुआ था। लैम्प के प्रकाश में एलिज़ा की काली आँखों की जागृत चमक घनी हो उठी थी और एनोक की भूरी दाढ़ी पर पाला-सा पड़ा प्रतीत हो रहा था।

जैस सूँघ रहा था और देख रहा था। वह चबा रहा था और निगल रहा था। उसने मेज़ पर हाथ मारा जिससे कि अधभरे प्याले और तश्तरिएँ खनक उठीं। उसने पत्नी की ओर, नौकर की ओर देखा।

"बताओ", उसने सबसे पूछा, "किस बात पर मनुष्य घर छोड़ देता है? केन्टकी में यहाँ से अच्छा मुझे क्या मिलेगा? जाने में क्या बुद्धिमानी है? अपना घर छोड़ दूँ? अपने प्रान्त की सीमाएँ पार करूँ? मूर्खता की बात है! एक मन करता है कि रह जाऊँ!"

एलिज़ा जानती है कि उसका पति दो स्थानों में एक ही समय रहना चाहता है, रहने का नाट्य करता है! वह नाश्ते की मेज़ पर बैठे-बैठे सड़क पर चलती गाड़ी में भी बैठा होता है! परन्तु एलिज़ा को इस प्रकार की बातें करना न आता था। उसके पाँव, और मस्तिष्क भी, एक समय में एक ही स्थान में होते! इस समय, अक्टूबर की इस सुबह, वे मेपलग्रोव नर्सरी के रसोईघर में थे!

"जैस," उसने कहा, "तेरा बिस्तर बँध चुका है। प्रति वर्ष इन दिनों तू केन्टकी जाता है। अगर पौधे न बिकेंगे तो हम गुज़ारा कैसे करेंगे?"

"गुज़ारा?" जैस को बुरा लगा, "मुझे विश्वास है कि मुझे बनाते

समय भगवान ने यह नहीं कहा था कि, 'यह जस बर्डवल है, फूल-पौधों का छोटा-सा व्यापारी,' मुझे पूरा विश्वास है," एलिज़ा की बढ़िया कॉफी का एक लम्बा घूँट भरते हुए जैस ने कहा, "कि भगवान ने कहा होगा, 'यह जैस बर्डवल है, एक इंसान !'"

एलिज़ा बेबस-सी होकर इधर-उधर देखने लगी। भगवान ने क्या कहा था और क्या नहीं करते-करते तो आधी सुबह समाप्त हो जाएगी। जैस ने केन्टकी पहुँचने का कोई समय शायद निश्चित नहीं किया था, परन्तु पुरुषों की भाँति एक गृहणी का समय तो इच्छापूर्वक घटाया बढ़ाया नहीं जा सकता ! उसका समय तो निश्चित था, अनेक कामों में बँटा हुआ !

अपनी हरी आँखें मटकाता हुआ नौकर कुर्सी पर लेट-सा गया। सुबह कार्यारम्भ करने का यह भी अच्छा ढंग है, उसने सोचा, थोड़ी गपशप, थोड़ी करवटें बदलना और फिर दिन के कठोर कामों में लग जाना !

एलिज़ा को सम्बोधित कर, एनोक बोला, परन्तु यों बोला कि मानों भगवान अँगीठी के पास ही कहीं बैठा सुन रहा हो, "भगवान केवल सम्भावनाएँ बनाता है ! एक अनगढ़ पुतला—एक आदमी ! पर वह पेड़-पौधों का व्यापारी होगा या नहीं, वह यह नहीं बनाता !"

एलिज़ा को भगवान के नाम से प्यार था, परन्तु उस समय एनोक के मुख से उसका नाम सुनकर वह प्यार बढ़ा नहीं ! जैस नौकर दो कारणों से रखता : एक तो अपनी सहायता के लिए और दूसरे ग्राहकों से बातें बनाने के लिए ! कभी-कभी उसे ऐसा भी आदमी मिल जाता जो दोनों ही काम कर लेता, प्रायः वह दोनों में एक ही कर पाते। एनोक बातें बनानेवालों में था।

"जैस", एलिज़ा चिन्तित हो उठी, "यदि तू पेड़-पौधे न बेचता....."

एनोक बीच में ही बोल पड़ा, "तो बाँसुरी बजाता। उसे संगीत का अच्छा ज्ञान है। रेशम के कीड़े लगाता। पत्रकारिता करता। घोड़े पालता !"

जैस ने अपने नौकर की ओर देखा। 'घोड़े पालता !' कहीं ताना तो नहीं दे रहा ? कहीं माननीय गौडली के घोड़े ने जो रैड रोवर की दुर्गति की थी उसे याद कर हँसी तो नहीं उड़ा रहा !

"घोड़े पालता ?" वार्तालाप को इस दिशा में मुड़ते देख एलिज़ा को

प्रसन्नता हुई। वह भी, बिना कुछ जतलाए, उस रेड रोवर के विषय में कुछ कहना चाहती थी।

"जैस ने अब तेज़ घोड़ों का काम छोड़ दिया है," वह बोली, "रैड रोवर से ही उसका मन भर गया था!"

"रैड रोवर तो तेज़ घोड़ा न था," एनोक ने कहा।

"दिखता तो तेज़ था," एलिज़ा बोली, "देखते ही लोभ हो आता है," और फिर जैस की ओर देखकर कहने लगी, "हो सके तो इस बार बदला कर लेना!"

जैस बेचैन हो उठा। रैड रोवर ने जो किया था वह सुबह ही सुबह सुनना कठिन था। उसने अपनी कुर्सी पीछे सरकाकर कहा, "मुझे दोपहर से पहले ओहिओ नदी तक पहुँचना है। धूप निकल आई और मैं अभी तक नाश्ता ही कर रहा हूँ। एनोक, तू सामान रख, मैं गाड़ी जोतता हूँ।"

"तेरी गाड़ी जुती हुई है!" एलिजा ने कहा और रैड रोवर की बात याद कर बोली, "तूने वायदा किया था।"

जहाँ तक सम्भव हो जैस अपनी पत्नी को प्रसन्न रखना चाहता था और रैड रोवर को निकालना उसे प्रसन्न करने का एक अच्छा तरीक़ा था। जब से उस भीड़ के सम्मुख माननीय मार्कस गौडली के ब्लैक प्रिन्स से उसने मात खाई थी, रैड रोवर को अस्तबल में देखकर जैस को बुरा लगता था।

और रैड रोवर कभी गौडली के घोड़े को हरा सकेगा ऐसी आशा करना भी व्यर्थ था; वह काम तो दूसरा घोड़ा ही कर सकेगा। दिखने में तेज़ और चलने में धीमा, ऐसा दूसरा घोड़ा उसने कोई नहीं देखा था। अस्तु, रैड रोवर को बेचना (बदला करना, वह एलिज़ा को प्रसन्न करने को कहता) तो दो व्यक्तियों को प्रसन्नता प्रदान करता, विभिन्न कारणों से, और फिर जैस ने उस घोड़े से विवाह तो किया ही नहीं था कि उसे बेचते हुए कुछ कष्ट होता!

बाहर खड़ा वह बड़ा, लाल घोड़ा सगर्व हिनहिना रहा था। जैस सुनकर बोला, "ऐसा घोड़ा, जिसे देखकर लगे बहुत कुछ करेगा और जो कर कुछ भी न पाए, मैंने कभी नहीं देखा!"

"तू उसे निकाल दे," एलिज़ा ने कहा, "इतना तेज़ दिखनेवाला घोड़ा जब तक रहेगा, मालिशें और दौड़ें चलती ही रहेंगी !"

"दौड़ तो फिर भी कुछ लेता है," जैस ने कहा, "पर मालिश तो नहीं कर सकता ! एक प्याला कॉफी का और मिलेगा, एलिज़ा ?"

"ऐसे तो तू प्रलयकाल तक ओहिओ के किनारे न पहुँच पाएगा," कॉफी देते हुए एलिज़ा ने कहा ।

"प्रलय के दिन ओहिओ के किनारे," जैस सोच में डूब गया, "उस दिन के लिए इससे अच्छा स्थान न मिलेगा ! मैडीसन के नीचे । इण्डियाना प्रान्त की सीमा के अन्दर !"

एलिज़ा ने वार्तालाप वहीं समाप्त कर दिया । आगे झुककर लैम्प बुझा दिया । रसोई में अब अँधेरा न था । साथ ही साथ, जैस और एलिज़ा, यात्रा का सामान उठाए बाहर निकल आए ।

बातें करता जैस केन्टकी की ओर चला—अपने आप से बातें करता हुआ, अपने घोड़े से बातें करता हुआ, और अनुपस्थित एलिज़ा और एनोक से बातें करता हुआ !

एलिज़ा से कहा ! तारकावलि-सा, अशोक के पेड़ों का एक झुरमुट बीच में रंग गहरा, किनारों में हल्का, मैडीसन के बाहर—तुझे अवश्य ही पसन्द आएगा !

एनोक से कहा : हाँ, यह रैड रोवर निर्भर-योग्य घोड़ा नहीं है, मानता हूँ ! माननीय गौडली के ब्लैक प्रिन्स के साथ दौड़ते समय तो ठूँठ की तरह खड़ा ही रह गया था । परन्तु इस समय, बिना किसी दबाव के, मुझे ठाट से उड़ाए लिए जा रहा है !

अपने आप से कहा : मेरे आगे फैली हुई यह दृश्यावलि चित्रवत् ही है; प्रत्येक झाड़ी मानों सार्थक हो ! जंगलों और फाटकों का भी अपना ही एक अर्थ है । वह अर्थ जो मैं समझ नहीं पाता ! क्या संदेश है इनका ? क्या कह रहे हैं ये सब ?

घोड़े से कहा : दोस्त, तूने मुझे एक पाठ पढ़ा दिया है । तू मुझसे कहता है, "जैस, केवल रूप व आकृति का ही पुजारी न बन जा !"

वह जाड़ों की सुनहली धूप में चले जा रहा था, सुनहली परन्तु पतली; ज़रा सहारा लो तो मानों टूट जाए ! फिर उसने सोचा कि है तो यथार्थ ही ! बिना खोट का सोना !

दोपहर पश्चात् उसने ओहिओ नदी पार की। वह प्रलय काल के दिन की बात सोचने लगा; और भुने माँस की गन्ध उसे आई। तीसरे पहर भी वह ओहिओ के चौड़े वक्ष पर चलने वाली नावों की सीटियाँ सुन पा रहा था। और चलते-चलते खेतों में अनाज की बजाय वह विशाल जल-प्रवाह और उस पर चलनेवाली नावें उसे दिखाई दीं; सफ़ेद स्तम्भों वाले हंस और बहते हुए बरामदे !

वह चिर परिचित सड़कों, जानी-पहचानी गलियों में मुड़ चला। सुन्दर पेड़ों को निहारता, भौंकते कुत्तों को पुचकारता वह बस्ती में जा पहुँचा। अस्ताचलगामी सूर्य की अंतिम किरणों का उपभोग करती, बाहर बैठी दूध मथती गृहणियों से उसने बात की। घंटी बजाकर खेतों से किसानों को बुलाया और अपनी बहिएँ निकालकर उन्हें चित्र दिखलाने लगा। दूध मथना रुक गया, अनाज से लदी गाड़ियाँ खड़ी रहीं और विभिन्न फूल-पौधों का नाम लेता वह चित्र दिखलाता रहा।

"यह शेफर की रसभरी—सबसे श्रेष्ठ, इससे अच्छा बीज न मिलेगा। खुमानियाँ—सुविकिन, हौटन के बीजों की उपज; मीठी। और ये जाड़ों के अँगूरों की विभिन्न उपज ! एक से एक बढ़िया !"

"मुझे पाँच उनमें से दो," वे कहते, "प्रस्फुटित चेरी से सुन्दर और कुछ नहीं होता !"

"और फल भी बढ़िया !" उनकी गृहणियाँ कहतीं। "देखकर मायका याद आ जाता है—पेन्सिलवेनिया। चेरी सड़कों के दोनों ओर, पत्तियों में लाल लाल !"

विदा से पहले वे उससे हाथ मिलाते। बर्डवल भला आदमी है—क्वेकर, भावुक और स्पष्टवक्ता !

और वह आगे बढ़ गया। रात होते इस बार वह उस घर के सामने रुका जहाँ वह पहले कभी नहीं गया था। वहाँ जाकर उसकी कुछ बिक्री न हो सकती हो, ऐसा वह घर न लगता था—अनाज और तम्बाकू के बड़े, सुन्दर खेत, कुछ फलों के पेड़ भी ! परन्तु गोठ के बाहर लगी एक तख्ती ही अब तक बाधक रही थी। जो मनुष्य अपना निजी इतिहास इस प्रकार लिख छोड़े, जैस उसके विरुद्ध हो जाता, मनुष्य और क्वेकर होते हुए भी !

परन्तु उस रात जैस ने घोड़ा रोककर उस तख्ती को पढ़ना आरम्भ किया जो कि गोठ के एक कोने से दूसरे कोने तक लगी हुई थी।

"ओटो हड्स्पट," लिखा था, "मैं सन् १८०७ में पैदा हुआ और सन् १८३७ में मेरा विवाह हुआ!" जैस ने ज़ोर से वह तख्ती पढ़ी और जिसने उसे लिखवाकर टाँग दिया था उस महा मूढ़ किसान की बात सोचकर हँस पड़ा।

"महा मूढ़!" कुछ देर बाद उसने अपने आप से कहा। "जैस बर्डवल, तू तो सचमुच आकृति व रूप का ही पुजारी होकर रह गया है! बिना एक बार भी देखे किसी के विषय में यह कुछ सोचना!" उसने रैड रोवर को लगाम से थपथपाया और कहा, "मैं तो समझा था कि तूने मुझे कभी ऐसा न करने का पाठ पढ़ा दिया था!" और गाड़ी अन्दर को हाँक दी।

वह बड़ा मकान इहाते में पेड़ों की एक लम्बी पंक्ति के अंत में बना हुआ था, और किसी भी बात में मेपल ग्रोव नर्सरी से कम न था। जैस के नीचे उतरने से पहले ही एक नौकर बाहर निकल आया। उसने बताया कि घरवाले सब किसी से मिलने गए हुए हैं; परन्तु जैस रात को वहीं विश्राम करे। श्रीमती हड्स्पट ने एक नया खेत लिया है और बाग़ीचा लगाने की सोच रही हैं।

"श्रीमती हड्स्पट?" जैस ने पूछा।

"बूढ़ा हड्स्पट लगभग दो वर्ष हुए मर गया," नौकर ने कहा, जो कि आदिपुरुष की भाँति बातें कर रहा था, मानों उसकी अपनी आयु कई शताब्दियों से कम न हो, "श्रीमती हड्स्पट और लड़कियाँ ही सब देखभाल करती हैं।"

जैस उस तख्ती की ओर देख रहा था।

"हाँ, बूढ़े ने ही इसे लिखवाया था," नौकर ने कहा।

"कुछ सिर-फिरा था?"

"तुझ से अधिक नहीं!" नौकर ने कहा। "शायद तुझ जितना भी नहीं। मैं तुझ से परिचित नहीं हूँ, मिस्टर।" साँध्यपवन का एक झोंका उसकी दाढ़ी को छू गया। "किसी के जीवन की सबसे महत्वपूर्ण घटना क्या हो सकती है, मिस्टर? जन्म लेना!" बात पैठ जाए, इस कारण वह कुछ रुका। "उसके बाद? विवाह। यदि ठीक पत्नी मिल जाए तो। सम्भव है मेरी तरह, तुम्हें भी नहीं मिली!" उसकी आँखों में सौहार्द्र उतर आया।

"यह बात तुम्हारी ग़लत है," एलिज़ा पर छींटें पड़ते देख, जैस बोला, "मुझे अच्छी पत्नी मिली है—ग्रीष्म के माधुर्य्य-सी सुन्दर, एक क्वैकर पादड़ी।"

अपनी दाढ़ी में अँगुलियाँ फिराता हुआ वह नौकर—जैस को घूर कर बोला, "हाँ, सबकी अपनी-अपनी रुचि होती है! पर तुम मानते हो वे ही दो मुख्य बातें हैं? जन्म और विवाह! यदि कोई अपने ही घर में अपनी ही तख्ती पर ये दो बातें लिखादे तो तुम्हें क्या? इस विषय में मुझसे कुछ कहना चाहते हो?"

"नहीं," जैस ने कहा। क्वैकर होने के कारण स्वभावतः वह कभी भी न झगड़ता, और फिर केन्टकी के एक गोठ में लगी तख्ती को लेकर किसी नौकर से झगड़ा मोल लेना वह नहीं चाहता था।

शान्त हुआ, तो जैस ने देखा कि नौकर समझदार है। उसने रैड रोवर को खोलने-बाँधने में उसकी सहायता की, माँस इत्यादि पकाकर उसे भोजन करवाया और पेट भरा होते हुए भी अतिथि का साथ देने विनय-पूर्वक बैठ गया।

छः हाथ ऊँचे पुआल के बिस्तर पर जैस आराम से ख़ाली कमरे में सो गया, परन्तु बहुत सवेरे ही एक न समझ में आनेवाली आवाज़ ने उसे जगा दिया·····तड़ाक्, तड़ाक्, ठन्न·····ठन्न। किसानों के घरों से निकलनेवाली सभी प्रकार की आवाज़ों से जैस भली भाँति परिचित था, परन्तु यह न जाने कैसी आवाज़ थी! तड़ाक्, तड़ाक्, ठन्न·····ठन्न! उसकी उत्सुकता जाग उठी। झटपट प्रार्थना से निबटकर वह बाहर निकल आया। और ज्योंही वह पिछली सीढ़ियों से दरवाज़ा खोलकर रसोई में घुसा, उसे पता चल गया कि वह आवाज़ कहाँ से आ रही थी।

एक बूढ़ी महिला रसोई में अँगीठी के पास बैठी थी—एक विशाल, बूढ़ी महिला, बाँस-सी पंतली, परन्तु चौड़े कन्धोंवाली और लम्बी इतनी कि उसका सिर कुर्सी के ऊपर निकला हुआ दिखाई पड़ रहा था। वह हुक्का पी रही थी और तम्बाकू अँगीठी के पास एक लोहे की अलमारी में रखा था। बार-बार वह चिलम झाड़ती, दरवाज़ा खोलकर तम्बाकू निकालती और ज़ोर से दरवाज़ा बन्द कर देती। तड़ाक्—दरवाज़ा खोलती, तड़ाक्—तम्बाकू निकालती, और ठन्न—दरवाज़ा बन्द कर देती। तड़ाक्, तड़ाक्, ठन्न·····ठन्न!

जैस ने आगे बढ़कर नमस्कार किया। श्रीमती हड्स्पट कठोर, सीधी और काले चिमटे जैसी ही बूढ़ी महिला थी, क्योंकि उसकी आकृति भी चिमटे की तरह वर्षों अँगीठी के पास पड़े रहने से तपी लगी हुई रही थी!

जैस ने श्रीमती हड्स्पट, नौकर जेकब और श्रीमती हड्स्पट की चार लड़कियों के साथ नाश्ता किया।

"मेरी लड़कियों से भेंट करो, श्री बर्डवल," श्रीमती हड्स्पट ने कहा। जहाँ तक लिंग-वचन का प्रश्न था, जैस मान गया कि वे लड़कियाँ ही हैं; परन्तु आयु और आकार को देखते हुए उन्हें लड़कियाँ कहना उसे अनुपयुक्त ही लगा!

"यह ओपल, रूबी और पर्ल, श्री बर्डवल," श्रीमती हड्स्पट ने कहा। प्रत्येक, पचास तोले का एक हीरा, जैस ने सोचा।

"यह बर्था," श्रीमती हड्स्पट ने कहा, "मेरी बच्ची!" परिचय का ढंग यूँ बदलता देख जैस को आश्चर्य हुआ। उसकी धारणा थी कि तीन के बाद, सम्भव है लड़कियों का महत्व नहीं बढ़ सकता।

लड़कियाँ सब की सब बड़ी, सहृदय और खूब तम्बाकू पीनेवाली थीं, इतनी कि नाश्ता समाप्त होते-होते जैस को लगा कि वह धुएँ में गोभी के पत्ते की तरह सूखता जा रहा है!

"चलो, नए खेत को देख आएँ, श्री बर्डवल, पता तो चले कि आपकी राय में कौन-कौन से पौधे वहाँ लग सकेंगे।" श्रीमती हड्स्पट की बात सुन जैस सबसे पहले दरवाज़े पर जा पहुँचा।

अस्तबल की ओर जाते हुए श्रीमती हड्स्पट बोलीं, "मेरी घोड़ी लेडी चलेगी। तुम्हारे घोड़े को यात्रा के पश्चात् आराम करने दें! मैंने सुबह उसे देखा था। बहुत ही सुन्दर घोड़ा है—शानदार!"

"हाँ", जैस ने रोवर के प्रति न्याय दिखलाते हुए कहा, "देखने में तो अवश्य ही सुन्दर है!"

जब नौकर लेडी को लगाम पकड़े लाया तो जैस को पता चला कि क्यों श्रीमती हड्स्पट को घोड़ों के सौन्दर्य की परख थी। जैस उस घोड़ी को सिर से पैर तक देखता रहा और मन ही मन उसका सौन्दर्य वर्णन करने को शब्द ढूँढने लगा जिससे कि लौटकर एनोक को बता सके!

लेडी! अच्छी खासी घोड़ी को लेडी (महिला) कहना उसका अपमान करना है। वह यथार्थ में घोड़ी थी यह कह देना भी पर्याप्त न होगा। और ऐसा

भी न था कि वह दुबली-पतली हो, लंगड़ी हो, कानी हो, जल्दी थक जाती हो, लकड़ी चबाती हो, डरती हो, पेड़ देखकर झिझकती हो ! नहीं, एनोक, इनमें से एक भी बात न थी—उसके विषय में बात करना इतना आसान नहीं है। किसी भी एक शब्द से उसकी सराहना नहीं की जा सकती !

परन्तु उस घोड़ी का रक्त विशुद्ध न था। लगता था कि उसमें गो-रक्त हो, या भैंस का ख़ून हो, या बारहसिंगे का रक्त हो। यह एक विचित्र बात थी उसमें और लगता था कि वह स्वयं भी यह बात जानती थी ! लम्बी, पतली गरदन के छोर पर उसका सिर गदा-सा दिखाई दे रहा था। ढोल की तरह उसका शरीर था, उसकी कंधे व टाँगों की माँस-पेशियाँ स्पष्ट दिखाई पड़ रही थीं। नसल से वह आधी—मॉर्गन थी; उसकी आँखों से, उसके रंग से यह स्पष्ट दिखाई दे रहा था। आँखों से देखने की चीज़ थी वह, एनोक, बिना देखे उसे जान पाना, समझ पाना सम्भव नहीं।

एनोक को बताने को ये बातें मन ही मन गढता हुआ जैस घोड़ी की सराहना करना ही भूल गया। बूढ़ी महिला ने उसे यह याद दिलाया। कुछ देर तक घोड़ी को टिकटिकी लगाए देखते हुए जैस को देखकर वह बोली, "क्या तुम इण्डियाना के लोगों ने कभी मॉर्गन घोड़े नहीं देखे ?"

जैस को लगा कि यों देखते रहना ठीक न हुआ; उत्तर में अधिक से अधिक यह ही कह सका, "मॉर्गन घोड़ी ! आप तो महान् हैं, श्रीमती हड्स्पट ! मॉर्गन घोड़ी सदा से ही वांछनीय मानता आया हूँ मैं; परन्तु कभी पाल सकूँ इतना भाग्य ही नहीं है मेरा !"

श्रीमती हड्स्पट यह सुनकर प्रसन्न हो गई; और जब खेत चलने लगे तो अपने अभ्यस्त हाथों में घोड़ी की लगाम थामे वे मुस्करा रही थीं।

जैसे ही घोड़ी ने सड़क पर पाँव रखे कि जैस को लगा कि भगवान आज अवश्य ही उसे वह पाठ पढ़ाएगा जिसकी उसे आवश्यकता थी : किसी भी व्यक्ति या पशु के विषय में बाहर से देखकर ही राय नहीं बनानी चाहिए ! घोड़ी की चाल से लगा कि पृथ्वी कुछ तेज़ी से घूमने लगी है। सड़क उसकी टापों तले दबती-सी जा रही थी, उखड़ती-सी जा रही थी। वह ऐसे चल रही थी कि मानों चाल उसकी माँ का नाम हो और वेग उसके बाप का !

जैस ने वही बात करनी शुरू की जो उसे करनी चाहिये थी—अपने व्यवसाय की ब्नात। वह समझ गया कि बूढ़ी महिला पेड़-पौधों के विषय में उतना ही जानती है जितना कि स्वयं वह। यदि वह एक प्रकार के फलों की बात करता तो वह दूसरे प्रकार के। एक बीज की बात पर वह उसी प्रकार के दूसरे बीज की बात चला देती !

वे फलों-पौधों की बातें करते चले जा रहे थे कि पीछे से एक घोड़ा-गाड़ी आती दिखाई दी। जैस ने घूमकर देखा कि बड़ा घोड़ा छोटी-सी गाड़ी को खींचे लिए आ रहा है। गाड़ीवाला घोड़े को ऐसे भगा रहा था कि मानों किसी दौड़ में भाग ले रहा हो ! जैस ने सोचा कि गाड़ीवाले की पत्नी एकाएक अस्वस्थ हो उठी होगी और वह शीघ्रातिशीघ्र डाक्टर के पास पहुँचना चाह रहा है।

परन्तु उस बूढ़ी महिला ने बड़बड़ाकर लगाम खींची और अपने शरीर का सारा बोझ लगाम पर डाल दिया। "बिना ऐसा कुछ हुए सड़क पर निकलना कठिन है !" उसने कहा। "यह हमें शोभा नहीं देता, लोग समझते हैं कि मेरी लड़किएँ कोचवान-भर हैं !"

श्रीमती हड्स्पट अपनी टाँगें जमाकर, समस्त शक्ति बटोरकर जितना झुक सकती थी पीछे को झुक गई, परन्तु लेडी की चाल पर इसका कुछ प्रभाव न पड़ा। उसकी लम्बी गरदन कठोरतर होती चली गई, उसकी माँसपेशियाँ शरीर-भर में दौड़ने लगीं और वह किसी पक्षी की भाँति उड़ती सड़क पर भागने लगी !

जैस घोड़ी को देख-देखकर उसके विषय में अपनी जानकारी बढ़ाए जा रहा था।

"लगाम ढीली करो," वह चिल्लाया, "तुम तो उसे रोक रही हो ! पत्थर की तरह उसकी गरदन से लटक गई हो, श्रीमती हड्स्पट," वह फिर चिल्लाया, "ढीली करो, लगाम ढीली करो !"

"मैं ऐसा करना नहीं चाहती," श्रीमती हड्स्पट ने कहा, "और उसी प्रकार लगाम से लटकी बैठी रही। "मैं इस घोड़ी को सिखाना चाहती हूँ यह सदा ही सबसे आगे नहीं रहेगी ! अच्छी घोड़ी है, पर इसे पीछे रह जाना भी सीखना पड़ेगा ! यह अपने आप को हवाई-जहाज़ समझती है ! मैं और मेरी लड़कियाँ सड़क पर ऐसे भागती दिखाई पड़ती हैं कि मानों शैतान हमारा पीछा कर रहा है ! यह बात पुरुषों को नहीं भाती !"

लेडी तो ऐसे दौड़ रही थी कि चाहे उसका मुँह टूट जाए पर पीछे न रहेगी ! और श्रीमती हड्स्पट यों पीछे को झुकी लगाम खींच रही थी कि चाहे हाथ टूट जाएँ पर उसे मनमानी न करने देगी; और हवा इस वेग से जैस की क्वैकर-टोपी से टकरा रही थी कि मानों वह तूफान पर चढ़ा बैठा हो ! पर पिछली गाड़ीवाला आगे बढ़ा आ रहा था। जैस ने अपनी टोपी पर हाथ रखकर डरते-डरते पीछे देखा । वह घोड़ा भी तेज़ लगता था और फिर एक हन्टर उसे खदेड़ रहा था ।

यह देखकर जैस को निश्चय करना ही पड़ा । एक घोड़े के श्रम को यों विफल करना उसे न भाया । इस प्रकार किसी भी व्यक्ति को यदि विजयी होने दिया जाए तो संसार में अनीति ही फैलेगी !

उसने बूढ़ी महिला के हाथों से लगाम ले ली । बुढ़िया सबल थी ; जैस भी कम न था और चुटकी बजाते लगाम अपने हाथों में ले उसने गाड़ी चलाना आरम्भ कर दिया ।

जैस ने लगाम ढीली कर लेडी को पुचकारा और वह पलक मारते आगे बढ़ गई; वह उस घोड़े से दूर होती चली गई, मानों वह कमान हो और लेडी तीर ! उसे पीछे छोड़ लेडी धीरे चलने लगी । जैस को लगा कि वह प्रसन्न है !

जैस प्रसन्न न हो सका । वह लगाम श्रीमती हड्स्पट को ही थमा कर प्रसन्न होता, परन्तु ऐसा करते ही उस महिला को उसका लगाम खींच लेना याद आ जाता ।

उसने सोचा कि ठीक यही रहेगा कि जो हुआ उसे भुलाकर फलों की बातें ही किए जाए । "तुम्हारे सम्मुख शेबों की कई क़िस्में हैं, श्रीमती हड्स्पट, और तुम्हारी ज़मीन व जलवायु भी शेबों के ही अनुकूल हैं ।" परन्तु बूढ़ी महिला शेबों की बात करना न चाहती थी !

"पुरुषों को यही शोभा देता है," वह बोली, "दूसरों को दौड़ में हरा देना ! परन्तु स्त्रियों को तो यह शोभा नहीं देता; विशेषतया मेरी लड़कियों की भाँति अविवाहित युवतियों को ! ऐसी लड़की से जिसे दौड़ में हराना तो दूर, कोई पकड़ तक न सके कौन विवाह-प्रस्ताव करेगा ?"

"तुम कहती हो यह घोड़ी कभी हारी ही नहीं ?"

"केवल एक बार," बूढ़ी महिला ने सत्य बात कह दी, "जब मेरी दो लड़कियों ने एक साथ लगाम पकड़ी हुई थी । इसे रोक तो नहीं

सकीं वे, परन्तु इसकी चाल इतनी कम अवश्य कर दी थी जिससे यह पीछे रह गई थी। परन्तु दूसरे घोड़े में तो था पुलिस कप्तान बेस कॉम, विवाहित बूढ़ा ! लड़कियों को उससे कुछ लाभ न हुआ। मैं बहुत दिनों से सोच रही थी कि अपनी लड़कियों के लिए दूसरा घोड़ा ले लूँ जो इतना तेज न हो !

जैस सोच में डूबा, लगाम थामे रहा !

"तुम्हारा घोड़ा तो शानदार है, श्री बर्डवल," श्रीमती हड्स्पट ने कहा। "क्या दौड़ता भी है ?"

"नहीं," जैस बोला, "उसकी दौड़ के विषय में चिन्ता की कोई बात नहीं। ऐसा नहीं कि बिल्कुल ही न भागे, परन्तु दौड़ वह नहीं सकता। बिल्कुल नहीं दौड़ सकता," कुछ स्मरण कर वह बोला !

वे दोनों एक ही बात सोच रहे थे, परन्तु वह महिला ही पहले बोली, जैसे प्रायः औरतें बोला करती हैं !

"क्यों न बदला करले, श्री बर्डवल ?"

जैस को लगा कि भगवान साथ दे रहा है। "इस बात पर विचार किया जा सकता है," वह सावधानी से बोला !

"इस एक बात को छोड़कर लेडी में और कोई खोट नहीं," श्रीमती हड्स्पट ने उसे बताया। "और तुमने देख भी लिया। तुम्हारे जैसा बलवान व्यक्ति यदि चाहे तो उसे सिखा भी सकता है !"

"यदि चाहे तो", जैस ने स्वीकार किया।

"बस, वह दौड़ में पीछे न रहेगी। इसके अतिरिक्त वह दोषरहित है—आधी मॉर्गन, हृष्ट-पुष्ट घोड़ी है लेडी। अभी चार वर्ष की हुई है, और कामचोर नहीं है।"

जैस हूँ-हाँ करता अपने हृदय की धड़कनें छिपा रहा था।

"तुम्हें, जल्दी नहीं करनी चाहिए, श्रीमती हड्स्पट। तुमने मेरे घोड़े को चलते हुए भी नहीं देखा है।"

"मुझे घोड़ों की पहचान है," श्रीमती हड्स्पट ने कहा।

जैस ने झिझकते हुए शब्दों को चुन-चुनकर कहना आरम्भ किया, "तुम··· अपने आप भी···अपनी घोड़ी को सुन्दर तो नहीं कह सकोगी !"

"ठीक है," वह महिला बोली, "मुझे बदले में कुछ और भी देना पड़ेगा।"

अंत में ऐसा ही हुआ। अगले दिन सुबह लेडी जैस की हो गई, साथ में कुछ और भी मिला; और बूढ़ी महिला ने उससे इतना सामान लिया कि उसकी बही के तीन पन्ने भर गए। वह उस तस्ती को देखता घर की ओर चला। "औटो हड्स्पट," उसने कहा, "तूने मेरे साथ भलाई की है। औटो, भगवान तेरी लड़कियों का भला करे—और यदि दौड़ में हार कर ही उनकी बात बनेगी, तो उन्हें ठीक घोड़ा मिल गया !"

लौटते समय मौसम भी अच्छा रहा, बादलों का नाम न था, धूप निकली हुई थी। लेडी कभी पीछे नहीं रहती, श्रीमती हड्स्पट ने कहा था, और जैस ने कई बार प्रत्यक्ष देख लिया कि बात बिल्कुल ठीक थी। रास्ते भर जो भी मिला, वह लेडी से आगे न जा सका।

ओहिओ के पास पहुँचते-पहुँचते वह एलिज़ा के बारे में सोचने लगा। सलेटी रंग के एक घोड़े को लेडी अभी-अभी हरा चुकी थी, और विदा के समय जो एलिज़ा ने कहा था वह जैस को याद हो आया।

"तू इस घोड़े को निकाल दे," उसने कहा था; और अब जैस एक ऐसी घोड़ी लिए लौट रहा था जिसके एक कान में रैड रोवर की चारों टाँगों से अधिक वेग था ! तेज़ दिखनेवाला, उसने सोचा। एलिज़ा ने यही तो कहा था। इसी के विरुद्ध तो थी वह।

उसने लगाम लेडी की पीठ पर मारते हुए कहा, "एलिज़ा की बात में छिपे अर्थ की तू चाहे पुष्टि न कर सके, पर वह भी तुझे तेज़ दिखनेवाला नहीं कह सकेगी ! मैंने तुझसे कम तेज़ दिखनेवाला घोड़ा आज तक नहीं देखा !"

जब जैस ने ओहिओ की एक शाखा बहती देखी, और उस पार जैफरसन तहसील की नीली पहाड़ियाँ दिखलाई दीं, तो वह संतुष्ट हो कर मुस्कराने लगा।

"रात को घर, लेडी !" उसने कहा और लेडी, मानों बात उसे भा गई हो, सुनकर उड़ चली !

घुड़दौड़

"घर पहुँच गए, लेडी," जैस ने अपनी घोड़ी से कहा ।

बहुत ही कम समय में वे वापिस पहुँच गए थे । जब लेडी घर की सड़क में घुसी तो सूर्यास्त न हुआ था और मिट्टी के कीड़े अस्तबल में भोजन बटोरते फिर रहे थे ।

जैस ने लगाम ढीली छोड़ दी जिससे पहली बार घर पहुँचते समय लेडी कुछ शान से अन्दर घुसे । परन्तु यह शान कुछ ही देर की थी और माननीय ऑगस्टस मार्कस गौडली के ब्लैक प्रिन्स को द्वार से बँधे देखकर एकदम दब गई ।

"देख कौन आया हुआ है," जैस ने घोड़े से कहा और वे चालीस मील की यात्रा के पश्चात् घर आनेवाले यात्रियों की चाल से ही अन्दर घुसे ।

ब्लैक प्रिन्स को हिनहिनाते सुनकर माननीय गौडली स्वयं बाहर आया और आँखों पर हाथ की ओट देता हुआ देखने लगा ।

जैस नीचे उतर कर लेडी के पास खड़ा था; माननीय मार्कस ऑगस्टस उनके पास ही आ गया ।

"नमस्कार, मार्कस," जैस ने कहा, "क्या किसी चीज़ की जरूरत पड़ गई थी ?"

"स्वागत, जैस," अप्रतिभ हुए बिना ही माननीय गौडली ने कहा । "मैं अपनी बीज डालने की मशीन के लिए एनोक की सहायता से एक पेंच ढूँढ रहा था !" उसने कहा, परन्तु देख वह लेडी को ही रहा था ।

वह लाल मुँह वाला एक मोटा, विशालकाय व्यक्ति था । पादड़ीगिरी का उपदेश करते-करते उसका मुँह उतना मोटा न हो पाया था । जैस की घोड़ी को देखकर उसके मुख पर कई भाव, पीड़ा व कष्ट के, उमड़ आए थे ।

उसने एक-दो बार अपना मुँह खोला, परन्तु कह केवल इतना ही पाया, "बर्डवल भाई, यह घोड़ी कहाँ से ले आए ?"

"कैन्टकी से," जैस ने संक्षिप्त उत्तर दिया ।

"मैं भी कैन्टकी का रहनेवाला हूँ !" माननीय गौडली को आश्चर्य हुआ कि जिस प्रान्त ने उसे जन्म दिया था, वहाँ ऐसी घोड़ी भी पैदा हुई !

"तुम्हें यह रैड रोवर के बदले मिली ?" उसने पूछा ।

"घोड़ी का नाम लेडी है," जैस ने कहा, वह उसकी गरदन थपथपा रहा था ।

"लेडी!" आश्चर्यान्वित हो कर पादड़ी ने सिर पीछे फेंक अपने अट्टहास से संध्या के शान्त-मौन को भंग कर दिया ।

"भाई," उस विशाल शरीर को हिलते देख, जैस ने कहा, "आज तो तेरी हँसी बाहर टपकी पड़ रही है !"

माननीय गौडली ने आँखें पोंछकर एक बार फिर घोड़ी को देखने का प्रयत्न किया, और बोला, "नाम और रूप में यह असामन्जस्य देखकर ही मुझे हँसी आ गई !"

"यह तो अपनी-अपनी समझ की बात है," जैस ने कहा, "परन्तु नाम लेडी ही है ।"

पादड़ी दो कदम पीछे हटकर घोड़ी को ध्यान से देखने लगा जिससे कि नाम की विशेषता यदि उसकी आकृति में झलकती हो तो उसे देख सके, और खाँसी की दो गोलियाँ मुँह में डालकर चूसने लगा ।

"मेरे विचार में तो बात यों हुई," उसने जैस से कहा ।" तुमने रैड रोवर खरीदा । देखने में पाप जैसा सुन्दर और उतना ही नापाएदार ! छोटी-सी वह दौड़ मेरे ठूँठ और रैड रोवर में—और रैड रोवर तुम्हें धोखा दे गया, जून के महीने में मक्खन की टिकिया की तरह सड़ गया ! अब तुम क्या करते ?"

माननीय गौडली पादड़ियों के प्रभावशाली ढंग से बोलते-बोलते रुक गया और अपना अँगूठा घड़ी की जंजीर में डाल दिया ।

"तुम क्या करते ? बस, यही जो तुमने किया ! दौड़ का विचार ही अपने मन से निकाल दिया । सौन्दर्य की बात भी भुला दी । और एक हृष्टपुष्ट, हल चलाने योग्य घोड़ी ले आए ! भाई," वह बोला, "तुमने ठीक ही किया, वैसे मैं यह अवश्य कहूँगा कि मैंने इतना बड़ा घोड़ा आजतक नहीं देखा ! लो, गोली खा लो, गला ठीक रहता है ।"

जैस ने सिर हिलाकर इंकार कर दिया !

"हाँ," पादड़ी बोलता ही गया," मैं तुमसे यह कहना चाहता हूँ कि रविवार को गिरजाघर जाते समय जब मैं तुम्हें पीछे छोड़कर आगे निकल जाता हूँ तो इसमें वैमनस्य की भावना नहीं रहती ! उस दिन जब मै रैड रोवर से अपना घोड़ा निकाल लेगया तो मुझे लगा कि तुम बात को व्यक्तिगत रूप दे रहे हो ! वेग तो अनन्त सत्य है, भाई, अनन्त सत्य ! इसमें व्यक्तिगत कुछ बात नहीं । वर्षा होती है । तारे चमकते हैं । घास सूखता है । दौड़ में वेगवान् जीतता है । तेज़ घोड़ा दौड़ में आगे निकल जाता है ! यह अनन्त सत्य है, भाई बर्डवल । तुम पादड़ी नहीं हो, परन्तु तुम्हारी पत्नी तो है । वह इन बातों को समझती है । व्यक्तिगत कुछ भी नहीं । जीवन की भाँति, मृत्यु की भाँति, यह भगवान का क़ानून है ! व्यक्तिगत कुछ भी नहीं !"

"सदगृहणी मुझे पुकार रही होगी," चौथाई मील दूर अपने घर की ओर देखते हुए वह बोला । एक बार फिर उसने जैस की नई घोड़ी की ओर देखा ।

"नाम लेडी है !" उसने कुछ याद करते हुए कहा, "पेंच के लिए अनुग्रहीत हूँ, भाई बर्डवल । मै और मेरा ठूँठ तुम्हें रविवार को मिलेंगे !"

माननीय गौडली ज्योंही वहाँ से गया, एनोक गोठ का दरवाज़ा खोलकर बाहर निकल आया ।

"लगा कि इस सप्ताह का उपदेश सुन रहा हूँ," उसने कहा ।

"उसके अनुयायी भी तो अटल हैं," जैस ने अपने नौकर से कहा ।

"ठूँठ ?" एनोक ने पूछा, "अपने घोड़े को वह ठूँठ क्यों कहता है ? क्या मूर्खतावश ?"

"मूर्खता नही—चालाकी !" जैस बोला, "ठूँठ कह कर वह बतलाता है कि ब्लैक प्रिन्स साधारण घोड़ा नहीं है, और वह उसे बढ़िया कहना नहीं चाहता !"

दोनों ही मन में एक ही धारणा लिए, गौडली के ठूँठ की बात छोड़ जैस की लेडी की बात पर आ गए । एनोक की आँखें घोड़ी को देखकर चमकने लगीं; उसका लम्बा, झुर्रियोंवाला हाथ लेडी के कंधे थपथपा रहा था, उसकी छाती और टाँगों को सहला रहा था ।

"श्री बर्डवल, जो दिखती है उतनी ही नहीं है ?"

जैस ने सिर हिलाकर बात मान ली ।

"जहाँ तक रूप की बात है," एनोक बोला, "पादड़ी ठीक ही कह रहा था !"

"जहाँ तक रूप की बात है," जैस ने स्वीकार किया ।

"कुछ अंश मॉर्गन है ?"

"आधी," जैस ने स-गर्व कहा ।

एनोक का मुँह भर आया । "कैसे मिली ?"

"ईश्वर की इच्छा से," जैस ने कहा, "केवल ईश्वर की इच्छा से । विधवा को चाहिए था सुन्दर घोड़ा, पर जो भाग न सके !"

"रैड रोवर," एनोक समझ गया, फिर बोला, "पादड़ी तो चक्कर में आगया !"

"वह चालाक आदमी है," जैस ने कहा । "उसके चक्कर में आजाने का कुछ भरोसा नहीं ! परन्तु, गन्ने की क़सम, एनोक, मैं एलिज़ा के साथ रविवार को गिरजाघर जाते समय गौडली के घोड़े की धूल चाटते-चाटते तंग आगया था । वह देर करके घर से चलता, रास्ते में कुछ दौड़ाकर हमें पकड़ लेता और फिर धीरे-धीरे चलता जिससे हमें धूल खानी पड़े ! इतना क्रोध हो आता था कि मेरा मन प्रार्थना करने योग्य न रह जाया करता था !"

"घर लौटते समय इसे दौड़ाया था ?" एनोक ने धीरे से पूछा ।

"हाँ, एनोक," जैस गम्भीर होकर बोला," इस घोड़ी, इस लेडी नाम की मॉर्गन घोड़ी का हृदय सिंह का है और पर पक्षियों के से हैं ! बिना पर का कोई भी पशु इसे दौड़ में हरा नहीं सकता !"

"तब तो श्री इमरसन के कथनानुसार ही बात हुई," एनोक ने विश्वास-पूर्वक कहा ।

जैस ने सिर हिला दिया । "मुआवज़ा," वह मान गया । "बिल्कुल यही बात है, और इसके रूप की कमी इसकी चाल से पूरी हो जाती है ।"

"तो इस रविवार को दौड़ाओगे ?" एनोक न पूछा ।

"भाई," जैस बोला, "मैं कुछ नहीं कहता । माननीय मार्कस ऑगस्टस की बात तो सुन ही ली थी । द्रुतगामी घोड़ा वेगहीन घोड़े को हरा देता है ! यह अनन्त सत्य है ! रविवार को यदि ब्लैक प्रिन्स हमसे आगे बढ़ना चाहे—और पीछे ही रह जाए—तो यह नियमानुसार ही होगा, अनन्त सत्यानुसार ! और, एनोक, वह दृश्य देखने में भी तारागण-सा सुन्दर लगेगा !"

"पर बुरी बात तो यह है," एनोक विचार-मग्न होकर बोला, "कि पादड़ी के बच्चे छोटे-छोटे हैं और तुम्हारे इतने बड़े । स्टीव और जेन हृष्ट-पुष्ट हैं । तुम्हारी घोड़ी के ऊपर कहीं अधिक बोझ होगा !"

"क्या किया जाए," जस बोला, "यह बात तो है ही । एलिज़ा बच्चों को छोड़कर गिरजे जाने की बात कभी भी नहीं मानेगी ।"

लेडी की साज-सज्जा से खेलता, एनोक सोच में डूबा रहा । "तुम्हारी पत्नी इस घोड़ी को देखकर क्या कहेगी ? खूब बदला कर लाए हो !"

"क्या कहेगी ?" जैस बोला, "तूने उसकी बात सुनी तो थी । 'रैड रोवर के बदले ऐसा घोड़ा ला जो तेज़ दिखनेवाला न हो ।' यह घोड़ी तेज़ दिखनेवाली है ?"

"हाँ, इसे दो बार देखकर पता चलता है !" एनोक ने स्वीकार किया ।

"एलिज़ा कभी घोड़ों को दोबार नहीं देखती ! मैं अब लेडी को उसे दिखाने ही ले जा रहा हूँ । पुरुष जब काम-काज कर रहे हों तो वह अस्तबल में कभी नहीं आएगी ।"

जैस ने लेडी को गाड़ी से खोल दिया और झाड़ियों की पंक्तियों के बीच के पथ से होता हुआ उसे घर तक ले गया । सूर्यास्त हो चुका था, लम्प जल चुके थे । जब तक वे अपनी बातें समाप्त न करलें, एलिज़ा और बच्चे अन्दर ही बैठे उसकी बाट देख रहे थे ।

"लेडी," जैस ने प्यार से कहा, "मैं चाहता हूँ कि तू अपनी स्वामिनी से भेंट कर ले !"

सप्ताह के शेष दिन, सुन्दर व सुहावने, बीत गए । जाड़ों के वे ऐसे दिन थे कि जब समय ठहरा हुआ प्रतीत होता था । मेघविहीन, स्वच्छ दिन, पवन चलती परन्तु तीसरे पहर तक समाप्त हो जाती । दूर दिखने वाली, धुएँ के रंग की पहाड़ियाँ बाग़ीचे के पास सरक आई प्रतीत होतीं । ग्रीष्म के अंत में उपजनेवाले पौधे मेघविहीन आकाश के नीचे स्थिर खड़े दिखाई पड़ते । खेतों में खड़े अनाज की बालियों पर सूर्य की सुनहली किरणें, तीर से कोमल परन्तु तीर जैसी ही नुकीली, पड़तीं । गोधूलि के समय एक कौआ अर्धवृत्ता-कार उड़ान भरता बनों की पृष्ठभूमि में दिखलाई पड़ता, मानों बतला रहा हो कि अभी जीवन शेष है ! इण्डियाना का ग्रीष्म भी सन्तोषप्रद होता है ।

रविवार सौन्दर्य लिए आया । गिरजाघर जाने के कुछ समय पूर्व जैस ने देखा कि बग्घी के पहिए का एक धुरा नहीं मिल रहा है ।

"खो गया ?" एलिज़ा ने पूछा ।

"खोगया तो नहीं कहूँगा," जैस बोला, "परन्तु इस समय नहीं मिल रहा !"

विचित्र बात, बुरा हुआ, परन्तु हो तो गया ही ! अब तो जैस और एलिज़ा

को छोटी गाड़ी में अकेले जाना पड़ेगा और बच्चों को घर छोड़ जाना होगा। बुरी बात हो गई !

रविवासरीय, रेशम के कपड़े पहने एलिज़ा आहते में खड़ी थी। "जैस गिरजाघर जाने का यह ढंग मुझे पसन्द नहीं। पादड़ी इस प्रकार की छोटी गाड़ी में बैठकर गिरजे जाए; यह तो गिरजे नहीं, तहसीली मेले की घुड़दौड़ में जाना हो गया !"

जैस बोला, "कैसी बात करती है, एलिज़ा ! तुझे तो दिखावे से कर्तव्य ही अधिक प्रिय था ! भाई फॉक्स तो पैदल चलकर ही अपने अनुयायियों तक पहुँचा करता था ! और तुझे नए काले रंग से पुती, नए हंटरवाली बग्घी चाहिए !"

शोकग्रस्त-सा वह दूसरी ओर देखने लगा। "भगवान के भक्त सभी जगह माया में फँसते जा रहे हैं," नीचा मुँह किए वह बोला !

एलिज़ा की इच्छा के विरुद्ध उससे कोई काम करने को कहना जैस को बुरा लगता था—और वह नहीं जानता था कि आज इस प्रकार काम चल भी जायगा या नहीं ! परन्तु फॉक्स के नाम से वह प्रभावित हुई। जब वह अभी लड़की ही थी, तो फॉक्स की भाँति पादड़ी बनकर उसने भी धर्म-चर्चा को अपना लिया था और वह जानती थी कि फॉक्स तो किसी भी गाड़ी में बैठकर गिरजे चला जाता !

अस्तु, उसी छोटी गाड़ी में बैठकर वे घर से चले। एलिज़ा फिर भी प्रसन्न व पवित्र भाव लिए ही चल रही थी। जब वे सड़क पर पहुँचे तो उसे यह देखकर सुख ही हुआ कि घोड़ी के रूप से कहीं अधिक सुन्दर उसकी चाल थी ! लेडी जब अपने पाँव उठाती तो लगता कि वह जानती है कि पाँवों से उसे क्या करना है !

"तुझे बढ़िया गाड़ी खीचनेवाली घोड़ी मिल गई है, जैस," वह बोली !

"हमें गिरजाघर पहुँचा देगी, इस बात में कोई संदेह नहीं !" जैस ने कहा।

जब वे पहला मोड़ पार कर उस झाड़ियों के झुण्ड के पास पहुँचे, जिससे मेपल ग्रोव नर्सरी नाम पड़ा था, तो माननीय गौडली अपनी गाड़ी भगाता पीछे से आया। दोनों ने ही पीछे मुड़कर न देखा; दोनों ही ब्लैक प्रिन्स की संयत, स्थिर टापों से परिचित थे।

एलिज़ा आराम से बैठ गई और अपनी बाइबिल गोद में रखती हुई बोली, "मेरी समझ में नहीं आता कि गिरजाघर जाते समय किसी की खोपड़ी

में घोड़ा दौड़ाकर जीतने की बात कैसे समा सकती है । तेरा क्या विचार है, जैस ?"

"मेरी समझ में तो आता है," जैस ने ईमानदारी से कहा, क्योंकि यही एक सद्भावना उस दिन उसके मन में थी !

"गाड़ी किनारे ही लगा लेता, जैस," वह बोली ।

"किनारे लगाते-लगाते नाली में गिरने की मुझे आवश्यकता नहीं ।" जैस ने कहा, "आधी सड़क पर चलने का अधिकार मुझे भी है !"

घोड़ी ने कुछ भी उपक्रम न किया—न सिर हिलाया, न पाँव ही मारे—परन्तु वह चाल में जम गई । वह दौड़ने लगी ! एलिज़ा ने स्पष्ट ही देखा वे द्रुतवग से भागे चले जा रहे थे ।

"क्या रोक लेना ठीक न होगा ?" वह धीरे से बोली, जिससे उसके पति के मन का प्रच्छन्न विरोध उमड़ न आए ।

"गन्ने की क़सम," "जैस बोला, "मेरी समझ में नहीं आता कि क्यों !"

वह "गन्ने की क़सम" उस रविवार के दिन किसी भी दूसरे दिन की भाँति सुनकर एलिज़ा समझ गई कि अब धीरे बोलकर भी कुछ न हो सकेगा । "गन्ने की क़सम !" जैस ने फिर कहा, "मेरी समझ में नहीं आता कि क्यों । माननीय गौडली के लिए आधी सड़क पड़ी है और मैं अपनी घोड़ी को भगा भी नहीं रहा हूँ !"

भगाना किसे कहते हैं, यह भी समझने की बात है । जैस अभी अपनी घोड़ी को टोप से बढ़ावा तो नहीं दे रहा था, जैसा कि उसने रैड रोवर को दिया था, परन्तु वह अपने स्थान पर उचककर बैठा हुआ था—और साफ दिख रहा था कि बड़ा हल्का होकर बैठा है— और घोड़ी से बातें करता हुआ उसे हाँक रहा था ।

"तू तो बढ़िया घोड़ी है । दौड़ने वाली है, अपना नाम धन्य करन वाली है ! फिर कभी तेरे रूप के विषय में नहीं सोचूँगा !"

हो सकता है कि वह भगाना नहीं था, केवल प्रोत्साहन देना था; परन्तु एलिज़ा का मन उस समय बाल की खाल निकालने की स्थिति में नहीं था ।

उसने पलटकर माननीय मार्कस ऑगस्टस की ओर देखा; वह निश्चय ही अपने ब्लैक प्रिन्स को भगा रहा था ! माननीय गौडली का ठूँठ उनसे एक बाँस पीछे था और पादड़ी स्वयं खड़ा होकर उसे दौड़ा रहा

था किसी ऐसे नए पापी की तरह कि जिसके पाप उसके सम्मुख आ गए हों !

एलिज़ा ने कभी सोचा भी न था कि अपने जीवन में वह दो बार ऐसी परिस्थिति में पड़ जाएगी—जीवन में दो बार घुड़दौड़ियों की तरह गिरजे जाना पड़ेगा !

"बस, कमी इतनी रह गई है," कटुतावश, उसने सोचा, "कि कोई दाँव नहीं लगा रहा !"

कमी तो वह भी नहीं थी, परन्तु एलिज़ा को पता न था ! वे अब बीथल गिरजे के सामने पहुँच गए थे और गौडली के सहधर्मियों में से कई आवेश में आकर अपने ही पादड़ी पर दाँव लगा रहे थे ! अपने केन्टकी के भाई को दाँव लगा कर प्रोत्साहन न देना उन्हें उचित प्रतीत न हुआ ! दाँव एक के दो लग रह रहा था परन्तु कोई लगा न रहा था ।

बीथल गिरजाघर एक लम्बी, सहज चढ़ाई पर बना हुआ था—आँख से देखने पर तो वह चढ़ाई कुछ न प्रतीत होती, परन्तु एक बड़े घोड़े के आगे भागती हुई घोड़ी के लिए वही बहुत थी; और वहाँ पहुँचकर ही ब्लैक प्रिन्स पास आने लगा । चढ़ाई अभी आधी ही चढ़ी थी कि ब्लैक प्रिन्स उनकी बग्घी के पिछले पहियों को सूँघने लगा ।

जैस ने प्रोत्साहन देना छोड़ दिया था । वह भी अब अपनी घोड़ी को भगा रहा था । एलिज़ा ने टोपी उसके सिर से उतार ली । और चाहे जो भी हो, पर वह टोपी न उछालने देगी—परन्तु जैस अब ऐसी अवस्था में नहीं था कि जान सके उसका सिर नंगा है या नहीं ! वह भी अब घोड़ी के साथ गाड़ी खींच रहा था, हाँफते हुए फेफड़ों से घोड़ी की तरह ही साँस ले रहा था । लेडी चढ़ाई में कुछ धीमी हो गई थी—न होती तो मर जाती—परन्तु फिर भी दौड़े जा रही थी । जैस की धमनियों में प्रवाहशील क्वकर रक्त ने ही उसे चिल्लाकर अपनो घोड़ी की सराहना न करने दी ।

माननीय गौडली की नाड़ियों में तो क्वैकर रक्त न था । उसका रक्त तो केन्टकी का घुड़दौड़ी रक्त था और जब ब्लैक प्रिन्स की नाक लेडी के पेट के बराबर पहुँच गई तो गौडली का घुड़दौड़ी रक्त मौन न रह सका । उसने अपने ठूँठ से उस भाषा में चिल्ला-चिल्लाकर बात करनी आरम्भ कर दी जो केवल घोड़ों के सौदागरों के शिविरों में सुनी जाती थी । और वह उस भाषा का प्रयोग इस सफाई से कर रहा था कि सुनकर उसके अनुयायियों को लगा कि उन्होंने पहले कभी सुना ही नहीं था ।

अब वे एक दम बीथल गिरजे के सम्मुख आ पहुँचे थे; ब्लैक प्रिन्स एक-आध इंच और आगे बढ़ आया था और माननीय गौडली जैस को ताने देता उसें भगाए जा रहा था ।

पर लेडी पीठ दिखानेवाली न थी, और ना ही जैस था । और सच तो यह है कि एलिज़ा भी नहीं थी ! जैस ने एक क्षण को आँख चुराकर उसे देखा—लगा कि एलिज़ा आराम से, तन कर बैठी है; बाइबिल कस कर पकड़ रखी है उसने और लेडी को पुचकारती जा रही है ! जैस अपने कानों पर विश्वास न कर सका । परन्तु बात निस्संदेह ठीक थी—एलिज़ा लेडी से बातें कर रही थी ! "तू दौड़े जा, लेडी," उसने कहा ।

एलिज़ा घोड़ों के सौदागरों की भाषा तो नहीं जानती थी, परन्तु उसकी आवाज़ साफ थी और लेडी ने वह आवाज़ सुन ली !

वह भागे चली गई ! और इतना ही नहीं, वह एक बार फिर पूर्ण वेग से भागी ! जैस को पता न था कि अभी भी इतना वेग शेष है लेडी में ! दौड़ते समय रोका जाना लेडी को स्वाभाविक लगता था, चिल्लाकर बढ़ावा पाना नहीं ! पुकार सुनकर वह कुपित हो उठी । अपनी लम्बी गरदन खींचकर, क़दम बढ़ाती वह गिरजाघर पहुँचते-पहुँचते ब्लैक प्रिन्स से फिर आगे बढ़ गई !

जैस ने सोचा दौड़ अब समाप्त हो गई और यहाँ से आगे वे रविवासरीय चाल से ही चलेंगे । परन्तु माननीय गौडली उस समय रुकना न चाहता था । उसने पापियों से इतनी लड़ाइयाँ लड़ी थीं कि पहले ही विघ्न से डर कर वह रुक न सकता था ! उसने समझा कि घोड़ी अब थक चुकी है ! उसने समझा कि ब्लैक प्रिन्स जैसा घोड़ा गिरजे और क्वैकर सभा भवन के बीच के आधे मील में निश्चयतः ही वह दौड़ जीत लेगा ! वह उसे दौड़ाता ही रहा ।

पर बात पर उसने ध्यान न दिया—वह थी गिरजे से सभा भवन तक की उतराई जो कि उसके विरुद्ध थी । लेडी अब उतराई में दौड़ रही थी । बस इतना ही उसे चाहिए था । तूफानी हवा की भाँति तो ब्लैक प्रिन्स को पीछे छोड़कर वह आगे न बढ़ी, परन्तु धीरे-धीरे, क़दम पर क़दम, वह आगे निकल गई ।

समय की बात थी कि दौड़ जीतकर भी जैस को अपना आनन्द दबाए रखना पड़ा । उसे एक बार दयनीय होकर हार माननी पड़ी थी और आज

वह पूरा बदला ले सकने योग्य हुआ था। इसके अतिरिक्त वह उस घोड़ी की ओर से भी प्रसन्न हो रहा था।

परन्तु विजय और घोड़ी की प्रसन्नता ही जैस के लिए प्रधान बात नहीं थी। एलिज़ा सबसे महत्वपूर्ण थी। रक्तहीन मुखाकृति लिए वह घोर कष्ट में बैठी हुई थी। बाइबिल को उसने यों पकड़ा हुआ था कि मानों आदिकाल से अचल उस चट्टान से अब वह फिसलनेवाली हो! जैस जानता था कि दूसरों के लिए एलिज़ा के हृदय में यथेष्ट क्षमा थी—परन्तु वह न जानता था कि वह अपने आप को भी घुड़दौड़ के कारण आवेश में आजाने के लिए क्षमा कर सकेगी या नहीं!

और अभी एलिज़ा को सबसे बुरी लगनेवाली बात तो होने को थी। जैस यह भली भाँति जानता था। जब लेडी और ब्लैक प्रिन्स गिरजाघर से आगे निकल गए तो पहले से आए हुए कुछ लोग माननीय मार्कस ऑगस्टस के पीछे दौड़ का अंत देखने के लिए अपनी-अपनी गाड़ियों में बैठ भाग चले। और वे अंत अवश्य ही देखेंगे! उनका पादड़ी हार रहा था; परन्तु अब भी वे उसकी ओर थे और चिल्ला-चिल्लाकर उसे प्रोत्साहित कर रहे थे। वह सारी भीड़ जैस और एलिज़ा के साथ ही साथ क्वैकर सभा भवन में घुस जाएगी। वे वहाँ ठहरेंगे तो नही, परन्तु जैस को डर था कि लौटने से पहले वहीं अपनी गाड़ियाँ घुमाएँगे। और वही हुआ भी!

जब वे ग्रोव सभाभवन पहुँचे तो लेडी ब्लैक प्रिन्स से तीन बाँस आगे थी। जैस ने मुड़ते समय उसे कुछ रोका और दो पहियों पर ही गाड़ी मोड़ कर सभाभवन के पास ही उसे रोक दिया। दूसरे गिरजेवाले उसके पीछे-पीछे ही आए और लौट गए—हारे हुए, परन्तु दबे हुए नहीं! उनमें माननीय मार्कस ऑगस्टस ही ऐसा था जिसके मुँह से एक शब्द भी न निकला!

प्रार्थना के लिए ठहरे हुए क्वैकर भाई भी मौन ही रहे। उनकी आकृतियों से जैस उनके मन का भाव न जान सका, परन्तु उन्होंने जो देखा था उससे वे प्रसन्न हुए होंगे यह सोचना ही व्यर्थ था। और कोई दिन होता तब भी वे यह बात पसन्द न करते, परन्तु रविवार के दिन तो उस हो-हल्ले की प्रथम पंक्ति मे अपने पादड़ी को देखकर उनके प्रसन्न होने का प्रश्न ही नहीं उठता था!

जैस ने लेडी को एक लड़के की देखरेख में छोड़ दिया। वह स्वयं तो एलिज़ा

में ही डूबा हुआ था; केवल प्यार से एक बार लेडी को थपथपा भर दिया। उसने एलिज़ा को सहारा देकर गाड़ी से उतारा, उसके हाथ से अपना टोप लेकर पहन लिया। एलिज़ा अपने आप म खोई हुई, भगवान से परामर्श करती-सी लग रही थी !

उसने वहाँ उपस्थित अपने सहधर्मियों का अभिवादन किया और प्रत्याभिवादन में वे भी झुके; और फिर वे उसके पीछे-पीछे सभाभवन में चले गए। वह पादड़ी के लिए नियत स्थान पर जा बैठी, बाइबिल धीरे से नीचे रख दी, और अपने सिर का कपड़ा खोलने लगी !

जैस पाषाणवत् प्रार्थियों के बीच अपने स्थान पर बैठा था। वह जन्म से क्वैकर था—उसके पिता, पितामह भी क्वैकर थे—और इससे भी छोटी बातों के लिए उसने क्वैकरों का बहिष्कार हो जाते देखा था !

एलिज़ा ने अपने माँसल हाथ बाइबिल पर रख दिए और अपना मस्तिष्क मौन प्रार्थना में झुका दिया। जैस को पता न चला कि कितनी देर वह प्रार्थना करती रही—कई बार लगा कि अनन्त काल तक वह प्रार्थना चलती रहेगी—परन्तु क्वैकर तो मौन प्रार्थना ही किया करते थे, एक केवल जैस ही बेचैन हो उठा था। और जब जैस के हृदय का रक्त जमकर उसकी सहनसीमा से बाहर होने लगा, तभी अपने साफ सुनाई पड़नेवाले स्वर में एलिज़ा ने कहा "यदि तुम में से किसी की आत्मा कुछ कहा चाहती है, तो बोलो !"

एलिज़ा ने फिर अपना मस्तिष्क झुका लिया—पर जैस सभाभवन में चारों ओर देखने लगा। सबके मुख पर संतोष की छाया ही उसे दिखाई दी—ऐसा कुछ तो न दिखाई दिया कि उसे मुस्कान कहा जा सके, परन्तु लगता था कि वे भगवान के समस्त कार्य-संचालन से संतुष्ट थे ! और किसी की भी आत्मा ने उस दिन उसे बोलने को बाध्य न किया, केवल दो बूढ़े प्रार्थना भर करके चुप रह गए।

घर लौटते समय पूर्णतया शान्ति रही। वे बीथल गिरजे के पास से निकले, परन्तु उनकी प्रार्थना संक्षिप्त रही थी और बैठने के सभी स्थान रिक्त पड़े थे। विश्रम सगर्व, लेडी उन्हें उठाए लिए जा रही थी।

एनोक, स्टीव और जेन उन्हें घर से कुछ दूर सड़क पर खड़े मिल गए और इमैन्युएला दरवाज़े पर खड़ी राह देख रही थी। पर जैस ने केवल सिर हिलाकर ही उन्हें वह शुभ समाचार सुनाया; एलिज़ा के कारण वह उतना हर्ष या उल्लास न दिखला सका जितना कि वह चाहता था।

एलिज़ा, कृपालू, मौन थी। बहुत ही मौन! जब कोई उससे बात करता तो बोलती, बच्चों और जैस का सभी काम उसने किया, परन्तु उन सभी बातों में कि जिनसे एलिज़ा एलिज़ा थी उस दिन उसका पता ही न था; वह मानों अपने आप में डूबी हुई थी!

संध्या समय जैस कुछ अस्वस्थ हो उठा—पेट, दिल, जिगर, न जाने कहाँ एक दर्द-सा उठने लगा। उसने सोचा कि अपने लिए चाय का एक प्याला बनाले, और पीकर सो जाए, सम्भव है, कुछ आराम ही मिले।

रात हो चुकी थी जब वह अपने और एलिज़ा के कमरे में पहुँचा, परन्तु चाँद निकला हुआ था और चाँदनी में उसने पूर्व की खिड़की के पास बैठी एलिज़ा को देखा। वह अपनी लटें गूँथ रही थी।

"जैस," उसके हाथ में प्याला देखकर वह बोली, "क्या तबियत ख़राब हो गई है?"

"नहीं," जैस ने कहा, "नहीं," उसकी पीड़ा एलिज़ा के स्वरों में पहला-सा अपनत्व पाकर अपने आप भाग गई। लगा कि एलिज़ा ने पिछली बातें भुलाकर उसे क्षमा कर दिया।

"एलिज़ा," जैस ने पूछा, "क्या तू चाय का एक गरम प्याला नहीं पिएगी?"

"क्यों नहीं, जस?" उसने कहा, "इससे कुछ ताज़गी ही आएगी।"

जैस ने चाँदनी में चमकती दरी के फूलों पर चलकर एलिज़ा को प्याला दे दिया।

जब तक वह पिए, जैस खिड़की के बाहर देखता हुआ, उसकी कुर्सी पकड़े खड़ा रहा: सारी पृथ्वी पर चाँदनी छिटकी हुई थी—वन और पहाड़, उद्यान और मौन सरिता; और उसकी अपनी छत, और अस्तबल में बँधी लेडी, इमर्सन की पुस्तक पढ़ता हुआ एनोक और बहुत पहले से निद्रानिमग्न बच्चे!

"मधुर दिन," वह बोला, "इतना ठंडा, इतना शान्त और इतना चमकदार, मानों आकाश और पृथ्वी की सुहागरात हो!"

और मन में शान्ति व संतोष का भाव लिए वह एकाएक मौन अट्टहास से काँप उठा।

एलिज़ा की कुर्सी उस मौन हँसी से हिल उठी। "क्या है, जैस?" उसने पूछा।

जैस ने हँसी रोकली, पर कुछ कहा नहीं। उसे लगा कि एक दिन में एक स्त्री घोड़ों की जितनी स्तुति सुन, सह सकती है, एलिज़ा सुन चुकी है! परन्तु बीथल गिरजे में जो उस दिन अनन्त सत्यों पर उपदेश नहीं हो सका उसे सोच वह मुस्कराए बिना न रह सका।

"हाँ, मिलेंगे नदी किनारे"

बसन्त की एक संध्या की बात है, बहुत दिनों से वर्षा न हुई थी। ठंडी हवा चल रही थी। पवन वेग से सड़क में धूल उड़ रही थी, खिड़कियों की चौखटें तक काँप रही थीं और रसोई का धुआँ उड़कर बैठक में आ रहा था। कम्बल के चीथड़े बटती हुई एलिज़ा ने सुना कोई सामने का दरवाज़ा ज़ोर ज़ोर से खटखटा रहा है। काम छोड़, एक ऊनी चादर कंधों पर डालती हुई वह उठकर दरवाज़ा खोलने लगी। यदि आनेवाला पिछले दरवाज़े पर आता तो एलिज़ा समझती कि कोई भिखारी है·····अब वह कुछ निश्चय न कर सकी।

"श्रीमती बर्डवल ?" आगन्तुक ने पूछा।

"मैं लेफ मिल्सपो हूँ," एलिज़ा के सम्मुख खड़े उस बूढ़े ने कहा, "कुछ अंडे भेंट लेकर आया हूँ।"

एलिज़ा ने अंडे देखे और नाम से भी उसे पहचान गई। बूढ़ा लेब मिल्सपो—उसका नाम लेफाये था, परन्तु कोई कभी इस नाम से उसे पुकारता न था—मेपल ग्रोव नर्सरी से दक्षिण की ओर लगभग एक मील दूर रहता था। वह एक विचित्र व्यक्ति था उस इलाक़े में, जहाँ विचित्रता को फलने-फूलने का पूर्ण समय और स्थान मिल सकता था! उसका जन्म उस इलाक़े में ही हुआ था, परन्तु अपनी बढ़ईगिरी करने वह प्रान्त के उत्तर में जा बसा था और अब अपने पिता की मृत्यु के पश्चात्, जो कि वर्षों से विधुर था, उसका एक मात्र उत्तराधिकारी होने के कारण वापिस लौट आया था।

"यह तुम्हारा सौजन्य है, भाई मिल्सपो," एलिज़ा ने उसे मन ही मन पहचान कर कहा। "इस ठंडी हवा को छोड़ अन्दर आ कर आग सेक लो!"

"मैं इस निमन्त्रण की बाट देख रहा था," बूढ़े लेफ ने कहा, और अन्दर आ गया।

एलिज़ा द्वार बन्द कर, अपने अतिथि को देखने लगी। उसे देखकर इतनी बातें मस्तिष्क में घूम गईं, कि वह सभ्य व्यवहार के विरुद्ध उसे देखती ही रह गई!

"अब तो अगली बार आप अवश्य ही मुझे पहचान लेंगी, श्रीमती बर्डवल," वह बोला ।

एलिज़ा को लगा कि यह बात तो उसे स्वीकार करनी ही पड़ेगी । नंगे सिर, अँगीठी की ओर पीठ किए, हाथों में अंडों को ऐसे लिए मानों वह पेड़ की शाखा समेत घोंसले में रखे हों, वह उसके सामने खड़ा था ।

"हाँ, पहचान लूँगी," एलिज़ा यथासम्भव मित्रता दिखाते हुए बोली, "तुम तो हमारे पड़ोसी हो !"

बूढ़े लेफ की छोटी, चमड़े के रंग की आँखें, उसके झुर्रियोंवाले चेहरे में से चमकती हुई मुस्करा उठीं । "मैं तुम्हारा पड़ोसी हूँ और एक भेंट लेकर आया हूँ ।" उसने कहा और अपना हाथ उसकी ओर बढ़ा दिया ।

एलिज़ा ने जितनी कुछ प्रसन्नता मुख पर ला सकी, लाते हुए अंडे ले लिए । अंडे घास के बने एक गोल डिब्बे में रखे थे । देखकर, एलिज़ा ने सोचा कि बस मुर्ग़ी की कमी है !

"तू कहीं अपने आप को ही तो नहीं लूट लाया है, भाई मिल्सपो ?" एलिजा ने पूछा, "एक दर्जन से भी ज्यादा अंडे हैं ये तो !"

"सत्तरह !" बूढ़ा लेफ सगर्व बोला । "पर एक मुर्ग़ी के नहीं हैं ! नहीं," उसने एलिज़ा को निःसंशय करते हुए कहा, "तुम मुझे लूट नहीं रही हो । मैं अंडे नहीं खाता । छूता तक नहीं । मेरे सिद्धान्तों के विरुद्ध हैं !"

एलिज़ा ने सुना हुआ था कि लोग माँस नहीं खाते । वह उनकी बात समझ सकती थी और कभी-कभी तो स्वयं भी यही सोचा करती थी । परन्तु लेफ पहला व्यक्ति था जो अंडे नहीं खाता था । "तेरे सिद्धान्त अंडों के विरुद्ध हैं ?" उसने पूछा ।

"नहीं, श्रीमती जी," लेफ बोला, "तुमने तो बात उल्टी ही समझ ली । मैं तो कह रहा था कि मेरे सिद्धान्त अंडों के पक्ष में हैं !"

एलिज़ा अभी भी अंडे उठाए थी; और वह उस डिब्बे को भी नीचे रखते डर रही थी कि कहीं टूट न जाए । और उसे लग रहा था कि उस घोंसले में (यदि वह घोंसला ही था) केवल अंडे ही न थे, बल्कि और भी कोई सजीव वस्तु थी ! हाथ को आगे को निकाले वह अंडे लिए खड़ी थी । उसे यह भी आभास था कि उसकी मुस्कराहट अवश्य कृत्रिम लग रही होगी, क्योंकि उसकी अपनी मुर्ग़ियों ने भी धड़ाधड़

अंडे दिए थे, और जैस ने कह दिया था कि यदि उसके सम्मुख खाने को अंडे रख दिए गए तो वह चिल्ला पड़ेगा।

परन्तु उसकी मुस्कान ने बूढ़े लेफ को प्रसन्न कर दिया। "नहीं, श्रीमती जी," उसने कहा, "सिद्धान्त पक्ष में है, विरुद्ध नहीं! मैं तो सोचता हूँ अण्डा सम्पूर्ण पदार्थ है, ईश्वर की कला का सर्वोत्तम प्रतीक! इतना सुन्दर कि उसे खाना न चाहिए। अंडे के रूप व आकार में सुधार करने की कोई विधि हो सकती है, श्रीमती बर्डवल?"

एलिज़ा ने सिर हिला दिया।

"सोच लीजिए," बूढ़ा लेफ बोला, "कुछ देर और सोच लीजिए!"

बात एलिज़ा की समझ में न आई। अंडों में सुधार करने की कोई तरकीब हो सकती है यह वह न जानती थी; खाने में स्वादिष्ट, उठाने में सहल, और मुर्ग़ी जैसे अंडे सृजन करती है वह उपयुक्त ही लगा एलिज़ा को! "अंडे," एलिज़ा बोली, "अंडे बहुत ही संतोषजनक होते हैं!"

"सन्तोषजनक!" बूढ़ा लेफ कुपित हो उठा। अपना कोट उठाकर वह अँगीठी के इतना पास चला गया कि आग भभक उठी। देखकर एलिज़ा प्रसन्न हो गई, परन्तु साथ ही बूढ़े के शरीर से एक प्रकार की दुर्गन्ध भी निकलने लगी!

"तुम यह भी कह सकती हो कि चाँद अंडे जितना ही सुन्दर है," उसने सुझाया, "परन्तु चाँद मुर्ग़ी तो नहीं बन सकता! बन सकता है?"

"नहीं," शिथिल स्वर में एलिज़ा बोली, "जहाँ तक मुझे मालूम है, नहीं!"

"तुम यह कह सकती हो कि गुलाब अपनी बनावट के कारण अंडे की बराबरी कर सकता है! परन्तु क्या गुलाब एक शताब्दि तक जीवित रह सकता है? अपना रूप व आकार गँवाए बिना प्रलय काल तक रह सकता है? अंडा, यदि तोड़ा न जाए, तो रह सकता है!"

"नहीं," अपने हाथ के सत्तरह अंडों को देखती हुई वह बोली, "गुलाब नहीं रह सकता!"

"तुम कह सकती हो," लेफ बोला, "कि पन्ना अंडे से अधिक मूल्यवान होता है, परन्तु रेगिस्तान मे क्या पाना चाहोगी, श्रीमती बर्डवल, पन्ना या अंडा?"

"अंडा," एलिज़ा ने बूढ़े की इच्छानुसार ही उत्तर दिया, परन्तु साथ ही वह यह भी सोच रही थी कि अंडों का नाश्ता खाकर यदि उसी समय रेगिस्तान में जा उतरी हो, तब तो वह पन्ना ही पाना चाहेगी !

"देखा तुमने ?" लेफ ने कहा, "इसलिए ही मैं कभी अंडे नहीं खाता ! जो खाते हैं उनके विरुद्ध मैं कुछ नहीं कहता, उनकी अपनी बात है—परन्तु अंडा तोड़ने से पहले तो मैं इन्द्र धनुष तोड़ना चाहूँगा ! आप जा कर ये अंडे कहीं रख क्यों नहीं देतीं, श्रीमती बर्डवल ?" कुर्सी पर बैठते हुए उसने कहा, "फिर बातें करेंगे। बाहर निकलने जैसा मौसम नहीं हो रहा।"

अंडे रख आने की बात एलिज़ा के मन की थी, सुनकर वह बोली, "धन्यवाद, भाई मिल्सपो, मैं यही करती हूँ।" रसोई में जाकर उसने अन्दर से दरवाज़ा बन्द कर लिया।

वहाँ अपने काम की मेज़ के पास बैठा जैस हँसी से दोहरा हुआ जा रहा था। हँसते-हँसते उसकी आँखों में आँसू आ गए जो कि बहते-बहते उसके मुँह के किनारे रुके हुए थे ! एलिज़ा ने स-रोष अपने पति को देखा।

"शंघाई के बेर !" अंडों को देख जैस बोला, "मेरे अमूल्य शंघाई के बेर ! अच्छा, तो एलिज़ा तू पन्ने न लेकर अंडा लेगी ?"

"तू चुप जा," एलिजा बोली, "तू चुप जा और जा कर अपने पड़ोसी से बात कर !"

"मेरा पड़ोसी ?" जैस ने पूछा।

"वह मर्द है," एलिज़ा ने ऐसे कहा मानों इससे उसके आतिथ्य का सारा भार जैस पर आ जाता हो।

जैस भी काम करते-करते थक गया था; इसलिए वह चला गया और देर तक बातें करता रहा—इतनी देर तक कि एलिज़ा ने अँगीठी जलाकर कुछ और बिस्कुट पकाने को रख दिए। बिना उनके सौन्दर्य का विचार किए एलिज़ा ने कुछ और अंडे तोड़े और कहने लगी, "शंघाई के बेर ! यदि जैस को अंडे देखकर हँसी आती है, तो कुछ और खा कर हँस ले !"

बिस्कुटों को पकते कुछ समय हो गया था जब जैस रसोई में आया। "भाई मिल्सपो तो बहुत ही दिलचस्प बूढ़ा है, एलिज़ा ! विचार उसके विचित्र हैं, परन्तु हैं दिलचस्प। अब जा रहा है और अपना टोप माँगता है। तूने क्या किया उसका ?"

"जहाँ तक मुझे याद है वह नंगे सिर ही आया था," एलिज़ा बोली, "यदि टोप था तो वहीं कहीं बैठक में रख दिया होगा उसने। पर मैंने तो उसका टोप नहीं देखा !"

जैस बैठक में जा कर लौट आया। "एलिज़ा, वह अपने टोप में अंडे रखकर लाया था। कहाँ रख दिया तूने ?"

एलिज़ा गम्भीर हो उठी। "जैस," वह बोली, "उसे तो मैंने जला दिया ! मुझे क्या पता वह टोप था उसका ! मैं तो मुर्ग़ी का घोंसला समझी थी उसे ! जूएँ और सभी कुछ था। अब तो जल गया," उसने कहा, "उसी की आग में बिस्कुट पका रही हूँ ! अब क्या किया जाए ?"

"यह भी ख़ूब रही," जैस को क्रोध हो आया। "पहली बार पड़ोसी घर में आए तो उसका टोप जला दो ! अच्छा," वह मुँह बनाकर बोला, "अब तो जा कर कहना पड़ेगा, 'भाई, मेरी पत्नी कहती है कि वह तुम्हारे टोप की आग में बिस्कुट पका रही है !' एलिज़ा, तुझे पक्की याद है ?"

"ओह, जैस," एलिज़ा भी धैर्य खो बैठी, "तू समझता है कि मैं अन्धी हूँ ! मैंने चिमटे से पकड़कर उसे अँगीठी में डाला और अपनी आँखों से जलते हुए देखा ! तू जा और कहदे भूल से मैंने उसे जला दिया।"

"इसे भूल तो नहीं कहते," जैस ने कहा, "चिमटे से पकड़कर आग में डाल देना !"

"अब पता जो चल गया कि वह उसका टोप था," एलिज़ा ने समझाया, "इसलिए उसे जलाना भूल थी !"

"अच्छा," बैठक के दरवाज़े पर रुकता हुआ, जैस बोला, "हमारे और भाई मिल्सपो के पड़ोसी-भाव को अब समाप्त ही समझो !"

जैस की वह बात ठीक न निकली ! बूढ़ा लेफ बात दिल में रखनेवाला व्यक्ति न था और ना ही एलिज़ा ने उसका अंतिम टोप फूँक दिया था। वह फिर बैठने, बात करने आया और एलिज़ा को लगा कि अंडों के डिब्बे जैसा ही दूसरा टोप पहनकर आया !

"खाना खा कर ही जाना," एलिज़ा ने उसे देर तक बैठे देख कर निमंत्रण दिया। दूसरे, इससे उस अवसर को कुछ महत्व भी मिल गया।

"जैस तो अब तक शहर से लौटकर नहीं आया; परन्तु हम उसके लिए ठहरेंगे नहीं। तुझे तो पता है कि जैस बातों का धनी है!"

"धन्यवाद," बूढ़े लेफ ने कहा, "खाकर ही जाऊँगा। रसोई से आने वाली केक की सुगन्ध ने बहुत देर हुई, मुझे, यदि निमंत्रण मिले तो उसे स्वीकार करने को बाध्य कर दिया था। मैं खाना तो पका लेता हूँ, परन्तु बिस्कुट नहीं बना पाता। और केक खाकर तो मज़ा ही आजाएगा!"

एलिज़ा तो उसे बहुत पहले ही निमंत्रित करती, परन्तु बढ़िया पके हुए पकवानों की सुगन्ध में वह इतने बड़े बूढ़े लेफ को बिठलाते घबराती थी! अब उसे आनन्दित देखकर एलिज़ा को आत्मग्लानि ही हुई। एलिज़ा, तू तो फैशन पर मरने लगी है, उसने अपने आप से कहा। हृदय की बात न मानकर मिथ्या भावनाओं के पीछे भागती है। बेचारा अकेला बूढ़ा! इतने ऊँचे विचारोंवाला कि अंडे तक नहीं छूता, बात करने का भूखा! साबुन और पानी से जो न घुल सके ऐसी उसमें कौन सी बुराई है? और बहुतों के विषय में तो यह बात भी नहीं कही जा सकती!

घर के बाहर तिपाई पर उसने बहुत-सा साबुन और पानी ला कर रख दिया और सहज-भाव से कहने लगी, "भोजन से पहले हम यहाँ ही हाथ मुँह धोते हैं, भाई मिल्सपो। लड़के," यह जतलाने को कि उनके घर हाथ मुँह धोने की प्रथा है, केवल उसके लिए ही यह आयोजन नहीं किया जा रहा है, एलिज़ा ने बतलाया, "हाथ-मुँह धो चुके; मैं और लड़कियाँ अन्दर धोती हैं। तू भी आराम से निबट ले, तब तक खाना तैयार हो जाएगा!"

बूढ़े लेफ के तो वह उबलता पानी (एलिजा ने सोचा था कि ठंडे पानी से काम न चलेगा) देखकर मानों प्राण ही सूख गए, ऐसे कि मानों किसी पापी को दैवी दंड मिलने जा रहा हो।

"यह रहा तौलिया," एलिज़ा प्रसन्न-भाव से बोली, "और यह मेरा अपने हाथों बनाया साबुन," उसने लेफ के झिझकते-से हाथ में टिकिया थमा दी!

बूढ़े लेफ ने घबराकर उसे नीचे रख दिया और अपना हाथ पतलून से रगड़कर यों पोंछने लगा कि मानों कोई काँटोंवाला पत्ता छू लिया हो! "श्रीमती जी," वह बोला, "मेरी हिम्मत नहीं पड़ती!"

"तुम्हारी क्या नहीं पड़ती?" शायद ठीक से न सुन पाई हो, यह सोच एलिज़ा ने पूछा।

"मेरी हिम्मत नहीं पड़ती," बूढ़ा लेफ फिर बोला, "यदि मैंने एक बार पानी छू लिया तो मेरा शरीर, मेरे कपड़े पानी के लिए तड़पने लगेंगे। एक छपका लगते ही मेरा सारा शरीर दोपहर के सूर्य से तपते रेगिस्तान की भाँति पानी के लिए तरसने लगेगा ! अगर मैंने उसे छुआ," पानी के बरतन की ओर इशारा करते हुए वह बोला, "तो मुझे बरसाती पानी के ढोल में कूदना पड़ेगा ! अपनी प्यास बुझाने के लिए मुझे घोड़ों की नादों की ओर भागना पड़ेगा ! और वह ठीक न लगेगा। मेरी आयु का पुरुष, भोजन को निमंत्रित, घोड़े की नाँद में पानी छपछपाए ! नहीं," उसने कहा, और बरतन उठाकर, सावधानी से सारा पानी पवन-चक्की के पास पत्थरों में फेंक दिया, "ऐसा अवसर आने ही न देना चाहिए !"

"और अब," खाली बरतन तिपाई पर रखकर, वह बोला, "मेरी समझ तुम्हारे उस बढ़िया केक की बाट देखते रहने देने का कोई कारण नहीं है ! उसमें अंडा तो नहीं डाला ?"

"नहीं," एलिज़ा निर्बल-सी हो कर बोली, "अंडे नहीं डाले हैं !" वह फेंके गए पानी को देखती हुई, खोई-सी खड़ी थी।

"तो देर करने से क्या लाभ ?" बूढ़े लेफ ने पूछा।

"नहीं," एलिज़ा ने फिर कहा, "कोई लाभ नहीं ! तू सीधा अन्दर जा, भाई मिल्सपो," ग्रीष्म की साँध्य पवन में एक लम्बा, अंतिम श्वाँस खींच, वह बोली, "और जा कर बैठ जा !"

जैस को बात का पता चला, तो नाक-भौं सिकोड़कर उसने कहा, "औरतें !" मानों उस एक शब्द में बात साफ हो गई हो !

"औरतें," एलिज़ा उसकी बात दोहराती हुई बोली, "लेफ मिल्सपो के शरीर की जल-पिपासा के लिए मैं क्योंकर उत्तरदायी हूँ ?"

एलिज़ा पलंग के अपने कोने में लेट गई। "अगर तेरा यह ख्याल है, जैस बर्डवल, कि मैं भोजन से पहले तेरे लंगोटियों को स्नान भी कराऊँगी तो तू भूल में है। नंगे आदमी मेरी रसोई में नहीं घूमेंगे और ना ही सारा घर गीला करने पाएँगे !"

"देखती जा," जैस ने आराम से कहा, "बूढ़े लेफ को यह बात मुझ से तो कहने दे !"

एलिज़ा देखती रही—और जब समय आया तो जैस पर सारी बात छोड़ कर रसोई और दहलीज से दूर ही रही; परन्तु जब लेफ खाना खाने बैठा तो

स्पष्ट था कि पानी की एक बूँद भी उसके शरीर को छू नहीं पाई थी और जैस, लाख पूछने पर भी, इस विषय में अपना मुँह बन्द किए रहा ।

"अच्छी प्यास है सारे शरीर की," एलिज़ा ने कहा, "तूने उसकी पोल क्यों न खोल दी ?"

"खोलूँगा, एलिज़ा ! तू देखती तो जा । मैं भाई मिल्सपो को ऐसा पानी पिलाऊँगा कि उसकी सारी प्यास बुझ जाएगी ! उसकी प्यास के अनुकूल ही पानी दूँगा उसे—एकाएक और सारे शरीर में एक साथ ही ! और यही वह चाहता भी है !"

तत्क्षण ही, एलिज़ा ने बाद में समझा, वह असम्भाव्य योजना जैस के मस्तिष्क में समाई थी । शायद ऐसा न हुआ हो । शायद विचार उसका बहुत दिनों से रहा हो और बूढ़े लेफ के आगमन ने उसे फिर जागृत कर दिया हो; परन्तु बढ़ई होने के अतिरिक्त बूढ़े लेफ का कोई और सम्बन्ध उस योजना से था तो जैस ने यह बात कभी स्वीकार नहीं की ! उसकी बातों से तो लगता कि वह सारा काम एलिज़ा की सुविधा और आराम के लिए ही किया जा रहा है; और जब पहले पहल एलिज़ा को उसका पता चला तो वह योजना बहुत कुछ कार्यान्वित हो चुकी थी ।

वह घर में इधर से उधर घूम रही थी; जैस देखता तो कहता कि चिड़िया-सी गाती हुई ग्रीष्म का आनन्द लेती उड़ रही है ! "क्या परिवर्तन चाहती है ?" उसने अपने आप से पूछा ।

शीतोष्ण पवन जो पर्दों को उड़ाता बह रहा है, उसे बंद करेगी ? नाशपातियाँ जो पक रही हैं, उन्हें पका हुआ देखना चाहेगी ? बूढ़ा लेफ और जैस, जो पिछले दरवाज़े पर बैठे बातें कर रहे थे, उन्हें मौन देखना चाहेगी ? क्या कोई दूसरा समय, दूसरा घर, दूसरी ऋतु चाहती है ?

नहीं, नहीं, यही समय, यही घर और यही ऋतु ! सब जैसा वह चाहती है वैसा ही है ! यही स्त्री के संतोष की पराकाष्ठा है जिसे वह बनाए रखना चाहती है । कुछ भी तो करने को नहीं है, मस्तिष्क की शान्ति भंग करने के लिए नौकर के पलंग के नीचे लकड़ी का एक टुकड़ा तक नहीं है !

बैठक देखकर आँखों को सुख मिलता; मेज़-कुर्सी खेल से पहले शतरंज के मोहरों की भाँति करीने रखे हुए थे ! कमरा मानों स्वागत के लिए बढ़ा हुआ हाथ है : कुर्सियाँ कहतीं बैठो और झूलने लगो; फूल कहते सूँघो, सुगन्ध लो ! एलिज़ा बैठकर झूलने लगी । फूल सूँघे और सुगन्ध ली और खो गई । उसे लगा कि इनमें से किसी भी चीज़ को सुधारा नहीं जा सकता । एक अँगीठी

पर रखा हुआ रेशमी लाल गुलाब (लाल; रेशमी पंखुड़ियों वाला) दूसरी अँगीठी पर रखे मखमली गुलाब (गहरा लाल; मोटी पंखुड़ियों वाला) से होड़ कर रहा था। पर शायद बिल्कुल ठीक न रखा था। एलिज़ा ने मखमली गुलाब को थोड़ा दाईं ओर सरका दिया। अब, सब ठीक था। एलिज़ा अपने बनाए उस चित्र में से, पीली दरी पर चलते हुए रसोई की ओर चली, जिस प्रकार कोई चित्रकार, हवा और क़ागज़ को भूलकर, अपनी ही तूलिका द्वारा बनाई गई गलियों में चलने लगे !

वह रसोई की चौखट पर रुक गई, और ग्रीष्म में भँवरे और मधुमक्खी की आवाज़ों की तरह मिल जातीं जैस की भारी और बूढ़े लेफ की पतली आवाज़ सुनने लगी !

फिर उसने, अप्रतिभ हो, एक शब्द सुना और फिर शीघ्र ही उसे दूसरी बार सुना !

"नग्न," बूढ़ा लेफ मिल्सपो कह रहा था, "एकदम नग्न ! उस कमरे में बिना जाँघिया तक भी पहने, जिससे यह भी पता न चले कि आदमी है या मछली, उस कमरे में लेटे रहना ! एक कामोत्तेजक कमरा, जैस बर्डवल, शहर के नाम पर कलंक, एक घृणित निमंत्रण·····"

एलिज़ा ने झट से दरवाज़ा बन्द कर दिया और आगे कुछ न सुना। वह फिर बैठक में आ कर बैठ गई, कुर्सी पर बैठी-झूली, फूल सूँघे, पर वह आनन्द न आया। पूर्णता भी खोखरी ही वस्तु है ! मखमली गुलाब की एक पंखुड़ी टूट कर फर्श पर गिरी। उसने उसे वैसे ही गिरा रहने दिया। जैस—अब क्या करना चाहता है ?

जो भी करना चाहता हो, वह था उसकी आत्मा के अनुकूल ही; आत्म-ग्लानि का एक भी चिह्न एलिज़ा न पा सकी उसमें ! बूढ़ा लेफ जब चला गया तो वह एलिज़ा की तभी-धली रसोई को दबे पाँव पार करता (वह आहट सुन रही थी) बैठक में आकर उसे बैठी देख मुस्कराने लगा। "एलिज़ा, घर को इतना अधिक साफ किया हुआ है तूने कि पाँव रखना कठिन हो रहा है !" वह बोला ।

एलिज़ा उसकी परिहास और छेड़भरी बातों के भुलावे में न आई। जब भी कोई बात उसे सूझ जाती, सदा ही जैस से निबटना कठिन हो जाता। बातें चाहे कुछ भी क्यों न करे, तब वह जो करने की ठान लेता वही करता।

एलिज़ा ने उसे झुककर गुलाब की वह टूटी पंखुड़ी उठाते और फिर धीरे-धीरे उसे अपने गालों पर मलते देखा ! "गुलाब की फसल के लिए इससे अच्छा वर्ष भी कोई था, एलिज़ा ?" उसने पूछा ।

एलिज़ा कुर्सी पर झूलती ही रही ।

"अच्छा," जैस बोला, "दिन समाप्त हो चला । मैं अपना काम ही कर लूँ !"

एलिज़ा ने झूलना बन्द कर दिया । "जैस, क्या मैंने तुझे और बूढ़े लेफ को बातें करते नहीं सुना ?"

"क्यों, एलिज़ा," जैस ने कहा, "मुझे पता ही कैसे चल सकता है ? जब तक तू मुझे बतलाए नहीं, मैं कैसे जान सकता हूँ, क्या तूने सुना था ?"

"हाँ," एलिज़ा बोली, "सुना था !"

उस विषय में बात करने को जैस तैयार था । "लेफ अपने ही ढंग से सोचने वाला बूढ़ा है, है ना ?" उसने पूछा, "परन्तु है धार्मिक वृत्तिवाला और कर्मठ ! उससे अच्छा बढ़ई कहीं हो भी तो मुझे नहीं मालूम !"

"जैस," यह देखकर कि बिना पूछे वह बतलाने से रहा, एलिज़ा ने पूछा, "बूढ़ा लेफ किसके विषय में कह रहा था, लेटा हुआ,"—और उपयुक्त शब्द खोजती वह रुकी— "आवरणहीन !"

"मेरे विषय में," जैस ने सहज ही कह दिया ।

"तेरे विषय में !" एलिज़ा स्तम्भित हो गई, "कहाँ ?"

"अपने ही स्नानगृह में, एलिज़ा, मैल उतारते हुए, आराम से लेटे हुए !"

और यह सब कुछ ही संयोजित था, कार्यान्वित हो रहा था, और केवल एक एलिज़ा की सुविधा के लिए ही बनाया जा रहा था; और उससे न केवल थोड़े श्रम से अधिक स्वच्छ ही रहा जा सकेगा, बल्कि यह गर्व का भी एक कारण होगा : ओहिओ नदी के पश्चिम में, निश्चित ही, यह अपने ढंग का एक ही स्नानगृह होगा—वैसे कौन जाने कि कहीं एलघी नीज़ पहाड़ियों के पश्चिम प्रदेश में ही अद्वितीय हो ! जैस योजना को लेकर इतना व्यस्त हो उठा था कि किसी राजनैतिक या धार्मिक बात से भी न होता ! बूढ़े लेफ जैसे अनुभवी बढ़ई के लिए यह काम कोई बड़ी बात न थी : रसोई के पास पीछे एक दीवार बनानी थी, टब धातु का बनाया जाएगा, और पानी पाइप द्वारा पवन-चक्की की ओर से आकर बाहर क्यारियों में चला जाएगा और इस प्रकार व्यर्थ न जाएगा ।

उस बाढ़ में तिनके का सहारा लेती, एलिज़ा बोली, "नहाने के पानी से सींची गई सब्ज़ियों को पता नहीं मैं काम में ला भी सकूँगी या नहीं !"

जैस आँखें फाड़कर उसकी ओर देखने लगा । "अब क्या तू खाद के भी विरुद्ध हो जाएगी ?"

एलिजा जान गई कि उससे भूल हो गई । जैस फिर कहने लगा । पाइपों को अँगीठी के अन्दर से घुमाकर लाने से पानी बड़ी आसानी से गरम किया जा सकेगा । यह बात उसने कई बार सोची भी थी । "उसे बहुत सुन्दर रँगवा दूँगा ।" जैस ने कहा, "और फर्श पर एक दरी बिछा देंगे जिससे छींटे न पड़ें । जाड़ों में वहाँ एक अँगीठी भी होनी चाहिए, क्यों नहीं होनी चाहिए, मेरी समझ में नहीं आता । अरे, एलिज़ा, तू देखना क्या चीज़ बनेगी, हम उसके कारण ही प्रसिद्ध हो जाएँगे !"

इस बात में एलिज़ा को तनिक भी संदेह न था । "हम प्रसिद्ध हो जाएँगे," वह मान गई । "बच्चे-बच्चे के मुख पर हमारा नाम होगा," वह दु.खित हो उठी, "इलाक़े भर में लोग कहेंगे कि हम कपड़े उतार कर पानी में लेटे रहते है !"

"लेटे रहने की ज़रूरत नहीं," जैस ने कहा, "कूदो और निकल आओ !"

"मन तो करेगा ही," एलिज़ा ने चेतावनी दी, "कमरा इतना बड़ा और गरम होगा !"

"देखा," जैस ने बात पकड़ ली, "तू भी मानती है कि इससे आराम मिलेगा !"

"आराम," एलिज़ा स-गौरवा बोली, "ही जीवन में सब कुछ नहीं है और ना ही स्नानगृह आराम के लिए बनाया जाता है, जस बर्डवल ! स्नानगृह केवल नहाने के लिए होता है ।"

"हम और भी अधिक स्वच्छ हो सकेंगे," जैस बोला, "ज्यादा पानी होगा और ख़ूब रगड़कर नहाने के लिए स्थान ! तू भी स्वच्छ हो जाएगी !"

"जैस," एलिज़ा बोली, उसकी काली आँखें और भी काली हो उठीं, "क्या तू कहना चाह रहा है कि मैं अब स्वच्छ नहीं हूँ ?"

"नहीं," जैस चिल्लाया, उत्साह और आवेश दोनों ही उस पर सवार थे, "गन्ने की क़सम, मैंने यह नहीं कहा । तू मेरे परिचितों में स्वच्छतम व्यक्ति है !"

"तब मेरे लिए स्नानगृह बनवाने की कोई आवश्यकता नहीं," एलिज़ा बोली, "यह तो उल्टे बाँस बरेली को वाली बात हो गई !"

"एलिज़ा," जैस बोला, "काम करने के नए और बढ़िया तरीक़ों में तेरी रुचि है ही नहीं। यदि कुछ उद्योगी, अग्रगामी और प्रगतिवादी पुरुषों ने तेरे परिवार में विवाह न किया होता तो तू और तेरे स्त्री-पूर्वज अभी तक कन्दराओं में रहा करते और धरती में गढ़े खोदकर खाना पकाते होते! यदि संसार तुझ जैसे व्यक्तियों द्वारा संचालित होता तो अभी तक हम मृगछाला बाँधे ही रहा करते!"

"यदि संसार मुझ जैसों के आधीन होता," एलिज़ा ने विश्वास-पूर्ण ढंग से कहा, "तो हम सब आज अदन के बाग़ के पास पहुँचे होते!"

यह सुनकर जैस कूद ही तो पड़ा। "एलिज़ा," उसने कहा, "अदन के बाग़ में जो कुछ भी हुआ था उसके लिए तू उतनी ही ज़िम्मेदार है जितना कि मैं! जो कुछ भी मैंने आजतक पढ़ा है उससे तो तेरी ज़िम्मेदारी ही ज्यादा है! पुरुषों ने तो साँपों से बात करनी आरम्भ नहीं की थी!"

फिर यह सोचकर कि बाइबिल पर आधारित तर्कों को लेकर वह कभी एलिज़ा से जीत नहीं सका है, उसने दूसरे ही ढंग से बात की। "मैं कह चुका हूँ, एलिज़ा," जैस स्थिर भाव से बोला, "बूढ़ा लेफ कल से काम शुरू करेगा; और यह तेरे आराम के लिए ही बनवा रहा हूँ।"

"भाई मिल्सपो, इसके विरुद्ध है," एलिज़ा ने कहा, "मैंने अपने कानों उसे कहते सुना था,"—बूढ़े लेफ के शब्द दोहराते एलिज़ा रुकी, परन्तु फिर इतनी गम्भीर स्थिति में मुँह बन्द किए रहकर भी काम न चलेगा उसने उन शब्दों का ही प्रयोग किया—"मैंने साफ उसे कहते सुना था कि वह कमरा कामोत्तेजक होगा! भाई मिल्सपो की और मेरी राय कई बातों में नहीं मिलती—पर इस विषय में हमारी एक ही राय है। इस प्रकार के कमरे की बात तो सारे इलाक़े में फैल जाएगी, जैस!"

जैस ने पाँव पटककर कहा, "लेफ कल सुबह कार्यारम्भ करेगा। और इस योजना के लिए तू कभी न कभी मेरी अनुग्रहीत होगी, एलिज़ा!"

"भाई मिल्सपो इसके विरुद्ध है, जैस! वह कभी यह काम न करेगा!"

"भाई मिल्सपो जैसे अंडों के विरुद्ध है वैसे ही इस काम के भी विरुद्ध है," जैस ने कहा। "वह स्वयं अंडे नहीं खाता, परन्तु वह अपने पड़ोसियों के अंडे तोड़ता नहीं फिरता! नक्शे उसे मिल गए हैं और वह कल काम शुरू करेगा।"

एक बात तो जैस की ठीक ही निकली । दूसरे दिन सुबह बूढ़े लेफ ने काम करना शुरू कर दिया । परन्तु काम पूरा होने से कुछ पहले, जैस के विश्वासों के विरुद्ध, एलिज़ा को लगा कि बूढ़े लेफ का अंडे न तोड़ना एक बात है और स्नानगृह बनाना दूसरी ! पहले पहल तो काम बड़ी तेज़ी से चला, घंटियों की टुन-टुन और कारख़ाने की खट-खट की तरह ! सब काम हो चुका था और जिस दिन जैस अपने व्यापार सम्बन्धी किसी सभा में भाग लेने शहर गया केवल एक फट्टा लगाना रह गया था : टब यथास्थान रख दिया गया था, पाइप लग चुके थे और उनमें पानी कल-कल करते किसी झरने की तरह बह रहा था ।

प्रस्थान से पहले जैस एक बार अपने स्वप्न का यथार्थ रूप देखने गया । "रोमन युग के पश्चात् ऐसा स्नानगृह कभी नहीं बना !" उसने बूढ़े लेफ से कहा ।

"यह भी याद रख कि रोमवालों पर क्या गुज़री !" बूढ़े लेफ ने, एलिजा को लगा, कटुतापूर्ण उत्तर दिया, परन्तु जैस ने उस पर कोई ध्यान न दिया ।

"सारे संसार पर राज्य था उनका," और बूढ़े लेफ को कुछ कह सकने का समय दिए बिना ही उसने पूछा, "लगता है रात को मेरे लौट आने से पहले ही यह पूरा हो जाएगा ?"

"लगता तो है !" बूढ़े लेफ ने कहा ।

"घर आकर यात्रा की धूल धोकर यहीं उतरूँगा—मैं इसी प्रत्याशा में रहूँगा," जैस ने कहा । उसने एलिज़ा और बच्चों को चूमा । "आज रात खाने को विशेष पकवान बनाना चाहिए," उसने सुझाया । "हाथ-पाँव मारकर काम तो समाप्त हो ही जाएगा । लेफ, तू हमारे साथ ही भोजन करना," उसने कहा, "उत्सव में भी भाग लेना !"

एलिज़ा ने जैस के कथनानुसार विशेष पकवान भी पका लिया, बूढ़ा लेफ भी रुका रहा, हाथ-पाँव भी मारे गए, परन्तु दोपहर बाद लगा कि वह हुआ जैस की आशा के विरुद्ध ही । स्नानगृह का निर्माण, एलिज़ा की अनभ्यस्त आँखों ने भी देखा, तब तक विचित्र ही दिशा में चल पड़ा था ।

भाई मिल्सपो से इस विषय में बात करे या न करे, एलिज़ा यही सोच रही थी । बात जैस और लेफ के बीच हुई थी और एलिज़ा समझ न पा रही थी कि उसे कुछ कहना चाहिए या नहीं । दूसरे, उसकी सहानूभूति लेफ के साथ थी । स्नानगृह बनाना कई कारणों से उसे अप्रिय लगा होगा, जैसा कि स्वयं एलिज़ा को भी लगा था । धर्म के विरुद्ध तो इसे शायद न कहा जा सके, परन्तु यह आराम

व सुविधा की ओर एक ऐसा क़दम था जो गिरजों के पुरातन आदेशों से कहीं दूर था !

संध्या हुए वह एक बार पूछ ही तो बैठी। "क्या यह," उन अंतिम फट्टों की ओर देखकर जो कि लेफ जड़ रहा था, उसने पूछा, "भी जैस के नक्शे का एक अंग है ?"

बूढ़े लेफ ने मुँह में से कीलें निकाल लीं ! "श्रीमतीजी, तुम्हारे पति ने कहा 'यहाँ फट्टे लगा दो' और कुछ नहीं। मैं वही कर रहा हूँ। यदि कुछ बनवाना था तो उसे कहना चाहिए था। मैं किसी की मन की बात पढ़ना तो जानता नहीं। यह सारा स्नानगृह ही, यदि मुझसे पूछा जाए, एक बड़ी भूल है। पर मुझसे तो किसी ने पूछा नहीं। मैं वही कर रहा हूँ जो मुझसे कहा गया था।" उसने फिर कीलें दाँतों से पकड़ लीं और जहाँ रुका था वहीं से फिर फट्टे लगाना आरम्भ कर दिया।

जब जैस साँझ हुए लौटकर आया तो लेफ अपना काम समाप्त कर, तम्बाकू पीता हुआ बाहर बैन्च पर बैठा हुआ था। गाड़ी की आवाज़ सुनकर एलिज़ा ने जेन और स्टीफन को खाने की लम्बी मेज़ पर बैठा दिया। "अभी खाने में कुछ देर लगेगी," उसने बच्चों से कहा, "पर तुम दोनों चुपचाप यहाँ बैठे रहना !"

वह स्वयं पिछले दरवाज़े के पास जा जैस की बाट देखने लगी। जैस भला आदमी था, पर उसके लाल बाल निरर्थक ही नहीं थे और यदि झगड़ा होना ही है तो बच्चों को दूर रखना ही श्रेयस्कर है। उसे अधिक समय तक बाट न देखनी पड़ी। जैस ने जल्दी-जल्दी गाड़ी खोली और कुछ ही मिनटों में घर की ओर लम्बे डग भरता आने लगा।

"खाने से पहले हाथ-मुँह धोले, भाई," उसने चलते-चलते बूढ़े लेफ से कहा—एलिज़ा को लगा कि झगड़ा मोल लेने की नीयत से कहा; और तब दौड़कर सीढ़ियाँ चढ़ता हुआ अपना नया स्नानगृह देखने चला गया।

और देखकर देखता ही रह गया ! स्नानगृह पूरा बन तो चुका था; विदा की भाँति बिल्कुल समाप्त हो चुका था। परन्तु था मधुमक्खी के छत्ते की तरह बिल्कुल बन्द, ऊपर से नीचे तक तख़्ते लगे हुए थे, और एक हृष्ट पुष्ट क्वैकर तो क्या एक कीड़ा तक भी उसके अन्दर न घुस सकता था !

"अरे, यह बूढ़ा! सिरके की बोतल!" जैस ने धीरे से, अविश्वास-भरे शब्दों में कहा।

उसने कहा तो धीरे से ही था, परन्तु बूढ़े लेफ ने सुन लिया और दो-दो सीढ़ियाँ एक साथ कूदता, प्रतिवाद करता आ पहुँचा। "तुमने इस विषय में एक भी शब्द नहीं कहा," वह चिल्लाया, "एक शब्द तक नहीं! मैं सुन रहा था। अपने कान लगा रखे थे मैंने! तुमने टब की बात कही, पाइपों की बात कही, दीवार की बात कही। तुमने रोमनों की बात कही। पर कभी भी दरवाज़े की बात नहीं कही! मुझे लगी तो विचित्र बात—मैं तो अपने लिए अवश्य ही दरवाज़ा लगवाता, मैंने अपने आप से कहा, परन्तु अपनी-अपनी पसन्द है! जैस बर्डवल अपने मन की बात जानता है और यदि उसे दरवाज़ा नहीं चाहिए, तो वह जाने! मैं तुम्हारे मन की बात कैसे जान सकता था? मैंने कभी यह नहीं कहा....."

जैस बीच ही में बोल पड़ा, "तेरी सिरके की बोतल की ऐसी की तैसी," एलिज़ा को लगा कि वह प्रशंसनीय स्वर में ही बोल रहा है, परन्तु साथ ही उसने अपना रविवासरीय कोट और टोप भी उतारना आरम्भ कर दिया था!

एलिजा इससे आगे देखने को रुकी नहीं। वह झट से खाने के कमरे में जा पहुँची और वहाँ बच्चों को लिए पिछले दरवाज़े से आने वाली आवाज़ों को सुनने लगी: पहले तो बातचीत ही सुनाई दी, बराबरी की, दोनों ही पक्षों की, पतली और भारी आवाज़ में, परन्तु सौजन्यहीन!

"क्या पा के चोट लगेगी," जैन काँपती-सी बोली।

"कभी नहीं," एलिज़ा ने कहा, "तेरा पा शक्तिशाली है!"

जैस के आहत हो जाने का भय एलिज़ा को न था, भय तो यह था कि वह न जाने क्या करदे। एक बार जब किसी फेरीवाले पर उसे क्रोध हो आया था तो उसने उसके ही चिमटे से उसकी मरम्मत करदी थी, और बाद में चाहे जैस पछताया भी, चिन्तित भी रहा, और उसने प्रार्थना भी की, परन्तु पीट तो उसने दिया ही था!

शब्दों का स्थान अब दूसरी आवाज़ों ने ले लिया था: तख्तों की तोड़-फाड़, आरियों का चलना और कीलों को निकालने की चीखें-सी सुनाई पड़ रही थीं। एलिज़ा ने सोचा कि अब तक लेफ ने वह शब्द भी सुन लिया होगा जिसे वह सुनना चाह रहा था और सुन नहीं पाया था। जैस ने वह शब्द निश्चयात्मक ढंग-से उसे सुना ही दिया होगा! फिर सब

शान्त हो गया, तोड़-फाड़ बन्द हो गई, और केवल स्नानगृह से बहते पानी की आवाज़ें ही आती रहीं ।

"खाने से पहले क्या पा नहाएगा ?" स्टीफन ने पूछा ।

एलिज़ा को आशा तो यही थी, परन्तु उसे संदेह था; उसे डर था कि कहीं स्वयं नहाने से पहले वह लेफ को न नहला दे, कम से कम स्नानगृह से आवाज़ें तो ऐसी ही आ रही थीं । एलिज़ा ने अपने दोनों हाथ कस लिए । तो यह है जैस की सभ्यता की प्रगति·····सारा घर किसी के गिरने व फिसलने से काँप रहा है·····सभ्यता का, जहाँ तक वह समझ सकी, शीघ्रता से ह्रास हो रहा था !

मुझे आशा है और मैं प्रार्थना करती हूँ, उसने सोचा·····और तब जैस बोलने लगा और वह और बच्चे चुप हो कर सुनने लगे ।

"तैरो, दोस्त," उन्होंने जैस को कहते सुना, "अपनी प्यास बुझाओ । अपने मन की पिपासा शान्त करो !" और उन आदेशों के पश्चात् एक भारी छपाका हुआ ।

छपाके अभी चल ही रहे थे जब जैस, हाँफता हुआ, भीगे कपड़े पहने, खाने के कमरे में पहुँचा ।

"बच्चो, तुम अपनी-अपनी जगह बैठ जाओ," उसने रुखाई से कहा, और मेज़ के एक कोने में एलिज़ा के सम्मुख बैठ गया ।

"काफी लाभ होगा उसे," उसने प्रफुल्ल हो कर कहा, मानों विरोध की सम्भावना हो उसे; परन्तु किसी ने भी कुछ नहीं कहा, और प्रार्थना में सिर झुकाने से पहले उसने उसकी ओर यों देखा कि उसे लगा कि उसका पति चिन्तित है ।

जैस अधिक देर सिर झुकाए न रख सका । ज्योंही उसने आँखें बन्द कीं कि उस कामोत्तेजक कमरे से ऊँचे स्वर में बूढ़े लेफ के गाने की आवाज़ सुनाई पड़ी । प्रसन्न होकर, वह गा रहा था :

हम मिलेंगे नदी किनारे,
सुन्दर, सुन्दर नदी किनारे !

"ऐसा लगता है कि आज उसे जॉर्डन की बाढ़ दिखाई पड़ रही है," एलिज़ा की ओर देखकर, सिर हिलाते हुए उसने कहा । और फिर उसने वह किया जो कभी नहीं किया था । वह क्षण भर का सिर झुकाना ही प्रार्थना हुई, और शेष छोड़कर, वह बोला—"स्वच्छता क्योंकि ईश्वरीयता की भगिनी है और

उस दिशा में आज काफी काम हो भी चुका है, इसलिए अब भोजन आरम्भ किया जाए !"

एलिज़ा तो चकित हो कर रह गई, परन्तु जैस बोला, "बरसात की बात छोड़कर, तीस वर्षों में पहली बार आज भाई मिल्सपो नहाया है ! परन्तु मुझे विश्वास है कि शीघ्र ही उसे नहाने की आदत पड़ जाएगी !"

जैस सिर हिलाकर बूढ़े लेफ के गीत के साथ ताल दे रहा था। "क्या यह गाना सुन्दर नहीं ?" उसने पूछा, "क्या यह गाना मधुर नहीं ?"

एलिज़ा इसे स्वीकार नहीं कर पाई, क्योंकि बूढ़े लेफ का कंठस्वर प्रशंसनीय नहीं था, परन्तु उस गीत के शब्द तो आशीर्वाद-तुल्य थे :

दैवी सिंहासन छू बहती—
संत मिलें उस नदी किनारे !

"खूब, खूब," भोजन के अधिकारी व्यक्ति की भाँति जैस बोला, "कृपया, माँस मुझे दो, एलिज़ा !"

और, अवसर देख, एलिज़ा ने माँस उसे दे दिया !

सभाभवन

जैस के स्वास्थ्य-सम्बन्धी कुसमयों में से एक तब आया जब कि वह अगले दिन सुबह अपने पौधे लेकर दक्षिण जानेवाला था। बसन्त को उस वर्ष आते आते देर हो गई थी और अप्रैल की उस रात में अब भी वह ठंड थी जो कि अधिकाधिक शीत की ओर संकेत करे, ताप की ओर नहीं। तारागण भी अभी तक शीतकालीन तीव्रता लिए थे और बसन्त का द्युतिप्रसार उनमें नहीं था। मुख से अभी भी दीर्घ व श्वेत वाष्प निकलती और शरीर अग्नि या बिछौने का सामीप्य पाकर ही गरम रह पाता !

आकाश को एक क्षण देखकर, जैस फिर आग के पास आ बठा। वह अपनी अँगलियाँ खोलता-बन्द करता अग्नि के ताप को शयनकक्ष तक ले जाने का प्रयत्न करने लगा।

"एलिज़ा," उसने कहा, "सोचता हूँ कि इस बार मेरे मातापिता जिस सभा भवन में प्रार्थना करते थे उसे एक अंतिम बार देख आऊँ !"

"एक अंतिम बार, एक अंतिम बार !" एलिज़ा सब समझ गई। वह दरी बुनना छोड़कर जैस के पास आ बैठी। "जैस, जैस !" उसने कहा।

जैस उन व्यक्तियों में से था जो साधारणतया, स्वभावतः बहिरोन्मुख होते हैं और जिनका स्वास्थ्य इस दिशा में कोई बाधा नहीं डालता। उसके शरीर में वे कम्प या वे पीड़ाएँ कभी नहीं उठतीं, जिन्हें लेकर दूसरे लोग, मृत्यु को दूर रखने के लिए, डाक्टरों को नाड़ी दिखलाने भागते फिरते हैं। और इसी कारण वह कभी भी अस्वस्थ भी हो उठता था ! छोटी-सी कोई एक पीड़ा, कुनीन की एक या दो गोलियाँ, या ज़रा-सी सूजन और जीवन की क्षणभंगुरता का चित्र जैस के मस्तिष्क में कौंद जाता।

और कभी-कभी तो पूर्णतया स्वस्थ होते हुए भी, हल जोतते-जोतते घोड़ों को कुछ आराम देने के लिए जब वह किसी ढलान पर खड़ा हो जाता, या फिर जाड़ों में जब कि तीव्र बहनेवाले पवन से सारा घर काँप रहा होता, जैस बिस्तर में लेटे-लेटे उन नवयुवकों की बात सोचने लगता जिनकी अकाल मृत्यु होगई थी : डेविड का पुत्र, प्रखर बुद्धि अबलेसम, जॉन कीट्स, महान्

कवि । और उसकी अपनी पुत्री, साराह ! और अनचाहे, अप्रत्याशित, शरीर की नश्वरता का विश्वास उसके ऊपर छा जाता और वह खेत से या सुबह बिस्तर से उठकर ऐसे आता कि मानों जीवन उससे दूर भागता जा रहा हो ! और एक बार यह विचारधारा उसके मस्तिष्क में आ भर जाए, फिर कोई भी तर्क उसे हटा न सकता ! उसके साथ भी ऐसा क्यों न होगा ? कई बच्चों का बाप, अधेड़, जैस बर्डवल ही क्यों शष रह जाएगा जब कि नवयुवकों को मृत्यु उठाए लिए जा रही है ? और वे नवयुवक भी कैसे ? उनके पाँव अभी तक इस गोलाकार पृथ्वी के एक अंशभर भाग को छु पाए थे और उनकी जिह्वाएँ उसी अंश के प्रस्फुटन की बात भी भली प्रकार न कह पाई थी । फिर वही क्यों एक दुराशा लिए बैठा रहे ? और यों मन ही मन तर्क-वितर्क करता, शोकार्त, जैस आँखों में विदा-भाव लिए अपने चारों ओर देखा करता !

"जैस," एलिज़ा ने पूछा," क्या बात है ?"

शब्दों द्वारा वह बात बतानी भी कठिन थी, दिखने में इतनी क्षुद्र, इतनी तुच्छ कि सम्भव है एलिज़ा तक भी उसका महत्व न समझ पाए, और देख न सके कि वह बात केवल मृत्यु की ओर ही लेजा रही है उसे·····क्योंकि बात तो केवल यह थी कि उसकी गरदन पर अखरोट जितनी माँस की जो गुठली थी वह बढ़ती जा रही थी ! "अन्दर ही अन्दर मस्तिष्क पर गम्भीर चोट करने की तैयारी कर रही है !" जैस ने गम्भीरतापूर्वक उसे छूते हुए कहा ।

"डॉक्टर के पास गया था ?" एलिज़ा ने पूछा ।

"नहीं," जैस बोला, "मैं अपने कानों से सुन न सकूँगा !"

एलिज़ा सात बच्चों की माँ थी और एक बार नहीं, कई बार मृत्यु के निकट पहुँच चुकी थी । अस्तु, बात को लेकर उस समय चाहे कितनी भी व्यस्त क्यों न हो उठे, परन्तु अपने पति की इन आकस्मिक अस्वस्थाओं को देखकर वह चकित रह जाया करती थी । प्रायः जैस प्रसन्न व मस्त रहा करता था, परन्तु जिन दिनों वह इन विचारों में डूबा रहता, वे दिन शुष्क, आनन्दरहित होते । वह भगबान से, एलिज़ा से, मेपलग्रोव नर्सरी से विदा लेता और एलिज़ा को ऐसे व्यक्ति के साथ बैठकर नाश्ता करना दूभर हो जाता—ऐसा व्यक्ति कि जो उसे पास बैठकर यों देखे कि मानों स्वर्ग से देख रहा हो !

एलिजा जैस के कारण चिन्ताकुल हो उठती, परन्तु कर कुछ भी नहीं पाती । जैस का रोग महामारी की भाँति निदान की उपेक्षा कर, अन्दर ही अन्दर कष्ट देता बढ़ता चला जाता । और ना ही इसी प्रकार के पहले भोगे हुए रोगों की

बात कहकर ही कुछ लाभ होता। उस बार जो वह बच गया था वह तो भगवान की इच्छा थी—और वह भगवान नवयुवकों की मृत्यु देखते-देखते कभी तो जैस जैसे अधेड़ व्यक्तियों के गले से अपना रक्षाकवच उतार ही लेगा! बात थी तो कष्टदायी। इसमें संदेह नहीं, परन्तु ऐसी कुछ अनहोनी या अप्रत्याशित तो न थी।

"जैस," उसके माँसल मुख और बड़ी नाक की ओर देख कर एलिज़ा ने कहा, "आज से अधिक स्वस्थ तो तुझे पहले कभी नहीं देखा मैंने!"

जैस ने अपना सिर हिला दिया। "यह ही तो धोखा है, वह बोला, "इतना भयंकर है यह रोग! इससे पहले कि मनष्य कुछ सोच सके यह असाध्य हो जाता है!"

एलिज़ा को लगता कि जैस का हृदय ही उसके रोग का घर है; और वह यह भी मानती थी कि उसका अपना हृदय जैस की आँखें खोल सकता है; सो कहती, "मेरा हृदय तो इस विषय में मुझसे कुछ नहीं कहता!"

जैस उसके प्रति समवेदना से भर उठता। वह प्रयत्न करेगा कि उसकी मृत्यु से उसे कोई पीड़ा न हो! "और जहाँ तक मनुष्य के जीवन की बात है," वह उसे याद दिलाता, "वह तो घास की तरह है.....क्यारी में लगे फूल की तरह वह फूलता है.....परन्तु पवन का एक झोंका लगते ही उसका स्थान सदा के लिए रिक्त हो जाता है!"

वह सूर्योदय से पहले ही घर से चल दिया। अन्धकार व शीत में वह सड़क पर बढ़ता चला गया; उसके पीछे घर की खिड़कियों में से छन कर लैम्पों का प्रकाश आरहा था! वह दक्षिण-पूर्व दिशा में गाड़ी हाँक रहा था। कभी-कभी लगाम से हटकर उसकी अँगुलियाँ गरदन की उस गुठली को जा छूतीं। गुठली में पीड़ा तो नहीं होती, परन्तु शरीर में वह अस्वाभाविकता देखकर जैस का हृदय काष्ठवत् हो जाता! वह, एक जीवित व्यक्ति, मर जाएगा! उसने अपना हाथ उठाया, उसके कौशल को याद किया; कठिन, न मुड़नेवाली हड्डियों का वह सम्मिश्रण कि जो संगीत जगा सकता है, पेड़ काट सकता है और घोड़ी के नव-जात शिशु को माँ के फटे माँस से अलग कर सकता है—वही हाथ मिट्टी में मिल जाएगा! और अपने शत्रु को वह अपने साथ ले जा रहा है—एक सहयात्री की भाँति! और उसका जीवित हाथ उस शत्रु की रूपरेखा इस प्रकार टटोल रहा है मानों अपने अंत के श्रोत को पहचानने में संलग्न हो!

उसकी यात्रा की राह निश्चित थी। वह पिछले वर्ष की पौधों की माँग

पूरी करने जा रहा था। और किधर मुड़े, किस सड़क से जाए किससे नहीं, ये प्रश्न पूछने की आवश्यकता न थी। यह सब निश्चित था, पूर्व निश्चित; ग्राहकों के नाम उसकी बही में लिखे हुए थे और ढके हुए, सँजोए हुए पौधों से उसकी गाड़ी भरी हुई थी। जिस स्थान पर वे पौधे लगाए जाएँगे वह भी अब तक तैयार कर दिया गया होगा और किसान अपनी गृहिणियों से कह रहे होंगे, "यदि पौधोंवाला बर्डवल आए, तो मुझे पुकार लेना। अब किसी भी दिन आ सकता है वह!"

ग्राहकों के नाम, और जितने और जिस प्रकार के पौधे उन्हें लेने हैं वह सब छः मास पूर्व ही लिख लिया गया था, छः मास पूर्व जबकि उसे पता तक न था कि बसन्त अपने साथ क्या लेकर आएगा! जोनास राइस के लिए पच्चीस पौधे, बेन डेविस के लिए पच्चीस! डेड डेवलिन के लिए छः और छः बारह। एली मॉर्निंगस्टार के लिए दो और छः, आठ। और एबल रिवर्स के लिए बारह!

बसन्त की उस यात्रा में गरदन की गुठली का अर्थ भी जैस के साथ चल रहा था और किसी जाल की भाँति मिलनेवाले लोगों और स्थानों पर छाया जा रहा था। जैस हर वस्तु के विषय में दो प्रकार से सोच रहा था, सुन्दर और दयनीय: जो वस्तुएँ मनुष्यों के पश्चात् भी रहेंगी, पत्थर, पेड़ और बहता पवन, उनमें उसने नई सुन्दरता देखी, अपनी सहनशीलता और उसकी मृत्यु का सौन्दर्य; परन्तु स्त्री और पुरुष दयनीय से लग, उसका अपना दुःख मानों उनके व्यक्तिगत कष्टों से मिल गया हो और अब उनका जीवन-प्याला शोक से भरकर, बोझिल होकर, बह चला हो!

जैस अपनी गाड़ी में बैठा था। कभी उसे लगता कि गाड़ी चल नहीं रही है: गाड़ी खड़ी है और त्रिकोणाकार पहाड़ियाँ और गेहूँ के खेत चलते हुए, उसकी ओर से बिना किसी श्रम के, उसे घरों, ध्वनियों और दरवाज़े खुलने और अभिवादनों से पहले की पदचापों के पास पहुँचा दे रहे हैं! अपने आप में वह कुछ ऐसा खोया हुआ था कि वास्तविक को काल्पनिक से पृथक् नहीं कर पा रहा था। उसका मस्तिष्क आसन्न शोक में इतना डूबा हुआ था कि वह सब सीमाओं की पहचान भूल गया और आज और कल में कोई अन्तर ही न देख पाया!

जोनास राइस के घर का फाटक कुछ टूटा हुआ लटक-सा रहा था, और बार-बार खुलने-बन्द होने के कारण पास की क्यारी में एक लीक-सी पड़ गई थी। कभी किसी अन्धड़ में उड़कर गिरी छत की एक कड़ी पेड़ के सहारे लटक रही थी! दरवाज़े का एक तख़्ता सड़ गया था और पास

ही कूड़े का एक ढेर लगा था। और पिछले वर्ष यहाँ सफाई थी, योजनाएँ थीं और थी उसके पौधों की एक बड़ी माँग !

जोनास राइस स्वयं उसे अन्दर ले गया। "हमारा छोटा लड़का बीमार है," उसने जैस को बताया, "जैस्पर बीमार है। डाक्टर कहता है कि सूखा हो गया है उसे और बचने की कोई आशा नहीं।"

जैस्पर अँधेरे में, बिछौने पर लेटा हुआ था। पलंग के चारों ओर जंगला और ऊपर छत भी थी, मानों पलंग न होकर वह उसके लिए कमरों का एक घर हो ! बहुत बड़ी गुठली के भीतर एक छोटे-से बीज की भाँति वह लेटा हुआ था। पलंग में लकड़ी चारों ओर मोड़ कर, गाड़ी की तरह मोड़ कर, लगाई गई थी और लौटते समय गाड़ी में बैठे-बैठे जैस ने सोचा था, "इतने बड़े पलंग में बेचारा, राइस का ज़रा-सा अंश !"

"सात वर्ष का है," जोनास राइस ने कहा, "और सूखकर फिर छोटा होता जा रहा है। सूखा रोग ! डाक्टर कहता है कि छोटा होते-होते जितना बड़ा पैदा हुआ था उतना बड़ा ही रह जाएगा; और रोकने की हम कुछ भी नहीं कर सकते।"

श्रीमती राइस पलंग के पास खड़ी, बिछावन की सल्वटें निकाल रही थी, मानों जो सफाई सारे घर में नहीं थी, वह सब इसी कमरे में केंद्रित हो गई हो !

"जैस्पर का शरीर," वह बोली, "तो नष्ट हो रहा है, परन्तु रोग उसके मस्तिष्क को छ तक नहीं गया। डाक्टर कहता है सूखा रोग, पर मैं तो कहती हूँ जैस्पर को बड़ा रोग हुआ है—यदि उसके हृदय और मस्तिष्क को देखा जाए तो ! कोई भी बात ऐसी नहीं जो उसे याद न हो और जिसे वह पढ़ न सके ! और उसका हृदय तो अच्छाई में ही लगा है। श्री बर्डवल को बाइबिल में से कुछ सुना, जैस्पर !"

उस अखरोट जितने मुख में से एक छोटी-सी आवाज़ निकली, "'भगवान मेरा गडरिया है। मुझे किसी वस्तु की कमी न रहेगी।'"

गाड़ी में बैठे-बैठे जैस से जैस्पर ने जो कहा था उसे दोहराया, "भगवान मेरा गडरिया है। मुझे किसी वस्तु की कमी न रहेगी'" और उसे याद आया कि किस प्रकार उसने बचपन में यही बात सुनी थी, "वह गडरिया जो मैं कभी नहीं चाहूँगा।" एक अच्छा और पवित्र गडरिया, भगवान, निस्संदेह, परन्तु मनुष्य कभी नहीं ! और दूसरी बात सोचता उसका रात को घर

लौट कर आना और आधी भेड़ों का खो जाना और उसे पता ही नहीं वे कहाँ खो गईं ! पर बचपन में वह यह न समझ पाया था कि लोग यह क्यों कहते हैं कि ऐसा गडरिया है जिसे वे नहीं चाहते । ना ही धीरे-धीरे सूखता हुआ, अपने पलंग पर लेटा, जैस्पर ही यह बात समझ पाता होगा ।

एक मुर्गी का बच्चा, बसन्त से प्रभावित और घोड़े के पाँव तले मरने को उद्यत, बार-बार गाड़ी के पथ में उड़-उड़ आता । उस सूखा रोग से, जैस ने सोचा, सभी पीड़ित हैं । उसकी अँगुलियाँ फिर उस गुठली को सहलाने लगी·····झिझककर ! गाड़ी के ऊपर बठा मनुष्य जब घोड़ों द्वारा खींचा जाता है तब तो बहुत बड़ा लगता है; परन्तु मृत्यु के पश्चात् मुट्ठी भर धूल बनकर ही रह जाता है, जिसे यदि फैलाया जाय तो घोड़े के चलने योग्य एक छोटा-सा रास्ता भी नहीं बन सकता !

बूढ़े एली मॉर्निगस्टार ने अपने इहाते के जंगले से झुककर अपने पौधे ले लिए । वे बढ़िया पौधे थे और पूर्णतया प्रस्फुटित हो चुके थे । उन्हें देख कर क्षण भर को जैस गर्व से भर उठा और अपनी गुठली की समस्या भूल गया । परन्तु बूढ़े एली मॉर्निगस्टार ने बिना विशेष ध्यान दिए ही उन्हें एक ओर रख दिया, मानों किसी बच्चे द्वारा काटकर लाई गई अनुपयोगी शाखाएँ हों !

"श्री बर्डवल," उसने पूछा, "तुम्हारे धार्मिक विचार कितने पुष्ट है ? मैं तुम्हारे किसी भी विश्वास को ठेस नहीं पहुँचाना चाहता ।"

"इतने पुष्ट हैं कि तुम्हारे कुछ भी कहने से उन्हें ठेस न पहुँचेगी," जैस ने कहा ।

"जब मैं बच्चा था," एली ने कहा, "तो मैं बच्चों की भाँति ही सोचा करता था, परन्तु अब मैं और ही ढंग से सोचने लगा हूँ ।"

जैस ने बूढ़े की आँखों में देखा पर वे तो उस पर्दे की तरह थीं जो सब कुछ छिपा लेता है और जिसमें से कुछ भी झलक नहीं सकता !

"भगवान का एक ही बेटा," गम्भीर हो कर, जंगले पर और अधिक झुक कर, बूढ़ा एली बोला, "एक ही क्यों ? जैस बर्डवल, एक ही क्यों ? और बेटा ही क्यों ? बेटी क्यों नहीं ? इसमें ज़रूर कुछ गोलमाल है, जैस बर्डवल ! और जितना ही विचार करो, उतना ही स्पष्ट हो जाता है कि कुछ गोल-माल ज़रूर है·····"

"कुछ गोलमाल ज़रूर है !"·····ऋतु का सुखद् ताप बढ़ता जा रहा

था और जैस वही अपनी गाड़ी में बैठा था। पवन-वेग से ऊँचे आकाश में उड़ती एक छोटी-सी चिड़िया, थक कर नीचे गिर पड़ी। गाड़ी के पीले पहिए धूप में चमक रहे थे और उनके लोहे के धुरे रेत और पत्थर काटते, शीघ्रता से बढ़े जा रहे थे। बसन्त के आरम्भ के उन दिनों में पेड़ों में पत्ते कम थे, जैसा कि पतझड़ में होता है! छोटे फूल, भूरे, सफेद और जामुनी, फूटने लगे थे और वन में जहाँ-तहाँ सफेद तारे-से उठते दिखाई पड़ रहे थे।

"मेरा तो क्षय हो रहा है," जैस ने शोक-ग्रस्त होकर अपनी गुठली को छूते हुए कहा। पर गुठली तो जैसी थी वैसी ही थी।

दोपहर की धूप में डेड डेवलिन का बड़ा घर दिखलाई पड़ा, सुन्दर दरियों और रेशम के पर्दों पर सूर्य की किरणें पड़ कर चमक रही थीं।

"डेड डेवलिन," उसकी विधवा ने कहा, "छः मास हुए मर गया। तुम्हारे आने के कुछ ही समय पश्चात्। परन्तु हमें वे पौधे चाहिएँ, मुझे और मेरे वर्तमान पति को! मेरा वर्तमान पति फलों के पौधों का कुशल जानकार है।"

किसी भी दूसरे पुरुष की भाँति, स्त्रियों के विषय में जैस के अपने ही विचार थे, परन्तु उन विचारों के सम्पूर्ण समन्वय से भी कभी भी श्रीमती डेवलिन जैसी स्त्रिएँ न बन पातीं!

"श्रीमती जॉन हेनरी लिटिल," उसने जैस को याद दिलाया।

बाहरी बातों के आधार पर ही किसी के विषय में राय बना लेना एक ऐसा पाप था जिससे जैस ने सदा अपने आप को बचाए रखा; और पकी हुई नाशपाती-सी दिखनेवाली श्रीमती लिटिल, वासना की पुकारों के नीचे, सम्भव था एक धार्मिक वृत्तिवाली स्त्री ही हो; परन्तु जैस ने सोचा कि ग्रीष्म के पश्चात् तो झुर्रियाँ पड़ी नाशपातियाँ ही उसे रुचिकर लगती थीं।

"जॉन हेनरी से भेंट करो," श्रीमती लिटिल ने कहा, जब उसका पति जुर्राबें पहने, उनींदी आँखें लिए दरवाज़े तक आ पहुँचा।

जैस पहल भी जॉन हेनरी से मिल चुका था; पिछले वर्ष वह डेवलिन का नौकर था। "वह मुझ से उम्र में छोटा है," श्रीमती लिटिल ने सोल्लास कहा, "पर भगवान के आगे तो एक हज़ार वर्ष भी एक वर्ष जैसे ही हैं।" जॉन हेनरी के गले में बाहें डालते समय श्रीमती लिटिल का मुटापा बाधक न हो सका, "फलों का कुशल जानकार और एक कुशल प्रेमी!" वह बोली।

जैस अपनी गाड़ी में बैठा-बैठा अनाज से भरे खेतों को आँखों के सम्मुख आते, गुज़र जाते देख रहा था। शरीर या वासना, उसने सोचा, भगवान ने ही बनाई

है और उसमें कोई त्रुटि खोजने का मुझे कोई अधिकार नहीं । भगवान ही जानता है कि मुझे भी अपने शरीर से प्यार है : अपने से, विवाह में जो मिला उससे और दोनों ने जिसे जन्म दिया उससे। प्यार है ही ! और मुझ में ऐसा उच्च कोई भी भाव नहीं जो विक्टोरिया सिन्ड्रेला डेवलिन और जॉन लिटिल के मिलन को न सह सके !

आकाश गहरे नीले रंग का था और प्रतिदिन सूर्य पृथ्वी के समीपतर आता प्रतीत होता। जैस ने अपना कोट उतार दिया और कंधे सूर्य की ओर उठा दिए, मानो उससे आधे रास्ते बढ़कर मिलना चाह रहा हो जिससे कि सूर्य का ताप उसके शरीर में इतना गहरा पैठ जाए कि उसमें से कुछ क़ब्र तक उसके साथ जा सके और किसी दूसरी बसन्त में किसी पौधे की आवश्यकता पूरी कर सके ! उसका काम प्रायः समाप्त हो चुका था, तीन और घर पौधे देकर वह फेअर होप सभाभवन की ओर मुड़ सकेगा और वहाँ पहुँचकर यथासम्भव अपने शरीर की पुकार, अपने शरीर की माँग पूरी करेगा ! स्कूल के नाश्पातियों के पेड़, श्रीमती मेह्यू की दो बेरी की झाड़ियाँ और रिवर दम्पति के कुछ पौधे ।

वह रात होते रिवरों के घर पहुँचा : रात उसे वहाँ ही बितानी थी। दिन अनिश्चित-सा मौसम लिए आरम्भ हो कर अब गोधूलि के समय, जैसा कि प्रायः होता है, साफ हो चला था। पिछली बार भी वह इसी घर में ठहरा था। घर बड़ा था और तरुण रिवर दम्पति सुसभ्य। भेड़िए बोल रहे थे जब वह उस घर की ओर मुड़ा। कभी-कभी उसकी गाड़ी के पहिए सड़क पर पड़े पानी के ऊपर से भी गुज़र रहे थे। गोधूलि में शेब के पेड़ फूले दिखलाई पड़ रहे थे, मानों दिन का अंतिम प्रकाश उसकी सफ़ेद पँखुड़ियों ने समेट लिया हो ! दरवाज़े की सीढ़ियाँ चढ़ते-चढ़ते उसे चालीस वर्ष पुराना एक विचार याद हो आया : धूप में दिन बिताकर आने के बाद घर एक विचित्र स्थान लगता है ! उसने दरवाज़ा खटखटाया तो कोई उत्तर न मिला, परन्तु खिड़कियों से छन कर आता प्रकाश वह देख पा रहा था। और फिर एक स्त्रीकंठ ने उसे पुकारकर अन्दर आजाने को कहा।

जिस कमरे में वह घुसा उससे वह अपरिचित न था; सब कुछ यथास्थान रखा था, कुर्सिएँ एक पंक्ति में दो-दो के हिसाब से रखी थीं, आग भी करीने से जल रही थी और कोयले का एक भी टुकड़ा इधर से उधर नहीं हो रहा था। कमरे के बीच में जो मेज़ था उस पर रखा लैम्प तो जला हुआ नहीं था, परन्तु उससे आगे एक चारपाई के ऊपर एक छोटा सा लैम्प धीमी रोशनी दे रहा था ।

"श्रीमती रिवर्स," जैस ने पूछा, "क्या तू बीमार है ?"

"कुछ समय से ऐसी ही हूँ," श्रीमती रिवर्स ने कहा, "और आज दोपहर तो दिल ही बैठ गया था मेरा—पर बीमार नहीं हूँ, कमज़ोरी है ।"

जैस ने उस साफ सुथरे बिछौने की तरफ देखा, श्रीमती रिवर्स की ओर देखा जो कि बुने हुए कम्बल के नीचे इस प्रकार लेटी हुई थी कि कम्बल में कहीं मोड़ ही नहीं दिखलाई पड़ रहा था, केवल पाँव और नितम्बों के उभार से ही पता चलता था कि काले बालों वाले सिर के साथ पूरा शरीर भी बिछौने पर है ।

"तू तो माँस हीन दिख रही है," जैस ने कहा और अपनी जीभ काटली; परन्तु उस तरुण मुख में केवल आँखें और गालों की हड्डियाँ देखकर वह घबड़ा गया था ।

"ज्वर माँस को खा रहा है," श्रीमती रिवर्स ने कहा, "परन्तु मेरे विचार से ऐसी कोई वस्तु नहीं खा रहा है जिसकी बहुत ही आवश्यकता हो ! कुछ काट-छाँट कर देता है, जिसे चिपटाए रहने की जरूरत नहीं वह ले लेता है और कुछ हल्का कर देता है । बखार माँस को वैसे ही खाता है जैसे बत्ती तेल को," अपना ज्वर के प्रभाव से नितान्त माँसहीन हो गया हाथ उठाकर श्रीमती रिवर्स ने ऊपर रखे लैम्प की बत्ती ऊँची कर दी और मुस्कराकर कहा, "सिवाय एक माँ के, और कोई ऐसा व्यक्ति नहीं जिसे देखकर मुझे तुम्हें देखने से अधिक सुख मिले, श्री बर्डवल !"

जैस, जो अब बात करना चाहता था, उसकी ओर ताकता ही रह गया : बेचारी बच्ची, उसने सोचा, बत्ती ने लैम्प ही सुखा दिया है और अब खाली लैम्प और लौ की अंतिम तीव्रता के अतिरिक्त कुछ रह ही नहीं गया है ।

"तू इतनी बीमार है कि मुझे रात को यहाँ नहीं ठहरना चाहिए," उसने कहा, "तुझे कष्ट होगा, सम्भव है दुर्बलता और भी बढ़ जाए ।"

"अपने घोड़े खोल दो, श्री बर्डवल," श्रीमती रिवर्स ने कहा, "मैं तो यहाँ किसी से बात करने को तरस रही थी !"

जैस मुस्कराया । "सच तो यह है," वह बोला, "मैं उन्हें पहले ही खोल चुका हूँ । पिछली बार तेरी और तेरे पति की सौजन्यता देख मैं फिर कभी यहाँ आने की सोच रहा था । मैं तेरे लिए एक उपहार भी लाया हूँ, उसी घाटी के गुलाब की चार क़लमें—तूने कहा था तुझे पसन्द है ।"

"घाटी के सफेद गुलाब," श्रीमती रिवर्स के स्वर में आधा उच्छ्वास था,

"क्या तुमने कभी घाटियाँ देखी हैं, श्री बर्डवल ? मैं प्रायः उनके बारे में सोचती हूँ। ऊँची और समतल, वे अवश्य किसी अनन्त घास के खेत की भाँति दिखती होंगी, और वहाँ सदा ही तेज़ हवा चलती होगी, जिसमें साँस लेना भी आसान होता होगा !"

"हाँ," जैस ने कहा, "मैंने घाटियाँ देखी हैं—सूखे समुद्र की भाँति, घास लहरों की तरह हिलता रहता है !"

"और रानी, श्री बर्डवल ?" श्रीमती रिवर्स हँसने लगी, फिर रुक गई क्योंकि हँसने से उसे खाँसी उठ आती थी। "तुमने कभी कोई रानी भी देखी, श्री बर्डवल ?"

"नहीं," जैस ने उत्तर दिया, "रानी तो अभी तक कोई नहीं देखी। परन्तु यदि कभी देखूँ तो वह तेरी और एलिज़ा की तरह काली आँखों वाली होगी !"

"एलिज़ा कैसी है ?" श्रीमती रिवर्स ने पूछा; वार्तालाप में जो आनन्द उसे आरहा था वह उसे छिपा रही थी। और इससे पहले कि जैस कोई उत्तर दे, वह बोली, "अरे, मैं तो सभ्यता ही खो बैठी, श्री बर्डवल ! प्रश्न पर प्रश्न पूछे चली जा रही हूँ और तुम खड़े ही हो। एक कुर्सी ले लें।"

जैस कुर्सी सरका कर चारपाई के पास ही ले आया।

"एलिज़ा प्रसन्न है," उसने कहा, "सुस्वस्थ और सुकृतों में लगी हुई। और तेरा पति ? क्या एबल घर में ही है ?"

"एबल इस समय बाहर गया हुआ है। कुछ देर के लिए घूमने गया है !" श्रीमती रिवर्स कुछ क्षण मौन लेटी रही, फिर बोली, "तुम्हारे पेट में अवश्य ही चूहे कूद रहे होंगे, श्री बर्डवल, सारे दिन पौधे देते और बिस्कुट खाते रहे हो। और मेरा भी यही हाल है—खाली पेट और भूखी ! ज्योंही मेरी यह दुर्बलता कुछ कम हो, मैं कुछ न कुछ पका लाती हूँ।"

श्रीमती रिवर्स का मुँह लाल हो उठा था और आँखें हर्षोल्लास से चमक रही थीं। "हम दोनों आनन्द से समय बिताएँगे, श्री बर्डवल ! यदि तुमने आने की ख़बर ही दी होती तो मैंने घर को कुछ साफ ही कर लिया होता !"

"साफ !" जैस ने कहा, "क्यों, सारी चीज़ें मधुमक्खी के छत्ते की तरह तो साफ हैं। और अधिक साफ होतीं तो मुझे अन्दर घुसते डर लगता ! दरवाज़े के बाहर ही रात बितानी पड़ती, चौखट पार करते घबराता !"

श्रीमती रिवर्स ने हँसना आरम्भ किया, फिर रुक गई। "ज्यों ही तबीयत ज़रा सम्भले," वह बोली। "अलमारी में यथेष्ट मात्रा में माँस और फल रखे

हैं । पता नहीं क्या हो जाता है ? सुबह तो मैं दो वर्ष के बालक की भाँति स्वस्थ रहती हूँ, परन्तु सूर्यास्त होते-होते कुछ टूट जाता है और मैं सौ वर्ष की बुढ़िया हो जाती हूँ !"

जैस खड़ा हो गया "तेरी आयु कितनी है," उसने पूछा, "दो पहर के आसपास ?"

"तेईस वर्ष," वह बोली, "प्रभात ही तो है !"

"तेरा नाम लिडिया है ?"

"लिडिया एन," श्रीमती रिवर्स ने कहा ।

"लिडिया एन," जैस ने कहा, "आयु के हिसाब से तू इतनी छोटी है कि मैं तेरा पिता हो सकता हूँ । अस्तु, अब मैं तुझे आज्ञा दूंगा ! जब तक मैं खाना पकाकर लौटूं, तू लेटी रहेगी ! मैं खाना पकाने में कुशल हूँ । मुझे केवल यह जानना है कि दियासलाई, लैम्प और लकड़ियाँ कहाँ हैं । शेष मैं सब कर लूंगा !"

"मैं ऐसा ही करूँगी," लिडिया एन बोली । "मैं यहाँ लेटी रहूँगी और आनन्द लूंगी । रसोई की आग तो अभी बुझी नहीं होगी और लकड़ियाँ बक्से में भरी हैं ।"

जब जैस खाना लेकर आया तो लिडिया एन ने कहा, "तुम बातें तो नहीं बना रहे थे ? सचमुच ही कुशल हो ?" सूखा माँस गरम और भुना हुआ था, तरी भूरे रंग की और ठीक गाढ़ी थी । भुने हुए आलू भी थे और केक भी !

"केक," लिडिया एन बोली, "इतनी देर में तुम केक तो नहीं पका सके होगे ?"

"नहीं," मैंने नहीं पकाया," जैस ने कहा, "वह तो मुझे आते-आते एक महिला ने दिया था, लगा कि तेरे नाश्पातियों के अचार के साथ यही ठीक रहेगा ।"

"मुझे तो पता ही नहीं था कि खाना इतना स्वादिष्ट भी बन सकता है ! पकाते हुए तो मेरी भूख चम्मच चलाते और सूंघते ही समाप्त हो जाती थी ।"

"बुरी बात है," जैस बोला, "कि तेरा पति अभी तक लौटा नहीं, हमारे साथ ही भोजन कर लेता ।"

"वह जहाँ रहना चाहता है वहीं है," श्रीमती रिवर्स ने कहा, "सम्भव है सारी रात ही बाहर काट दे ! एबल कहता है कि बीमारी उससे देखी नहीं जाती ! खाँसी सुन कर उसे उबकाई आती है·····बार-बार खाँसना, समझे·····और उससे

भी बुरी हालत ! उसने कोई न खाँसनेवाला ढूँढ लिया है ! और मैं समझती हूँ वह स्वस्थ भी होगा ।"

वे खाना खा चुके थे और जैस, विचारमग्न, खाली बरतन उठाकर रसोई में ले गया । वे दोनों एक ही समय में, एक ही छत के नीचे थे । बाहर—प्रलय-काल की सी नीरवता, वृक्षों का प्रस्फुटन और उल्लुओं का बोलना; और अन्दर—वे दोनों बातें करते हुए । पचास वर्षों में जो कुछ भी वे देख पाए थे उसे भुलाने का, छोड़ देने का प्रयत्न कर रहे थे दोनों ।

पचास वर्ष, सोचते-सोचते वह रुक गया । "जैस बर्डवल," उसने अपने आप से कहा, "तुझे इस लड़की के गले पड़ने का क्या अधिकार है ? उसने तो अभी पचास वर्ष नहीं देखे । उसका कोई बच्चा भी नहीं है, कोई उसकी देख-भाल करने वाला भी नहीं है । तेरे पास तो एलिज़ा है; वह तेरी किसी भी विपत्ति का सामना निर्भय होकर कर सकती है ! कोढ़ या प्लेग से भी नहीं घबराएगी वह ! तेरे शरीर में तो पीड़ाएँ नहीं होतीं, बेहोशी के दौरे नहीं पड़ते, ना ही रातों को अकेले पड़े रहने की आवश्यकता है तुझे । 'हम दोनों' कहकर तू मूर्खता कर रहा है, जैस बर्डवल । अपने आप को इस बखेड़े में मत डाल । इस लड़की के पास बैठकर फूलों भरी राह चलने की बात भी मत सोच । कुछ देर उसके विषय में सोच और भगवान से दुःख कातर बूढ़े की ओर से क्षमा याचना कर ले !"

कुछ देर तश्तरियों को साफ करता रहा, चूल्हे की राख झाड़ दी और लज्जित हो कर, अपनी नाक साफ करता बैठक में लौट आया । उसने सोचा था कि लिडिया एन अपनी बात पर दुःखी या लज्जित हो रही होगी, परन्तु लगा कि वह तो अपनी वह बात ही भूल चुकी है । "लकड़ियाँ और डाल दो अँगीठी में, श्री बर्डवल," वह बोली, "आग खूब धधक जाए आज तो !"

जैस ने और लकड़ियाँ लगा दीं । "शीशम," वह बोला । "मज़बूत और देर तक जलने वाली ।"

"तुम सोने की तो नहीं सोच रहे हो, श्री बर्डवल?" उसने पूछा, "आज तो बातें करनी होंगी । मैं रातों को अकेली ही पड़ी रहती हूँ, आज बातें करके मज़ा आजाएगा ।"

"सोने की," जैस बोला, "आज रात यदि एक झपकी तक न ले सकूँ तो भी कोई बात नहीं । रातों को जब तू सो नहीं पाती, लिडिया एन, तो क्या सोचा करती है ?"

'प्रायः अपने बचपन की बातें ही सोचा करती हूँ ।"

"ऐसी कोई बहुत पुरानी बात तो नहीं है वह," जैस मुस्कराया ।

"लगती तो बहुत पुरानी ही है । प्रसन्न और स्वस्थ, किसी दूसरी ही लड़की की बात लगती है !"

"हाँ", जैस बोला, "वे दिन ! स्वस्थ शरीर; और दुःख की कोई बात ही नहीं होती उन दिनों ! सुबह से रात तक केवल आनन्द ही आनन्द !"

"जब आठ-दस वर्ष की थी तो मैंने माँ से एक सफेद फूलों की छापवाला फ्रॉक बनवाया था । एक लंबा फ्रॉक, जमीन तक पहुँचनेवाला; ना काम करने का और ना ही पहनकर कहीं जाने का । उस फ्रॉक में मेरा मन था, और माँ ने उसे बनवा दिया था । न पैसे थे, और न समय; परन्तु मेरा मन रखने को माँ ने उसे रातों जागकर सीया ।"

"हाँ," जैस ने कहा ।

"उस फ्रॉक को पहनकर जब झूले में बैठती तो मेरे पाँव की अँगुलियाँ तक ढक जातीं, और मैं शान से झूलती । फ्रॉक के दोनों ओर हवा भर जाती और मैं और वह गुब्बारा हवा में मँडराते रहते !"

"बड़ी सुन्दर दिखती होगी," जैस बोला, "तुझे झूलते देखकर लोग चित्र लिखे-से रह जाते होंगे !"

"अपने आप को कष्ट दे कर, रातों बैठ माँ ने उसे बनाया था । यदि सोचा जाए, श्री बर्डवल, तो इस संसार में यथेष्ट प्रेम और सहानुभूति भी होती है ।"

"हाँ," जैस बोला, "तुम्हारे घर में भी है !"

"एक बार हमारी पाठशाला के बारह लड़कों ने प्रण किया कि वे मेरा बनाया बिस्कुट ही खाएँगे । नीलाम की बोलियाँ हो गईं और चाँदी के सिक्कों में बिस्कुट का मूल्य चुकाया गया, और हम तेरह सहपाठियों ने बाँटकर वह बिस्कुट खाया । उन्होंने मुझ पर एक कविता भी बनाई और उसे गाने लगे ! शरद ऋतु का मध्य था; और मुझे याद है कि जब वे गा रहे थे तो बरफ गिरती दिखाई दे रही थी । और एक लड़के ने कहा कि मेरी पकाई हुई वस्तुएँ इतनी अधिक मूल्यवान हैं कि उन्हें खाना नहीं चाहिए । और उसने अपने हिस्से का बिस्कुट दियासलाई की डिबिया में रख लिया, बोला कि सदा उसे अपने पास रखेगा ।"

"कैसा बिस्कुट था वह ?" जैस ने पूछा

"मीठे आलुओं का ।"

"अब तक तो सड़ गया होगा ।"

चाँद निकल आया और चाँदनी कमरे में बिछी दरी पर छिटकने लगी। शीशम की लकड़ी जलकर टूट गई। जैस ने दूसरी लगा दी। समय आया जान एक टिड्डे ने अलाप लेकर अपना गीत आरम्भ कर दिया। श्रीमती रिवर्स करवट लेकर आग की ओर देखने लगी, और धीमे-से बोली :

"कबूतर भूनकर जहाँ खाए जाते हैं," उसने कहा, "यहाँ से बहुत दूर उस प्रदेश में....." या, "मेरी एक बिल्ली थी जो मेरे बिछौने में मेरे पाँव से लिपट कर सोती थी.....एक लम्बी, सफेद मूँछोंवाली भूरी बिल्ली....." और कुछ दर बाद....."उसे मैंने सदा ही प्यार करने का प्रण लि ा.....परन्तु थी शुरू से ही शैतान।"

"डाक्टर कहता है," स्वर धीमा था उसका, ".....परन्तु मैं जानती हूँ। थोड़ी दुर्बलता ही तो है, ग्रीष्म आते ही दूर हो जाएगी।"

"मैं सारी नदियों के, या सारे पेड़ों के नाम जान लेना चाहती हूँ," वह बोली, "अकेले पड़े-पड़े रात को दुहराने से समय अच्छा बीत जाया करेगा!"

पास के खत में एक मुर्ग़ा, चाँदनी देखकर सुबह हुई समझ, बोल उठा और रिवर्स के मुर्गे ने बाँग दी। "मैं बिल्कुल ही असभ्य हूँ," श्रीमती रिवर्स ने कहा, "सारी रात अपने आप ही बोलती जाऊँगी, और तुम पास बैठे हो। मैं कुछ बातें आपकी भी सुनना चाहती हूँ, श्री बर्डवल। जो-जो स्थान आपने देखे और जो-जो कुछ आपने किया सुनना चाहती हूँ!"

"मैं कहाँ-कहाँ गया हूँ?" जैस ने पूछा, "मैंने क्या-क्या किया है?" वह उसकी चारपाई के पास खड़ा हो गया। "अच्छा, मैं तुझे बताऊँगा, लिडिया एन। मैं एक अच्छा....." और वह सोचने लगा, मैं इसे बताऊँगा कि मैं कैसा आदमी हूँ। यह भी देखले कि मेरी क्या दशा है! सम्भव है इसे यह जानकर सुख पहुँचे कि दुःख सभी के हिस्से में आया है। किसी एक व्यक्ति का ही बोझ नहीं है वह— और उसने अपना हाथ गरदन की उस गुठली पर रख दिया। उसे लगा कि वह बढ़ी नहीं, बीस वर्षों से जैसी थी, वैसी ही है गुठली से उसे किसी प्रकार का कष्ट नहीं, और किसी संयत-चित्त व्यक्ति को तो उसके विषय में सोचना तक नहीं चाहिए!

"क्या तबीयत ठीक नहीं, श्री बर्डवल? क्या तुम बहुत अधिक ज़ोर से खड़े हो गए थे?"

"नहीं," जैस ने कहा, "मैं सम्भव है ठीक ही समय अपने पाँवों पर खड़ा हो गया!" परन्तु उसने हाथ अपनी गरदन से नहीं हटाया, क्योंकि वह यह विश्वास

कर लेना चाहता था कि उसकी निष्कृति का भेद उस गुठली में छिपा हुआ नहीं है·····वह तो एक गुठली मात्र है, जैसी कि उसके बाप की गरदन में भी थी और जिसमें एक झुर्री से अधिक हानि पहुँचाने की क्षमता नहीं।

"तुम्हारी गरदन में कुछ तकलीफ है क्या? क्या कोई फोड़ा है, श्री बर्डवल?"

"फोड़ा तो शायद मेरे दिमाग़ में है!" जैस ने कहा, "मेरी गरदन तो ओहियो के इस पार सबसे तगड़ी गरदन है, शायद उस पार भी!"

उसने कमरे के चक्कर लगाना आरम्भ कर दिया। अपनी गुठली के नए व निर्दोष अर्थ को समझता, परखता वह दरी पर फैली चाँदनी में इधर से उधर चल रहा था। उसने मोटी-मोटी लकड़ियाँ आग में लगा दीं और चिमटा इस जोर से चलाया कि फव्वारे के पानी की तरह आग की चिनगारियाँ उड़ने लगीं!

"तुम तो मानों किसी नींद से जाग उठे हो?" श्रीमती रिवर्स ने पूछा।

"हाँ," जैस बोला, "तुम ठीक कह रही हो। एकदम आँखें खुल गई हैं मेरी! तुमने मुझसे पूछा था मैं कहाँ रहा, मैंने क्या किया? मैं काफी चल चुका हूँ, लिडिया एन, और जहाँ भी गया प्रसन्न ही रहा हूँ। यदि कोई मुझसे भी अधिक प्रसन्न रह सकता तो वह अवश्य ही पागल हो जाता। मैंने अपनी इन दो आँखों से इतने सुन्दर दृश्य देखे हैं कि शब्दों द्वारा उनका वर्णन नहीं कर सकता। मैंने बार-बार आश्चर्य की शराब पी है, लिडिया एन, और अभी भी आश्चर्य में ही देख रहा हूँ! बसन्त में रशम-सी दूब और जाड़ों में पत्तों की दरियाँ! मैंने दिन में फूल सूँघे हैं और झरनों के पानी से प्यास बुझाई है! मैंने अपने पसीने से रोटी कमाई है और अब भी कमाता हूँ, जैसा कि और लोग करते हैं। परन्तु मुझे वह पत्नी मिली है जिसे मैं सदा ही चुनता; और भगवान का नाम लेने की स्वतंत्रता भी मुझे रही है। वैसे भगवान जितना कुछ भी भगवान ने आज तक मुझ से कहा है, वह समझने योग्य बुद्धि मुझ में न थी! मैं इतना प्रसन्न रहा हूँ," जैस ने गुठली छोड़ अपनी ठोड़ी पर कि जिसे अब उस्तरे की आवश्यकता हो चली थी हाथ फेरते हुए कहा, "कि यदि मुझे अधिक कुछ मिल जाता तो मैं रो पड़ता!"

यदि आँसुओं को ही रोना मान लिया जाए तो वह अब भी रो रहा था, परन्तु वह मुस्करा भी रहा था; और कमरे के चक्कर काट रहा था।

"आज की रात तो किसी उत्सव-सी लगती है, श्री बर्डवल, क्यों?"

"हाँ," जैस ने कहा, "लगती है! और यदि सम्भव हो सकता तो जो

आनन्द मुझे जीवन में मिला है उसका एक अंश मैं तुझे भेंट कर देता ! तू उसे सदा के लिए दियासलाई की डिबिया में छिपा लेती !"

श्रीमती रिवर्स यों मुस्कराई कि मानों उसे जैस की उस इच्छा की सत्यता पर पूर्ण विश्वास हो। वह अब आग के पास खड़ा हुआ था, मानों अपनी बात कह चुका हो। श्रीमती रिवर्स अभी सोने को तैयार न थी। उसने एक और प्रश्न उठाया। "यह तो बता दिया कि तुमने क्या-क्या किया, परन्तु यह नहीं बताया कि कहाँ-कहाँ गए ! उन सब स्थानों के नाम मुझे बताओ जिससे तुम्हारे चले जाने पर मैं उन्हें याद कर सकूँ !"

जैस उलटकर खड़ा हो गया और सब स्थानों के नाम बतलाने लगा : पूर्व में फिलेडलफिया तक। उत्तर में शिकागो तक ! दक्षिण में नाटसेज, बेटनरूज़, लुइबिल ! पश्चिम में उन बस्तियों से भी आगे कि जिनका अभी नाम तक नहीं रखा गया। वह नाम लेले कर बतला रहा था कि किस काम से वह कौन सी जगह गया और वे शहर कैसे थे : कभी समुद्र या नदी के किनारे, कभी तलहटियों से लेकर पहाड़ों की ऊँचाइयों पर बसे हुए ! श्रीमती रिवर्स इसी बीच में निद्रा-निमग्न हो गई।

विचार मग्न, जैस ने एक और चादर निकालकर डाल दी उसके ऊपर। पाने का अधिकार ही तो माफ़दण्ड नहीं है जीवन का ! आग सँजोकर, वह फिर आकर चारपाई के पास बैठ गया। सूर्योदय होने से पहले ही वह बाहर निकला, और चुपचाप अपने घोड़े जोतकर घर की ओर चल पड़ा।

सारे दिन एलिज़ा के मन में यही धारणा रही थी कि वह आज लौट आएगा। और जब वह उस रात घर पहुँचा तो वह सड़क पर खड़ी उसकी बाट देख रही थी।

"सब ठीक हो गया, जैस ?" चिन्ताकुल, उपयुक्त शब्द ढूंढ़ती हुई, वह बोली।

"हाँ," जैस ने कहा, "सब ठीक हो गया।"

"ग्राहक कैसे थे तेरे ?"

"सब का अपना-अपना राग था," जैस बोला, "विवाह-मग्न ! बीमार ! भगवान के विषय में सोचते, और सूखे रोग से त्रस्त !"

"तू फेयर होप सभाभवन गया था ?" झिझकते हुए उसने पूछा।

"नहीं," जैस ने कहा, "अंतिम ग्राहक का माल दे कर मैं घर ही चला आया।"

"तूने कहा था....."

"कहा था !" वह कुछ कुपित हो कर बोला, "पर लकड़ी के फट्टों से ही तो सभाभवन नहीं बन जाते, एलिज़ा ! यहाँ भी एक स्थान है प्रार्थना करने और सीखने का !" उसने अपनी छाती पर हाथ मारते हुए कहा ।

इस बात पर एलिजा को कभी संदेह नहीं था । वह बढ़ते अँधेरे में जैस का मुँह देखती रह गई । "तू·····तेरी वह सूजन ?" उसने पूछा ।

"तेरा मतलब मेरी गुठली मे है ?" जैस ने बेझिझक हो कर कहा, "कोई सूजन नहीं है । बीस साल से है ! मामूली बात है । मैं कभी सोचता तक नहीं उसके विषय में !"

एलिज़ा मंतोप की साँस ले सीधी खड़ी हो गई ।

"मेरे पीछे यहाँ क्या हाल रहा ?"

"कुछ देर ठंड रही, पर अब मौसम ठीक है । कमल के फूल कल खिले ।" एलिज़ा ने कहा ।

जैस ने अपनी बड़ी नाक उठाकर सूँघना शुरू किया । "लगता है मैं यहाँ से ही उन्हें सूँघ सकता हूँ !"

फूलदान

जैस उस दिन काम में लगा रहना चाहता था। वर्षा से काम बिगड़ता देख, वह वर्षा को देखकर ही समय का उपयोग करने लगा। वह बठक के दरवाज़े के बाईं ओर वाली खिड़की से दाईं ओर वाली खिड़की तक बेचैनी से घूम रहा था; परन्तु वर्षा के वेग में कोई अन्तर न पड़ा। दोनों ही खिड़कियों से वह वर्षा होते देख रहा था। उसका घर जल की उस बड़ी चादर को दो टुकड़ों में बाँट रहा था। और जैस को लगा कि वह स्वयं पानी के बीच यों खड़ा है जैसे कि घंटी के बीच धातु का वह टुकड़ा जिससे कि घंटी बजती है! वह स्वयं मौन था, और ऊँचाई से गिरनेवाले पानी की घड़ाधड़ मार से वह घंटी बज रही थी, जैसे कि ख़ाली तख़्ते (पलंग, अँगीठियाँ, दरियाँ, या एक या दो व्यक्तियों से तो वह रिक्तता पूर्ण नहीं हो सकती) बज उठते हैं!

अपने इस विश्वास को परखने के लिए कि केवल उसके कान ही जाड़े और गरमियों की वर्षा में पहचान कर सकते हैं उसने घर से बाहर अपने कानों को भेजकर सुनने का प्रयत्न किया। उसे लगा कि उसका विचार ठीक ही है, क्योंकि पत्तेभरे वृक्षों पर वर्षा पड़ने की आवाज़ में एक प्रकार की भर्राहट-सी होती है जो कि पतझड़ के नग्न वृक्षों पर वर्षा की फुहारें पड़ने से नहीं सुनाई पड़ती!

अपने ज्ञान का प्रकाश मौन छिपा लेने का अभ्यास जैस को न था। उसने एलिज़ा को पुकारा, और वह, उबलरोटी चूल्हे में चढ़ाकर, रसोई से बैठक में चली आई।

"तूने मुझे बुलाया, जैस?" आटा मलते-मलते लाल हो गए अपने हाथों को पोंछते हुए उसने पूछा।

"एलिज़ा," जैस ने कहा, "आँखों पर पट्टी बाँधकर, तू जाड़े और गरमियों की वर्षा में पहचान कर लेगी?"

"मैं नहीं कर सकूँगी," एलिज़ा ने साफ ही कह दिया।

जैस मुँह बनाकर अपनी पत्नी को देखने लगा। जैस जानता था कि एलिज़ा स्त्रियों में अद्वितीय थी; परन्तु सभी स्त्रियों में कुछ न कुछ दोष कभी-कभी देखने में आता है, चाहे वह उनके रूप में हो या वंश परम्परा में!

"कैसे पहचान सकती है, यह भी तू जानना नहीं चाहती," जैस ने पूछा। "क्या इस विषय में तुझे तनिक भी कौतूहल नहीं ? क्या प्रकृति के नियमों का तेरी समझ में कुछ भी मूल्य नहीं ?"

कुछ का है, कुछ का नहीं; वर्षा गिरने की आवाज़ का नहीं। रोटी का फूलना, अँगीठी में आग का धीमे-धीमे जलना, यह भी नियम है और, एलिज़ा ने सोचा, और प्राकृतिक भी, और इस समय तक तो इन्हीं नियमों से प्रयोजन रहा है उसे। "जैस," वह बोली, "आँखों में पट्टी बाँधकर गरमी और जाड़े की वर्षा की पहचान करने में क्या तुक है, मेरी समझ में नहीं आता ! इसे छोड़, और पहेलियाँ मत बुझवा !"

जैस ने खिड़कियों और वर्षा की ओर पीठ कर ली। औरतों को समझना उसके बस की बात न थी। फिर भी उनका अज्ञान दूर करने के अथक प्रयत्न से निराश न होते हुए, वह बोला, "पत्तों पर वर्षा की आवाज़ और होती है और नंगी शाखाओं पर और !"

"चीड़ के पेड़ों के झुरमुट में," एलिज़ा ने एतराज़ किया, "तुझे आँखों से पट्टी खोलनी पड़ेगी !"

जैस एक निश्वास लेकर रह गया ! वह रसोई के दरवाज़े के दक्षिण की ओर रखी पुस्तकों की अलमारी के सम्मुख जा खड़ा हुआ। "मैं सदा-बहार पेड़ों की बात नहीं कर रहा था।" उसने कहा।

अलमारी के बीच के खाने में, पुस्तकों के बीच, स्त्री की विचित्रता के और भी कई प्रमाण रखे थे। उन्हें देखकर जैस ने सोचा कि इन औरतों की जाति भी अजीब है। विवाह द्वारा हमसे सम्बन्धित, परन्तु फिर भी बहुत ही विचित्र। उनसे भी अधिक उपयोगी कई वस्तुएँ तो टूट गई थीं या खो गई थीं; परन्तु एलिज़ा द्वारा अनुपलब्ध, बहुमूल्य वस्तुओं की तरह सहेजी हुई ये चीज़ें क्या थीं ? पुराने लकड़ीघर के लैम्प की चिमनी का एक टुकड़ा ; चमकदार लकड़ी का एक टुकड़ा जिस पर 'पुण्य भूमि' खुदा हुआ था, पर जो जैस को साधारण अख़रोट की लकड़ी का एक टुकड़ा ही लगता था; न्यूऔर-लीन्स से लाई हुई एक सूखी नारंगी; एक अँगुस्तानी जो, एलिज़ा को विश्वास था, बिलियम पेन की बिरजिस की खोंच सींते समय काम में लाई गई थी; कैलीफोर्निया की चिड़िया के बहुत पुराने छः पर, छोटे-छोटे और बदरंग, एक लाल प्याले में रखे हुए; एक शीशे की कोई चीज़ जिसे जैस पिछले बीस वर्षों में समझ ही नहीं पाया था और जिसे अलमारी से निकालकर अब वह उलट-पलट-कर देख रहा था।

"इसे तू क्या कहती है, एलिज़ा ?"

"एक गुलदस्ता," एलिज़ा ने कहा ।

"गुलदस्ता तो यह हो नहीं सकता," जैस ने समझाते हुए कहा, "यह तो दोनों तरफ से खुला हुआ है !"

"मैं तो इसे गुलदस्ता ही कहती हूँ," एलिज़ा बोली ।

जैस उसे ऊपर उठा कर देखने लगा । बीच से देखा । अपना अँगूठा उस पर बनी हंसों की तस्वीर पर लगाकर देखा । उस पर अँगुली फिराकर देखा । "लगता है इसने अपना जीवन चिमनी के रूप में आरम्भ किया था ।" वह बोला ।

"हाँ, किया था," एलिज़ा ने कहा ।

"टूटी हुई चिमनी के रूप में !"

"हाँ," एलिज़ा ने कहा, "टूटा हुआ था !"

गुलदस्ता जैस के हाथ से लेकर उसने अपनी अँगुलियों से पकड़ लिया, उन अँगुलियों से जो जिस समय वह गुलदस्ता बना था आज की तरह सफेद और मोटी नहीं थीं, बल्कि किसी चिड़िया की टाँगों की भाँति पतली और गुलाबी थीं, और चिड़िया की टाँगों की ही भाँति चलने में भी तेज़ थीं ।

"तूने तो इसे बड़ा सुथरा रूप दे दिया है," जैस ने स्वीकार किया, "सुन्दर !" परन्तु सत्य का पक्ष लेते हुए उसे यह भी कहना पड़ा, "व्यर्थ ही किया तूने ! रंग पोत दिया तो अब यह चिमनी का काम भी नहीं दे सकता । दोनों ओर से खुला है, तो गुलदस्ता भी नहीं बना सकते ! तूने इसे कब बनाया था ?"

"जिस दिन बनाने लगी थी तूने देखा तो था !"

"मैंने कुछ ध्यान ही नहीं दिया था ।"

"हाँ," याद करती हुई एलिज़ा बोली, "तूने ध्यान ही नहीं दिया था ।"

"तेरा ध्येय क्या था ?" जैस ने पूछा, "इसको बनाने का प्रयोजन ?" अपने मस्तिष्क का यह कौशल—दो मिनटों में ही वर्षा के वज्ञानिक अध्ययन से एक ग़लत नाम वाले स्मृति चिह्न का निरीक्षण—देख उसे संतोष ही हुआ ।

इतना पानी पड़ता देख कुपित हो रही लाल आँख की तरह अँगीठी की धधकती आग की ओर मुँह किए खड़ी थी एलिज़ा । उसने पलटकर अपने पति की ओर देखा । उसने गुलदस्ते के उभरते पेट और भूधराकार चोटी को छूआ । क्या था उसका प्रयोजन ? जितने प्रयोजनों से वह परिचित थी उन सबसे अधिक ही प्रयोजन रहे होंगे इसमें । और यदि वे सब उसे ज्ञात

भी हों और वह उनका नाम और संख्या जैस को बतला भी दे, तो क्या वह समझ सकेगा ? जब वह पहला हंस चित्रित कर रही थी और अभी उसके रंग सूखे तक न थे, तब तो उसने ध्यान तक न दिया था; और अब, इतने वर्षों बाद क्या वह समझ पाएगा ? आज जबकि गुलदस्ते का रंग भी फीका पड़ चुका है ?

परन्तु एक प्रयोजन तो स्पष्ट ही था उसका, और वह उसे बतला भी देगी।

"मैं एक सुन्दर वस्तु बनाना चाहती थी, जैस !"

हाँ, वह बात सच थी। आरम्भ में वही उसका ध्येय भी रहा था। गरम चिमनी पर पानी के कुछ छींटे पड़े और एक गोल टुकड़ा टूट कर अलग हो गया, परन्तु एलिज़ा ने उस टूटी हुई चिमनी को फेंका नहीं; उसने एक पड़ोसिन से सुना था कि टूटी हुई चिमनी पर कुछ चित्र बना दिए जाएँ तो वह किसी भी घर की शोभा बढ़ा सकती है, और इसलिए ही उसने उसे अलमारी में रख दिया था। बहुत दिनों वह अलमारी में पड़ी रही थी, कि एलिज़ा को अवकाश मिले तो उस पर कोई चित्र बनादे। और ज्यों-ज्यों दिन बीतते गए उसे अलमारी में पड़ी देख, बार-बार आते-जाते अपनी बाट देखते देख, एलिजा को सुख मिलता। और उस पर क्या चित्र बनाए यह सोचते-सोचते उसके मस्तिष्क में एक योजना की रूपरेखा बनने लगी, एक योजना जिसने रसोई के कामों की व्यस्तता में भी उसके मन को एक शान्त, एकान्त स्थान में ला दिया !

उसे गुलदस्ते को हाथों में घुमाते देख जैस चुप हो रहा। अस्तु, एलिज़ा ने फिर अपनी बात दोहरा दी, "मैंने तो इसे सौन्दर्य के लिए ही बनाया था, जैस ! हमारी बैठक के लिए एक अलंकार।"

क्या जैस समझ पाया होगा ? जैस समझ तो सकता था, वह जानती थी। तारों को एक बार देख लेने के लिए उसने कई बार उसी समय सोई एलिज़ा को जगाया है; कई बार वह उसके लिए फूल लेकर आया है; साँध्याकाश, मेघ, कोई चिड़िया, पत्थर तक देखने के लिए उसने एलिज़ा को पुकारा है। परन्तु आन्तरिक सौन्दर्य, घर के अन्दर की सुन्दरता ? क्या रेशम के तकिए में की गई कढ़ाई उसे सफेद मलमल से अधिक सुखकर प्रतीत होती ? दरवाज़े के ऊपर मोर के पंखों और कोने में धातु की बनी बिल्ली की पूँछों का भी कुछ महत्त्व था जस की आँखों में ? एलिज़ा ने सोचा, नहीं !

परन्तु गृहिणी तो घर में रहती है, घर के बाहर नहीं। सूर्यास्त तो घर के अन्दर नहीं आता, आकर रसोई की दीवार पर तो छा नहीं जाता कि वह उसे खाना पकाते-पकाते देख सके; मेघों के बदलते रूप बैठक

में बठकर कपड़े सीती हुई एलिज़ा के पास आकर नहीं बैठ जाते ! जो सौन्दर्य एक स्त्री देखती है वह तो उसे बनाना पड़ता है, इधर-उधर की वस्तुएँ एकत्रित कर गढ़ना पड़ता है। क्या कभी उसके हाथों द्वारा बनाई गई वस्तुओं पर ध्यान दिया? उन वस्तुओं पर जिन्हें उसने बनाया, काढ़ा, रँग दिया, काटा ? घर में बिखरी पड़ी अनेकों ऐसी वस्तुएँ उसने बनाई होंगी। क्या कभी भी जैस ने देखा कि कैसे लकड़ी और पत्थर की नग्नता को ढक दिया गया था, और किस समय कमरा, एलिज़ा की दृष्टि में, किसी भी बादल या गुलाब से अधिक सुन्दर लग रहा था ?

जैस ने अँगुली बढ़ाकर चिमनी पर बने चित्र के एक हंस को छू दिया। "हमारी बैठक का एक अलंकार," उसने कहा, "कालान्तर का द्योतक !"

एलिज़ा ने देखा कि उसने उसे सुन्दर नहीं कहा। चलो, कोई बात नहीं। और अब तो वह उसे सुन्दर से भी कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण लगता था।

"जैस," वह बोली, "पता नहीं, परन्तु सम्भव है आग लगने पर मैं सर्वप्रथम इसे ही बचाने की सोचूँ !"

जैस ने एक बार फिर उसके हाथों में पड़ी उस चिमनी की ओर देखा। "बाइबिल से पहले ?" उसने पूछा, "पत्रों से पहले ? काग़ज़ात से पहले ?"

"उनके लिए," एलिज़ा बोली, "मैं तुझ पर भरोसा कर सकती हूँ !"

"कुछ चीजों के लिए नहीं ?"

एलिज़ा ने कोई उत्तर नहीं दिया।

जैस की नाक सिकुड़-सी गई। गालों की हड्डियों से ठोड़ी तक की रेखाएँ उभर आईं। उसका बड़ा, सुगठित मुख जो वह कहना चाहता था उन शब्दों का स्वाद लेता हिलने लगा।

"कुछ लोग कहते हैं," जैस बोला, "कि मैं तुझे अँगुली पर नचाए फिरता हूँ। और मैं बेचारा तेरे लँहगे से बँधा हुआ, पादड़ी का पति, अपनी आत्मा को भी अपनी नहीं कह सकता !"

जैस को विविध तापमानों की याद थी : शून्य से दस कम या छाया में भी १०२° ! उसे यह भी याद था कि कितना हिम और एक ही बार में कितने इंच गिरा ! एलिज़ा को याद था कि वह मौसम उसे कैसा लगा था !

ग्रीष्म की एक सुबह उसने गुलदस्ता बनाना आरम्भ किया था, वह जानती थी, क्योंकि रात को सोने के कपड़े पहनकर भी उसे गरमी लगी थी—यह भी

उसे याद था। अंधेरे में जस की केवल एक धुँधली-सी आकृति ही दिखाई पड़ रही थी। वह बिछौने में सिकुड़ कर और भी गहरी नींद लेने का प्रयत्न कर रहा था। सूर्योदय अभी हुआ न था और बाहर पक्षीदल अधखुली आँखों अपना जागरण संगीत आरम्भ कर रहे थे और गा रहे थे वे गीत जो आधी नींद में भी गाए जा सकते हैं।

अभी उसके जागने का समय न हुआ था, परन्तु उसकी आँखों में नींद न थी और इतनी आह्लादित हो रही थी वह कि मौन लेटी भी न रह सकती थी। एलिज़ा की आयु तब सतरह वर्ष की थी, और उसके सम्मुख अपने व जैस के जीवन-सुख का एक चित्र उमड़ आया था और वह उसे पकड़ने को उठ खड़ी हुई थी; और इन बीते हुए वर्षों में उस सुख की ओर ही बढ़ती चली आई है वह : बच्चों की ओर, मई के सवेरों की ओर, हिमाच्छादित संध्याओं की ओर, घर के काम-काज की ओर, प्रेम की ओर और उस बुढ़ापे की ओर जब वह और जैस, लम्बी रातों को बूढ़ों की भाँति जागे हुए, वर्षा और पवन की ध्वनियाँ सुनते, लेटे-लेटे 'याद है—याद है' कहा करेंगे !

अपने कपड़े उठाए वह चुपचाप, नंगे पाँव नीचे उतर आई थी। फ़र्श के तख़्तों में अभी भी कल की गरमाई शेष थी। टंकी के पानी में हाथ मुँह धोकर उसने रसोई में कपड़े बदले। वह चाहती थी कि जैस को इतनी अधिक भूख लगी हुई हो कि वह एक की जगह सात नाश्ते खा सके, जिससे कि वह उसकी रुचि के सब ही पदार्थ पका सके !

लकड़ियाँ आग पकड़ गईं, धधक उठीं। हवा में फलों की सुगन्ध के साथ धूएँ की सुगन्ध भी फैल रही थी। नाश्ता तैयार हो चुका था। सोने के कपड़े तह कर रख दिए थे। सर्वोत्तम प्याले मेज़ पर रख दिए गए थे। बाइबिल की १०१वीं सूक्ति पढ़कर उस पर विचार भी हो चुका था। परन्तु फिर भी तृप्ति न हो पाई थी। सुख अभी उसके पास आ न पाया था। और तब उस गुलदस्ते की याद उसे हो आई थी।

चिमनी और भंडार से रंग इत्यादि ले आई थी। क्या चित्रित करेगी यह तो बहुत पहले ही निश्चित कर चुकी थी। और अब उस चित्र ने उसके मस्तिष्क से निकलकर मानों सुख की ओर बढ़ते एलिज़ा के पगों को प्रोत्साहन देना आरम्भ कर दिया।

उसकी अँगुलियाँ चिमनी को लेकर व्यस्त हो उठीं और उसने एक बड़े पंखों वाला हंस चित्रित कर दिया। हंस के आस-पास नील वर्ण जल और हरियाली बनाई, हंस को उज्ज्वल श्वेत रँग दिया। ऊपर ग्रीष्माकाश में मेघों

की लम्बी टुकड़ियाँ तैरती दिखाई दें और उस सारे चित्र को देखकर लगता कि निरंतर एक मन्द पवन उस पर बहता रहता हो !

उसे दो हंस बनाने थे, परन्तु इतना बनाकर वह विश्राम करने लगी। उठकर उसने बिस्कुट चूल्हे में चढ़ा दिए और केतलियाँ अँगीठी के पास सरका दीं ! परन्तु रसोई का वह दृश्य तो, जो उसने जैस के पास लेटे-लेटे देखा था, उसे चरितार्थ न करता था, उसे चरितार्थ करता था वह गुलदस्ता, वह हंस, वह हरियाली और वह ग्रीष्माकाश ।

"जिस दिन मैंने इसे बनाना आरम्भ किया था," एलिज़ा ने कहा, "तूने इसे देखा तो था । नीचे आकर, इसे देखकर, तू पंजों पर खड़ा-खड़ा नाचने लगा था !"

"मैंने नाचते-नाचते क्या कहा था ?" जैस ने पूछा । "मैं चुप ही तो नहीं रह गया हूँगा !"

"नहीं, जैस," एलिज़ा बोली, "तू चुप नहीं रहा था !"

"मैंने क्या कहा था ?"

"मुझे याद है," एलिज़ा ने कहा, "तूने कहा था, 'नाश्ते के लिए क्या बनाया है ? इतनी भूख लगी है कि सड़ा हुआ उल्लू तक खा जाऊँगा !'"

जैस अब भी कुछ क्षण पंजों पर खड़ा हो नाचा । "अच्छा," वह बोला, "तब भी कुछ बात बनी । सड़े हुए हंस से सड़ा हुआ उल्लू कहना तो अच्छा ही है !"

कुछ बात तो सचमुच ही बन गई थी और वह सुनकर अप्रसन्न भी नहीं हुई थी । उसने नाश्ता मेज़ पर रख दिया था, जैस ने नाश्ते की प्रशंसा की थी । अचार और मुरब्बे के लिए कौन-कौन से फल लाने हैं इस विषय में एलिज़ा से बात करता रहा था । यह भी कहा था उसने कि दिन में बहुत गरमी होगी । परन्तु नाश्ते के पश्चात् वह गुलदस्ता उसे तुच्छ लगने लगा था और उसकी प्रसन्नता भी कुछ कम हो गई थी । उसने देखा था कि एक टूटी हुई चिमनी के अतिरिक्त वह कुछ भी नहीं है ; हंस और वह रंग—और पवन भी नहीं बह रहा है उस चित्र में, वह तो उसकी कला का एक ढंग मात्र है और कोई भी व्यक्ति यह बात स्पष्ट देख सकता है । उसने गुलदस्ता फिर भंडार में रख दिया था । अलमारी के ऊपरवाले खाने में उसे रखा देख वह सोचती कि उस आध घंटे के लिए वह किस प्रकार उसके लिए न केवल शान्ति और सौन्दर्य का प्रतीक ही बन गया था, बल्कि सूर्योदय से पहले

का एलिज़ा का समस्त सुख, शान्ति और सौन्दर्य ही अपने में सँजो सका था—वह सुख जो उसे बच्चों का मुख देखकर, पक्षियों का जागरण गीत सुनकर हुआ था !

एलिज़ा ने दीर्घकाल तक उस गुलदस्ते को फिर हाथ ही नहीं लगाया था। जो बच्चों का मुख उसने उस दिन देखा था वह अब जागृत उसके सम्मुख था और बच्चों की आवश्यकताएँ अब यथार्थ थीं और उसे चौबीसों घंटे केवल मई के सवेरे और पतझड़ की संध्याओं में ही नहीं, व्यस्त रखती। उसकी इच्छानुसार घर साफ-सुथरा रहता और कुर्सी से उठकर द्वार खोलते ही वह कमरों को देखकर बार-बार आश्चर्यान्वित हो उठती—कमरे फलेफूले वृक्षों की भाँति पेड़ों की नग्नता से कोसों दूर थे।

प्रायः वह गुलदस्ते के विषय में सोचती। परन्तु ग्रीष्म के उस प्रभात की भाँति दूसरा कोई भी क्षण उसके जीवन में नहीं आया और उसे सदा ही समय का अभाव रहा। तब भी, वह उस चित्र को पूरा करने की बात सोचती, चाहती कि पहले हंस के पास दूसरा हंस भी बना ही दे। कभी ऐसा भी होता कि उसे यों अपूर्ण देखकर उसे मानसिक क्लेश हो जाता, उसे लगता कि उस चित्रित चिमनी से भी अधिक महत्त्वपूर्ण वस्तु से उसने अपना मुख मोड़ लिया है·····कि सब बच्चे, जैस, घर, उसका गिरजाघर तक भी उस चिमनी के प्रति उदासीनता दिखलाने का पर्याप्त कारण नहीं बन सकते·····कि उसके जीवन में उस गुलदस्ते का महत्त्व उसकी समझ से अधिक ही कुछ है !

यह होते हुए भी वह फूलदान, अपूर्ण, वर्षों पड़ा रहा। तब नवम्बर में, छोटी साराह की मृत्यु के पश्चात्, एलिज़ा ने उसे अल्मारी से निकाला और आग के बहुत ही समीप बैठकर उसने पहले हंस का साथी दूसरा हंस बनाना आरम्भ किया था ! उस दिन सुबह से ही वर्षा हो रही थी, परन्तु भोजनोपरान्त बरफ गिरने लगी थी, धीरे-धीरे, जिससे उसे बरफ में खेलते लड़कों की याद हो आई; और वह निर्जीव-सी होकर छोटी साराह की क़ब्र और वर्ष के अंत की बात सोचने लगी थी। बड़ा ही कष्टदायी दिन था वह ! गहन शोक के वे पहले दिन, जब उसे लगता कि उसके अपने ही शरीर का एक अंग काट दिया गया है, बीत चके थे, परन्तु फिर भी उसका मन बोझिल-सा रहता; और तब उसे लगा कि गुलदस्ते का चित्र पूरा करने के लिए वह दिन भी विचित्र ही था।

यदि छोटी साराह जीवित होती तो वह उसके पास खड़ी होकर पूछती, "क्या तू चिड़िया बना रही है, माँ ?" और दूसरे हंस के वक्ष का उभार रेखांकित करते हुए उसने सोचा, मैं उसे कभी नहीं खो सकती ! जिस दिन

उसने गुलदस्ता बनाना आरम्भ किया वह सुबह उसे याद हो आई; वह सुख और वह सुख की झलक भी याद आई कि जिसे देखकर उसने समझा था कि सारा जीवन केवल सुख ही सुख होगा—अनन्त, निर्विघ्न, सुख ! और आज सब कुछ कितना भिन्न लग रहा था, न झलक थी कोई, और ना ही आगामी सुख-संतापों के विषय में कोई संदेह; परन्तु फिर भी वह दूसरा हंस बनाने में एक सुख मिल रहा था, वह हंस कि जिसका साथी वर्षों से उसकी बाट देख रहा था; और यह मान लेने में भी एक प्रकार का संतोष था कि चित्र के मेघों को चलायमान करनेवाला पवन भी यथार्थ ही है, तूलिका का धोखा ही नहीं है !

परन्तु वह दूसरा हंस कभी पूरा न बना पाई थी । एक छाया, एक रेखामात्र बनकर रह गया । ज्योंही उसने सफ़ेद रंग भरना आरम्भ किया था कि जैस, बरफ में भीगा, नंगे सिर अन्दर आ गया था ।

"एलिज़ा," वह चिल्लाया था, "यह मेरी सहनशक्ति के बाहर है !"

उसने अपनी तूलिका एक ओर रखकर, जानते हुए भी पूछा था, "क्या है, जैस ?"

"साराह की क़ब्र !" जैस बोला, "बरफ में दबी। और वह बरफ से इतना प्यार करती थी । तुझे तो पता है वह कितना प्यार करती थी, एलिज़ा ?"

और तब उसने वह किया जो कभी—उससे पहले या फिर उसके बाद—न किया था । घुटनों के बल बैठकर, अपना सिर एलिज़ा के घुटनों पर रख वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लग पड़ा था ।

"एलिज़ा," उसने पूछा था, "तुझे याद है न कि पहली बात जो साराह ने की थी वह बरफ के ही विषय में की थी ?" उसके घुटनों से सिर उठाकर वह खिड़कियों के बाहर देखने लगा था । "वहाँ खड़ी थी वह," उसने कहा था, "अपने छोटे-छोटे हाथों से तालियाँ बजा-बजाकर, पुकार-पुकारकर कह रही थी, 'सुन्दर फूल, सुन्दर फूल !'"

एलिज़ा भूली नहीं थी । वे शब्द तो सारे दिन उसके मस्तिष्क में घूमते रहे थे । "नहीं, जैस," वह बोली, "मैं भूली नहीं हूँ !"

"तब तू यह खेल कैसे खेल सक रही है ?" वह चिल्लाया था, "अपने रंगों का खेल ? और बरफ से दबी साराह की क़ब्र !"

एलिज़ा ने उसके बिखरे बाल सँवारते हुए कहा था, "मैं भगवान को भी नहीं भूल सकी हूँ, जैस !"

कुछ समय पश्चात् जैस शान्त हो गया था और कुछ देर आग

सेंककर पशुओं को चारा देने चला गया था। तब एलिज़ा ने गुलदस्ते को वैसा ही अलमारी में रख दिया था। एक हंस, दूसरा हंस की छाया मात्र, पंखहीन, स्वप्नवत्! ऐसे ही रखा रहने दो; उसने सोचा था। सम्भव है इससे अधिक कुछ वह अब बना ही न सके, और अपने अन्य स्मृतिचिह्नों में उसे भी स्थान देकर वह संतुष्ट हो चुकी थी!

वर्षा अभी हो ही रही थी, और जैस गुलदस्ते की बात भूल चुका था। "एलिज़ा," अपने पहले ही विचार में डूबा, वह बोला, "ऋतुएँ ही नहीं, स्थान भी वर्षा की आवाज़ से पहचाने जा सकते हैं। "वर्षा जंगल में," वर्षा और भूगोल के बाहुल्य से आत्मविभोर हो कर वह कह रहा था, "कैसी सुनाई पड़ेगी? या पहाड़ की चोटी पर, नंगी चट्टानों पर गिरते हुए कैसी सुनाई पड़ेगी? या समुद्र में? पानी के ऊपर पानी की मार! फिर वही बात हो गई, हम कभी जान ही न पाएँगे!"

एलिज़ा ने ध्यान न दिया। वह तो आनन्द से अपने घर में बैठी थी!

जैस फिर खिड़की से बाहर देखने लगा। उसने इण्डियाना की उस वर्षा से मन ही मन समझौता कर लिया। "दौड़ना पड़ेगा," वह बोला, "गाएँ भूखी पुकार रही हैं!"

जाने से पहले उसने एलिज़ा को प्यार से अपनी बाहों में समेट लिया, उतने ही प्यार से जितना कि उस मिलन में हुआ करता था जो किसी यात्रा के पूर्व होता, और एलिज़ा ने अपने और जैस के बीच उस गुलदस्ते को उन दोनों को पृथक् करते हुए पाया! और उसे लगा कि यदि देखा जाए तो वह उन दोनों के बीच एक कड़ी भी तो था। जब वह चला गया तो उसने उसे अलमारी में रख दिया, परन्तु अपनी साँध्यचर्या में व्यस्त वह फिर भी अपने वक्ष पर उस फूलदान का भार अनुभव कर रही थी, मानों वह अभी भी उसके हाथ में हो!

रोशनी

मई का एक प्रभात, सूर्योदय से कुछ पहले। साधारण से, बुझते से प्रकाश वाले दिन की सुबह थी। फिर से धूप और पत्तों के बाहुल्य ने दीवारों और खेतों की शुष्कता को भर दिया था।

जैस पलंग की पट्टी पर बैठा ऊनी जुर्राब पहन रहा था। नीबू के रस मिले पानी के रंग जैसी धूप को पूर्वी खिड़कियों से छन-छनकर आते वह देख रहा था। जैस के मस्तिष्क में अपने और संसार के विषय में विचित्र प्रश्न उठ रहे थे—उस समय वह पाँव को जुर्राब में घुसते देख रहा था, और उसकी आँखें सूर्य को फर्श पर उस पानी का घड़ा रखते देख रही थीं। लो, वह दरी के ऊपर घड़ा रख दिया गया!

"किसी बड़े कानोंवाले जानवर जैसा लगता है," घड़े के आकार को देख कर वह बोला।

एलिज़ा के रक्त में भी वह मई का प्रभात बह रहा था, परन्तु वह कुछ ध्यान न दे रही थी। अपनी जुर्राबें पहनकर उसने उन्हें लाल रेशमी फीतों से बाँध दिया। क्वैकर होने के कारण वह गूढ़े रंगों द्वारा पुरुषों को आकर्षित करने के विरुद्ध थी, परन्तु तीन फ्रॉकों के नीचे, घुटनों से ऊपर जहाँ केवल भगवान ही उस रंग को देख सकता था, वह लाल फीतों का प्रयोग कर लिया करती थी।

"यह व्यर्थ की बातों का समय नहीं है, जैस," वह बोली। "रात को सोने से पहले जो-जो काम भी करने हैं वे सब मेरे मस्तिष्क में घूम रहे हैं। खाने के कमरे से रसोई, रसोई से खाने के कमरे में!" वह पलंग से उठकर कमरे के मध्य में चली आई और कुछ उछली!

"आह्लादित?" जैस ने पूछा।

"अनुग्रहीत," बिना सोचे ही उसने कह दिया। "भगवान की सृष्टि को देखकर उसकी प्रशंसा कर रही हूँ। कितना आराम है। रात को सुन्दर, वृक्षों के बीच से चमकती हुई, और कितनी नवीनता लिए है यह सृष्टि!"

"विचार तो यह मेरा था!" जैस ने कहा।

"तू तो एक यन्त्र-मात्र है, भगवान ने तुझे चलाया!"

जैस अब इस बात का आदी हो गया है। एलिज़ा ने जैस के सुकृतों का श्रेय सदा ही भगवान को दिया है।

एलिज़ा सब कपड़े पहन चुकी थी, केवल एक फ्रॉक पहनना रह गया था। वस्त्र और माँस में पहचान करना कठिन था। दोनों का ही बाहुल्य था उसके शरीर में। "हाथ पैर हिलाना आरम्भ कर, जैस," वह बोली, "बीस—सम्भव है तीस व्यक्ति भोजन करने आएँगे और तू सुबह छः बजे बैठा मक्खियाँ मार रहा है!"

जैस उसे देखकर मुस्कराया। तरुणाई में स्त्री को पादड़ी बना देना ही सर्वोत्तम है! इससे बातें बनाना तो बन्द नहीं हो जाता, परन्तु बातें कुछ अच्छी हो जाती हैं और बातों का बोझ भी कुछ कम हो जाता है। उसकी लड़कियों की रुचि इस ओर न थी, सोचकर उसे बुरा लगा। उसने अपना रात का कुरता उतार दिया। उसका शरीर उस कुरते से अधिक गरम था।

"सूर्य से भी अधिक ताप है मुझमें!" उसने कहा।

एलिज़ा ने उसे बात करते रहने के लिए प्रोत्साहित न किया। जैस उसकी माँसल अँगुलियों को उसके अभी तक काले बालों को गूँथते देख रहा था। गोधूलि में पक्षियों की भाँति! उनके विषय में यह उसका अपना विचार था—वह आनन्दप्रद विचार जो भगवान ने उसे दिया! जब तक उसके कंधे और उनके ऊपर एक मस्तिष्क है उसे कभी विचारों की कमी न रहेगी! वह सूर्योदय से रात्रि तक विचारों से ही भरा रहता। भगवान ही वे विचार उसे देता या नहीं यह तो वह नहीं कह सकता था, परन्तु वह उनके लिए अनुग्रहीत अवश्य था।

अपने शीशे में एलिज़ा ने उसे नग्न खड़े पाया! बाल गूँथते-गूँथते वह रुक गई।

"इस आयु में!" वह बोली।

जैस मानों जीवित हो उठा। "पहले कभी तो मेरी यह आयु नहीं थी!" उसने शिकायत की, "तू तो कभी अपने शरीर पर पड़े वर्षों के प्रभाव को देखती तक नहीं।" यथार्थ ही कहा था जैस ने। सोते-जागते, एलिज़ा चाहे कुछ भी क्यों न करे, वह सुन्दर ही दिखाई पड़ती। बच्चा उसकी गोद में हो, या वह उसकी पीठ में तेल लगा रही हो, उसका मुख प्रेम और सौन्दर्यपूर्ण लगता! चालीस वर्षों तक ऐसा मुख सम्मुख रहे और मस्तिष्क में पटाख़ों की तरह विचार चलते रहें तो फिर मनुष्य को और क्या चाहिए? वह, विचारमग्न, कुरते के बटन लगाने लगा।

एलिज़ा का मुख लज्जा से रक्ताभ हो उठा । अपनी प्रशंसा सुनने का अभ्यास उसे न हो पाया था—और पिछले चालीस वर्षों में प्रतिदिन दो बार वह प्रशंसा सुनती आई थी ! प्रशंसा सुनकर वह अप्रतिभ हो उठती—मानों सूर्य और चन्द्र की भाँति उसकी प्रशंसा करना भी असंगत हो ! "अपना धुला हुआ कुरता अभी मत पहन," उसने तीव्रता-से कहा, "शाम को पहनना—इतना काम जो करना है—हाँ, यदि बैठे-बैठे केवल रोशनी की ही बाट देखनी है तो बात दूसरी है !"

जैस ने धीरे से वह कुरता उतार दिया । "रोशनी," वह बोला, "तो, तू रोशनी कहती है उसे ? बाइबिल की सी बात लगती है । आख्यान, आवागमन, प्रकाश ! लगता है कि मानों इसमें भगवान का ही हाथ हो !"

एलिज़ा चिढ़ गई । "भगवान का हाथ नहीं है कहकर तो तू अभागा ही लगेगा ! पर तू इसे और क्या कहेगा, जैस बर्डवल ? तूने कोठड़ी में गैस की मशीन लगाई है—आज उससे बत्तियाँ जलाई जाएँगी, पड़ोसी आमंत्रित हैं । इसे तो रोशनी ही कहना पड़ेगा ! केक, गोले की मिठाई और आइसक्रीम तो भोजनोपरान्त ठीक रहेंगी, न ?"

"कम है, कम है !" जस बोला, "बिस्कुट तो हैं ही नहीं !"

एलिजा ने अपनी चिन्तित आँखें पति के मुख पर लगा दीं और उसके सिर को हिलते देखा ।

"बिस्कुट तो साधारण-सी चीज़ है," वह बोली ।

शयनकक्ष का द्वार बिना खटखटाए ही किसी ने खोला । द्वार के बाहर एक आकृति, शरीर-निर्माण के सभी मापदण्डों से अधूरी, अध-बनी-सी, खड़ी थी । मुख उसका न हब्शियों-सा था और ना ही इतना साँवला था कि किसी और जाति का कहा जा सके । मूँछें इतनी बड़ी कि स्त्री न कहा जा सके और उरोज इतने समुन्नत कि पुरुष भी न माना जाए !

"पादड़ी," वह बोली, "माँस कढ़ाई में चढ़ चुका है और प्रभात दिन में; और शीघ्र ही दिन बहुत चढ़ जाएगा !"

"बहुत सुन्दर, इमानुएला," एलिज़ा बोली, "तेरी सर्वोत्तम कृति है यह ! हम नीचे आए ही समझो ।"

संतुष्ट हो, शरीर से पृथक् दिखनेवाले घुटनों को हिलाती इमानुएला चली गई ।

"इस औरत की मुझे एक भी बात पसन्द नहीं," जैस ने कहा । "सदा तुक मिलाती रहती है । बिना तुक-बन्दी किए कोई बात ही नहीं कर सकती !"

नाश्ते से पहले की प्रार्थना के लिए बाइबिल उठाए एलिज़ा कमरे से निकल रही थी। "बीस वर्ष के पश्चात् अब तो तुझे संतुष्ट हो जाना चाहिए, जैस !"

"मेरा दिमाग़ अभी तक ठीक है," जैस बोला, "है तो आश्चर्य की ही बात, बीस वर्षों के पश्चात् !"

एलिजा आहिस्ता चलती सीढ़ियाँ उतर रही थी, बोली, "तू अपना ठीक दिमाग़ लेकर नाश्ते की मेज़ पर आजा ! दिमाग़ को कुछ माँस खिला ! इसे लेकर अपने आप को सँवारता ही न रह जा !"

कपड़े पहन कर जैस तैयार खड़ा था, परन्तु नीचे नहीं जा रहा था। दिन के छोर पर इस प्रकार खड़ा होकर उसे उतना ही आनन्द आता जितना कि कूदने से पहले तालाब के किनारे खड़े होकर आता है ! दिन भर में क्या होजाए इसे कौन जानता है ? नीचे जाते ही न जाने कौनसी विपत्ति उस पर आ पड़े। न जाने कौनसा सुख ! इस समय तो वह दोनों ही ओर से निर्लिप्त मौन खड़ा था, बिना रस्सी की घंटी की तरह ! मौन·····मौन ! इस समय, सुबह के छः बजे, जबकि सूर्य की रक्ताभ रश्मिएँ सलेटी रंग की दरी पर पड़ रही हैं और बिछौने अभी उठाए नहीं गए हैं और रात्रि से बिदा नहीं ली गई है, ६२-वर्षीय जैस बर्डवल, आत्मविभोर, सभी बातों से निर्लिप्त खड़ा है !

"मस्कैटैटक नदी के किनारे बने, सफेद लकड़ी के घर में मई के इस सुप्रभात में अनन्त का स्वाद ले !" वह बोल उठा, "परन्तु स्वाद लें तो कैसे—अनन्त तो निस्सीम है और उसका एक कण भी व्यर्थ न जाना चाहिए !"

उसकी आँखें कमरे से कहीं दूर कुछ देख रही थीं—और अँगुलियों से वह अपनी मूँछें उमेठ रहा था। तब वह दक्षिण की खिड़कियों के बीच रखी अल्मारी की ओर गया, और जैनी द्वारा लिखित 'विलियम पेन की जीवनी' नामक पुस्तक निकाल ली। सदा जेब में रहने वाले पेन्सिल के टुकड़े को निकाल, उसने पुस्तक में लिखा, "जीवन में अनंत की अनुभूति अधिक से अधिक तत्वों का अध्ययन करने से आती है !"

वाक्य को उद्धहरण-चिह्न लगाकर, उसने पार्श्व में लिख दिया, "डा० सैमुअल जॉनसन के लेखों से !" जैस की पुस्तकें इस प्रकार के उद्धहरणों से भरी पड़ी थीं। अपने ही विचारों को वह यह रूप दे दिया करता था।

जैस पाखंडी नहीं था; वह एक आइरिश, धर्मभीरु व्यक्ति था। भगवान जो सुन्दर विचार उसे देता वह उन्हें लिख लेता। और इस कारण वह पेन्सिल का एक टुकड़ा अपनी जेब में डाले रहता। परन्तु यह कहते कि ये

विचार उसके अपने हैं उसे लज्जा आती—यदि लोग यह समझने लगें कि वह अपने आप को जॉन ग्रीनलीफ या हैनरी वैडस्वर्थ आदि बड़े लेखकों की श्रेणी में लाना चाहता है, तब तो जैस लज्जा के मारे मर ही जाएगा ! अस्तु, उसकी पुस्तकें चार्ल्स लैम्ब, जॉन मिल्टन और जॉन वूलमैन के उद्धहरणों से भरी हुई थीं। और यदि कभी कोई ऐसा विचार आ जाए जिसे वह समझता कि किसी भी लेखक ने न लिखा होगा तो वह उसे "अज्ञात" कहकर लिख देता !

"जितना चाहे अध्ययन करो," उसने अपने आपसे कहा और बाट देखते दिन से भेंट करने नीचे उतर गया ।

रात की राख को समेटती, झाड़ू हाथ में लिए, जेन अँगीठी के पास झुकी खड़ी थी, परन्तु झाड़ू दे नहीं रही थी ।

"तो, पुत्री !" जैस ने कहा ।

"नमस्कार, पा !" जेन बोली ।

"झाड़ू हाथ में लिए तो तू जादूगरनी-सी लगती है—झुकी हुई, उड़ने को तैयार !"

"जादूगरनी !" जेन बोली, और कातर-सी होकर अपने बापको देखती हुई वह तिनुककर खड़ी हो गई । और फिर आँसू उमड़ आए उसकी आँखों में और बहते-बहते मुँह के पास जा कर अटक गए !

"अरे, बाप रे !" जैस ने लम्बी साँस लेते हुए कहा, "पन्द्रह वर्षीय बच्चों से तो बात करना ही मुसीबत है । वे तो बाइबिल की बात पर भी बरस पड़ेंगे !"

जादूगरनी कहते ही यदि वह रो पड़ी है तो उसे मनाने के लिए जैस ने दूसरी बात की, "तेरे ओठ में तो बुखार की फुड़िया निकली लगती है, जेन ?"

सुनकर जेन फफक-फफककर रो पड़ी, झाड़ू फेंककर बोली, "ओह, पा !" और भागकर रसोई में चली गई ।

जैस ने सोचा, लो ! हो गया दिन का आरम्भ और मैं काफी आगे बढ़ चुका हूँ ! उसने भी रसोई में प्रवेश किया !

जेन हाथों में मुँह छिपाए रो रही थी । एलिज़ा ने आग्नेय नेत्रों से उसे देखकर कहा, "उत्सव के दिन अपनी लड़की के मुख को लकर चिढ़ाना क्या शोभा देता है ?"

"चिढ़ाना !" जैस स्तम्भित हो गया । मुख के दोषगुण लेकर तो वह

अपने शत्रु को भी कभी नहीं चिढ़ाएगा। मुख तो प्रत्येक व्यक्ति का अपना निजी क्षेत्र है।

"पहले तो उसे जादूगरनी कहा—फिर उसके ओठ की फुड़िया पर टिप्पणी की!"

जादूगरनी—बूढ़ी, झुकी हुई, कुरूप! बुखार की फुड़िया—पहाड़ जैसा एक धब्बा जो मीलों दूर से दिखलाई पड़े और जो कोढ़ जैसा ही घृणाजनक है! पन्द्रह वर्ष का बनने के लिए तो, जैस ने सोचा, मुझे मीलों दूर लौटना पड़ेगा और उससे भी सम्भव है कुछ न हो सके क्योंकि मैं एक स्त्री नहीं हूँ!

वह मेज़ के पास आकर बैठ गया। "कभी 'रूप का जादू' भी सुना है, जेन?" उसने पूछा। जेन ने अपना संत्रस्त मुख ऊपर उठा लिया। "ऐसा रूप जिसे देखकर जादूगरनी का धोखा हो जाए! अब की बात तो मैं नहीं कहता—पर जब मैं जवान था तो किसी स्त्री को जादूगरनी कह देने से सुन्दर बात कोई हुआ ही नहीं करती थी। तेरी माँ जादूगरनी थी! तू क्या कभी कविता नहीं पढ़ती, जेन? मधुमक्खी द्वारा काटे हुए ओठ? एक बुखा—तेरे ओठ जैसी स्थिति तो बहुत सुन्दर समझी जाती है!"

जेन के आँसू सूखते जा रहे थे। एलिज़ा की आँखों ने भी आग बरसाना बन्द कर दिया था। वे चारों प्राणी—जैस और एलिज़ा, जेन और एमानुएला—नाश्ता करने बैठ गए। नौकर पहले ही खा चुका था।

"आओ, भगवान को धन्यवाद दें," जैस ने कहा, और उनके मस्तक मौन प्रार्थना में झुक गए।

जैस ने ईश्वर का ध्यान किया, परन्तु उससे माँगा कुछ भी नहीं। एलिज़ा ने अपने भगवान से भेंटों और आवश्यकताओं की बात की। एमानुएला मौन, भगवान के सुनहले सिंहासन के आसपास मँडराती रही! जेन ने प्रार्थना की, "मेरी फुड़िया ठीक करदे, मेरी फुड़िया ठीक करदे!" और, क्योंकि वह समझदार और झगड़ालू प्रकृति की नहीं थी, उसने कहा, "या ऐसा करदे जिससे यह फुड़िया किसी को भी दिखलाई न पड़ सके! तू सर्वशक्तिमान् है, भगवान, यह फुड़िया आज, रोशनी के दिन, अदृश्य हो जाए!"

तीनों ने अपने सिर उठा लिए, परन्तु जेन अभी सिर झुकाए ही थी। एलिज़ा ने कहा, "माँस ले ले, जेन!"

प्रार्थना से मन को शान्ति मिलती है, परन्तु बीस-तीस अतिथि भोजन

को निमंत्रित थे और शान्ति को तो रोटी की भाँति चबाया नहीं जा सकता !

जेन ने भी अपना सिर उठा लिया और उन लोगों को देखने लगी। उसने देखा कि कोई भी उसकी फुड़िया की ओर नहीं देख रहा। सम्भव था कि वह अदृश्य ही हो गई हो। उसने माँस, बिस्कुट इत्यादि ले लिए और खाने लगी।

एलिज़ा ने उस दिन के विभिन्न कार्यों का किसी सेनापति की भाँति सिंहावलोकन किया : क्या-क्या करना पड़ेगा, कहाँ-कहाँ जाना पड़ेगा, कौन, कहाँ रहेगा और क्या-क्या करेगा ! उसने फिर कहना आरम्भ किया : एमानुएला, तू आज रसोई से बाहर पाँव न निकालेगी। सब कुछ तुझे ही पकाना पड़ेगा। मुर्गे और टाँगें अब चढ़ा दे। मोटे माँस के मुर्गे हैं वे। केक और खीर मैं खुद बनाऊँगी।"

बोलना ही चाहती है दिखलाने को एमानुएला ने एक लम्बी साँस ली। "पादड़ी ! चाहे तेरी पीठ रहेगी, वस्तु न फिर भी कोई जलेगी !"

जैस ने भी खँखार कर कहा :

"एमानुएला, बस बहुत हो चुका !

गद्य से कब तक घृणा करेगी ?"

"जैस, जैस," एलिज़ा ने ताड़ना की। आज के दिन तुकबन्दी की होड़ वह इन दोनों में न होने देना चाहती थी। शाम तक ये दोनों यही करते रहते और जैस एमानुएला को हराए चला जाता ! और एमानुएला कुपित, हो, अपने कमरे में जा घुसती और सारा काम एलिज़ा को ही करना पड़ता।

"जेन, तू बिछौने ठीक करेगी, ताज़े फूल लाएगी, झाड़-पोंछ करेगी, मेज-कुर्सी लगाएगी और मेरे पास ही रहेगी; आज नदी किनारे जाकर मटरगश्ती नहीं होगी !"

"अच्छा, माँ," जेन ने कहा।

"तुझसे जो कह रही हूँ उसे तू लिखले, जैस !"

"नहीं तो," जैस बोला, "क्या पता सीटी की आवाज़ की तरह मेरे दिमाग़ से निकल जाए !"

"गोठ से कल का सारा दूध और अचारों के बरतन उठाकर ला। दूध जमाने के लिए बहुत-सी बरफ ला। दक्षिणी जंगल में जाकर देख यदि मेज़ के

लिए फूल हों तो ले आ । और गरम पानी से पीछे की सीढ़ियाँ धो डाल, तेरे पक्षियों का एक भी चिह्न वहाँ न रह जाए । बाहर जाकर—"

"अरे, ठहर," जैस बोला, "अरे ठहर ! जब इतना सब कर लूँगा तो आकर पूछ लूँगा !"

वे सब तीरों की तरह घर में फैल गए और भाग-भागकर काम करने लगे—और उन्होंने उस सुबह को अपनी कार्यपटुता से एक उत्सव में परिणत कर दिया । एलिज़ा और एमानुएला ने प्रारम्भिक भारी काम किए और जैस और जेन उन्हें छोरों पर से अलंकृत करने में संलग्न रहे। जेन काम करते-करते अस्पष्ट स्वर में गा रही थी —क्योंकि उसके ओठ में वह फुड़िया जो निकली हुई थी ।

मैं अजनबी हूँ, अजनबी
आया हुआ परदेश में !
घर दूर है मेरा यहाँ से
सीपियों के देश में !

उसकी ऊँची शोकार्त्त आवाज़ सुनकर जैस ने सोचा कि वह विश्वास भी करती है । इण्डियाना को अभी घर नहीं समझ पाई है ! तरुणों को तो जीवन भी एक चोट-सा ही लगता है । फरिश्ते के स्थान पर एक बूढ़े को बाप मानने की चोट ! ओसकण की बजाय माँस खाने की चोट ! और माँस में रुचि हो जाना ! सबसे बड़ी चोट यही है—अपने आप को इस संसार के अनुकूल हो जाते देखना !

फूल हाथों में उठाए, सावधानी से पग धरती जेन पीछे की सीढ़ियों पर आ गई । "देखो, पा, कितना सुन्दर है ।" वह चिल्लाई ।

जैस को कुछ अच्छे न लगे वे फूल। माँस रखने के पुराने बरतनों में सफेद फूल थे और चारों ओर लाल फूलों की एक पंक्ति थी ।

"अब नीले फूल चाहिएँ," जेन बोली, "या तो एक बड़ा फूल या चार छोटे नीले फूल । उन्हें सफेद फूलों के बीच लगा दूँगी । तब देखना, पा, कैसा सुन्दर लगेगा । सफेद, लाल और नीला ।"

जैस का दृष्टिकोण दूसरा ही था । नीली आँख में लाल डोरे ! लाल बीमारी का एक भयंकर केस ! सोचा तो उसने यही, परन्तु कहा कुछ नहीं ।

लाल, सफेद और नीला । यदि आयु अनुकूल होती तो उसके क्वैकर सिद्धान्त कहाँ जाते ? यदि वह तरुण होता तो क्या अपने विश्वासों के लिए लड़े बिना

रहता ? ऐक्य और दास-स्वातंत्र्य के लिए ? भगवान ने मुझे यह निश्चय करने का अवसर ही न दिया। परन्तु अब अपरिचितों के मुख से ये बातें, जिनमें कि उसका विश्वास है, सुनना अच्छा नहीं लगता। उसके पाँव के पास रखी ठंडे होते हुए पानी की बाल्टी में एक छायाकृति तैर गई।

एलिज़ा दौड़ती हुई सीढ़ियाँ उतरती आई। "ठंडे पानी से तो यह काम नहीं होगा, जैस," वह बोली।

"एक दिन ऐसा भी था," जैस ने उत्तर दिया, "जब कि सीढ़ियों पर से पक्षियों का मल धोने के विषय में कोई भी मत प्रदर्शन करना तुम्हारी शान के खिलाफ हुआ करता था!"

एलिज़ा ने, उस लड़की की याद कर, सिर हिलाया।

"क्या हम तब अच्छे थे, जैस ?" उसने पूछा, "जब हम तरुण थे ? जब हम फूल और मधुर शब्दों के अतिरिक्त कुछ भी न उगा पाते थे ? किसी चूहे को भी मरते नहीं देख पाते थे—पक्षी की तो बात ही क्या ? मुर्गी का अंडे देना अशोभन मानते थे ? अब मैं 'पक्षी-मल साफ करो' वैसे ही कह देती हूँ जैसे 'कुर्सी ले लो!' और संसार के किसी भी सौन्दर्य को देख अब मैं मुग्ध नहीं हो पाती—ना ही शब्दों से, जैस, जिस प्रकार कभी, 'जहाँ तक मनुष्य का प्रश्न है, उसके दिन तो घास जैसे हैं; खेत के फूल की तरह फूलता है वह।' सुनकर मैं रो पड़ी थी! क्या यह पाना है, जैस, या खोना ?"

छींटे न पड़े इससे उसने अपना सलेटी रंग का फ्रॉक ऊपर उठाया हुआ था।

"दोनों ही, दोनों ही!" झाड़ू पर झुका हुआ जैस बोला। इस रूप में उसने एलिज़ा को कभी नहीं देखा था। साधारणतया बिना किसी प्रकार के प्रश्नोत्तर किए वह अपने दोनों संसारों में आसानी से पैठ जाती थी—काम का संसार और प्रेम का संसार!

"दोनों ही," उसने फिर कहा, "बारी-बारी दोनों ही का स्वाद लेना तो जीवन है!"

एलिज़ा ने सिर हिलाकर कहा, "मै नहीं जानती!"

प्रभात की छाया लघुतर होती जा रही थी। रसोई के से तप्त एलिज़ा के मुख पर वृक्षों से छनकर आती सूर्य की रश्मियाँ खेल रही थीं। पश्चिमी खेतों से घोड़ों को सम्बोधित करती एनोक की आवाज़ आ रही थी। अपने लाल, सफेद और नीले में संलग्न, जेन उन्हें देखे बिना ही पास से निकल गई। एमानुएला रसोई में किसी भट्टी की तरह खटड़-पटड़ कर रही थी। दूर, किसी खेत में

एकाएक एक कुत्ता ऐसे भौंक उठा कि मानों किसी व्यक्ति को बहुत दिनों पश्चात उसने देखा हो ।

"मस्तिष्क," पति को लगा कि खोई-सी एलिज़ा ने कहा, "जागृत मस्तिष्क मृत्यु के विचार को सह ही नहीं पाता !"

"आवश्यकता नहीं," जैस बोला, "कोई आवश्यकता नहीं । यह बात मनुष्य की प्रकृति में नहीं है ।"

"हमें तैयारी तो करनी चाहिए !"

"यह तैयारी करना तो ही है," आकाश की ओर देखकर जैस ने उत्तर दिया ।

जेन ने अपना काम समाप्त कर लिया था । उसने कमरों में घूमकर, दरवाज़ों के सहारे झुककर, अपने आप को और उन कमरों की सुगढ़ सफाई को आज गैस की बत्तियों के प्रकाश में देखा, मानों उस रोशनी जैसा ही कौशल हो उसका भी । किसी सलवट को दूर करने या किसी फूल की गिरी हुई पंखुड़ी को उठाने वह कमरे में घुसती और फिर कमरे को मौन, बाट देखते देखते रहती !

उसने सुबह से ही शीशे में अपनी वह फुड़िया नहीं देखी थी । उसे विश्वास था अपने भगवान पर और उसे लगा कि वह फुड़िया अब अदृश्य हो चुकी है !

एलिज़ा ने कहा, "मुझे स्नान करना पड़ेगा ।" पहले से इस विषय में उसने न सोचा था; परन्तु अब उसे गरमी लग रही थी । रसोई के एक कोने में ही स्नान किया उसने, एमानुएला अपनी आँखें केतलियों पर लगाए रही !

दिन का प्रकाश पहाड़ों की चोटियों पर पहुँच गया । मेंढक सड़क के किनारे के गढ़ों में से भोजन ले घर की ओर चल पड़े । मस्कैटैटक प्रकाश हीन आकाश के नीचे लौहवत् बह रही थी । बैठक के परदे नदी की हवा से हिल रहे थे ।

एलिज़ा घबड़ा रही थी—जैसा कि प्रायः किसी भी काम से पहले वह घबड़ा जाया करती थी । उसे डर था कि कहीं माँस में नमक डालना ही भूल गई हो या मेज़ पर चम्मच ही न रखे हों ।

जैस अपने रविवासरीय कपड़े पहनने ऊपर गया ।

"अपना मैला कुरता फर्श पर ही न छोड़ आना," एलिज़ा ने उसे पुकारकर कहा ।

जैस ने मैला कुरता अलमारी में रख दिया । और बनियान और पतलून पहने-पहने उसके मन में आया : जा कर देख तो ले कि गैस की मशीन ठीक भी

काम कर रही या नहीं। अपने साठ साल के जीवन में वह देख चुका था कि इस संसार का संचालन किसी हँसोड़ी व विपरीत-मति शक्ति के हाथ में है, वह शक्ति जो रोशनी के निमंत्रण भिजवाती है और गैस की मशीन में गड़बड़ कर देती है! इस बात ने उस बूढ़े—जैस—को कटु नहीं बना दिया था—सावधान बनाया था। जब गड़बड़ हो जाती तो सूदूर कहीं उस हँसी को सुनने का प्रयत्न वह करता; और जब कार्य बिना किसी विघ्न के सम्पूर्ण हो जाता तो स्वयं हँसता।

संध्या के अन्धकार में वह छायावत् नीचे उतरा बैठक में जाकर बटन दबाया, गैस की 'हिश' सुनी और दियासलाई जलाकर ज्वाला भी देख ली!

एलिज़ा साबुन की सुगन्ध लिए आई। "यदि स्टीफन स्कूल से घर आया होता, आज हमारे पास होता, रोशनी देख सकता ....."

एलिज़ा के मौन ने कहा कि स्टीफन के आगमन से वह उत्सव सम्पूर्ण हो जाता। स्टीव उसकी सब से छोटी संतान है, जिसकी आँखों में वह मृतक साराह को देख पाती और जिसके बिना उसका कोई भी उत्सव-त्यौहार सम्पूर्ण न हो पाता।

"उसे अपनी पढ़ाई का भी तो ध्यान है!" जैस ने कहा।

एलिज़ा ने सिर हिला दिया। तब चिन्तित-सी इधर-उधर देखने लगी। ऐसे ही समय वह सोचती कि निमंत्रितों में से कोई भी नहीं आएगा!

"जैस," वह बोली, "यदि कोई नहीं आया तो? इतना कुछ पकाया है, उसका क्या करेंगे? मैं यही सोच रही थी कि खाने का क्या करूँगी!"

"तू क्या पिछली सब बातें भूल जाती है?" जैस ने पूछा, "गाड़ियाँ दस मिनट में पहुँचने ही वाली होंगी।"

"तब तू बनियान पहने क्यों खड़ा है? दस मिनट में सारा घर मेहमानों से भर जाएगा और तूने अभी तक कपड़े तक भी नहीं पहने!" उसने उसे सीढ़ियों की ओर धकेलते हुए कहा, "तुझे देखकर तो महात्माओं को भी क्रोध हो आए! जल्दी से कपड़े पहनकर आ।"

और बूढ़े जैस ने कपड़े पहने।

अभी वह अपनी रेशमी टाई बाँध रहा था कि पहली गाड़ी को सड़क से घर की ओर मुड़ते उसने सुना। गाड़ी के पहिए सड़क के पत्थरों पर से मेपल ग्रोव नर्सरी की धूलभरी राह पर आकर मौन हो गए थे।

नीचे उतरने से पहले वह सीढ़ियों पर कुछ दूर खड़ा रहा था। उत्सव की तैयारियों का गुब्बारा, जो अब बहुत फूल चुका था, बैठक में फूट गया!

उसने सोचा कि एक दूसरे से मिलकर लोग इतने प्रसन्न तो नहीं हो सकते! बल्कि, भेंट होने पर आनन्द की न्यूनता को छिपाने के लिए ही वे इतना अधिक शोर मचाते हैं। आधी संध्या जब बीत जाती है तब कहीं वे स्वाभाविक रूप में आ पाते हैं।

"जैस, जैस," एलिज़ा ने पुकारा, "बत्ती जलाने का समय हो गया। हम तेरी ही बाट देख रहे हैं।"

वह धीरे-धीरे नीचे उतर आया। ये पार्टियाँ उसे अन्धड़-सी लगतीं—आँखों और कानों को रुचिकर, परन्तु हृदय को छू तक नहीं पातीं।

"कैसे हो, जैस, कैसे हो?"

"यह गैस निरापद तो है न?"

"बहुत खर्चा हो गया होगा?"

"रोशनी, हैं? तो जलाओ न अब!"

जैस ने गैस की बत्तिएँ जला दीं। बैठक और सारे कमरे सूर्य के प्रकाश में फूलों की भाँति प्रदीप्त हो उठे। उस स्वर्णिम प्रकाश में पंखुड़ियों की भाँति चमक उठे। मानों चमत्कार हो गया हो कोई—चमत्कृत से सभी मुख ऊपर को उठ गए। और जंगल में स्थित इस घर का पाइपों में बहनेवाली गैस द्वारा प्रकाशित होना सचमुच ही एक चमत्कार था। लैम्प धोने नहीं पड़ेंगे, तेल से भरने नहीं पड़ेंगे, और फिर बाज़ार से लाते समय चीनी व अनाज पर तेल के छींटे भी नहीं पड़ेंगे।

"रोशनी," जेन धीरे से बोली, आश्चर्यचकित! ऊपर देखती हुई उसकी आँखों में वह पीला प्रकाश पड़ रहा था।

सभी तो वहाँ एकत्रित थे: ग्रिफिल्स, टूपर, पीज़ और आर्मस्ट्रौङ्ग; क्वैकर साधारण वेशभूषा में थे और कुछ सजे-धजे भी थे। माननीय गौडली और उसकी पत्नी रशब्रान्च से आए थे। कुछ शोकाकुल-सी दिखनेवाली सुन्दर लिडी किन्नामॉण्ड, जेन ने सोचा, कि वह उसके अनुपस्थित भाई स्टीफन के लिए विह्वल हो रही है! सड़क के कुछ आगे-से वेन्टर परिवार भी आया था। सभी उस कृत्रिम प्रकाश में साधारण वार्तालाप में निमग्न थे; कभी-कभी वे खानगृह की ओर भी चले जाते जहाँ मेज़ पर भोजन सामग्री लगी हुई थी।

रसोई में प्लेटों में भोजन लगाने की भीड़ थी, परन्तु एक ही मिनट में यह

काम भी हो गया, और एमानुएला सुचारु ढंग से सजी हुई प्लेटें लिए खानगृह में पहुँची। द्वार पर खड़ी हो कर, उसने घोषणा की, "भाइयो, है भोजन तैयार !"

अट्ठाईस व्यक्ति खाना खाने बैठे, बूढ़े और जवान। बूढ़े जिन्हें भोजन में रुचि थी, और जवान और आयु में मध्यवर्गीय, जिनका हृदय अभी भूखा था और रोटी और पत्थर जो भी मिल जाए पेट में डाल लेते और जिनकी आँखें देखने और खोजने में व्यस्त थीं।

एलिज़ा ही एक क्वैकर पादड़ी थी वहाँ, परन्तु उस समय की प्रार्थना करवाना केवल पुरुषों का अधिकार माना जाता था। इस प्रकार के उत्सवों को छोड़कर, जहाँ दूसरे गिरजों के अनुयायी भी होते, प्रार्थना मौन ही हुआ करती।

जैस ने आँखें बन्द कर कहा, "हे परमपिता, भोजन और मित्रों के लिए हम तुझे धन्यवाद देते हैं। आमीन !" इससे पहले कि तरुण आँख चुराकर देखना आरम्भ करें प्रार्थना समाप्त हो चुकी थी !

भोजन के पश्चात् कुछ देर शान्ति रही। पुरुष फसलों की बातें करने लगे। स्त्रियों ने बरतन साफ करने आरम्भ कर दिए और कोई वस्तु नष्ट न हो जाए इस बहाने कुछ-कुछ खाना भी आरम्भ कर दिया !

वह क्वैकरों का घर था और भोजनोपरान्त नृत्य का प्रश्न ही नहीं उठ सकता था—परन्तु गीत तो गाए जा सकते थे; नाच चाहे न हो सके !

जैस बाहर चला गया; वह कुछ दूर से अपने सुप्रकाशित मकान को देखना चाहता था। "मेरे प्रेमी को बुलाओ।" गीत चल रहा था और उसे लगा कि जेन की उत्फुल्ल, प्रश्नमय आवाज़ सबसे ऊपर उठकर सुनाई पड़ रही है। पास ही एक छोटी-सी पहाड़ी थी, वह वहाँ ही जा पहुँचा और घर की ओर देखने लगा।

पहाड़ी से उसका घर एक प्रकाशपुंज की भाँति दिखलाई पड़ रहा था। रात सघन न थी और प्रकाश की स्वर्णिम किरणें खुली हुई खिड़कियों से निकल कर अन्धकार को चीरती हुई पृथ्वी पर पड़ रही थीं। देखकर जैस को अच्छा ही लगा और सिर हिलाते हुए उसने सोचा कि अपना क्षणभंगुर जीवन लिए पृथ्वी पर विचरनेवाले मनुष्य ने यह काम साहस का किया है—अमर संतानों की भाँति इन गैस की बत्तियों के प्रकाश में बैठकर मुर्ग़ी-माँस खाना ! अपने भाग्य को देख यदि मनुष्य अन्धकार में ही पड़ा रहता तब भी कोई उसे बुरा न कह सकता। बड़ी बात है, उसने सोचा, बड़ी बात है !

पहाड़ी और बाग़ीचे के बीच बने जंगले पर वह झुक गया। बागीचे की ओर किसी की पगचाप उसने सुनी, वह जंगला भी किसी के बोझ से चरमरा उठा ।

"खूब, श्री बर्डवल," एक बारीक-सी आवाज़ आई, ? "आज तो पानी की तरह बहा दिया है !"

"पानी की तरह ?" जैस ने पूछा । सोचा कि सम्भव है वह प्रकाश के विषय में ही कह रहा हो, परन्तु बूढ़े एली ह्विटकोम्ब से वह पूर्णतया परिचित था ।

"पैसा," एली बोला, "पैसा !" और वह सरककर जैस के इतना पास चला आया कि मई की उस रात में उसके शरीर की गन्ध के अतिरिक्त बसन्त की कोई और सुगन्ध उस तक पहुँच ही नहीं पा रही थी ।

"बहुत-सा रुपया पानी की तरह नाली में बहा दिया है—वहाँ ! भोजन और प्रकाश जिसकी किसी को भी आवश्यकता नहीं ! तुम्हें क्या बुरा नहीं लगता ?"

इस बूढ़े को अपनी कृपणता पर लज्जा नहीं आती, जैस ने सोचा । वह ही क्यों उसकी ओर से लज्जित हो ? अपने जीवन में जैस पहली बार उस व्यक्ति से बात कर रहा था जो चालीस वर्षों से उसके पड़ोस में रह रहा था; और अभिवादन, विनय इत्यादि सब छोड़कर वह उसके मर्मस्थान में ही प्रवेश कर गया !

"पैसा ?" उसने कहा, "उस पर ही तेरा सर्वाधिक मोह है ?"

"नहीं," बूढ़े ह्विटकोम्ब ने कहा, "पैसा नहीं । जो भी हाथ में आजाए ! जिस वस्तु को भी तौला, गिना या मापा जा सके ! और कोई निर्भरयोग्य मापदण्ड तो है नहीं । देखो," उसने अपने शब्दों पर अपनी फूल जैसी हल्की अँगुली से जैस के कंधों पर टाप देते हुए कहा, "इस संसार का सबसे बड़ा नियम क्या है ? नष्ट हो जाना, नष्ट हो जाना ! वृक्ष नष्ट हो जाते हैं। पृथ्वी को नदियों का वेग बहा ले जाता है ! सूर्य का ताप घट जाता है । लोहे को जंग लग जाता है । मैं इस नियम के विरुद्ध चलता हूँ । मैं इसे रोकना चाहता हूँ । भगवान परवाह नहीं करता । नाश करना ही उसकी प्रकृति है । मेरी नहीं है । मैं बचाता हूँ । प्रत्येक वस्तु, ढेर की ढेर । सन्दूक, काग़ज़ ! मैं कोकोमे जितनी दूर स्थानों से भी काग़ज़ लाता हूँ । नाखून और रुपया भी ! मैं सभी कुछ बचाता हूँ । केवल एक मैं ही । इस लहर के विरुद्ध ! शेष तो सभी नाली में बहाए जा रहे हैं !"

अन्धकार में न दिखलाई पड़ने वाले बूढ़े की ओर देखकर जस ने कहा, "इस प्रकार तो कभी सोचा ही नहीं इस विषय में !"

"हाँ, तुमने नहीं सोचा । सोचा होता तो वह सब नहीं होने पाता !"

उसने घर की ओर उँगली उठा दी । "निगले जाओ, खाए जाओ । मुझे अपने घर जाना है," एकाएक वह बोला, "ऐसा दृश्य मैं कुछ क्षण ही देख सकता हूँ ! बुद्धि के एकदम विरुद्ध ! विदा, जैस बर्डवल । यदि दूसरी प्रकार काम करते, तो तुम संसार को लाभ पहुँचा सकते थे !"

पत्तों से पत्ते टकराने की आवाज़ों के बीच वह मई की उस रात में अपने घर की ओर चला गया ।

"एली," जैस ने पुकारा, "एली, क्या तू प्रसन्न है ?"

"यह दृश्य देखकर नहीं," उसने कहा, और जैस जान गया कि वह उसके घर की ओर देखकर ही यह बात कह रहा था, "परन्तु अपने घर पहुँचकर संसार की ध्वंसोन्मुख प्रवृत्तियों के विरुद्ध एक व्यक्ति जो कर सका है उसे देखकर मैं प्रसन्न रहता हूँ !"

जैस जंगला पकड़कर पीछे को झुक गया और बोला, "अच्छा, अच्छा !"

यहाँ कि जहाँ कभी जंगल इतने घने थे कि हवा से पत्ते न हिलें और तारे तक दिखलाई नहीं पड़ते थे, यहाँ कि जहाँ आदिवासी छिपे-छिपे घूमा करते थे, यहाँ ही वह, जैस बर्डवल, स्वच्छ नीलाकाश की छाया में खड़ा अपने बागीचे, अपने घर, अपने परिवार को देख रहा है !

घूमकर वह जिस दिशा में बूढ़ा एली गया था उधर ही देखने लगा । "वह भी सोचने का एक ढंग है, निस्संदेह," वह बोल उठा ।

वह घर आया और पिछली सीढ़ियों से अपने और एलिज़ा के कमरे में चला गया । एक लैम्प जलाकर जिस पुस्तक में सुबह लिखा था वही उसने निकाल ली । सुबह के उद्धहरण के नीचे ही उसने लिखा, "एक या अनेक, इससे कुछ नहीं होता । गहरे पैठना ही अनन्त है !"

बात सुन्दर ढंग से नहीं कही गई, उसने सोचा; परन्तु फिर भी पहली बार उसने अपना नाम उद्धहरण के नीचे लिख दिया । "विचार की गहराई ही अनन्त है !"—जैस बर्डवल !

उसने किताब बन्द कर अलमारी में रखदी, लैम्प की बत्ती कम कर दी और सामने की सीढ़ियों से नीचे उतर आया । बूढ़े आराम से बातें कर रहे थे, तरुण वर्ग गा रहा था ।

आह, जब मैं चला जाऊँ, तुम नहीं, तुम नहीं, आँसू बहाना !
आह, जब मैं चला जाऊँ, तुम नहीं मेरे लिए आँसू बहाना ।
जेन सीढ़ियों के पास आकर उसे देखने लगी ।
"कहाँ चले गए थे, पा ?"
"बाहर, रोशनी देखने—बाहर से ।"
"बाहर से कैसी लगती है, पा ?"
"एक वृह्दाकार जुगनू जैसी !"
"तुझे रोशनियों से प्यार है, पा ! तुझे भी ?"
"हाँ," जैस बोला, "बहुत कुछ कहा जा सकता है उनके पक्ष में !" और तब वह भी तरुणवर्ग के साथ गाने लगा ।
आह, जब मैं चला जाऊँ, तुम नहीं मेरे लिए आँसू बहाना !

बुढ़ापे में

बड़े दिनों में एलस्पथ, गार्ड और मैटी की पुत्री, जैस और एलिज़ा के पास कुछ दिनों के लिए आई। बड़े दिन का पेड़ बना लिया गया था। इसे बैठक की खिड़की में रख दिया गया था और पूर्णतया घरेलू बनने के लिए रस्सी व दूसरे साज-सामान की बाट देख रहा था! साज-सामान अभी वे लोग बना रहे थे। पेड़ों की छाल की रस्सी बटी जा रही थी, और सुतलियों को भी सजाया जा रहा था। लाल काग़ज़ की घंटियाँ भी लगाई जा रही थीं। नानी अपने हाथ से चमकदार रस्सियों को गोलाकार बनाने में व्यस्त थी।

बटते-बटते रस्सी में से एक प्रकार की आवाज़ कभी-कभी निकलती और एलस्पथ के हाथों की राह मौन उसके कानों तक पहुँचती; सुनकर उसे रोमांच हो आता। ऊँघते-ऊँघते, उसके नाना को, जो अपने पाँव आग के बिल्कुल समीप रखे बैठा था, यह आवाज़ सुनाई देती। जब ये आवाज़ें बहुत बढ़ जातीं तो वह बेचैनी से अपने पाँव की अँगुलियाँ हिलाने लग जाता। एलस्पथ को वह आवाज़ पास के किसी मकान से हवा टकराने की आवाज़-सी लगी, नानी के घर के कोनों से टकरानेवाली हवा की आवाज़-सी लगी, वृत्ताकार नानी का मकान जिसमें से ऊपर की मंज़िल का छज्जा अँधेरे में पहरे के कमरे की भाँति उठता दिखाई देता और वनों के पार उसके अपने घर की ओर ताकता रहता!

एलस्पथ अपनी माँ के विषय में सोचने लगी। घड़ी की टिक-टिक चल रही थी, टिक·····टिक! एलस्पथ को लगा कि कह रही है, सदा·····सदा! आग भभकती हुई जल रही थी; दादी की चूड़ियाँ खनक रही थीं। रस्सी बटने की आवाज़ आ रही थी।

"नाना," एलस्पथ ने पूछा, "वन में यहाँ से घर तक किस प्रकार के पेड़ हैं!"

दादा ने आराम से अपने पाँव हिलाए, और मानों उसे वन ही दिख रहा हो, इस प्रकार आग में देखने लगा! "देवदार," वह बोला, "शीशम, इलायची, चीड़ और शहतूत भी!" उसने कई और पेड़ों के नाम गिनाकर कहा, "परन्तु अधिकतर खेत ही हैं।"

दिन में तो खेतों की याद रहती, परन्तु रात को एलस्पथ केवल वह लम्बा,

सघन वन ही देख पाती जहाँ दोपहर में भी अन्धकार रहता था। "अनाज?" एलस्पथ ने पूछा ।

"हाँ, बहुत सा अनाज," उसके नाना ने कहा, "और घास ।"

फिर सब शान्त हो गया, केवल कमरे की वे एकाकी ध्वनिएँ ही सुनाई पड़ रही थीं : आग, हवा और घड़ी की आवाज़ें !

"बाग़ीचे भी तो हैं !"

"हाँ," कुर्सी पर झूलते हुए बूढ़े ने कहा, "बाग़ीचे भी हैं। कई बाग़ीचे हैं !"

आग में गोलाकार लहरें उठ रही थीं, नानी की चूड़ियाँ खनक रही थीं और वह पुराना घर भी बोल रहा था । एलस्पथ ने सूई से फूल के दो भाग कर दिए, अब वह फूल नहीं रह गया था । घड़ी कह रही थी : सदा····· सदा·····सर्वदा·····

"नानी," अपने आपको आश्चर्य में डालती, एकाएक एलस्पथ ने पूछा, "क्या तू मुझे प्यार करती है ?"

नानी हाथ के कपड़े की तह करती हुई बोली, "हाँ, बच्ची ! तुझे पता तो है, मैं तुझे अपने समस्त हृदय से प्यार करती हूँ ।"

एलस्पथ यह जानती थी । अपने बच्चों से भी अधिक, दादी प्रायः कहा करती थी । "उन दिनों मैं बहुत ही छोटी थी," वह कहती, "मुझे पता ही नहीं था कि बचपन कुछ ही दिनों में बीत जाता है ।" शोकाकुल-सी नानी अपना सिर हिला देती । "तेरी माँ, तेरे मामा जौश या लबान से भी अधिक," परन्तु उसने कभी "तेरे मामा स्टीफन से भी अधिक" नहीं कहा, क्योंकि चाचा स्टीफन से अधिक किसी को भी प्यार नहीं किया जा सकता !

घड़ी ने नौ बजाए । "काम समाप्त करने का समय हो गया," नानी ने अपने थके हुए, माँसल हाथों को खोलते बन्द करते हुए कहा । एलस्पथ ने अपनी नानी की ओर देखा । नानी उसके पास ही कहीं हो और स्वस्थ भी हो तो एलस्पथ ज्वारभाटे व पृथ्वी के फट पड़ने तक से नहीं डरेगी ! परन्तु जब नानी व्यथित हो उठती, जब वह कभी-कभी सुदूर अंतरिक्ष में देखकर कह उठती, "स्टीफन ! स्टीफन ! मेरे प्यारे बच्चे !" तो एलस्पथ का संसार डोल उठता । आज, एलस्पथ ने सोचा, नानी कुछ उदास है ।

"सोने से पहले तेरे बाल बना दूँ, नानी ?"

"नहीं, बच्ची, आज नहीं ।" नानी ने कहा ।

तब नाना ने कहा, "ऊपर जाने से पहले कुछ गाना हो जाए तो कैसा रहे, बेटी ?"

एलस्पथ जानती थी कि यह एक प्रकार का मज़ाक है—क्योंकि वह ठीक से बाजा बजा नहीं पाती थी—परन्तु उसे यह मज़ाक रुचिकर ही था। बहुत समय हुआ जो बाजा ऊपर रखा रहता था, वह अब झाड़-पोंछ कर, खुला हुआ बैठक में रखा किसी की अँगुलियों के स्पर्श की बाट देखता रहता था। जो गीत कभी उसकी माँ, मैटी ने बजाए थे उनका लिखित संगीत भी उसी के साथ चला गया था, और नाना अब केवल अपने कानों पर विश्वास कर धुनें बजाता, लिखित संगीत अब घर में न था। परन्तु नानी बाजे को श्रीहीन भी न छोड़ना चाहती थी, इसलिए लिखित संगीत की जगह अब लाल व सुनहरी जिल्दवाली एटलस ने लेली थी जो कि किसी भी संगीत की पुस्तक से अधिक सुन्दर लगती थी। एलस्पथ संगीत तो न बजा सकती थी, वह नक्शे बजाती थी !

"अब," वह कहती, "मैं अफ्रीका बजाऊँगी !" और तब वह सुदूर, अन्धकार-ग्रस्त अफ्रीका के विषय में सुनी हुई सभी कथाएँ बजाती, चित्र भी बजाती। वह बड़ी नदियाँ, हाथी के दाँतों की झलक, और अपने से भी बड़े भाले हाथ में लिए काले आदमी बजाती !

या एटलस खोलकर वह उत्तरी ध्रुव बजाती, और उसके हाथ नग्न, श्वेत उत्तरी प्रदेश और वहाँ चलनेवाली शीत पवनों को व्यक्त करनेवाले स्वर बाजे में ढूँढा करते।

और वह चीन देश भी बजा सकती थी, जिसकी ध्वनियाँ उसके मस्तिष्क में छोटी व कोमल बनकर समाई हुई थी : छोटी घंटियाँ, छोटे पैर, छोटे बरतनों से टकराते छोटे चम्मच। परन्तु आज एलस्पथ ने एटलस खोलकर संयुक्त राष्ट्र अमरीका का नक्शा निकाल लिया और बोली, "आज मैं कैलीफोर्निया बजाऊँगी।" उसने कैलीफोर्निया इसलिए चुना क्योंकि उसका मामा स्टीफन वहीं गया हुआ था और अपने पत्रों में वहाँ के बड़े पहाड़ों, तीर-सी लगनेवाली धूप और सोने की सी नारंगियों के विषय में लिखा करता था। वह गरम समुद्र और विचित्र नामोंवाली नदियों की बात लिखता : सेक्रेमेण्टो नदी, यूबा नदी, सानजेक्विन नदी, फैदर नदी ! अस्तु आज वह पहाड़ बजाएगी, भारी स्वर उनके वृहदाकार रूप को व्यक्त करेंगे और पतले स्वर उनकी हिमाच्छादित चोटियों की ऊँचाई को ! और वह फैदर नदी बजाएगी, जिसकी ध्वनि अवश्य ही गर्त में गिरते महाप्रवाह की सी सुनाई पड़नी चाहिए।

बाजे वाली तिपाई पर बैठी एलस्पथ ने अपनी नानी की ओर घूमकर देखा, नानी को वे ध्वनियाँ जो कैलीफोर्निया की बात कहतीं और मामा स्टीफन की याद दिलातीं सदा ही पसन्द आती थीं; परन्तु "आज नहीं," उसने फिर वही बात कह दी, "आज मैं नहीं सुन सकूँगी !" और तब उसने वह बात कह दी जिसे एलस्पथ न कह पाती । "ओह, जैंस, उसने वही लड़की क्यों चुनी ? अपनी जाति से बाहर विवाह ! उसे तो गम्भीर, स्थिर चित्तवाली पत्नी ही चाहिए !" परन्तु नाना ने कहा,

"उत्तरी ध्रुव क्यों नहीं बजाती, बेटी ? मुझे उत्तरी पवन की सीटी सुनना पसन्द है ।"

एलस्पथ ने उत्तरी ध्रुव बजाया, और कुछ देर तक यही सोचती रही कि टाँगों में जो ठंडी हवा लग रही है वह बाजे का संगीत ही है; परन्तु नाना ने बाजे में हवा देनी बन्द कर दी—बाजा भी बन्द हो गया, परन्तु कमरा फिर भी ठंडा होता जा रहा था !

"दरवाज़ा बन्द करदे," नाना ने कहा । एलस्पथ ने घूमकर देखा और बन्द दरवाजे के सम्मुख मामा स्टीफन और लिडी किन्नमॉण्ड को खड़े पाया । दोनों ही लम्बे, बरफ से नहाए हुए और शीत से लाल हो रहे थे ।

"तू यहाँ कैसे पहुँचा ?" नाना ने कहा और एलस्पथ ने देखा कि मामा स्टीफन के आगमन की बात वह जान गया था ।

"लिडी का बाप हमें लाया ।"

"वह बाहर है ?"

"वह वापिस चला गया," मामा स्टीफन ने कहा और अपने हाथ के सामान को सीढ़ियों के दरवाज़े के पास रख दिया । "लिडी के बड़े दिन के उत्सव तक हम यहाँ ही रहना चाहते हैं ।" वह सुस्पष्ट, ऊँचे स्वर में बोल रहा था मानों किसी से तर्क कर रहा हो, परन्तु किसी ने कोई उत्तर न दिया ।

तब वह बाजे के पास चला आया और हाथ पकड़कर एलस्पथ को उठाते हुए बोला, "लिडी, यह चाची जैटी है !"

लिडी किन्नमॉण्ड पहली बार बोली, उसकी आवाज़, जैसा कि एलस्पथ जानती थी, पहले की सी कोमल और धीमी थी; उसमें वही संगीत का पुट भी था !

"जैटी ?" उसने कहा ।

"क्योंकि यह इतनी काली है," मामा स्टीफन ने कहा ।

"और चाची क्यों, स्टीव ?"

"क्योंकि यह उल्लू की तरह गम्भीर रहती है !" मामा स्टीफन ने कहा। "चाची जैटी, यह तुम्हारी मामी लिडी है। हलो, कहो।"

एलस्पथ ने अपना हाथ बढ़ा दिया। "मैं लिडी से पहले ही मिल चुकी हूँ। मामी लिडी से !" अपनी भूल सुधारते हुए वह बोली।

"मिल चुकी है ?" मामा स्टीफन ने कहा, "कहाँ ?"

"उन्हीं के घर। और श्री वेन्टर्स के साथ।"

कुछ देर तक कोई भी न बोला और उस मौन के लिए अपने आपको ही उत्तरदायी समझ, एलस्पथ ने ही उसे भंग किया, "रशब्रान्च के किनारे उस दिन सब घूमने गए थे।"

"श्री वेन्टर्स और लिडी ?" विचित्र शुष्क स्वरों में नानी ने पूछा।

"हाँ," एलस्पथ ने उत्तर दिया, "मल वेन्टर्स। वे....."

परन्तु इससे पहले कि एलस्पथ जो कुछ भी उसने देखा था बता सके, मामा स्टीफन ने आगे बढ़कर अपनी पत्नी का हाथ अपने हाथों में ले लिया। "मल वेन्टर्स ने तो मुझे हरा ही दिया होता," उसने कहा, "और उस प्रयत्न के लिए कौन उसे दोषी ठहरा सकता है ?" उसने सभी से, परन्तु विशेषतया अपनी माँ से पूछा।

एलस्पथ ने एक बार फिर लिडी की ओर देखा। वह उसे सुन्दर तो न मान सकती थी, परन्तु फिर भी उसे देखते रहने को मन करता था। वह इतनी काली, इतनी स्वर्णिम और इतनी रक्ताभामयी थी, और इतनी लम्बी और शान्त थी कि देखते ही बनता था। एलस्पथ जानती थी कि नव-वधू की भाँति मुस्कराना भी उसे आता था !

"यह तुझसे हाथ मिलाने को खड़ी है, लिडी," मामा स्टीफन ने कहा। और लिडी ने मानों किसी स्वप्न से जागकर, नीचे झुक एलस्पथ का हाथ अपने हाथों में ले लिया।

एलस्पथ ने गम्भीरता से हाथ मिलाया। "तेरा सोने का समय हो चुका है," नानी ने एलस्पथ से कहा—और फिर लिडी से बोली, "अपना कोट उतार दे। इस बच्ची को सुला आऊँ, तब तेरे और स्टीफन के लिए दूध गरम कर लाऊँगी।"

सीढ़ियाँ चढ़ते हुए एलस्पथ का हाथ अपने हाथ में ले लिया नानी ने।

"तूने लिडी और मल को कब देखा था ?"

"पिछली गरमियों में । पिकनिक करते हुए । वे....."

"बस, बस," नानी ने कहा और उसके कपड़े उतारकर, उसके छोटे से पलंग में उसे सुला दिया। उसका पलंग नानी के जहाज़ जैसे पलंग के साथ किश्ती की तरह बँधा हुआ लग रहा था ।

दूसरे दिन सुबह छत में प्रकाश का समुद्र फैला पड़ा था, दूध की सी जागृत एक चमक थी जो कि नाच भी रही थी । रात बहुत बरफ गिरी थी और बरफ पर पड़नेवाली सूर्य की किरणें सौन्दर्य की लहरों की तरह कमरे में आ रही थीं। एलस्पथ बिछौने में और भी सिकुड़ गई । बरफ का प्रकाश कमरे में इतना आ रहा था कि वह अच्छी तरह ओढ़कर बरफ में बिछौना लगाए लेटी हुई लग रही थी । फिर उस प्रकाश में एक छाया सी पड़ी : एक स्वप्न.....कल्पना.....या याद !

नानी हाथ में एक लैम्प पकड़े और मामा स्टीफन उसके पास : लैम्प के प्रकाश ने उठकर उन दोनों की मुखाकृतियों को भयानक बना दिया था, उनकी आँखों में छाया थी । उस प्रकाश ने उनके चेहरों का माँस खा लिया था, केवल हड्डियाँ ही उसकी ओर देख रही थीं ।

"जब तू यहाँ नहीं था," नानी कह रही थी, "जब तू दूर था, रुग्ण था, स्वस्थ होने का प्रयत्न कर रहा था, उसने कोई परवाह ही नहीं की—.....दूसरों से आँखे लड़ाती रही !"

लैम्प नानी के हाथ में काँप उठा । मामा स्टीफन ने उसे अपने हाथ में ले लिया और मौन उसे पकड़े रहा, मानों धैर्य-पूर्वक अपनी माँ की बात सुन लेना चाहता हो ।

"वह तेरा धर्म नहीं मानती यही बात तो नहीं है.....अपने आपको इतना छोटा बना देना.....बचन देकर । और कैलीफोर्निया इतनी दूर है ।"

मामा स्टीफन लैम्प तटस्थता से पकड़े रहा । "उससे कहो," नानी ने कहा, "कि तुमने अपनी आँखों से.....सैन्डीक्रीक में !"

"कोई ज़रूरत नहीं," मामा स्टीफन ने कहा, "कोई ज़रूरत नहीं । मैं सब जानता हूँ । किसी न किसी तरह बातें हो जाती हैं । जैसा चाहो वैसा नहीं हो पाता ! यह बात ऐसे ही होनी थी, हो गई । रात के अन्धेरे में करने की तो कोई बात नहीं इसमें । मैं था नहीं और लिडी जवान ! क्या तू उसे विधवा के वेष में देखना चाहती थी ?"

मामा स्टीफन ने लैम्प नानी को दे दिया और एलस्पथ को प्यार

करने को झुका। "अब सोजा, चाची जैटी," उसने कहा, "बरफ पड़ने लगी है।"

तब अपनी माँ के कंधों में हाथ डाले वह उसे दरवाज़े की ओर ले गया और जब वे सीढ़ियों से उतर रहे थे एलस्पथ ने उसकी आवाज़ दूर होती, घटती हुई सुनी : "प्रेम तो आग से भी अधिक स्थायी है....." और फिर वह आवाज़ बन्द हो गई, सीढ़ियों की गूँज में खो गई। "आग," सीढ़ियों के अंत से, बहुत दूर से वह एक शब्द इस ज़ोर से कहा गया कि एलस्पथ ने सुन लिया। शेष कुछ वह सुन नहीं पाई थी।

"प्रेम तो आग से भी....." सुबह, नाश्ते के बाद, बैठक में बैठकर एलस्पथ यही बात सोच रही थी। कमरा इतनी जल्दी ही झाड़-पोंछ भी दिया गया था। छुट्टी के दिन की तरह एक मोटी लकड़ी अँगीठी में लगी जल रही थी; लाल काग़ज़ की एक बहुत बड़ी घंटी, जिसमें काट-काटकर फूल बनाए गए थे, लैम्प के साथ बँधी छत से लटक रही थी। रूपहला और सुनहरा, बरफ और आग का प्रकाश दरी पर पड़ रहा था। अपना काला सूट पहने मामा स्टीफन आग के पास बैठा बड़ा सुन्दर लग रहा था; उसके घुँघराले बाल भीगे हुए थे और उनसे कंघी की झलक स्पष्ट ही आ रही थी!

"कहो, चाची जैटी," उसने कहा, "मदद करना चाहती हो?"

काग़ज़ की आधी दरजन थैलियों में से मिठाई निकाल-निकाल कर वह नानी के बढ़िया चीनी मिट्टी और काँच के बर्तनों में रख रहा था—एक मुट्ठी चॉकलेट, एक मुट्ठी गोलियाँ और एक मुट्ठी मूँगफलियाँ।

"सबको मिलाना पड़ेगा," मामा स्टीफन ने कहा, "सबको समान भाग ही मिलना चाहिए।"

"क्या बड़े दिन के लिए है?" एलस्पथ ने पूछा।

"नहीं, नहीं," मामा स्टीफन ने कहा, "शिवारी के लिए। तुझे पता है शिवारी क्या होती है?"

हाँ, वह जानती थी : नव-दम्पति जब सो जाएँ, तो अचानक गोलियाँ चलाकर और शोर मचाकर उन्हें आश्चर्यचकित कर दिया जाता है। बाँसुरी और बाल्टी में पत्थर डालकर भी बजाए जाते हैं। और उसके पश्चात् घर के अन्दर बुलाकर सबको जलपान कराया जाता है, कॉफी और सिगार पिलाये जाते हैं।

"आज होगी? बड़े दिन से एक दिन पहले?"

"हाँ", मामा स्टीफन ने कहा, "कल सुबह तो हम जा ही रहे हैं। आज रात का समय ही तो है।"

वह बड़ी लकड़ी आग में भली प्रकार बठ गई थी । लाल घंटी धीरे-धीरे हिल रही थी ।

"प्रेम किस वस्तु से अधिक स्थायी है ?" एलस्पथ ने पूछा ।

"पहाड़ों से भी अधिक स्थायी," मामा स्टीफन ने कहा ।

"आग," एलस्पथ ने पूछा, "आग से अधिक कहना क्या ठीक न रहेगा ?"

"आग की बात अपनी मामी लिडी से पूछ ।" मामा स्टीफन ने कहा ।

सिर से पैर तक सफेद कपड़े पहने, दूर खिड़की के पास बैठी मामी लिडी को तब एलस्पथ ने पहली बार देखा । वह 'सफेद' नव-वधु का कड़ा और चमकदार 'सफेद' था, और भारी और कोमल—बुनी हुई बरफ का सा रंग था वह !

वह बाहर बरफ पर आँखें जमाए बैठी थी, और अपनी गुनगुनाती-सी कोमल आवाज़ में उत्तर देने से पहले उसने पलटकर देखा तक नहीं । "आग तपाती है," वह बोली ।

एलस्पथ अपनी मामी को देखती रही । "मामी लिडी बरफ की रानी लग रही है !" उसने कहा ।

"हाँ, सचमुच लग रही है," मामा स्टीफन ने उत्तर दिया, "श्वेत, सुन्दर और शीतकालीन !" जब वह बोला तो मामी लिडी उठकर उसके पास आगई और उसके बालों में अँगुलियाँ डालकर सहलाने लगी ।

वह सारा दिन ही जादू-सा लगा एलस्पथ को । बड़े दिन से पहला दिन, और शिवारी, और कमरे में रखा हुआ वह बड़े दिन का पेड़ । बड़े दिनों में ही वह कमरा पूर्णतया जीवित हो पाता । गरमियों में तो एक झाड़ी, बरफ-सी सफेद पर अशान्त, उस कमरे की खिड़की को खटखटाती रहती । जाड़ों में बरफ पड़ती, सफेद पर शान्त । परन्तु साधारण दिनों में, बच्चों के चले जाने के पश्चात् न कोई इसे देखता और न कोई सुनता । झाड़ी की खटखटाहट पर कोई ध्यान ही न देता । बरफ द्वारा बनाए गए चित्र पिघल जाते अनदेखे, और दिन में बहते पानी में उनका एक भी चिह्न तक न मिलता ।

साँझ हुए जब चीड़ के पेड़ों की लम्बी छाया बरफ पर लम्बी व नीली दिखलाई पड़ने लगी, एलस्पथ लालायित हो उस पेड़ के ही विषय में सोचने लगी । आसपास कोई भी न था । मामा स्टीफन गोठ में पशुओं को चारा देने में नाना की सहायता कर रहा था । नानी रसोई में व्यस्त थी और मामी लिडी को तो वह घंटों से देख न पाई थी ।

लाल काग़ज़ की घंटी धीरे-धीरे हिल रही थी जब कि एलस्पथ उस कमरे के दरवाज़े की ओर बढ़ी । बड़े दिन का पेड़ गोपनीय माना जाता, बड़े दिन की

सुबह जब सब उपहार खोले जाते हैं तब तक उसे न देखना चाहिए, परन्तु कमरे में ताला न लगा था और अन्दर एक-आध बार झाँक लेना वर्जित न था। नानी सम्भव है यह मानती थी कि पेड़ के सम्पूर्ण गौरव को सहपाने के लिए उसे पहले से देख लेना आवश्यक है।

परन्तु खुला हुआ दरवाज़ा खुला ही रहा और जब बन्द हुआ तो एलस्पथ कमरे के अन्दर उस सुन्दर, चमकदार पेड़ के पास खड़ी थी। एक मिनट वह आँखें बन्द किए खड़ी रही और जब उसने आँखें खोलीं तो वह कमरा और लाल दरी और सफेद परदे सजीव हो उठे। उसे लगा कि एक फूल किसी बन्द सीपी में आ पड़ा है या एक मधुमक्खी अँगुश्तानी में घुस आई है! या किसी बन्द घड़ी में एक तितली पर फड़फड़ाती आ पड़ी है। उस सौन्दर्य को देखकर एलस्पथ ने प्रार्थना की कि वह क्षण अनन्त हो जाए! और वह अनन्त हो भी जाता परन्तु मामी बोल पड़ी बीच में और वर्तमान लौट आया।

"चाची जैटी," उसने अपनी उसी आवाज़ में कहा जिसमें एलस्पथ को मधुमक्खियों के गुंजन का आभास मिला करता था। अपने सफेद कपड़े पहने वह खिड़की से लगी बैठी थी, ठीक जैसे सुबह बैठी हुई थी।

"मेरे इस कमरे में आने की बात सोची भी नहीं जा सकती," एलस्पथ ने कहा। "मुझे यहाँ नहीं आना चाहिए," वह धीरे से बोली। बड़े दिन से पहले उस कमरे में आकर बात करना उसे पापतुल्य लग रहा था।

मामी लिडी ने हाथ बढ़ाकर उसे अपने पास खींच लिया जिससे कि उसके सफेद, ऊनी कपड़ों की गरमाई उसे भी आने लगी। "मुझे भी नहीं आना चाहिए।" फिर वह बोली, "मेरा एक काम कर देगी ?"

"क्या काम है ?" एलस्पथ ने पूछा।

"मेरी एक चिट्ठी मल वेन्टर्स को दे आ! दो ही क़दम तो है उसका घर! बरफ पड़नी बन्द हो चुकी है और हवा भी नहीं चल रही।"

"नानी मुझे कभी भी नहीं जाने देगी!"

"मुझे पता है। दुख भी है—परन्तु ऐसा कर दूँगी कि नानी को पता तक न चलेगा!"

सब पहले से ही ठीक किया हुआ था उसने। खाने के बाद वह एलस्पथ को ऊपर ले जाएगी और सुलाने की बजाय उसे कम्बलों में लपेटकर अच्छी तरह ढक देगी। छः या सात कम्बलों से! "तुझे ठंड नहीं लगेगी। मैं पिछली सीढ़ियों से उतारकर तुझे मल के घर जानेवाली सड़क पर छोड़ आऊँगी!"

"दो क़दम भी नहीं है," उसने फिर कहा, "हवा तो बन्द हो गई, बरफ भी सूख चुकी है और रास्ते भर तुझे दोनों घरों की बत्तियाँ दिखाई देती रहेंगी। यह—जरा—मैं मल से विदा लेना चाहती हूँ। चिट्ठी पढ़ते ही वह तुझे गाड़ी में बैठाकर घर छोड़ जाएगा।"

"शायद न छोड़े," एलस्पथ ने कहा।

"ओह, वह अवश्य छोड़ेगा। तू देख लेना।"

और जैसे मामी लिडी ने कहा था आसानी से काम हो गया। न किसी ने उसे जाते देखा और ना ही उसकी अनुपस्थिति का किसी को पता चला। रात अँधेरी थी, परन्तु शान्त; और स्वच्छ नीलाकाश में तारे छिटक रहे थे। बरफ हलकी और सूखी हुई थी, और जम चुकी थी। और कोई रात होती तो एलस्पथ डर भी जाती—परन्तु बड़े दिन की रात में कौन उसे डरा सकता था?

वेन्टर्स परिवार अपने उपहारों को बड़े दिन से पहली रात को ही खोल लिया करते थे। अस्तु; उनका घर बन्धु-बान्धव, बूढ़े व जवान, पोते-पोतियों से भरा हुआ था। इतनी अधिक संख्या में लोग एकत्रित थे और ऐसा एक उल्लास वहाँ छाया हुआ था कि किसी ने भी एलस्पथ की उपस्थिति पर विशेष कुछ ध्यान नहीं दिया। मल उस भीड़ से हटकर, बड़ी अँगीठी के पास बैठा अपने पाँव सेक रहा था। एलस्पथ ने लिडी का पत्र उसे दे दिया। वह उसे बार-बार पढ़ने लगा। अपनी जेब में रखता, फिर उसे निकालता और पढ़ता, मानों जो पढ़ता उसे बार-बार भूल जा रहा हो!

किसी ने एलस्पथ से कम्बल उतार देने को नहीं कहा और वह ताप में जलती खड़ी रही। बच्चों ने उसे कुछ मिठाई दी और वह एक कोने में खड़ी बैठी खाती रही और अवांछित-से पड़े एक खिलौने से खेलती रही। नानी की बैठक, एटलस और बाजा, और उस कमरे में रखा बड़े दिन का पेड़ किसी स्वप्न की तरह दूर प्रतीत हो रहे थे। बार-बार उस पत्र को पढ़ते वह मल को देख रही थी। अंत में उसने गोला बनाकर उसे आग में फेंक दिया। मिठाई खाती, खिलौने से खेलती, वह दीवार के सहारे बैठ गई।

घंटियाँ और बाल्टियाँ बजाने का शोर जब उसने सुना तब वह प्रायः निद्रा-ग्रस्त हो चुकी थी। मल वेन्टर्स उधर ही देख रहा था। "क्या बात है?" उसने पूछा, "यह सब शोर कैसा सुनाई पड़ रहा है?"

"शिवारी का," एलस्पथ ने कहा, "मामा स्टीफन और मामी लिडी की शिवारी!"

मल ने हाथ पकड़कर उसे उठाते हुए कहा, "चल, तुझे घर भी तो पहुँचाना है !"

बिना किसी से विदा लिए, बिना कुछ कहे ही वह उसे अस्तबल में ले गया और गाड़ी में बैठा दिया। उसने झट से घोड़े जोड़ दिए और इससे पहले कि ठंड लगने से वह पूर्णतया जाग उठे, वह स्वयं भी घोड़े की पीठ पर लगाम पटकता उसके पास आ बैठा।

"वह छज्जे में आकर," एलस्पथ ने कहा, "आए हुए लोगों का अभिवादन करेंगे। फिर," खिलौने को कसकर पकड़ते हुए वह बोली, "फिर स्वयं अपना अभिवादन कर वे एक दूसरे को चूमेंगे !

"करेंगे ही," मल वेन्टर्स ने चिढ़कर कहा, "करेंगे ही !"

गाड़ी मानों पृथ्वी को छू ही नहीं रही थी—वह हवा में उड़ी जा रही थी। मल का बड़ा काला घोड़ा रात का एक अंग बना प्रतीत हो रहा था। उत्साह में डूबी एलस्पथ ने खिलौने के कुण्डे को छुआ और उसका ढक्कन उसकी ठोढ़ी से आ लगा।

"ओह," एलस्पथ के मुख से निकल गया।

"चुप बैठी रह ! चुप नहीं रह सकती ?" मल ने डाँटा, "गड़बड़ मत कर !"

शिवारी के लिए आए हुए लोगों की मशालों और लालटैनों से काफी प्रकाश हो रहा था, परन्तु घर अभी तक अँधेरा ही था और छज्जा ख़ाली ! मल की गाड़ी सर्र से मोड़ काटती, धड़धड़ाती हुई पहुँची। उसे पहचान कर लोगों ने और भी शोर मचाना आरम्भ कर दिया।

"अरे मल ! नववधु को अन्तिम बार देखने आया है क्या ?"

मल ने एलस्पथ या दूसरे लोगों से कुछ न कहा, परन्तु अपनी गाड़ी दक्षता से हाँककर उनके बीच में लाकर रोक दी।

"वह तो यहाँ है ही नहीं," किसी ने चिल्लाकर कहा, "दोनों में से एक भी नहीं। चले गए मालूम पड़ता है।"

"बुला न, मल, तू ही नव-वधु को बाहर निकलने को कह। तू स्त्रियों से बात करने में दक्ष है ! तू कहेगा तो वह बाहर आ जाएगी।"

बाहर वे लोग क्या बातें कर रहे थे इसे शायद वे लोग जान गए थे; क्योंकि अभी मल से वधु को पुकारने को कहा ही जा रहा था कि अन्दर बत्तिएँ जल उठीं। यह देख कर शोर और भी बढ़ गया। और कुछ ही क्षणों में एलस्पथ

ने मामा स्टीफन को छज्जे का दरवाज़ा खोलते और घूमकर, हाथ बढ़ा मामी लिडी को बाहर लाते देखा। मामी लिडी उसके पास आकर यथास्थान खड़ी हो गई। मामा स्टीफन ने अपना काला सूट पहना हुआ था, पर मामी लिडी एक लम्बा, लाल फ्रॉक या गाउन पहनकर आई थी। उन मशालों और लालटैनों की रोशनी में एलस्पथ को लगा कि उस गाउन के साथ एक ताज या फूलों का हार भी है! मामी लिडी के खुले बालों के काले गुच्छे उसके मुख और कन्धों पर बिखरे हुए थे।

मामा स्टीफन ने पुकारकर कहा, "कहो, भाइयो," और अपना हाथ हिलाकर किसी के "तुमने तो दर्शनीय वधु चुनी है, स्टीव," के उत्तर में कहने लगा, "हाँ, भाई, सचमुच ऐसी ही चुनी है," परन्तु मामी लिडी चुप ही रही। वह तो वहाँ मौन ही खड़ी थी। उसके मुख पर लालटैनों का लाल व पीला प्रकाश पड़ रहा था। वह कभी-कभी शिवारीवालों की ओर भी देख लेती, परन्तु उसकी आँख मामा स्टीफन के मुख पर ही लगी थीं और वह चिल्ला-चिल्लाकर नीचे खड़े लोगों से बातें कर रहा था।

एलस्पथ ने घूमकर मल की ओर देखा। उसने समझा था कि मामी लिडी के पत्र में लिखा होगा, 'विदा, मल! मैं दूसरे से प्रेम करती हूँ। हमें सदा के लिए बिछुड़ना होगा!' वह स्वयं तो यही बात लिखती—और उसने यह भी समझा था कि मल मामी लिडी का अभिवादन कर, एक प्यार हवा में फेंक, अपना टूटा हुआ दिल लेकर लौट जाएगा। परन्तु मल दोनों में से एक भी बात नहीं कर रहा था। गाड़ी में अध-लेटा सा, सिर उठाए, एक टक देख रहा था।

फिर कोई चिल्लाया, "मल भी आया है, लिडी, तुझे अन्तिम बार देखने! जी भर कर देख ले, मल! यह ही अन्तिम बार है! ये लोग कैलीफोर्निया जा रहे हैं।"

तब मामी लिडी ने वही किया जो एलस्पथ ने कहा था। उसने एकत्रित भीड़ की ओर थोड़ा झुककर उनका अभिवादन किया, फिर धीरे-धीरे, गम्भीरतापूर्वक अपने हाथ मामा स्टीफन की गरदन में डाल दिए, और उसे वैसे ही गम्भीरतापूर्वक, धीरे से चूम लिया, मानों वह जो कर रही थी उस पर विचार भी कर रही थी! शिवारीवालों की भीड़ में से कोई नहीं चिल्लाया, किसी ने भी शोर नहीं मचाया—क्योंकि उस चुम्बन में खिलवाड़ न था, बल्कि विवाह की सी ही पवित्रता व गम्भीरता का पुट था उसमें!

सर्वप्रथम मल ही हिला और उसने ही वह शान्ति भंग की। "ले ले उसको

और मौज कर !" वह चिल्लाया । उसने किसी गठड़ी की तरह एलस्पथ को उठा कर बरफ पर रख दिया । घोड़े को एक चाबुक लगाया और उसे भगाता हुआ उत्तर की सड़क की ओर बढ़ गया । एक क्षण को उसने लगाम खींची और पीछे मुड़कर चिल्लाया, "बड़ा दिन मुबारिक," और फिर भर्राई हुई आवाज़ में, "नव वर्ष तुम्हें शुभ हो !"

बरफ में जहाँ वह उतार गया था, वहाँ से ही एलस्पथ ने उसे जाते हुए देखा—परन्तु एक क्षण में ही मल और उसकी गाड़ी आँखों से ओझल हो गई । जब उसने मुड़कर फिर छज्जे की ओर देखा तो मामी लिडी पहले की तरह खड़ी थी और मामा स्टीफन ने अपनी बाहें उसके गले में डाल रखी थीं । वह आगे झुककर सुसंयत स्वर में कहने लगा, "घर में गरम कॉफी और खाने का सामान रखा है, भाइयो, अन्दर आओ । मैं तुम्हारा स्वागत करता हूँ !"

एलस्पथ शिवारीवालों के साथ अन्दर गई, परन्तु खान-पान आरम्भ होने से पहले ही नानी उसे पकड़कर ऊपर सुला आई । लेटे-लेटे वह विभिन्न आवाज़ों को सुनती रही । पहले तो नीचे से आनेवाली आवाज़ें : चिल्लाहटें, बातें और गीत, और फिर घोड़ों का हिनहिनाना और गाड़ियों की घंटियों के स्वर का घटते-घटते तीक्ष्ण पवन में खो जाना । और नाना और नानी की बातचीत का स्वर । वे उठते-गिरते स्वरों में बातचीत कर रहे थे । इतने में ही मामा स्टीफन दरवाज़ा खोलकर अन्दर आ गया । उसके हाथों में चीनी मिट्टी का बड़ा लैम्प था । उसने अपना काला कोट उतार दिया था और अब उसके विवाह का बढ़िया कुरता दिखाई पड़ रहा था । उसने लैम्प मेज़ पर रख दिया और झुककर अपनी माँ और बाप की ओर देखने लगा । वे दोनों जाग रहे थे और आँखें खोल लेटे हुए थे । मामा स्टीफन उत्फुल्ल, स्वस्थ और शान्त व संतुष्ट दिखाई पड़ रहा था ।

"चिन्ता करना छोड़ दो," उसने कहा । वह उस लम्बे मेज़ के सहारे खड़ा हो गया । "विवाह मेरा हुआ है और मैं संतुष्ट हूँ । आवारगी का पुट जिस स्त्री में न हो मैं उसे प्यार ही नहीं कर सकता ! यह मेरे स्वभाव की बात है । यह विवाह सफल होगा ।"

अपने बिखरे हुए घुँघराले बालों में मामा स्टीफन ने उँगलियाँ डाल लीं । उसका मुख शान्त था, परन्तु आँखों से आग निकल रही थी । वह लैम्प बुझाने को झुका, परन्तु बिना बुझाए ही उसे उठा लिया । उसके चमकदार चेहरे पर अब लैम्प का प्रकाश पड़ रहा था । एलस्पथ ने देखकर सोचा कि वह भगवान के फरिश्ते-सा दिख रहा है ! वह लैम्प हाथ में लिए कुछ देर

दरवाज़े में खड़ा रहा, मानों कहने को कोई बात ढूँढ रहा हो। जो उसने कहा उससे एलस्पथ को याद आया कि बड़ा दिन आ पहुँचा है। "बुद्धिमान व्यक्ति धूप और चन्दन का उपहार लेकर आया,"[1] उसने कहा और धीरे से दरवाज़ा बन्द कर चला गया।

एलस्पथ उन्हीं शब्दों के विषय में सोचती हुई सो गई और सुबह जब उठी तब भी वे शब्द उसके मस्तिष्क में घूम रहे थे। परन्तु नीचे आकर उस पेड़ को देखने से पहले वह एक बार छज्जे में जहाँ मामा स्टीफन और मामी लिडी खड़ी हुई थी वहाँ जाना चाहती थी और सोचना चाहती थी कि रात जो भी उसने सुना व देखा था क्या सच हो सकता था?

वह छज्जे में खड़ी हो कर सूर्य के प्रकाश में चमकती उस सुबह को देखने लगी। मशालों की जली हुई लकड़ियाँ, गाड़ी के पहियों व पैरों के निशान रात की बरफ में दब गए थे। नहीं, वह सच नहीं हो सकता। उसने मामी लिडी की भाँति गम्भीरतापूर्वक, धीरे से अपने हाथ उठाए—परन्तु वह कृत्रिम ही प्रतीत हुआ। जो उसने सुना व देखा था कभी सच नहीं हो सकता!

तब उसने बरफ में लाल, नीले और रूपहले रंग की कोई चीज़ पड़ी देखी; कुछ तो बरफ में दबी थी, परन्तु फिर भी किसी फूल की तरह धूप में चमक रही थी। वही रातवाला खिलौना था उसका! वह सब सच था। वह सब सच था! काला घोड़ा अँधेरे में चला गया था; मामी लिडी का मुख मशालों के प्रकाश में, स्वर्णिम, चमक उठा था! मामा स्टीफन लैम्प पकड़े खड़ा बड़े दिन के फरिश्ते-सा लग रहा था। एलस्पथ ने दूर, जंगल के पार, धूप में चमकते अपने घर की ओर देखकर कहा, "ओ, माँ! वह सब सच था!"

---

१. बाइबिल की एक उक्ति।

होमर और कमल

शरीर में झुर्रियाँ होते हुए भी अस्सी वर्ष का जैस सुस्वस्थ और सबल व्यक्ति था। उन्हीं दिनों कुछ समय के लिए एक अनाथ लड़के से उसका परिचय हुआ। लड़के का नाम होमर डेनहम था। बारह वर्ष का होमर बहुत दुबला-पतला, पीले ओठ और घुँघराले बालोंवाला अनाथ लड़का था। होमर जब उत्साहित हो उठता तो उसके गले की एक नाड़ी बजने लगती, मानों वह 'लड़का' उस सूक्ष्म से होमर डेनहम में ही सीमित रहते थक गया हो और अब विदा ले, स्वतंत्र हो कर होमर के बाहर के जिस संसार पर उसकी काली आँखें इस तन्मयता से लगी हैं उसी का एक अंग बन जाना चाहता हो।

सितम्बर के अंत की एक सुन्दर दोपहर में जैस ने उसे प्रथम बार देखा था : जैस रशब्रान्च के किनारे एक ठूँठ पर बैठा हुआ था, और होमर उस पार किनारे-किनारे जा रहा था। जैस मछली पकड़ने का विचार लेकर नदी किनारे आया था; बंसी भी उसके पास थी, परन्तु लगभग दो घंटे छोटी मछलियों की रूपहली उछल-कूद और एक बड़ी मछली का तैरना देखकर वह इस नतीजे पर पहुँचा था कि जो देखकर उसको इतना आनन्द लाभ हुआ उसे वह खा न सकेगा ! दोनों में से एक ही बात होनी चाहिए, उसने सोचा। आँख और पेट दोनों एक ही वस्तु का स्वाद न लें ! मछली को दोपहर में आँखों को भला लगने वाला चित्र और रात को भोजन न बनने देना चाहिए !

मौन बहती हुई उस जलधारा में जैस मानों डूबा हुआ था। पत्तों से छन-छनकर गिरनेवाली सूर्य की किरणों से रशब्रान्च में विभिन्न आकृतिएँ बनतीं और मिट जातीं। मछलियों द्वारा आतंकित, स्वर्णिम बीजों-सी लगनेवाली सूर्य की किरणों को उठाए वह जल धारा उसकी देखी सभी नदियों से एक ऐसी समानता लिए जैस की आँखों के सम्मुख बह रही थी कि उसे लगा वही कोलरेन का वह नाला है जिसमें उसने तैरना सीखा था। और यह मस्कैटैटक भी हो सकती है, ह्वाइट भी, वाबाश भी, ओहियो भी और, अंत में, मिस्ससिपी भी और वह समुद्र भी जिसमें जाकर मिस्ससिपी भी विलीन हो जाती है !

परन्तु उन दूसरी जलधाराओं के विषय में जैस ने उस दिन विचार न किया। कभी न कभी, भगवान की इच्छानुसार वह उन तक पहुँच ही जाएगा। वह सोच रहा था कोलरेन के गोठ के पीछे की उस नदी की शाखा की बात—सोच रहा था कि किस प्रकार बसन्त में वह शाखा घास के खेतों में घुसकर पहले दिन की हवा की तरह ही घास को मोड़ देती, नहला देती—जब उसे लगा कि कोई उसे देख रहा है। चार वर्ष का जैस सोचा करता था: घास को इसकी परवाह? क्या घास कुछ समझ सकता है?

जब उसने आँखें उठाईं तो उस पार से होमर को इधर ही देखते हुए पाया। साथ ही वह चलता भी जा रहा था। वह ऐसे सिर मोड़े चल रहा था कि दादा को सोते हुए देख सके, जैस ने सोचा।

"कैसे हो," जैस ने पुकारकर कहा, "इधर आजाओ। मैं मछलियाँ देखते-देखते थक गया हूँ। अब किसी बिना पूँछ के जीव को देखना चाहता हूँ!"

होमर एक क्षण को रुका, फिर—जैस ने स्पष्ट ही देखा—बड़ों का आदेश पाकर विवश किसी भले लड़के की भाँति वह तैरकर इस पार आगया। मौन, मंद मुस्कान लिए, वह ठूँठ के पास आकर खड़ा हो गया, उसकी गले की नाड़ी कूद रही थी और उसकी काली आँखें यह समझने का प्रयत्न कर रही थीं कि कैसे आदमी ने उसे पुकारा है।

जैस ने अपना एक हाथ जेब में डाल लिया। "मैं यहाँ बैठे-बैठे इतनी देर से मछलियाँ देख रहा हूँ कि अब मुझे भूख लग आई है। पेट पीठ से बातें कर रहा है! कुछ न कुछ खाना ही पड़ेगा। तुझे पीपरमिन्ट की गोलियाँ पसन्द हैं?" उसने जेब से मुट्ठी भर गोलियाँ निकालीं। होमर ने अपना पतला, भूरा हाथ पसार दिया और जैस ने छः गोलियाँ उसे दे दी।

"छः तेरी, छः मेरी और दो मछलियों की!" उसने दो गोलियाँ नदी में फेंक दीं। "मछलियाँ खाएँगी नहीं—कम से कम मैंने कभी मछलियों को गोलियाँ खाते नहीं देखा—परन्तु ब्रान्च के पानी की गन्ध से गोलियों की सुगन्ध उन्हें पसन्द आएगी!"

होमर के गले की नाड़ी की उछल-कूद कुछ कम हो गई और वह, जैस की तरह गोलियाँ चूसने लगा।

"लगता है मैंने पहले कभी नहीं देखा तुझे!" जैस ने कहा।

"मैं होमर डेनहम हूँ," लड़के ने कहा, "मैं परकिन्स दम्पति के साथ रहता हूँ । वे मुझे अनाथालय से लाए थे ।"

"ठीक, हाँ," जैस बोला, "अब मुझे याद आया, ऐसी कुछ बात सुनी तो थी । एमोस और एटी परकिन्स तो अच्छे लोग हैं ।"

"हाँ, श्रीमान," लड़के ने कहा ।

एमोस और एटी परकिन्स बहुत ही भले लोग थे और होमर को तो उन्होंने रहने के लिए घर दिया था । ऊपर, छत से सटा हुआ, उसका एक स्वच्छ, चारों ओर से बन्द कमरा, जहाँ गरमियों में अपने सिर से छः इंच ऊपर वर्षा होते वह सुना करता और मौज में रज़ाई में लिपटा अपने सूखे बिस्तर पर लेटा भी रहता ! जाड़ों में वह साँस रोक लेता क्योंकि बरफ गिरने की आवाज़ साँस लेने की आवाज़ जैसी ही होती और साँस रोककर ही वह बता पाता कि कब बरफ छत से नीचे गिरने लगी है ! बसन्त में सुबह वह सींक जैसी टाँगों पर चिड़ियों का चलना सुना करता और सोचा करता कि यदि वह छत एका-एक शीशे की हो जाए तो इतने समीप एक मनुष्य को देखकर चिड़ियों को कितना आश्चर्य होगा ! जिस बात को वह जानता है और चिड़िएँ नहीं जानतीं, उसे सोचकर वह प्रसन्न हो हँस पड़ता । वह चिड़ियों के नीचे लेटा हुआ उनकी गतिविधि देख-सुन रहा है यह केवल वह ही जानता था, चिड़िएँ नहीं !

हँसकर अपनी पतलून पहन, होमर नीचे नाश्ता करने चला जाता । यदि भोजन से होमर माँसल हो सकता तो श्रीमती परकिन्स के बिस्कुट और केक, अचार और माँस इत्यादि खाकर अवश्य ही मोटा हो जाता; परन्तु होमर को कभी ज़ोर की भूख न लगती; और उसका पेट थोड़े में ही भर जाता । होमर जो वस्तु चाहता था वह परकिन्स दम्पति की नाश्ते की मेज़ पर होती ही नहीं थी—वह किसी से बात करना चाहता था । वह वहाँ के एकान्त से ऊब गया था ।

परकिन्स दम्पति निस्संतान थे और प्रायः सदा ही मौन रहा करते थे । उनके विवाह को चालीस वर्ष हो चुके थे और जो भी बातें वे कभी किया करते होंगे अब समाप्त हो चुकीं थीं । दोनों के सोचने का ढंग एक था और वे किसी भी बात में तर्क न करते । और फिर जिन विषयों पर उनमें कोई मतभेद ही नहीं था, उन्हें लेकर वार्तालाप करने में उन्हें कोई

तुक ही न दिखलाई पड़ती : जैसे यह कहना, "अंडे आज अंडाकार दिख रहे हैं !" या "आज गाय ने बछड़ा दिया है !"

अंडाकार अंडों और बछड़े देनेवाली गायों से परकिन्स दम्पति पूर्णतया परिचित थे । होमर कोई भी ऐसी बात न कह सकता जिसके उत्तर में वे अपनी ऐनक से देखते हुए न कह उठते, "ऐसा भी हो सकता है, होमर," या "मुझे यह देखकर बिल्कुल भी आश्चर्य न होगा !" और बात वहीं खत्म हो जाती !

इधर होमर सदा ही आश्चर्यचकित होता रहता और वह किसी को बताना चाहता कि किस बात ने उसे आश्चर्य में डाल दिया है । वह तो सैकड़ों बातों को देखकर खोया सा रह जाता : बिना रंग की बरफ का सूर्य की किरणों से रंगीन हो जाना, आग की लपटों का लकड़ी की ओर बढ़ना और एकाएक पीछे हट जाना, ऐसे कि मानों लकड़ी अपने जीवन के लिए लड़ रही हो; वह जिह्वा की भाँति संध्या को घर के चारों ओर धूआँ फैलते देखता, और घास को पत्थर उखाड़ते देखता और साबूदाने में अपने आप छोटी-छोटी आँखों के बुलबुले उठते देखता । होमर सोचता साबूदाने की आँखें उसकी ओर ताक रही हैं और वह भी आश्चर्य में डूबा उनकी ओर घूरता रहता। परन्तु साबूदाने की आँखें तो क्या, परकिन्स दम्पति को तो अब किसी भी बात पर आश्चर्य नहीं होता !

कुछ भी देखकर नहीं ! दिन पर उनका अधिकार था और रात, एक अन्धकार का समय मात्र, उनके आराम के लिए बनाई गई थी । पृथ्वी पर बरफ पिघलती और फिर जम जाती ; अनाज उगता और बालियाँ उभर आतीं, सूखी हुई गाएँ फिर दूध देने लगतीं, और यह सब देखकर परकिन्स दम्पति को आश्चर्य न होता !

परन्तु होमर को तो आश्चर्य होता; और वह प्रायः अपने अनाथालय के उन १८७ साथियों के पास पहुँच जाना चाहता जो कि उसकी तरह ही आश्चर्य में डूबे रहते । वहाँ, उन लड़कों ने कई बातें खोज निकाली थीं : मेंढक सारा ही अचार बन सकता है या नहीं; और यदि जीवित निगल ली जाए तो चींटी पेट से लौट आ सकती है या नहीं !

"आपके विचार में क्या चूहा उल्टा दौड़ सकता है, श्री परकिन्स ?" होमर ने एक बार पूछा था ।

"कोई आश्चर्य नहीं, होमर !" श्री परकिन्स ने कहा था; अस्तु, ये

बातें उन्हें बताने से कोई लाभ नहीं। होमर तो किसी को आश्चर्यचकित करना चाहता था।

हवा लगने से पीपरमिन्ट कितना ठंडा लगेगा यह देखने को जैस मुँह खोलकर साँस ले रहा था !

"लगता है कि मुझे आज से पहले तुझसे मिलना चाहिए था, होमर," जैस ने कहा, "तू तो परकिन्सों के घर पिछले जाड़ों से रह रहा है न ?"

"हाँ, श्रीमान," होमर ने कहा।

"वह तुझे चक्की में पीसे तो नहीं रहते हर समय ?" जैस ने पूछा, "सदा ही अंडे और लकड़ियाँ तो नहीं मँगवाते, होमर ?"

"नहीं, श्रीमान," होमर ने कहा, "काम हल्का है। श्री परकिन्स मेरे साथ अच्छा व्यवहार करते हैं।"

श्री परकिन्स भला, परन्तु स्पष्टवादी व्यक्ति था।

"याद रखना, होमर," उसने कहा था, "तू इस इलाक़े का रहनेवाला नहीं है। तुझे अनाथालय से लाया गया है। और किसी को क्या पता कि तेरा बाप डाकू था या नहीं! मैं यह नहीं कह रहा, होमर, कि वह डाकू था; बल्कि मैं निश्चयतः कह सकता हूँ कि तुम भले लड़के हो! परन्तु दूसरे लोग तो यह बात नहीं जानते। अस्तु, तुम सब कहीं घुस जाने का प्रयत्न मत करना। कहीं भी जाने से पहले निमंत्रण की बाट देखो और जब कहीं जाओ तो ज्यादा देर वहाँ मत ठहरो !"

जैस अपनी जेबें टटोल रहा था। "दो गोलियाँ और हैं," उसने कहा। एक उसने अपने मुँह में डाल ली और दूसरी होमर को देदी। "यदि मुझे यह पता चल जाए," जैस बोला, "कि मछलियाँ पीपरमिन्ट के बारे में क्या सोचती हैं, तो मैं यहाँ बैठकर कभी ये गोलियाँ न खाऊँ। कोई क्या कह सकता है, होमर, कि मछलियाँ इन्हें देखकर गुस्से में दाँत ही किटकिटाने लगती हों।"

होमर जैस को घूरकर देखता रहा। "क्या आप दाँत किटकिटाने लगते हैं ?" उसने पूछा।

"नहीं, जो मेरे दाँत हैं उनको नहीं," जैस बोला

"क्या मछलियों के दाँत होते हैं ?"

"कुछ के होते हैं, कुछ के नहीं। शाक मछली तो किसी भी दाँत-दौड़ में सर्वप्रथम आ जाएगी !"

"'दाँत-दौड़' क्या होती है ?" होमर ने पूछा ।

"किसके दाँत बड़े हैं यह देखने की दौड़ !"

होमर ने जीभ मुँह में फिराते हुए कहा, "मैं तो उस दौड़ में हार ही जाऊँगा ।"

"ओह, यह कैसे कह सकते हैं ? तुम्हारे विरुद्ध कौन दौड़ रहा है यह भी तो देखना पड़ेगा ! चूहों को तो तू कभी भी हरा देगा !"

होमर ठूँठ का सहारा लेकर झुक गया । "यदि दौड़ना पड़े तो," होमर ने पूछा, "क्या आपके विचार में एक चूहा उल्टा दौड़ सकता है ?"

जैस ने अपना टोप आँखों पर सरका लिया, मानों इतनी गम्भीर समस्या पर विचार करते हुए वह अपनी आँखों पर सूर्य की किरणें नहीं पड़ने देना चाहता ।

"इस पर तो विचार करना पड़ेगा, होमर," वह बोला । "कुछ बातें जाननी होंगी ! वह चूहा बूढ़ा था या जवान ?"

"अधेड़ ! वह चूहा अधेड़ था ।" होमर ने बताया ।

"अधेड़ उम्र का चूहा," जैस ने कहा, "गाँव का था या शहर का ?"

"शहरी चूहा था !"

"तो," जैस न कहा, "मैं समझता हूँ.....यदि यथेष्ट प्रोत्साहन मिला हो..... तो वह दौड़ सका होगा !"

"हाँ, श्रीमान," सोल्लास होमर ने कहा, "आप ठीक कहते हैं.....वह दौड़ सकता है !"

"अरे, होमर," जैस ने कहा, "तूने तो मुझे वह बात बतलाई जो आज तक मुझे मालूम ही न थी । तुझसे मिलकर आज मेरी जानकारी बढ़ ही गई है ।"

उसने फिर अपना टोप सरकाकर यथास्थान रख लिया । सूर्यास्त से पहले की धूप उसके मुख पर पड़ने लगी और जब उसने लड़के की ओर देखा तो होमर जान गया कि बूढ़े ने वह बात हृदय से कही थी ।

"परन्तु वह तेज़ नहीं दौड़ा था," होमर ने कहा ।

"पहली बार तो तेज़ उलटा दौड़ने की आशा न करनी चाहिए," जैस ने कहा ।

जैस ने सोचा मैं अवश्य ही भगवान की भाँति बूढ़ा दिखता हूँगा इसे । फिर भी मैं किसी न किसी प्रकार उसकी आयु तक लौट तो सकता

हूँ, परन्तु वह तो किसी भी प्रकार अस्सी वर्ष तक नहीं पहुँच सकता इस समय। और मैं यह भी कैसे उसे समझाऊँ कि मैं भी 'वह' ही हूँ, केवल आयु का ही अन्तर है !

"उन दिनों मैं तुझसे भी छोटा था, होमर। हमारे घर में एक छोटा-सा बत्तखों का तालाब था। ऐसे ही एक दिन मेरे दिल में बत्तख़ बनने की समाई। हाँ, अच्छा तो बहुत लगा, पर मैं कपड़े पहने ही तालाब में घुस गया था और मेरी माँ, क्योंकि बत्तख न बनाकर वह मुझे लड़का ही बनाना चाहती थी, बोली, 'जैस अगर फिर कभी तालाब में घुसा तो तेरी खैर नहीं।' मैंने तो सोचा था कि बत्तख़ भी बना जा सकता है !"

"नहीं, बना जा सकता ?" होमर ने पूछा।

"नहीं, जी," जैस ने कहा, "मैं तो तालाब में गोली की तरह कूद पड़ा था। बत्तखों ने सोचा कि आस्मान ही टूट पड़ा है !"

होमर हँस पड़ा।

"और मुझे कुछ भी लाभ न हुआ। जितनी तेज़ी से कूदा था उससे कहीं आहिस्ता बाहर निकला। परन्तु मरम्मत फिर भी हो गई।"

"मरम्मत ?" होमर ने पूछा।

"छठी का दूध याद आ गया !"

होमर इस पर भी प्रश्नसूचक दृष्टि से देखता रहा।

"मार पड़ी, पीटा गया, थप्पड़ लगे, कान गरम किए गए," जैस ने कहा।

बूढ़ा खूसट, जैस ने सोचा। भला बूढ़ों को बच्चों से अपने अतीत की बातें कहने की क्या ज़रूरत ? कहना ही होगा, मैं भी एक बड़ा नटखट लड़का हुआ करता था ! यदि तारुण्य ही चाहिए तो वह तो यह रहा, हमारी आँखों के सामने, और पुराना और बासी भी नहीं। इसी में क्यों न जिएँ ? बच्चों के पास तेरी ७५ वर्ष पुरानी बातें सुनने का समय ही नहीं है, जैस बर्डवल !

"होमर," उसने कहा, "यदि घर लौटने की जल्दी न हो, तो मछलियाँ पकड़ना कैसा लगेगा तुझे ? यह रही बंसी और यह रहा काँटा। लौटते समय वेन्टर्स के घर से होते हुए बंसी हमारे घर छोड़ आना, रास्ते से दो ही क़दम बाहर तो जाना पड़ेगा तुझे।"

होमर जब सधन्यवाद बंसी लौटाकर और अपनी पकड़ी मछलियाँ दिखा कर चला गया, तब जैस और एलिज़ा गोधूलि में बैठे गरम केक खा रहे थे और चाय पी रहे थे। जैस ने कहा, "मुझे जौश की याद आ गई।"

एलिजा ने सिर हिलाकर स्वीकार किया, परन्तु कहा, "वैसे देखने में तुझ जैसा है !"

जैस खिड़की से हट गया। अन्धकार बढ़ता जा रहा था और मकानों और वृक्षों में ऐसी रेखाएँ छोड़ता जा रहा था कि यह बताना कठिन था कि क्या आँख देख रही है और क्या केवल स्मरणशक्ति व परिचय के बल पर दृष्टिगोचर हो रहा है। संध्या की ही भाँति कोमल व अधपके बालों वाली एलिज़ा की ओर उसने देखा। सोचने लगा कि यदि वही पचास साल पहले की एलिज़ा—वही काले बाल, रक्ताभ गाल और वही उसकी बातों का अर्थ खोजती आँखें लिए—इस समय मेरे सम्मुख सामने आकर बैठ जाए तो कैसा लगे ! क्या वह उसे पहचान सकेगा ? क्या वह अपनी पत्नी से कह सकेगा, "तुझे देखकर किसी की याद आजाती है,.....पता नहीं किसकी.....यह कहना तो कठिन है.....नाम याद नहीं रहा, परन्तु तेरा मुख मैं पहचानता हूँ !" कह सकेगा यह बात ?

"जब मैं बारह वर्ष का था, एलिज़ा, "जैस ने कहा, "तूने मुझे देखा तक नहीं था !"

"अट्ठारह वर्ष का हो कर भी तू बारह वर्ष के पास ही था !"

"क्यों, एलिज़ा, अठारह वर्ष की आयु में तो मैं पुरुष बन चुका था। एक गाय और एक घोड़े का मालिक था, और दस एकड़ भूमि अपने लिए साफ कर चुका था।"

"तू और तेरी गाय और तेरा घोड़ा !" कह कर एलिज़ा हँस पड़ी।

"तब तो तू हँसी नहीं थी," जैस ने उसे याद दिलाया, "तब तो तू मेरे जैसे गण्यमान्य व्यक्ति का विवाह-प्रस्ताव सुनकर दंग रह गई थी !"

"मैं चौदह वर्ष की थी," एलिज़ा ने कहा, "और आसानी से दंग हो जाया करती थी। फिर भी तुम्हें गण्यमान्य व्यक्ति से तो होमर के समीप ही पाया था मैंने !"

"नहीं, नहीं," जैस बोला, "तुझे पता तो है, एलिज़ा, मेरे स्वभाव में मस्ती का एक पुट है। परन्तु मैं होमर नहीं हूँ ! उस लड़के को तो

किसी दूसरी ही दुनिया में पैदा होना चाहिए था—ऐसी दुनिया में जहाँ बारह तारे होते, छः पेड़ और एक या दो कुत्ते होते ! यह दुनिया तो होमर के सामर्थ्य के बाहर की वस्तु है। यह दुनिया तो उस पर छाई हुई है !"

"तू भी वैसा ही बना है," एलिज़ा ने सुनिश्चित ढंग से कहा, "जब मैंने उसे कहते सुना, 'क्या कभी किसी ने मछलियों की हड्डियाँ भी गिनीं,' मैंने सोचा यह दूसरा जैस बर्डवल आगया, सोचनेवाला, देखनेवाला, आश्चर्यविभोर !"

"एलिजा," जैस मानों आत्मरक्षा करता हुआ बोला, "जब मैं स्वर्ग जाऊँगा और भगवान मुझसे पूछेगा, 'संसार में क्या हो रहा है ?' तो मैं उत्तर में तारों के नाम बता दूँगा, फल कैसे हो रहे हैं और रशब्रान्च में मछलियाँ किस प्रकार की रहती हैं यह भी कह दूँगा !"

"भगवान ने ही तो बनाया है उन्हें," एलिज़ा ने कहा, "उसे तुझसे पूछने की ज़रूरत नहीं।"

"परन्तु इस संसार में रहकर तो वह उन्हें नहीं देख पाता," जैस ने कहा।

"उसी लड़के जैसा," एलिज़ा ने फिर कहा, "उसी बड़ी आँखोंवाले, आश्चर्यचकित लड़के जैसा !"

एलिज़ा की बात चाहे ठीक थी या नहीं थी, और जैस की राय में ठीक नहीं थी, सारे जाड़ों वह प्रायः होमर डेनहम से मिलता रहा। वह लड़का स्कूल से लौटते समय आ जाता; शनिवार को अपना काम समाप्त कर बरफ पड़े खेतों को पार कर जैस के पास पहुँच जाता; और वे दोनों मिलकर सोचते कि जम जाना कैसा लगता होगा; और फिर दोनों कहते: जैसा कि लोग कहते हैं नींद आजाने की तरह होता होगा या फिर वह जड़ता या भावशून्यता का एक दर्द है जो चारों ओर, शरीर को पाषाणवत् कर, धुक-धुक करता रहता है ! या फिर सोचते कि क्या एक स्वस्थ व्यक्ति को जमाकर एक हज़ार साल के बाद, यदि तरकीब आती हो, फिर जीवित किया जा सकता है; जिससे कि उससे पूछ सकें कि ठंड कुछ भी नहीं, केवल ताप का घटते जाना है !

वह रात को भी आया करता। उसकी लालटैन हाथ में झूलती रहती और पवन वेग से बत्ती बार-बार बुझने को तत्पर रहती। वह आकर

अँगीठी के पास बैठ जाता; कभी बरफ की बनी आइसक्रीम खाता, कभी चपटे-से लोहे के टुकड़े पर तोड़कर अखरोट खाता; कभी जैस की कोई किताब पढ़ता या एलिज़ा के साथ ताश खेलता। एलिज़ा ताश खेलना और जीतना पसन्द करती थी, परन्तु जैस से वह कभी भी न जीत पाती !

जैस अँगीठी के पास बैठा हुआ एलिज़ा और होमर के हाथों को खेल में उठते और गिरते देखता रहता। कभी-कभी हार के डर से या चाल ग़लत हो गई समझकर होमर के गले की नाड़ी कूदने लग जाती, परन्तु ख़तरा न रहने पर फिर दब जाती।

नहीं, जैस सोचता, एलिज़ा ग़लत कहती है। मुझे इस लड़के को देखकर सुख तो मिलता है, परन्तु इसलिए नहीं कि मैं उसमें अपनी प्रतिमूर्ति देखता हूँ। अपने बचपन की तस्वीर ! नही, मैं तो इस लड़के से कहीं अधिक दृढ़ हुआ करता था। दूसरे, मैं अपने आप को इतना गिरा हुआ नहीं मानता कि किसी को भी अपनी छायाकृति मान लूँ !

हाँ, एक दूसरा बचपन, उसने मुस्कराते हुए सोचा। बूढ़ा आदमी बचपन के खिलवाड़ों की ओर लौट चलने का प्रयत्न कर रहा है ! हाँ, यही बात अधिक उपयुक्त मालूम पड़ती है, उसने सोचा। इसमें कुछ बुराई भी नहीं है। फिर भी इस बात पर भी वह विश्वास न कर सका।

आनन्द तो हम दो बातों से पाते हैं, उसने सोचा; कहाँ से हमने जीवन आरम्भ किया और क्या हमने खो दिया, यह एक बार फिर देखकर। ईमानदारी ही एक ऐसा शब्द है जो जो वह था उसे पूर्णतया व्यक्त कर देता है। आश्चर्य, भय और प्रेम, होमर से कुछ छिपा हुआ नही है, सबही तो आँखों के सामने है। यह अनुभूति किसी व्यक्ति से स्वयं भेंट करने की भाँति है—व्यस्क लोगों की तरह परोक्ष में भेंट करना नहीं, जो कि निरीक्षण के लिए विशेषतया तैयार किए गए व्यक्ति से मिलने की भाँति होता है ! आह, जैस ने सोचा, अस्सी वर्ष के पश्चात् शरीर के भीतर छिपे जीवन को आँखों से ढूँढना अब दूभर हो चला है। अब तो एक ही दृष्टि में जीवन दिख जाए तो वही देखकर सुख मिलता है।

और एलिज़ा की यह धारणा कि वह होमर में अपने बीते हुए तारुण्य को देखता है, ग़लत होते हुए भी, होमर उसकी आँखों में लगे एक नए लैन्स की भाँति है, अपने शैशव के संसार को फिर से देख पाने का एक साधन है—शैशव का वह रहस्यपूर्ण, सुन्दर, अभिनव संसार !

घड़ी टन-टनकर बज उठी। "परकिन्स दम्पति तेरी बाट देख रहे होंगे, होमर," जैस ने कहा, "तेरे सोने का समय हो चुका है और तुझे आराम भी करना चाहिए। बस, अब बराबर मानकर खेल बन्द करो—या फिर किसी दिन इसी खेल को अंत तक खेल लेना।"

"हम अभी खत्म करेंगे," होमर ने कहा।

परन्तु एलिज़ा उठ गई, जैस होमर की लालटैन ले आया और भली प्रकार कम्बल ओढ़ा कर उन्होंने उसे घर भेज दिया। "भागना मत," जैस ने कहा, "साँस चढ़ जाएगा। आराम से जाना और जाकर सो जाना।"

होमर ने लालटैन हिलाकर विदा ली और धीरे-धीरे चढ़ाई चढ़ता हुआ चला गया। जैस और एलिज़ा खड़े देखते रहे; और चढ़ाई की चोटी पर जब वह पहुँचा तो उसकी लालटैन का प्रकाश किसी अस्ता-चलगामी तारे की भाँति दिखाई पड़ रहा था।

जैस सोने से पहले कुछ देर अँगीठी के पास खड़ा हो गया। "निस्संदेह, लाड़ लड़ाकर बुरा कर रहे हैं!" वह बोला।

एलिज़ा भी खिड़की से हट आई। "तू तो उसे सिर पर उठाए फिरता है," उसने स्वीकार किया, और बोली, "बेचारा बच्चा!"

"अवश्य ही उसे बिगाड़ रहा हूँ," जैस ने एक बार फिर कहा, और होमर की बात याद कर बोला, "हम भी अब खत्म करें!"

जाड़े के शेष दिनों में जैस ने उस लड़के को न बिगाड़ने की बात को याद रखने का प्रयत्न किया, परन्तु वह उसे अधिकांश भूल ही जाता। जाड़ा भी कुछ कम ही दिनों का था, गरमी भी थी, और शीघ्र ही समाप्त हो गया। अभी लोग जाड़ा पूर्णतया कह भी न पाए थे कि वह समाप्त भी हो गया! बरफ न रही, शाखाएँ झकी-झुकी-सी बढ़ने लगीं, वृक्ष नई छाल से फूल उठे और घास एक बार फिर पृथ्वी के गर्भ से निकलने लगा। जैस और होमर का साथ, यदि वह उसका अपना ही पुत्र या पौत्र होता, तो भी इससे अधिक न हो सकता था। पड़ोसी उन दोनों को साथ देखने के आदी होगए थे। कभी वे सड़कों पर घूमते, कभी जैस की तेज़ घोड़ेवाली गाड़ी में जाते दिखाई देते और कभी किसी जंगले से लगे, धूप में बैठे हुए मिलते!

शनिवार था और सूर्य मानों सदा के लिए आकाश में टाँग दिया

गया हो ऐसा स्थिर दिख रहा था। जैस घर के चारों ओर लगे नवोदित फूलों को देख रहा था। वह प्रशंसात्मक दृष्टि से देखते हुए एलिज़ा के कमलों की क्यारी को सूँघ रहा था। कमल समय से पूर्व ही फूल उठे थे। उसी समय मौन, नंगे पाँव होमर आगया। जैस विचारमग्न था और बिना आहट सुने ही समझ गया कि होमर आया है, जैसा कि जब वे प्रथम बार मिले थे वह समझ गया था।

"होमर, तारे यदि मीठे होते तो कमल के फूल बन जाते। कमल यदि द्युतिमान होते तो तारे बन जाते!" जैस ने कहा।

वह लड़का कमलों को क्या समझता है यह सुनने के लिए जैस ने उसकी ओर मुस्कराकर देखा। वह होमर की दृष्टि का क़ायल हो चुका था और जानना चाहता था कि वे नई आँखें संसार में क्या देखती हैं। परन्तु होमर गम्भीर, मौन खड़ा रहा, उसके पीले होठ मुस्करा नहीं रहे थे मानों कमल की क्यारी कोई गम्भीर विषय हो। उसके गले की नाड़ी भी उछल रही थी, मानों वह विषय उत्तेजक भी हो।

जैस ने देखा कि लड़का कुछ कमज़ोर हो गया है। उसे लगा कि उसका वह विश्वास कि जो भी बीमारी होगी वसन्त आते ही ठीक हो जाएगी निराधार ही था।

"होमर," उसने पूछा, "तूने अपनी दवा की गोलियाँ भी अभी खाई या नहीं?"

होमर ने कोई जवाब न दिया और घुटनों के बल बैठकर कमल तोड़ने लगा। जैस के मना करते-करते उसने छः फूल तोड़ लिए थे।

"होमर," कठोर होकर जैस ने कहा, "यह फूल मुझे दे दे।"

होमर खड़ा हो गया। बिना कुछ कहे उसने वे फूल जैस को दे दिए।

"अरे, होमर," जैस ने कहा, "तूने तो मुझे चकित कर दिया। मैं कभी ये फूल नहीं तोड़ता। ये एलिज़ा के हैं और वह ही कभी कमरों को सुगन्धित करने के लिए एक-आध तोड़ लेती है। और तूने तो आकर, बिना कुछ पूछे ही, यों फूल तोड़ना आरम्भ कर दिया मानों वे तेरे ही फून हों। तेरी बदतमीज़ी देखकर मैं स्तम्भित व लज्जित हो गया हूँ, होमर।"

होमर फिर भी कुछ न बोला। उसने केवल एक बार अँगुली बढ़ाकर उन फूलों को छूआ, मानों उनसे विदा ले रहा हो, और फिर गोठ की

ओर भाग गया। जैस समझा बिल्ली के बच्चे ढूँढने गया है। जब लौटकर अन्दर आया तो वह प्रसन्न था, मानों कुछ हुआ ही न हो! रसोई में बैठकर एलिजा के बिस्कुट का एक टुकड़ा उसने खाया; और यदि उसने शीशे के फूलदान में रखे उन छः कमल के फूलों को देखा तो उसकी भाव-भंगिमा से इस बात का पता न चल सका!

परन्तु जैस उन फूलों को देखता रहा। होमर के जाने के पश्चात् पानी में डूबे वे छः फूल जैस को व्यथित करते रहे। वह उस रात देर तक खाने के मेज़ पर बैठा रहा। तश्तरियाँ हटा दी गईं पर वह वहीं बैठा अपने और उस लड़के के विषय में और फूलों के विषय में सोचता रहा। उसे विश्वास था कि उसने ठीक ही कहा था·····परन्तु ठीक बात कहकर छाती में ऐसा दर्द तो न उठ जाना चाहिए! वे फूल एलिज़ा के थे और होमर को उन्हें तोड़ना नहीं चाहिए था, परन्तु लड़के से लेकर एलिजा को दे देने के पश्चात् उसे डाँट देने के बाद भी वे फूल उसे प्रसन्न नहीं कर पा रहे थे। जब तक बैठक से एलिज़ा ने पुकारा नहीं वह वहीं बैठा रहा और जब वह उठकर बैठक में जाने लगा तो एक निश्चय पर पहुँच चुका था और उसके मन की वह पीड़ा कुछ कम हो गई थी।

अगले दिन मौसम फिर बदल गया था और लगभग एक सप्ताह तक वह घर से बाहर ही न निकल पाया। बरफ और वर्षा और ओले गिरते देखता रहा और होमर ने जो तोड़े थे उन फूलों को मुरझाते देखता रहा! बाहर क्यारी में लगे फूलों को आँधी-पानी ने नष्ट कर दिया था। ओले और वर्षा के साथसाथ हवा भी तेज़ चल रही थी: टेलीफोन के तार गिरे पड़े थे, शहतूत के पेड़ की शाखा टूटी पड़ी थी और साथ में गिरते-गिरते गाड़ीघर की खिड़की भी तोड़ गई थी।

"शीत का अंत भी कठिन होता है," जैस ने एलिज़ा से कहा। वह एक खिड़की से दूसरी खिड़की तक बेचैनी से चक्कर लगा रहा था। वह उस तूफान के रुकने की बाट देख रहा था। रात में जब वे लोग सो रहे थे तो मौसम बदला; आँधी रुकी और छठे दिन सुबह शान्त व कोमल हवा चल रही थी, मानों वह आँधी-तूफान एक स्वप्न ही रहा हो! केवल वे नष्ट कमल, टूटी हुई शाखा व खिड़की ही उस सत्य के प्रमाणवत् बची रह गई थी।

दोपहर को भोजनोपरान्त, जब धूप से ज़मीन कुछ सूख गई तो

जैस ने अपना कोट और टोप पहना, आँधी से जो कुछ कमल बच पाए थे उन्हें तोड़ा—जितने होमर ने तोड़े थे लगभग उतने ही—और परकिन्सों के घर की ओर चल पड़ा ।

होमर उसे रास्ते में मिल जाएगा, मन ही मन यह आशा भी थी उसे; मौसम ही ऐसा था कि कोई घर में घुसकर बैठा न रह सकता। और होमर पिछले सप्ताह की आँधी का जो वृतान्त उसे सुनाएगा उसे सोचकर जैस मुस्करा उठा। अपने छत से लगे कमरे में, हवा और पानी से केवल छः इंच दूर, होमर ने अवश्य ही बढ़िया बातें सुनी होंगी । जैस ने सोचा कि अब यह सुतापमय, शान्त दिन तो हृदय को छूकर उसे आगे बढ़ाए लिए जा रहा है। पैरों तले कुछ कीचड़, परन्तु ऊपर शुभ्र नीलवर्ण ग्रीष्माकाश, ग्रीष्म की शुभाशाओं से भरा हुआ। परकिन्सों के घरवाली चढ़ाई चढ़ते हुए जैस सोचा करता था कि उन का घर उस पहाड़ी से कितना शुष्क, कितना आभाहीन-सा दिखता है—कुछ एक चीड़ के पेड़ों को छोड़कर वहाँ कुछ और है ही नहीं ! आँधी-पानी ने कुछ पेड गिरा दिए थे, ज़मीन तोड़ दी थी और सड़क बहा दी थी। परन्तु, जैस ने चलते-चलते सोचा, वह तो हो चुका, आँधी अपना काम कर गई और अब मरम्मतों का समय आ पहुँचा। धूप और उसके हाथों के ताप से परितप्त उन कमलों से ऐसी सुगन्ध आ रही थी कि मानों कभी आँधी उन्हें छ ही नहीं गई हो; और होमर उन फूलों को पाकर कितना खुश होगा यह सोचकर स्वयं जैस भी आनन्दित हो उठा !

फिर परकिन्सों के छोटे से सफेद घर के बाहर गाड़ियों और लोगों की भीड़ देखकर न तो उसे आश्चर्य हुआ, ना ही वह शोकाकुल हुआ और ना ही उस भीड़ का अर्थ समझते उसे देर लगी। उसके पाँव यंत्रचालित-से उसे आगे लिए जा रहे थे और उसका मस्तिष्क स्पष्टतया ही उसे उस अर्थ की ओर बढ़ते देख रहा था। उसे लगा कि यह बूढ़ा अस्सी वर्ष पहले कोलरेन के उस नाले से अपनी यात्रा आरम्भ कर, विवाह, पुत्र, गृहस्थ आदि मोड़ों से होता हुआ आज के दिन उस पहाड़ी विशेष को कमल हाथ में लिए चढ़ेगा और पड़ोसियों के फूलों के साथ-साथ उन फूलों को भी उस अर्थी पर चढ़ा देगा जो कि उसके पड़ोसी के घर के बाहर रखी है ।

उसके पाँव उसे आगे लिए जा रहे थे·····यही तो वह समय है,

वह क्षण, वह घड़ी जिसकी ओर तू बढ़ा आ रहा था, उसने अपने आप से कहा—और उसे लगा कि उस क्षण के महत्त्व के समक्ष विवाह, प्रार्थना, पूजा, गृहस्थ आदि का कुछ भी महत्त्व नहीं है, और या तो वह इस समय समझ पाया है या फिर पृथ्वी पर बिताए अपने अस्सी वर्षों का अर्थ वह कभी भी न समझ पाएगा। पृथ्वी पर आकर·····यह या वह मेरा कर्तव्य है यह विश्वास कर पाना; अपना पूर्व निर्धारित रास्ता खोजना ! जैस बर्डवल को पति, किसान, धार्मिक वृत्तिवाले मनुष्य के रूप में देखना·····यह सब ग़लत भी तो हो सकता है ? हो सकता है कि केवल यही अर्थ हो जीवन का·····बस यही एक मात्र ध्येय, और यही अर्थ भी, यह आँधी से नष्ट फूल लेकर, चढ़ाई चढ़ते हुए एक छोटे लड़के की अंतिम यात्रा देखना·····और आँधी से नष्ट हुए दूसरे लोगों के फूलों के साथ उन फूलों को भी रख देना, और उस समय के लिए भी कुछ भी न कर पाना·····सुनना·····पूछना·····सोचना !

कुछ पूछने की कोई आवश्यकता ही न थी, वह स्वयं भी दूसरों से वही बात कह सकता था : होमर के हृदय की गति बन्द हो गई···· आँखें बन्द किए, मुस्कराता हुआ, कुछ सुनने को उत्सुक वह अपने छोटे से कमरे में लेटा पड़ा था। जैस होमर की मृत्यु पर शोक नहीं कर रहा था। निस्संदेह, होमर ने एकत्रित सभी लोगों के देखने, सुनने, समझने और सोचने के अनुभवों के जोड़ से भी अधिक मात्रा में अपने बारह वर्षों में ही यह संसार देख लिया था। होमर के लिए वह शोकाकुल न था क्योंकि वह जानता था कि जैस की भाँति ही यह संसार भी कर्तव्यवश·····किसी प्रकार की बुरी भावना से नहीं·····उसे पग-पग पर रोकता, चोट पहुँचाता।

अपने लिए भी वह संत्रस्त न हुआ; और अंत की इस दुर्घटना को छोड़कर वह तो प्रसन्न ही था कि जब उसके अपने बच्चे उसे छोड़ कर चले गए थे, तो कुछ समय के लिए एक अनाथ लड़का उसका पुत्र बन सका था·····और अब वह भी चला गया ! सभी लोगों के साथ खड़े-खड़े उसने वे सुपरिचित शब्द सुने·····"अपने हृदयों में शोक को स्थान न दो·····मेरे परमपिता के लोक में अनेक भवन हैं·····मैं तुम्हारे लिए स्थान बनाने जा रहा हूँ।"

जब जैस घर की ओर चला बसन्त का वह सूर्य अस्त होने लगा था। उसके पाँव उसे लिए जा रहे थे और उसका मस्तिष्क जीवन की

दीर्घतर यात्रा में उलझा हुआ था। जैस को अपने लिए कुछ शोक न था, न होमर के लिए ही था·····परन्तु वह जानता था कि अपने जीवन में उसने कुछ शब्दों का दुरुपयोग किया, कुछ प्रश्न कभी पूछे ही नहीं, कुछ उत्तर कभी पाए ही नहीं और अब वह खोजते-खोजते थक गया है !

वह रसोई के उस मेज़ के पास बैठ गया जिसके ऊपर वे छः कमल, सूखे, और पीले, अभी तक भी रखे थे; और एलिजा को दोपहर और संध्या की बातें बतलाने लगा और अपने विचारों से उसे अवगत कराने लगा। अँधेरा होने तक वे दोनों वहीं बैठे रहे। एलिज़ा ने एक लैम्प जला दिया, कुछ भोजन सामने रख दिया। और तब खाना खाते-खाते वह अर्थ जिसे वह सारी दोपहर, शायद सारे जीवन भर, खोजता रहा था उसके सम्मुख साकार हो उठा ! उसने रोटी का एक अंतिम ग्रास खाया, चाय का एक अंतिम प्याला पिया।

"एलिज़ा," वह बोला, "मैं अस्सी वर्ष का हो गया हूँ। आजीवन, किसी न किसी प्रकार मैंने परोपकार करने का ही प्रयत्न किया। वह ठीक या ग़लत यह मैं नहीं जानता, परन्तु मुझे अब ऐसा लगता है कि उस सबके लिए मुझे क्षमा कर दिया गया है ! मुझे होमर से प्यार था, मैंने उसका भी उपकार करना चाहा था·····परन्तु अब सोचता हूँ मैंने जो किया था वह ग़लत था·····और वहीं मैं भूल पड़ा था ! आज के बाद, एलिज़ा, मानवमात्र से प्रेम करने के अतिरिक्त भगवान मुझसे कुछ नहीं माँगता !"

मेज़ के पास से उठकर वह खिड़की के पास चला आया। आकाश की कुछ क्षण पहले की अरुणिमा अब मिट चुकी थी, केवल एक पीले प्रकाश की छोटी सी लकीर भर रह गई थी जिससे पता चलता था कि यहाँ सूर्य था और यहाँ अस्त हो गया ! परन्तु अँधेरे से जैस को कभी कष्ट न हुआ था, उसने उत्फुल्ल मन से ही कहा, "नहीं, एलिज़ा, जहाँ तक मुझे सूझता है आज से इससे अधिक भगवान मुझसे और कुछ आशा नहीं करता !"